श्री उपासकदशासूत्र.

सातमु अङ्ग.

शुद्धमूळ, शब्दार्थ, भावार्थ सहित.

लेखक तथा प्रकाशक.

डा. जीवराज घेलाभाई दोशी, L. M. & S

नवे दरवाजे–अमदावाद.

आवृत्ति १ ली   प्रत १०००   संवत १९७८.   सने १९२२.

किम्मत ३–४–०

अनुक्रमणिका.

ली.

अमदावाद.

डा. जीवराज घेलाभाई दोशी,
L. M. & S.

प्रस्तावना.

नीचेना सूत्रोमांथी आ सूत्रनो मूळपाठ ने पाठांतर लखेल छे.

१ A (ए) आ सूत्र इन्डीआ ओफीस लाइब्रेरीनुं छे तेनो नंवर १३६३ छे. आ सूत्र संवत १६२१ सने १५६४ नी सालनुं छे.

२ B (वी) आ सूत्र एशीआटीक सोसाइटीनी लाइब्रेरीनुं छे ते वीकानेरना महाराजानी लाइब्रेरीमांथी मळेल तेनो नंवर १५३३ छे. ते टवा सूत्र छे ते संवत १८२४ सने १७६७ नी सालनुं छे.

३ C (सी) आ सूत्र कलकताना यती पासेथी लीधेल ते संवत १९१६, सने १८५९ नी सालनुं छे.

४ D (डी) आ सूत्र (सी) ना जेवुं छे. संवत १९७५ सने १६८८ नी सालनुं छे.

५ E (इ) आ सूत्र कलकताना वावुवाळुं छे संवत १९३३, सने १८७६ नी सालनुं छे.

६ F (एफ) आ सूत्र डा. आर गार्वेस पासेथी मळेल. आ सूत्र संवत १७४८ सने १६९१ नुं छे.

७ G (जी) आ सूत्र वंगाळानी एशीयाटीक सोसाइटीनुं छे तारीख नथी पण सुमारे ५० वरसनुं जुनुं हशे.

८ H (एम) आ सूत्र मुंवइनी जैन एसोसीएशन पासेथी मळेल. ते संवत १७४० सने १६८३ नी सालनुं छे.

टीकाना संवंधमां नीचेना सूत्रोनो आधार लीधेल छे.

१ (ए) सूत्र वगर तारीखनुं छे.

२ C (सी) आ सूत्र ना. ३ वाळा (सी) सूत्रनो भाग छे.

३ E (इ) आ सूत्र ना. ५ मा (इ) सूत्रनो भाग छे.

४ F (एफ) आ सूत्र ना. ६ ठा (एफ) सूत्रनो भाग छे.

५ H (एच) आ सूत्र मुंबइनी जैन एसोसीएशन पासेथी मळ्युं छे. ते संवत १६७३ सने १६१६ नुं छे.

ली.

डा. जीवराज घेलाभाई दोशी,

L. M. & S.

अमदावाद.

प्रस्तावना.

आ उपासक दशासूत्र जे जैन आगमोनुं सातमुं अङ्ग कहेवाय छे ते सूत्रमां दस श्रावकोनो अधिकार छे. जैन
धर्ममां गुरुनी पासे जीव अजीव धारीने श्रावक केवी रीते थइ शके छे, केवी रीते पछी बारव्रत श्रावकना अंगीकार
करी श्रावकपणुं पाळी श्रावकनी १२ पडिमा वही अणसण करी देवलोकमां जइ छेवट मुकती पामे छे तेनो अधि-
कार आ सूत्रमां आबेहुब वर्णव्यो छे. आ सूत्र बधा श्रावक भाइओए वांचवा लायक छे. आ सूत्रनो मूळ पाठ तथा
पाठांतर बंगाळानी एशीयाटीक सोसाइटी तरफथी छापेल उपासक दशासूत्र जे डाक्टर ए. एफ. रुडोल्फ होरनेल
साहेबे रचेल छे ते उपरथी ज्ञाननो फेलावो करवा माटे लीधो छे. ते सूत्रमां मूळपाठ, पाठांतर, शब्दकोप टीका तथा
ते सूत्रनो इंग्रेजीमां तरजुमो करेल छे ने तेनी किमत रु. ६–८–० छे. आ सूत्र इंग्रेजी जाणनारा श्रावकभाइओए
वांचवा लायक छे. आ सूत्र जे जे सूत्रो उपरथी उपला साहेबे रचेल छे तेनुं टुंकुं वर्णन जुदा पृष्ठमां आप्युं छे जेथी
सूत्र पाठना पाठान्तरमां अंग्रेजी अक्षरो टांक्यां छे ते कयुं सूत्र ते जणाशे. आ सूत्रनी आवदानी तेवाज बीजा सूत्रो
छपाववामां वपराय छे. आ सूत्र लखवामां कांइ भुलचुक थइ होय ते सुधारी वांचवा अमारी विनंती छे. तेमां
कांइ सुधारो करवानो कोइ सूचवशे तो ते सुधारो बीजी आवृतिमां करवामां आवशे. ली.

डा. जीवराज घेलाभाई दोशी,
L. M. & S.

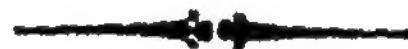
अमदावाद.

श्री उपासकदशा सूत्रम्

सत्तमं अङ्गं.



उवासगदसाओ पढमं अज्झयणं.



उपासकदसासूत्र.

प्रथम अध्ययन.



भगवानना उपासना करनार दश श्रावकोनो अधिकार.—

अर्थः—॥ १ ॥ ते० तेणे। का० काळे। एटले चोथा आराने विषे। ते० तेणे। स० समे। एटले जे समे श्री महावीर विचरे छे ते समे। चं० चंपा। ना० नामे। न० नगरी। हो० हती। व० तेनुं वर्णन उववाय सूत्रथी जाणवुं। पु० पूर्णभद्र एहवे नामे जक्षनुं। चे० देहरुं (तथा उध्यान) हतुं। व० तेनुं वर्णन उववाय सूत्रथी जाणवुं ॥ १ ॥

मूळपाठः—॥ १ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था[1] वण्णओ। पुण्णभद्दे चेइए। वण्णओ[+] ॥ १ ॥

भावार्थः—॥ १ ॥ ते काळ एटले अवसर्पिणी (पडता काळ) ना चोथा आराने विषे, ते समय एटले जे वखते भगवंत श्री महावीर देव स्वामि विद्यमान हता ते वखते एक चंपा नामे नगरी हती. तेनुं वर्णन उववाइ सूत्रथी जाणवुं. ते चंपा नगरीनी बाहिर इशान खूणमां पूर्णभद्र नामे यक्षनुं देहरुं हतुं.-(अने ते यक्षने नामेज तेहना फरतुं चारे दिशामां एक मोटुं वन हतुं, तेहनुं वर्णन पण उववाइ सूत्रथी जाणवुं) ॥ १ ॥

अर्थः—॥ २ ॥ ते० ते। का० काळे। ते० ते। स० समाने विषे। अ० वचनने विषे। सु० सुकुमाल एटले आर्य सुधर्मा स्वामि। स० आवीने रह्या। जा० जेम बीजा सूत्रमां कह्युं तेम नगरना लोक वांदवा निकळे। जं० जंबू स्वामि। प० (सुधर्मा स्वामिने) विनय सहित। ए० एम। व० पूछे। ज० जो वारे। णं० वळी। भं० हे भगवंत (पूज्य)। स० श्रमण। भ० भगवंत। म० महावीर देवे। जा० यावत। सं० मोक्ष पहोंन्या। तेमणे। छ० छट्टा। अं० अंग। ना० ज्ञाता। ध० धर्म। क० कथानो। अ० ए। अ० अर्थ। प० कह्यो। स० सातमाने। णं० विषे। भं० हे भगवंत। पूज्य। अं० अंगने विषे। उ० उपासक। द० दशांगने विषे। स० श्रमण भगवंत महावीर देवे। जा० यावत। सं० मोक्ष पहोन्या तेमणे। के० केवो। अ० अर्थ। प० परूप्यो ॥ २ ॥

---

१. B. हत्था (बीमां हत्था) । उववाइ सूत्र पाठ १ मां जुओ. +जुओ उववाइ सूत्र पाठ २-१०. निरियावलीका सूत्र पाठ १-२.

मूळपाठः—॥ २ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जा सुहम्मे समोसरिए जाव+ जम्बू पज्जुवासमाणे एवं वयासी। "जइ णं,[1] भन्ते, समणेणं भगवया[2] महावीरेणं[3] जाव+ सम्पत्तेणं छठ्ठस्स अङ्गस्स नायाधम्मकहाणं अयमठ्ठे पन्नत्ते, सत्तमस्स णं, भन्ते, अङ्गस्स उवासगदसाणं समणेणं जाव+ सम्पत्तेणं के अठ्ठे पन्नत्ते ?" ॥ २ ॥

भावार्थः—॥ २ ॥ ते काळ, ते समयने विषे आर्य सुधर्मा स्वामी, जंबुस्वामी प्रमुख पांचसे साधुना परिवारे सहित एक गामथी बीजे गाम विहार करता थका चंपानगरीनुं पुर्णभद्र नामे वन छे त्यां आवी समोसर्या (पधार्या) ने वन पालकनी आज्ञा मागीने त्यां रह्यां. ते सुधर्मास्वामी अने जंबु स्वामीना गुणनुं वर्णन उववाइ सूत्रथी जाणवुं. सुधर्मा स्वामीने जंबु स्वामी बे हाथ जोडी वंदन नमस्कार करी आगळ कहीशुं ते प्रमाणे प्रश्न पुछता हवा. यद्यपि (बोपण) हे पूज्य! श्रमण भगवंत श्री महावीर देव यावत मोक्ष पहोंच्या—तेमणे ज्ञाता धर्मकथा नामे छठ्ठा अंगनो पूर्वे तमे कह्यो तेवो अर्थ कह्यो तो हे पूज्य! श्रमण भगवंत श्री महावीर देव यावत मोक्ष पहोंच्या तेमणे सातमुं उपासक दशांग तेनो शुं अर्थ कहेल छे? ॥ २ ॥

अर्थः—॥ २ ॥ (सुधर्मा स्वामि कहे छे) ए० एम। ख० निश्चे। जं० हे जंबू !। स० श्रमण भगवंत महावीर। जा० यावत। सं० मोक्ष पहोंच्या। तेमणे। स० सातमा। अं० अंग। उ० उपासक। द० दशाना। द० दस। अ०

१. D. णणं (डीमां णणं) २ Bom. (बीमां नथी) ३ B. Com. (बी. सी. मां नथी). +जुओ ज्ञाता सूत्र पाठ ४-७. + जुओ ज्ञाता पाठ ८ ने उववाइ पाठ १६.

अध्ययन। प० परुप्या। तं० ते। ज० कहे छे। आ० आणंद–१। का० काम। दे० देव। य० वळी–२। गा० गाथा। व० पति। चु० चुलणी। पि० पिया–३। सु० सुरा। दे० देव–४। चु० चुल। स० सतक–५। गा० गाथा। व० पति। कु० कुंड। को० कोलिक–६। स० सदाल। पु० पुत्र–७। म० महा। म० सतक–८। न० नन्दिनी–पि० पिता–९। सा० सालयनी। पि० पिता (तेतली पोता)–१० ॥ २ ॥

मूळपाठ–॥ २ ॥ एवं खलु, जम्बू, [1]समणेणं जाव[1] सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। तं जहा। आणन्दे। १। कामदेवे य। २। गाहावइ-चुलणीपिया[2]। ३। सुरादेवे। ४। चुल्लसयए। ५। गाहावइ–कुण्डकोलिए। ६। सद्दालपुत्ते। ७। महासयए[3]। ८। नन्दिणीपिया[4]। ९। सालिहीपिया[5]। १०। ॥ २ ॥

भावार्थः—॥ २ ॥ ते वारे सुधर्मा स्वामि कहेता हवा. एम निश्चे, हे जंबु! श्रमण भगवंत श्री महावीर देव यावत मोक्ष पहोंच्या तेमणे सातमुं उपासक दशांग तेना दश अध्ययन परुप्या (कह्यां) छे तेनां नामः–१ आणंद, २. कामदेव, ३. चुलणी पिता, ४. सुरादेव, ५. चुल्लशतक, ६. कुंड कोलीयो. ७. सदाल पुत्र, ८. महाशतक, ९. नंदणी पीता, १०. सालही पीता. ॥ २ ॥

---

१ B omits. बीमां नथी. D. E. (डी. इ मां)–समणस्स भगवओ महावीरस्स · जूओ उववाय सूत्र पाठ–१६, ने ज्ञाता सूत्र पाठ–८ २. B ('बी' मां) चुलुणी० ३. B. ('बी' मां) महसए ४ B. ('बी' मां) सालहीपिया C ('सी' मां) ललितकपिया. D. E. (डी इ मां) सालइणी पिया. ५. D. E. (डी इ मां) नंदणीपिया.

[ए दसमां एक सदाल पुत्र ज्ञाते कुंभार अने बीजा नव गाथापति जाणवा.]

अर्थः—॥ २ ॥ ज० जो। णं० वळी। भं० हे भगवंत (पूज्य)!। स० श्रमण। भगवंत महावीर देवे। जा० यावत। सं० मोक्ष पहोंच्या। तेमणे। स० सातमो। अं० अंग। उ० उपासग। द० दशांगना। द० दश। अ० अध्ययन। पं० परुप्या। ते मांहि। प० पहेला अध्ययनने। णं० विषे। भं० हे पूज्य!। स० श्रमण भगवंते। जा० यावत। सं० मोक्ष पहोंच्या। तेमणे। के० केवा। अ० अर्थ। प० परुप्या ? ॥ २ ॥

मूळपाठ—॥ २ ॥ " जइ णं, भन्ते, समणेणं जाव* सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं, भन्ते, समणेणं[1] जाव* सम्पत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? " ॥ २ ॥

भावार्थः—॥ २ ॥ ते वारे जंबू स्वामि पूछता हवा, यद्यपि हे पूज्य! श्रमण भगवंत श्री महावीर देव यावत मोक्ष पहोंच्या तेमणे सातमुं उपासक दशांग तेना दश अध्ययन परुप्या छे, तो श्रमण भगवंत श्री महावीर देव यावत मोक्ष पहोंच्या तेमणे प्रथम अध्ययन विषे शुं अर्थ कहेल छे ? ॥ २ ॥

अर्थः—॥ ३ ॥ (सुधर्मा स्वामि कहे छे) ए० एम। ख० निश्चे। जं० हे जम्बू। ते० ते। का० काळे। ते० ते। स० समाने विषे। वा० वाणिज गाम। ना० नामे। न० नगरी। हो० हती। व० वर्णन। उववाय सूत्रथी जाणवुं। त० ते। वा० वाणिज गाम। न० नगरनी। ब० बाहिर। उ० उत्तर। पु० पूर्व। दि० दिशाए एटले इशान खूणे। दू० दूइपलास।

D. E. Omit. (डी. इ. मां नथी) * जुओ उववाइ सूत्र पाठ १६, ने ज्ञाता सूत्र पाठ ८.

ना० नामे । चे० उद्यान हतुं । त० त्यां । णं० वळी । वा० वाणिज गाम । न० नगरने विषे । जि० जितशत्रु । रा० राजा । हो० हतो । व० तेनुं वर्णन । उववाइ सूत्रथी जाणवुं । त० त्यां । णं० वळी । वा० वाणिज गाममां । आ० आणंद । ना० नामनो । गा० गाथापति (गृहस्थ) । प० वसतो । अ० ऋद्धिवंत । जा० यावत । अ० कोइ पराभव करी शके नहि एवो महा समर्थ हतो ॥ ३ ॥

मूळपाठः—॥ ३ ॥ एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे[1] होत्था[2] । वण्णओ ॥ तस्स[3] वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे[4] दिसीभाए दूइपलासए[5] नामं[6] चेइए ॥ तत्थ णं वाणियगामे नयरे[7] जियसत्तू राया होत्था । वण्णओ[×] ॥ तत्थ णं वाणियगामे आणन्दे नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे[8] जाव[+] अपरिभूए ॥ २ ॥

भावार्थः—॥ ३ ॥ ते वारे सुधर्मास्वामी कहेता हवा, एम निश्चे हे जंबू ! ते काळ ते समयने विषे वाणिज्य गाम नामे नगर (प्रथम थोडी वस्तीवाळुं नानुं गाम हतुं पछी वस्ती वधवाथी महोटुं नगर थयुं तेथी इहां गाम, नगर ए बन्ने शब्द कहेल छे.) हतुं. तेनुं वर्णन उववाइ सूत्रमां चंपा नगरीनी पेरे जाणवुं. ते वाणिज्य गाम नगरनी

१. B ('बी' मां) नगरे. २. B ('बी' मां) हुत्था. ° जुओ उववाइ पाठ-१. ३. B ('बी' मां) तत्थ. ४. C D E (सी. डी. ई. मां) °पुरच्छिमे ५. D (डी मां) दूइपलासे. E (ई. मां) दूयपलासए. ६ B C D. E (बी. सी. डी ई मां) Omit नथी. ७ A (ए. मां) नगरे. × जुओ उववाइ पाठ-११. ८. B. (बी. मां) इड्ढे + जुओ उववाइ पाठ-११-१०२

बाहिर उत्तर अने पूर्व दिशानी वचमां एटले इशान खूणमां दुतीपलास नामे वन हतुं. तेनुं वर्णन उववाइ सूत्रमां पूर्णभद्र वननी पेरे जाणवुं. ते वाणिज्य गाम नगरने विषे जित शत्रु नामे राजा हतो. तेनुं वर्णन उववाइ सूत्रमां कोणिक राजानी पेरे जाणवुं. ते वाणिज्य गाम नगरने विषे आणंद नामे गाथापती वसतो हतो. ते धन (म्होर वंधी रोकड नाणुं), धान्य (अनाज), रुपुं, सुवर्णादिक ऋद्धिए करी दीपतो प्रसिद्ध हतो. तेमज पोहोळा घर, सुवा-वेसवाना आसन, गाडा, गाडी, पालखी, घोडादिक वाहन पण जेने घणां हतां. वळी धन वमणुं-त्रणगणुं वधारवा वस्त्रादिक आपे, जेम वाहाण उपर वसें धीरे अने ते वाहाण परदेश जइ पाछुं आवे त्यारे बसेना पांचसे लेशुं एवी रीते धीरवारुप व्यापारादिके करी सहित अने जेहने त्यां नाखी देवाना अन्न पाणी घणां एटले घणां लोक जमतां पण नाखी देवुं पडे एटले पुष्कळ रंधातुं. वळी जेने दास, दासी, गाय, भेंस, बळद घणा हता एवी पूर्वोक्त ऋद्धिए करी सहित होवाथी घणा लोकोथी पण पराभवी (जीती) शकाय नहि एहवो हतो. ॥ ३ ॥

अर्थः—॥ ४ ॥ त० ते। णं० वळी। आ० आणंद। गा० गाथापति (गृहस्थ) ने। च० चार। हि० सोनानी। को० कोडी (क्रोड)। नि० भूमि मांही। प० दाटेल हती। च० चार। हि० सुवर्ण (सोनानी)। को० कोडि (क्रोड)। व० व्याजे। प० मुकेल हती। च० चार। हि० सोनानी। को० कोडी (क्रोड)। प० व्यापारमां तथा घर वखरामां। प० नाखेल हती। च० चार। व० गोकुल वर्ग। द० दस। गो० गायना। सा० हजार एटले दस हजार गायनो। व० एक वर्ग (टोळुं) गोकुल, एहवा चार गोकुल। हो० हता ॥ ४ ॥

ना कुटुंबने विषे, बीजाने कहेवाय नहि एहवी छानी वातने विषे, एकांत मर्मवाळी वातने विषे, ए वात एमज करवी जोइए एहवी निश्चय वातने विषे, तेडवा मोकलवा रूप तथा व्यापारने विषे, पूर्वोक्त सर्व वातने विषे एकवार तथा वारंवार पूछवा योग्य छे तेमज पोताना कुटुंबने विषे म्होटा स्थंभ समान अने उपले माळे चडतां दोरडानो आधार छे तथा लोचन (आंख) ने जेम पांपचानो आधार छे, तेम लोकोना प्रवृत्ति-निवृत्तिरूप विविध प्रकारना सर्व परोपकारी शुभ करवाने विषे म्होटो आधारभूत समर्थ हतो. ॥ ५ ॥

अर्थः-॥ ६ ॥ त० ते। णं० वळी। आ० आणंद। गा० गाथापति (गृहस्थ) ने। सि० सिवनंदा। ना० नामनी। भा० स्त्री। हो० हती। अ० नथी। ही० एके इंद्रिहीण नथी एहवी (एटले पांचे इन्द्रि पूर्ण। ३२ लक्षण। ६४ कळा योग्य)। जा० यावत। सु० स्वरूप छे जेहने। आ० आणंद। गा० गृहस्थने। इ० वल्लभ। आ० आणंद। गा० गृहस्थ। स० संघाते। अ० निरंतर। अनुरक्त एटले जेने घणो प्रेम छे। न० नथी। वि० विरक्त नथी। इ० मनोज्ञ (इष्ट)। स० सब्दादिक। जा० यावत। प० पांच। वि० प्रकारना। मा० मनुष्य संबंधी। का० काम। भो० भोग। प० भोगवती थकी। वि० विचरे ॥ ६ ॥

मूळपाठः-॥ ६ ॥ तस्स णं आणन्दस्स गाहावइस्स सिवनन्दा[1] नामं नारिया होत्था, अहीण जाव[+] सुरुवा। आणन्दस्स गाहावइस्स इट्ठा, आणन्देणं गाहावइणा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठा,[2] सद्द जाव[+] पञ्चविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणी[3] विहरइ॥

१. D. E (डी. इ मां) सिवाणंदा + जुओ-उववाइ सूत्र पाठ १२. २. \. (ए. मां) इटुंसद्दे. जुओ उववाइसूत्र पाठ १२. जुओ-ज्ञातासूत्र पाठ. १२६. ३. A B C. D F (ए. बी. सी. डी. इ मां) पच्चणुब्भ०

भावार्थः—॥ ६ ॥ ते आणंद गाथापतिने पांचे इंद्रिओए करी परिपूर्ण साथीआ प्रमुख ३२ लक्षण तथा मस-तिलकादिके करी सहित यावत चोसठ कळानी जाण, स्त्रीना गुणे करी पूर्ण, स्वरुपवंत एवी शिवानंदा नामे स्त्री हती. ते आणंद गाथापतिने अत्यंत वल्लभ हती अने ते आणंद गाथापति संघाते विरक्त रहित, अत्यंत अनुरक्तथकी इष्ट शब्द, रूप, गंध, रसने स्पर्श ए पांच प्रकारना मनुष्य संबंधी काम (कानने आंखनो विषय) भोग (नाशीका, जीभ, ने काया ए त्रणनो विषय) भोगवती थकी विचरती हवी. ॥ ६ ॥

अर्थः—॥ ७ ॥ त० ते। णं० वळी। वा० वाणिय। गा० गाम। व० बाहेर। उ० उत्तर। पु० पुर्व। दि० दिशाना। भा० भागे एटले इशान खुणे। ए० तिहां। णं० वळी। को० कोलास। ना० नामे। सं० संनिवेस एटले पाडो। हो० हतो। रि० रिद्धिवंत। जा० यावत। पा० जोवा योग्य। ४ ॥ ७ ॥

मूळपाठः—॥ ७ ॥ तस्स णं वाणियगामस्स बहिया उत्तर पुरछिमे[१] दिसीभाए एछ[२] णं कोल्लाए[३] नामं सन्निवेसे[४] होछा, रिद्धछिमिय[५] जाव पासादीए[६] ४[७] ॥ ७ ॥

भावार्थः—॥ ७ ॥ ते वाणीज्य गाम नगरनी बाहिर ढुकडो पूर्व-उत्तरना मध्य भागे एटले इशान खूणने विषे मनोहर, मांहि प्रतिबींब देखाय, चित्तने प्रसन्नकारी, जोतां दृष्टिने थाक लागे नहि, जोवा योग्य ने घणो ऋद्धिवंत एहवो कोलाग नामे सन्निवेश हतो. ॥ ७ ॥

---

१ C. D E (सी डी इ. मां) °च्छि° २ A (ए. मां) तत्थ ३. E (इ मां) कोल्लागए. ४ B. C. (बी. सी. मां) संणिवेसे. ५. C. (सी) रिद्धत्थमिइय D E. (डी इ. मां) रिद्धित्थमिए ॰ बाकीनो पाठ उववाइ सूत्र पाठ १ मां जूओ. ६. C. (सी. मां) पासादिया. ७. B, D E. Omits (बी. डी. इ मां नथी.)

अर्थः—॥ ८ ॥ तं० ते। णं० वळी। को० कोल्लाग। सं० सन्निवेस (पाडा) ने विषे। आ० आणंद। गा० गृहस्थना। ब० घणा। मि० मित्र। ना० ज्ञाति। नि० पोताना। स० स्वजन। सं० संबंधी (वेवाइ)। प० दास दासी। प० वसे छे। अ० ऋद्धिवंत। जा० यावत। अ० अन्यलोक पराभव न करी शके तेवा ॥ ८ ॥

मूळपाठः—॥ ८ ॥ तत्थ णं कोल्लाए सन्निवेसे[1] आणन्दस्स गाहावइस्स बहुए[2] मित्त-नाइ[3]नियगसयणसम्बन्धि[4]परिजणे[5] परिवसइ, अड्ढे जाव[*] अपरिभूए ॥ ८ ॥

भावार्थः— ॥ ८ ॥ ते कोल्लाग सन्निवेशने विषे आणंद गाथापतिना घणा ऋद्धिवंत यावत कोइना पराभव्या न जाय एहवा मित्र, ज्ञाति, पुत्र, पौत्रादि, वेवाइ, दास–दासी प्रमुख घणां वसतां हतां. ॥ ८ ॥

अर्थः—॥ ९ ॥ ते० ते। का० काळने विषे। ते० ते। स० समयने विषे। स० श्रमण। भ० भगवंत। म० महावीरदेव। जा० यावत। स० समोसर्या (वनमां आवी उतर्या)। प० परिषदा। नि० वांदवा नीसरी (गइ) कू० जेम कूणिक। रा० राजा। ज० जेम। वांदवा गयो हतो। त० तेम। जि० जितशत्रु राजा वांदवा। नि० निकळ्यो। नि० निकळीने। जा० यावत प० सेवा करी तेमे ॥ ९ ॥

---

१. B. C. (बी. सी. मां) संनिवेसे. २. C. ('सी' मां.) बहवे. D. (डी. मां) बहुवे. ३. A. (ए. मां) °नाय, ° B. D. C. E (बी. डी सी. इ. मां) °णाइ° B. C. D. E. (बी. सी. डी. इ. मां) °णियग° ४. A, (ए. मा) °संबंध° ५. A. C. (ए. सी. मां) °परियणे. * जुओ उववाइ सूत्र पाठ ११-१०२.

मूळपाठः—॥ ए॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव[*] समोसरिए । परिसा निग्गया । कूणिए[1] राया जहा तहा[×2] जियसत्तू[3] निग्गहइ, रत्ता जाव[+] पज्जुवासइ[4] ॥ ए ॥

भावार्थः—॥ ९ ॥ ते काळ ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव यावत दुतीपलास नामे वनमांहि समोसर्या (पधार्या). ते वारे प्रपदा वांदवा गइ. उववाइ सूत्रमां जेम कोर्णिक राजा वांदवा गया हता तेम जीतशत्रु राजा भगवंतने वांदवा नीकळे, नीकळीने ज्यां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव हता त्यां आवीने त्रणवार जमणा पासाथी आवर्त्तन करी, वांदी, नमस्कार करी अति ढुकडो नहिं, अति वेगळो नहि एवी रीते शुश्रुषा करी नमस्कार करतो सन्मुख बे हाथ जोडी विनय सहित सेवा करवा लाग्यो. ॥ ९ ॥

अर्थः—॥ १० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । आ० आणंद । गा० गाथापति । इ० एहवी । क० कथा वार्त्ता । ल० लाधे । स० थके । (सांभळे थके) । ए० एम । ख० निश्चे । स० श्रमण । जा० यावत । वि० इहां विचरे छे । तं० तो तेमने वांद्यानो । म० मोहोटो फळ छे तो । ग० हुं जाउं । णं० वळी । जा० यावत ।

* जूओ उववाइ सूत्र पाठ ३८ जूओ ज्ञाता सूत्र पाठ १२९. जूओ निरयावलिया सूत्र पाठ ३. जूओ भगवती सूत्र पानुं ३०६–३०७. १. A (ए. मां) कुणिए. E. (इ मां) कोणिए. × जूओ उववाइ सूत्र पाठ ३९–५४. २. E Omit (इ. मां) नथी. ३ E Adds राया (इ. मा) राया शब्द छे + जूओ ज्ञाता सूत्र पाठ १३१ जूओ भगवती सूत्र पानुं २५९. जूओ निरयावलिया सूत्र पाठ ४ A (ए. मां) पज्जवासइ.

प० सेवा । पर्युपासना (भक्ति) करूं । ए० एहवुं । सं० चिंतवे (विचारे) । सं० चिंतवीने (विचारीने) । ण्हा० स्नान करे । सु० शुद्ध-निर्मळ । वे० वेष (वस्त्र) । जा० यावत । अ० अल्पभार । म० मूल्य घणुं । आ० एहवा आभरणे (दागीना) । अ० शोभाव्युं छे । स० शरीर जेणे । स० पोताना । गि० घर थकी । प० निकळे । प० नीकळीने । स० कोरंट नामा वृक्षना फूलनी । म० माळा सहित । छ० छत्र । ध० माथे धरावतो । म० मनुष्य । व० वृन्द परिवारे । प० परिवर्यो-वींट्यो थको । पा० पाळो । वि० पोताने पगे । चा० चालतो थको । वा० वाणिज गाम । न० नगर तेनी । म० मध्यो । म० मध्य । नि० निसरे (चाले) । नि० निसरीने (चालीने) । जे० जिहां । ए० वळी । दू० दूइपलास । चे० उद्यान अथवा वन खंड (बगीचो) छे । जे० जिहां । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देव छे । ते० तिहां । ए० वळी । उ० आवे । उ० आवीने । ति० त्रणवार । आ० जमणा पास थकी । प० प्रदक्षणा । क० करे । क० करीने । व० वांदे । न० नमस्कार करे । जा० यावत । प० सेवा भक्ति करी बेसे ॥ १० ॥

मूळपाठः—॥ १० ॥ तए णं से आणन्दे गाहावई[1] इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे, " एवं खलु समणे[2] जाव विहरइ, तं महाफलं, गच्छामि णं जाव[+] पज्जुवासामि[4] " एवं सम्पेहेइ,

---

१ A D E (ए डी. इ. मां) गाहावइ २ D. E add. (डी इ मा वधारो) भगवं. · जूओ उव-वाइ सूत्र पाठ १६ नें ज्ञाता सूत्र पाठ ८. ३ A. B. add (ए. बी. मा वधारो) जाव. + जूओ ज्ञाता सूत्र पाठ १३१. जूओ भगवती सूत्र पानुं २५९ जूओ निरयावलीका सूत्र पाठ ४. ४. A (ए मां) पज्जुवासामि.

रत्ता ण्हाए[1] सुद्धप्पावेसाइं[2] जाव[×] अप्पमहग्घाभरणालङ्किय सरीरे[3] सयाउ[4] गिहाउ पडि-णिक्खमइ,[5] रत्ता सकोरेण्ट मल्लदामेणं[6] छत्तेणं धरिज्जमाणेणं[7] मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते[8] पायविहारचारेणं[9] वाणियगामं[10] नयरं[11] मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, रत्ता जेणामेव[12] दूइ-पलासे[13] चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, रत्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं[14] पयाहिणं करेइ, रत्ता वन्दइ नमंसइ जाव[§] पज्जुवासइ[15] ॥ १० ॥

भावार्थः—॥ १० ॥ ते वारे ते आणंद गाथापतिए एहवी वातनो अर्थ लाध्यो एटले एहवी वात सांभळी के एम निश्चे इहां दुतीपलास नामे बगीचाने विषे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव विचरे छे एहवुं सांभळी चिंतववा लाग्यो के, ते प्रभुने वंदन नमस्कारादिक करवानुं महाफळ छे. ते माटे हुं पण जाउं ने ते महावीरने, वांदु यावत

१. E (इ मां) ण्हाये. २ A. (ए. मां) सुधप्पवे° C (सी. मां) °प्पवेसा. + जूओ कल्प सूत्र पाठ ६६, १०४ जूओ उववाइ सूत्र पाठ १७. ३ B. Omits. (बी. मां नथी) भरणालङ्किय सरीरे D E Omit (डी इ मां नथी) लङ्कियसरीरे. ४ B (बी मां) सहातो D. (डी मां) सातो. E (इ) साओ. ५. C. (सी) पडिणिगमइ. E (इ) पडिनि° ६. C (सी.) कोरिंटिक° A. D. E (ए. डी इ) कोरट° ७. C. (सी) धारि° ८ C D E. (सी डी. इ) माणु° ९ A. (ए) °विहारे चा° B (बी) पाद°. D. (डी) पाइ° १०. E. (इ) °गामं. ११. B. (बी) णगरं. १२ C. (सी) जेणेव १३. A. E (ए इ) दूय° १४. B. D. E. (बी. डी. इ. मां नथी). Omit. आय हिण पयाहिण करेइ रत्ता. १५ A. (ए.) पज्जवासइ.

सेवाभक्ति करुं एवुं मनमां विचारी, स्नानमंजन वळी कर्म (कोगळा) करी, पछी कौतक मंगळ (तीलक–टपकादिक) करे, पछी शुद्ध–निर्मळ वस्त्र पेहेरी भार थोडो ने मूल्य घणुं एहवा आभरणे (घरेणां) शरीर शोभावी पोताना घर थकी नीकळीने कोरंट वृक्षना फूलनी माळाए विंटेलुं एहवुं छत्र मस्तके धरावतो मनुष्योना वृंदे परिवर्यो थको, पोताना पगे चालतो थको वाणिज्य ग्राम–नगरनी मध्योमध्य थइ नीकळीने ज्यां दुतीपलास नामे उद्यान छे, ज्यां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव छे त्यां आवीने त्रणवार जमणा पासाथी प्रदक्षिणा करी, वांदी नमस्कार करे अने अति ढूकडो नहिं, अति वेगळो नहि एवी रीते सुश्रुषा करतो, नमस्कार करतो सन्मुख हाथ जोडी विनय सेवा करतो हवो. ॥१०॥

अर्थः–॥ ११ ॥ त० ते वार पछी । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देवे । आ० आणंद । गा० गाथापति (गृहस्थ) । ती० प्रते । य० वळी (तथा) । म० मोटामां । म० मोटी । प० परिखदाने । जा० यावत । ध० धर्म । क० कथा कही । प० परिषदा । प० पाछी वळी । रा० राजा । य० वळी । ग० पाछो वळ्यो ॥११॥

मूळपाठः–॥ ११ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे आणन्दस्स गाहावइस्स[1] तीसे य महइमहालियाए[2] परिसाए[3] जाव[4]। धम्मकहा[*]। परिसा पडिगया राया य[5] गए[6] ॥११॥

१. A (ए) गाहावगस्स २. A Only (ए मां फक्त) महाय B Omits whole. (बी मां आखो पाठ नथी) C Omits (सी मां नथी) महइ. D E Omits (डी इ. मां नथी) महालियाए ३. A B D E Omits (ए बी डी. इ मां नथी) * जुओ उववाइ सूत्र पाठ ५६ जुओ ज्ञाता सूत्र पाठ १३२ ४. D E (डी इ. मां) °कहाए. जुओ निरयावलिया सूत्र पाठ ४. जुओ भगवती सूत्र पानुं २७१, पाठ ५० ५ A. B Omits (ए. बी. मा नथी.) E. (इ. मा) वि, ६, A (ए मां) गया, D E (डी. इ मां) गओ.

भावार्थः—॥ ११ ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव आणंद गाथापतिने म्होटी प्रषदाने योग्य धर्मकथा कहे ते एवी रीते के, (दस द्रष्टांते मनुष्यनो भव मळवो मुश्केल छे. जो मनुष्यनो भव मळे तो आर्य क्षेत्र (भूमि) मळवुं मुश्केल; जो आर्यक्षेत्र मळे तो उत्तम कूळ मळवुं मुश्केल; जो उत्तम कूळ मळे तो उत्तमजाति मळवो मुश्केल; जो उत्तम जाति मळे तो रुप, संपदा मळवी मुश्केल; जो रुप संपदा मळे तो पांच इंद्रि पूर्ण ने नीरोगी शरीर मळवुं मुश्केल; जो पांच इंद्रिओ पूर्ण ने नीरोगी शरीर मळे तो लांबु आयुष्य मळवुं मुश्केल; जो लांबु आयुष्य मळे तो हीताहीतनो विचार करवा रुप विज्ञान थवुं मुश्केल; जो विज्ञान थाय तो दया धर्मनुं सांभळवुं मुश्केल; जो दया—धर्मनुं सांभळवुं थाय तो ते धर्मने धारण करवो मुश्केल; जो ते धर्म धारण करे तो धर्मनी श्रद्धा थवी मुश्केल; जो श्रद्धा थाय तो व्रत पच्चखाण करवा मुश्केल; एवी रीते दशे प्रकारनी जोगवाइ मळवी अनंते काळे मुश्केल छे. ते जोगवाइ पामीने जे जीव धर्म नहि करे ते जीव अनंत संसारने विषे वारंवार दुःख पामशे. एम जाणी साधुनो समकित सहित पंच महाव्रत रुप अने श्रावकनो समकित सहित वार व्रतरुप धर्म करशे ते जीव सुखी थशे. इत्यादि.) धर्म कथा पूर्ण थया पछी प्रषदा जेम आवी हती तेम पाछी गइ अने जीतशत्रु राजा पण पाछो गयो. ॥ ११ ॥

अर्थः—॥ १२ ॥ त० ते वार पछी । णं० वळी । से० ते । आ० आणंद । गा० गृहस्थ । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देव । अं० समीपे । ध० धर्म । सो० सांभळीने । नि० हैयाने विषे धरीने । ह० हर्ष । तु० संतोष पामी । जा० यावत । ए० एम । व० बोलतो हवो । स० सदह्यो । णं० वळी । भं० हे भगवंत । नि०

निग्रंथ । पा० प्रवचन । प० प्रतीत्यो (प्रतित आणी॰) । णं० वळी । भं० हे भगवंत । नि० निग्रंथ । पा० प्रव-
चन । रो० माहरा मने रुच्यो । णं० वळी । भं० हे भगवंत । नि० निग्रंथ । पा० प्रवचन । ए० ए । ए० एमज
छे । भं० हे भगवंत । त० तेमज तत्वरुप । ए० ते धर्म साचो । भं० हे भगवंत । अ० अवितथ्य विशेष एटले तमे
कहो छो ते विपरीत नथी । ए० ते साचुं । भं० हे भगवंत । इ० में (वांछ्यो) इच्छयो । ए० ते । भं० हे
भगवंत । प० विशेष इच्छयो (वांछयो) । ए० ए (पुनः प्रवचन में) । भं० हे भगवंत । इ० प्रवचनमे इच्छी
(वांछी) ने । प० प्रतीत्युं । ए० ए । भ० हे भगवंत । से० ते । ज० जे कहो छो । ए० एहवो । तु० तमे । व० कह्यो ।
तेमज बीजो कहे नहि । त्ति० एटलुं । क० कहीने । ज० जेम तमारी । णं० वळी । दे० हे देवाणुपिया । अं० स-
मीपे । व० घणा । रा० राजा । इ० इश्वर ते सामान्य राजा । त० राज्य दीधा पट बांधे ते तथा तलाटी । कोटवाळ ।
मा० मांडवीया एक खंडना राजा । को० मोटा कुटुंबना धणी । में० नगरशेठ । स० साथ चलावे ते । सार्थवाह ।
प्प० इत्यादिक जेम । मु० मुंड । भ० थावा (साधु थावा) । आ० गृहस्थवास छांडी । अ० साधु थया । प० प्रव्र-
ज्यां लीधी । नो० नहि । ख० निश्चे । अ० हुं । त० तेम । सं० समर्थ । मु० मुंड, साधु थावा । जा० यावत ।
प० प्रव्रज्यां लेवा । अ० हुं । णं० वळी । हे । दे० देवाणु पिया तमारी । अं० समीपने विषे । प० पांच । अ० अणुव्रत ।
स० सात । सि० शिक्षाव्रतरुप । दु० बार । वि० प्रकारनो । गि० गहस्थ । ध० धर्म । प० पडिवजिश (अंगिकार
करीश) । अ० यथा । सु० सुखं । दे० हे देवाणु । पि० प्रिय । मा० न । प० प्रतिबंधन (प्रमाद) ।
क० करीश ॥ १२ ॥

मूळपाठः—॥ १२ ॥ तए णं से आणन्दे गाहावई[1] समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा[2] निसम्म हट्ठतुट्ठ[3] जाव एवं वयासी[4] । "सद्दहामि णं, भन्ते, निग्गन्थं[5] पावयणं, पत्तियामि णं, भन्ते, निग्गन्थं पावयणं, रोएमि णं, भन्ते, निग्गन्थं पावयणं[6], एवमेयं भन्ते, तहमेयं भन्ते, अवितहमेयं भन्ते, इच्छियमेयं[7] भन्ते, पडिच्छियमेयं भन्ते, इच्छियपडिच्छियमेयं[8] भन्ते, से जहेयं[9] तुब्भे वयह,[10] त्ति कट्टु जहा णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे राईसरतलवरमाडम्बियकोडुम्बियसेट्ठिसत्थवाहप्पभिइया[11] मुण्डा[12] भवित्ता

१ D E. (डी इ) °वइ २. A. (ए मां) सुच्चा. ३ A D. E. Omit तुट्ठ (ए डी इ मां तुट्ठ नथी). * जुओ ज्ञातासूत्र पाठ २३. जुओ उववाइ सूत्र पाठ १७ जुओ कल्प सूत्र पाठ ५ जुओ भगवती सूत्र पानुं २६० ४ C (सी) वदासी ५ C (सी) निग्गथे पावयणे. ६ B C have 3 Instead of पत्तियामि, etc, (बी सी मां पत्तियामि (थी) पावयण (सुधीनो पाठ नथी, पण तेने बदले) ३ (छे.) D E (डी इ मां उपलो पाठ नथी) Omits entirely ७ C Omits इच्छियमेयं भन्ते. पडिच्छियमेयं भन्ते ('सी' मां उपलो पाठ नथी) ८ D E Omits (डी इ. मां नथी) B C. D. E add जाव (बी सी. डी इ. मां जाव बधारे छे.) ९. D (डी) जहेह १० B C D (बी. सी डी) वदह ११ A (ए) राइसर °, B E (बी इ) °कोडंबिय °; D (डी) °कोडुंबिय ° B (बी) °सिट्ठि °; C. (सी) °सिट्ठा सेणा वईसत्थ °; D. (डी.) °सेट्ठिय °, B (बी) °भिईओ १२ A. B C (ए बी सी) मुंडे D. E. Omit. (डी इ. मां नथी) मु भ.

आगाराओ अणगारियं पव्वइया, नो खलु अहं तहा संचाएमि मुण्डे जाव पव्वइत्तए। अहण्णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि। अहासुहं, देवाणुप्पिया, मा पडिबन्धं करेह ॥ १२ ॥

भावार्थः—॥ १२ ॥ ते वारे ते आणंद गाथापति श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी पासे धर्मोपदेश सांभली, चित्तमां धरी हर्ष संतोष पाम्यो ने हृदय हुल्लासमान थए एम बोलतो हवो, हे भगवंत ! ए निर्ग्रंथ प्रवचन धर्म हुं श्रद्धु छुं. हे भगवंत ! ए निर्ग्रंथ प्रवचन धर्मनी हुं प्रतित आणुं छुं. हे भगवंत ! ए निर्ग्रंथ प्रवचन धर्म मारा मनमां रुच्यो छे. हे भगवंत ! ए निर्ग्रंथ प्रवचनने विषे सावधान थयो छुं. हे भगवंत ! ए निर्ग्रंथ प्रवचन एमज छे. हे भगवंत ! ए सत्य तत्त्व रुप धर्म छे. हे भगवंत ! ए धर्म में इच्छयो छे. हे भगवंत ! ए धर्म में विशेष इच्छयो छे. हे भगवंत ! ए धर्म में इच्छीने प्रतियो छे. तमे कह्यो छे ए अर्थ सत्य छे. हे भगवंत ! तमे जे धर्म कह्यो छे एहवो बीजो कोइ नथी. एम कहीने प्रभुने वांदी, नमस्कार करी एम कहेता हवा, हे देवने वल्लभकारी प्रभु ! घणा थेड-

१ D. Add (डोमां वधारे छे). जाव पज्जनिता. E. (इ.) पव्वइत्ता. – जावने बदले नीचेनो पाठ जोइए. भवित्ता आगाराओ अणगारियं. २. B. (बी.) अहन्नं. A. C. (ए सी) अहण्णं ३. D. (डी.) देवाणुप्पियाणं. ४ C. E. (सी इ) °सिक्खवइयं. ५. A. (ए.) गिह° ६. E. (इ) अहा° ७. E. ('इ' मां नथी.) Omits. ८. A. (ए.) करेहि.

लीक इश्वर, युवराज, मुगटबंध राजा, कोटवाळ, प्रधान, एक खंडना राजा तथा मंडप (मांडवी) ना अधिपति, म्होटा कुटुंबना नायक, इभ शेठ ते चारसें धनुष्यनो उंचो हाथी ते उपर त्रणसे धनुष्यनी अंबाडी एटलो रत्नथी ढंकाइ जाय एहवो लक्ष्मीवंत नगरशेठ, सेन्याधिपति, साथ चलावे ते सार्थवाह इत्यादिक सोनुं, रूपुं, धन, धान्य, मणी, मोती, शंख, परवाळां, अनेक रत्ननी जाति, सैन्य, कोठार, वाहन, भंडार, नगर, अंतःउर (स्त्रीओ) इत्यादि मार वस्तु तजी, गृहस्था वास छांडी जेम तमारी पासे मुंड थइ प्रवर्ज्या लीधी तेम निश्चे हुं मुंड थइ यावत प्रवर्ज्या लेवा समर्थ नथी तेथी हे देवने वल्लभकारी ! प्रभु ! हुं तमारी पासे पांच अणुव्रत, सात शिक्षाव्रत, ए बार व्रतरूप गृहस्थनो धर्म अंगिकार करीश. ते वारे भगवंत कहे, हे देवने वल्लभकारी ! एह वातनो प्रतिबंध करशो नहिं. ॥ १२ ॥

अर्थः—॥१३॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । आ० आणंद । गा० गाथापति (गृहस्थ)। स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देवनी । अं० समीपे । त० ते मांहि । प० (पांच अणुव्रत मांहि) प्रथम । थू० मोटा । पा० प्राणातिपात (बेइन्द्रियादिक) प्राणी जीवने मारवाना । प० पच्चखाण करे । जा० जावजीव लगी । दु० बेहु । वि० (करणे) प्रकारे । ति० त्रि । वि० वीधे । त्रिवीधे (त्रण योगे) । न० न । क० करुं । न० न । का० करावुं । म० मने करी । व० वचने करी । का० कायाए करी ॥ १३ ॥

मूळपाठः—॥ १३ ॥ तए णं से आणन्दे गाहावई[1] समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए तप्पढमयाए थूलगं[2] पाणाइवायं[3] पच्चक्खाइ । "जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा" ॥ १३ ॥

भावार्थः—॥ १३ ॥ ते वारे आणंद गाथापतिए श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी पासे पहेलुं स्थूल (मोटु) प्राणातिपात (प्राणनो विनाश) पचख्युं अर्थात् आ दुनियामां सिद्ध भगवंत सिवाय, १. स्थावर (स्थिर रहे— एक जग्याएथी बीजी जग्याए जइ शके नहि ते); अने (२). त्रस (दुःखथी त्रास पामे ने एक जग्याएथी बीजी जग्याए जइ शके एवा हरता—फरता जीव); एवा ! प्रकारना जीव छे. ते मांहि १. पृथ्वी, २. पाणी, ३. अग्नि, ४. वायु, ५. वनस्पति ए पांच प्रकारे स्थावर जीव छे, अने (२) बेइंद्रि ते (१) जीभ ने (२) स्पर्शेन्द्रि ते काया एवी बेइंद्रियवाळा जीव ते कीडा, करमीया, पोरा, जळो, अळशीयां, कोडा, कोडी, शंख, छीप इत्यादिक. (३) तेइन्द्रि ते—१. नासीका, २. जीभ, ३. स्पर्श, एवी त्रण इंद्रियाळा जीव, ते—कीडी, मंकोडा, चांचड, मांकड, जुं, लीख, उधेइ, धनेडा, कानखजुरा इत्यादिक. (४). चौरेंद्रि ते—१. आंख, २. नासीका, ३ जीभ, ४. स्पर्शेंद्रि ते काया, ए चार इंद्रियाळा जीव ते भमरा, भमरी, मांखी, मच्छर, तीड, पतंगीया, वींछी, डांस, मसी, फुदा, नमरा,

१. A. B. E (अ. डी. इ.) °इ. २. A. E. B. (अ. इ. बी.) थूल. C. D. (सी. डी.) थूलय. ३. C (सी.) पाणायवाय. ४. D. E (डी. इ.) °करयामि.

कंसारी इत्यादिक. (५) पचेंद्रि जीव ते–१. कान, २. आंख, ३. नासीका, ४. जीभ, ५. स्पर्शेंद्रि ते काया, ए पांच ईंद्रिवाळा ते–१. नारकी, २. तिर्यंच पचेंद्रि जीव तेना मुख्य पांच भेद छेः—

१. जळमां चालनारा जीव ते मधर, मच्छ, काचवा वगेरे. २. जमीन उपर चालनारा चारपगा तमाम पशु. ३. आकाशमां चालनारा तमाम पंखी. ४. हैयाभेर चालनारा ते सर्प, अजगरादिक जीव. ५. बे भूजाना जोरथी चालनारा ते–नोळीया, कोळ, काकीडा, खीसकोली उंदर वगेरे जीव. ए पांच प्रकारे तिर्यंच पचेंद्रि जीव जाणवा. ३. मनुष्य, ४. देवता ए चार प्रकारे जाणवा. पूर्वे कह्या ते त्रस अने स्थावर एवा बे प्रकारना जीव छे ते मांहि पुन्याइ आश्री स्थावर जीव नाना गणाय छे अने त्रस जोव म्होटा गणाय छे तेथी म्होटा त्रस जीवने हणवाना पच्चखाण (बंधी) करे ते एवी रीते–बे करण अने त्रण जोगे करी एटले–(१) त्रस जीवने हणुं नहि. १ मनथी (वैक्रियादिक लब्धी मनमां फोरवी तथा मारणादिक मंत्र मनमां भणी बीजा जीवने मारी नांखे ते.), २. वचनथी (श्रापादि–कहेवाथी); ३. कायाथी. (२) त्रस जीवने हणावुं नहि. १. मनथी (वैक्रेयादिक लब्धीवडे तथा मारणादिक मंत्र मनमां भणवे बोजानुं मन फेरववाथो ते जीवनी मारफते अनेरो जीव मरावे ते). २. वचनथी (मरावानुं बीजाने कहेवुं ते.) ३. कायाथो (हाथ, प्रमुखना इसाराथी बीजा पासे-मराववुं ते.)

एवी रीते (१) हणवुं नहि, (२) हणाववुं नहि, ए बे करण अने मन, वचन अने काया ए त्रण जोग ए छए कोटीए जावजीव सुधी त्रस जीवने हणवाना पच्चखाण करे, ए श्रावकनुं प्रथम व्रत जाणवुं. ॥१३॥

अर्थः–॥ १४ ॥ त० ते । अ० वार पछी । च० । णं० वळी । थू० थूल (मोटो) । मू० मृषावाद (जूठुं बोल-

वाना)। प० पच्चखाण करे। जा० जाव। जी० जीव लगी। दु० बे। वि० प्रकारे (करणे)। ति० त्रि। वि० विधे करी (त्रण योगे)। न० न। क० करुं (बोलुं)। न० न। का० करावुं । (बोलावुं)। म० मने करी। व० वचने करी। का० कायाए करी ॥ १४ ॥

मूळपाठः—॥ १४ ॥ तयाणन्तरं[1] च णं थूलगं[2] मूसावायं पच्चक्खाइ। "जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा" ॥ १४ ॥

भावार्थः—॥ १४ ॥ ते वार पछी म्होटुं जुठुं बोलवाना पच्चखाण करे, अर्थात् आ जगतमां क्रोधथी, लोभथी, भयथी, हांसी–मश्करीथी मुख्य ए चारे प्रकारे जुठुं बोलाय छे ते मांहि नजीवी बाबतने माटे जूठुं बोलाय छे, ते नानुं जूठुं गणाय छे अने, १. वरकन्याना काम आश्री, २. गाय, भेंस, हाथी, घोडा विगेरे पशु आश्री, ३. जमीननी हद (मर्यादा) आश्री, ४. पारकी थापण ओळववा आश्री, ५. म्होटी खोटी साक्षी पुरवा आश्री. ए पांच प्रकारे जूठुं बोले ते म्होटुं जूठुं गणाय छे ए पुर्वोक्त नानुं अने म्होटुं एवं बे प्रकारे जूठुं बोलाय छे ते मांहि मोटुं जूठुं बोलवानुं पच्चखाण करे, ते एवी रीते के हुं जीवुं त्यां सुधी म्होटुं जूठुं बोलुं नहि, मनथी (मनमां लब्धि फोरवी अथवा विद्या मंत्रवडे पोताना शरीर मांहिथी बीजुं रुप बनावी ते मांहि पोताना मननी प्रेरणा करी जूठुं बोलवुं ते), २. वचनथी, ३. कायाथी (माथुं फेरववुं, हाथादिके पोते ना प्रकार जणाय एवो इशारो करवो ते).

१. B. D. (बी. डी.) तदा० २. A. E. B. C. D. (ए. इ. बी. सी. डी.) थूलय.

१. म्होटुं जूठुं बोलाववुं नहि. मनथी (मनमां लब्धि मंत्रादिके बीजानुं मन फेरवी तेनी पासे जूठुं बोलाववुं ते.) २. वचनथी (बीजाने कहो जूठुं बोलाववुं ते.) ३. कायाथी (हाथ मुखना इशाराए बीजो ना मकर जाय एवी रीते करवुं ते.) एवी रीते जाव जीव सुधी बे करण ने त्रण जोगे, ए छए कोटीए म्होटुं जूठुं बोलवाना पच्चखाण करे. ॥ १४ ॥

अर्थः—॥ १५ ॥ त० ते । अ० वार पछी । च० णं० वळी । थू० थूल (मोटो) । अ० अदत्तादान लेवाना । प० पच्चखाण करे । जा० जाव जीव लगे । दु० बे । वि० मकारे (करणे) । ति० त्रि । वि० विधे । (त्रण योगे) करी । न० न । क० करुं । (लेउं) । न० अनेरा (बीजा) पासे न । का० करावुं (लेवरावुं) । म० मने करी । व० वचने करी । क० कायाए करी ॥ १५ ॥

मूळपाठः—॥ १५ ॥ तयाणन्तरं[१] च णं थूलगं[२] अदिन्नादाणं[३] पच्चक्खाइ[४] । " जावज्जीवाए[५] दुविहं तिविहेणं न करेमि[६] न कारवेमि मणसा वयसा कायसा " ॥ १५ ॥

भावार्थः—॥ १५ ॥ त्यार पछी मोटुं अदत्तादान (अण दीधेलुं लेवुं) ते चोरीनुं पच्चखाण करे. एटले चोरी बे मकारे छे. एक भर्म रहित, बीजी भर्म सहीत. तेमां कलम, सोपारीनो ककडो, छींकणी

१. C. D. E. (सी डी. इ.) तदा°. २ B D (बी डी.) थूलयं. ३ C (सी) °न्ना०. ४. C. D. E. (सी. डी. इ.) °क्खामि. ५. C. D. E. omits. (सी डी. इ. मां नथी), ६ B. (बी.)°ति.

विगेरे अल्प मूल्यवाळी चीज के जेमां कोइने भर्म पडे नहिं ते वस्तुना मालीकनी परवानगी सीवाय ले ते भर्म रहित चोरी छे.

बीजी वहु मूल्यवाळी चीज के जेमां लोकोने भर्म पडे ते. १. चोराउ वस्तु ले, २. चोरने मदद करे, ३. राज्यविरुद्ध खोटा लेख-पत्र लखे, परघर प्रवेश करे, राजाए मनाइ करेल छे ते काम, दाण चोरी प्रमुख करे ते. ४. खोटा तोल-माप राखे, ५. सारी जणस बतावी नवळी आपे, ६. खातर पाडे, गांठडी छोडी ले, ताळापर कुंची लगाडी [illegible] वाट पाडे, गाम घेरे इत्यादिक करी वहु मूल्यवाळी चीज ते वस्तुना मालीकनी परवानगी सिवाय ले के जेथी राजा दंडे ने लोकमां भंडाय ए म्होटी चोरी छे. ए बे प्रकारनी चोरी छे ते मांहि म्होटी चोरी करवानुं पच्चखाण करे, ते एवी रीते के, ज्यां सुधी हुं जीवुं त्यां सुधी १. म्होटी चोरी करुं नहि, मनथी (मनमां मंत्रादिक भणवाथी वस्तु आवे), २. वचनथी (मंत्र भणी उच्चार करवाथी वस्तु आवे), ३. कायाथी.

१. म्होटी चोरी कराखुं नहि मनथी, (मनमां मंत्र भण्याथी बीजानुं मन फेरवी तेनी मारफते चोरी करावे अथवा मंत्राधीन देवतानी पासे चोरी करावे ते), २. वचनथी, ३. कायाथी (हाथ-प्रमुखना इसाराथी करावे ते.) एवी रीते जीवतां सुधी बे करणने त्रण जोगे छए कोटीए म्होटी चोरी करवाना पच्चखाण करे. ॥ १५ ॥

अर्थः—॥ १६ ॥ त० ते । अ० वार पछी । च० नं. वळी । स० सदारा-पोतानी स्त्रीथी । सं० संतोषनो । प० परिमाण । क० करे । न० परंतु एटलो विशेष । ए० एक । सि० सिवनंदा । भा० भार्या मोकळी । अ० शेष बीजुं । स० सर्व । मे० मैथुननो । प० पच्चखाण ॥ ३ ॥ १६ ॥

मूळपाठः—॥ १६ ॥ तयाणन्तरं[१] च णं सदारसन्तोसीए[२] परिमाणं करेइ[३] । "नन्नत्थ एक्काए[४] सिवनन्दाए[५] भारियाए, अवसेसं सव्वं मेहुणविहिं[६] पच्चक्खामि[७] ३* " ॥ १६ ॥

भावार्थः—॥ १६ ॥ त्यार पछी पोतानी स्त्रीथीज संतोष तेनुं परिमाण करे एटले स्त्रीओ त्रण प्रकारनी छे.— १. देवी, २. मनुष्यणी, ३. तिर्यंचणी, तेमांहि देवी अने तिर्यंचणी साथे मैथुन सेवुं नहिं. १. मनथी, २. वचनथी, ३. कायाथी, मैथुन सेवराववुं नहि, १. मनथी, २. वचनथी, ३. कायाथी, ए प्रमाणे छए कोटीए पच्चखाण करे अने मनुष्यणी जातिनी घणी स्त्रीओ छे ते मांहि पंचनी साक्षीथी पोतानी परणेली एक शिवानंदा स्त्री सिवाय बीजी तमाम स्त्रीओ साथे जीवता सुधी कायाए करी एक करण ने एक जोगे मैथुन सेववाना पच्चखाण करुं छुं. ॥१६॥

अर्थः—॥ १७ ॥ त० ते । अ० वार पछी । च० णं. वळी । इ० इच्छा । वि० विधि । द्रव्य । परिग्रह । प० परिमाण । क० करे छे । हि० हिरण (अणघडेलु–सोनुं) । सु० सुवर्ण (सोनाना सीका) नो । वि० विधि द्रव्यनो । प० परिमाण । क० करे छे । आणंद । न० एटलो विशेष । च० चार । हि० हिरणनी । को० कोडी । नि० भूमिकाने विषे । प० दाटी मुकी छे । च० चार । हिरणनी कोडी । व० वेपारने काजे । प० वापरे छे व्याज

१ B. C D E (बी. सी डी इ) तदा°. २ B C (बी सी) °संतोसिते A D E. (ए. डी इ) °सतोसिए ३ B (बी) °मि. ४. A B (ए बी) एकाए C (सी) इक्काए. D E. (डी. इ) णण्णत्थेक्काए ५ D E (डी इ) सिवाणंदाए ६ A (ए) °विह. C. (सी) मैथुण ° ७. A. (ए.) °इ. B. (बी.) °ति. * "मणसा, वयसा, कायसा" पाठ उमेरवो.

वधे तेम । च० चार । हिरणनी कोडी । प० घर वाखरामां । प० वापरी छे । एम १२ कोडि । अ० ए उपरांत । सेष बाकतुं । स० सर्वं । हि० हिरण्य । सु० सुवर्ण । वि० द्रव्य विधिनो । प० पच्चखाण ॥ ३ ॥ १७ ॥

मूळपाठः—॥ १७ ॥ तयाणन्तरं[1] च णं इच्छाविहिपरिमाणं[2] करेमाणे,[3] हिरण्णसुवण्ण-विहिपरिमाणं[4] करेइ । "नन्नत्थ चउहिं[5] हिरण्णकोडीहिं[6] निहाण पउत्ताहिं,[7] चउहिं[8] वड्ढिपउत्ताहिं,[9] चउहिं पवित्थरपउत्ताहिं,[10] अवसेसं सव्वं हिरण्णसुवण्णविहिं[11] पच्च-क्खामि[12] ३* " ॥ १७ ॥

भावार्थः—॥ १७ ॥ त्यारपछी पांचमुं व्रत इच्छानुं प्रमाण करे एटले परिग्रहनो मर्यादा करे ते मांहि प्रथम सोनानुं परिमाण करे, ते एवी रीते के, चार क्रोड सोना महोर धन भोंयमां दाटेलुं, चार क्रोड सोना महोर

१ B. (बी) तद्दा°. २ A. (ए)°विह°; B. C. D. E. Omit (बी सी. डी. इ. मां नथी.) विहि ३ A C (ए सी) करेइ. ४ A. (ए)°विय°, D. (डी)°विधि° ५. A. (ए.) चत्तारि ६. A. Omit (ए मां नथी) हिरण्ण ७ A (ए) निहाणे. A. E (ए. इ.)°पत्ताहि ८ A. add. कोडीहिं° after it (ए. मां) कोडीहिं वधारे छे. ९ E. (इ.) वुड्ढि°; C D E omit. पउत्ताहि (सी. डी. इ. मां उपला शब्द नथी) १० D E Insert माण after पवित्थर: डी. इ. मां पवित्थर (पछी) माण (छे) A. E (ए. इ मां)°पत्ताहि ११. A C D (ए. सी डी. मां) °विह° १२ A. (ए.)°इ. B. (बी.)°ति.

* पाठ १७ थी ४२ सुधी "मणसा, वयसा कायसा" पाठ उमेर्यो.

व्याजे आपेलुं अने चार क्रोड सोनैयानो वर वाखरो ए सिवाय बीजुं सोनुं रुपुं राखुं नहिं मने करी, वचने करी, कायाए करी. एवी रीते एक करणने त्रण जोगे बीजुं राखवाना पच्चखाण करुंछुं. ॥ १७ ॥

अर्थः—॥ १८ ॥ त० ते वार पछी । च० णं० वळी । च० चउपदनी । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । च० चार । व० वज्र (गोकुळ) मोकळा । द० दस । गो० गाय । सा० हजारे (दस हजार गायनुं) एक । व० वज्र (गोकुळ) एहवा चार वज्र मोकळा । अ० ए उपरांत शेष थाकतुं । स० सर्व । च० चउपदनी । वि० विधि (द्रव्य) नो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ १८ ॥

मूळपाठः—॥ १८ ॥ तयाणन्तरं[1] च णं चउप्पयविहिपरिमाणं[2] करेइ, "नन्नत्थ चउहिं वएहिं दसगोसाहस्सिएणं[3] वएणं, अवसेसं सव्वं[4] चउप्पयविहिं[5] पच्चक्खामि[6] ३" ॥१८॥

भावार्थः—॥ १८ ॥ त्यार पछी चार पगवाळां पशुनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के, दस हजार गाये एक गोकुळ थाय एवां चार गोकुळ सिवाय बीजां चौपग (चार पगवाळां) पशुं राखुं नहि, मने करी, वचने करी, कायाए करी, एवी रीते एक करणने त्रण जोगे बीजा राखवाना पच्चखाण करुं छुं ॥ १८ ॥

अर्थः—॥ १९ ॥ त० ते । अ० वार पछी । च० णं । वळी । खे० उघाडी । व० ढांकी भूमिका तेहनुं । वि०

---

१. B. (बी) तदा°. २. D. (डी) °प्पद°. ३. A. (ए) °हस्सीणं ४ A. Omits (ए मां नथी) ५. A. (ए) °विह. ६. A. B. C. (ए. बी. सी.) °इ.

विधि । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । पं० पांच । ह० हल । स० सो (पांचसो हल) जेटली भूमिका खेडाय । नि० निवर्तन । स० सो (सो निवर्तन एटले २०० हाथ समचोरसे) । ह० एक हल एहवां पांचसें हल प्रमाणभूमि । अ० ते उपरांत । स० सर्व । खे० खेत्र । व० वस्तुनी विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ १९ ॥

मूळपाठः—॥ १९ ॥ तयाणन्तरं[1] च णं खेत्तवत्थुविहिपरिमाणं[2] करेइ । "नन्नत्थ पञ्चहिं हलसएहिं नियत्तणसइएणं[3] हलेणं, अवसेसं सव्वं खेत्तवत्थुविहिं[4] पच्चक्खामि ३" ॥ १९॥

भावार्थः—॥ १९ ॥ त्यार पछी क्षेत्र (उघाडी जमीन), वथु (ढांकी जमीन), घर, दुकान विगेरेनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के सो निवर्तन (नेत्र) नुं एक हळ एटले चारे बाजुए बार गाउ थाय. आ प्रमाण मगध देशनुं छे. ए प्रमाणे गणतां पांचसे हळनी छ हजार गाउ चोरस जमीन थाय.

वळी एक हळनुं बीजुं प्रमाण कहे छे. दश हाथनो एक वांस, एवा वीस वांसनुं एक निवर्तन, एवां सो निवर्तननुं एक हळ एटले वीस हजार हाथ जमीन थइ. ८००० हाथनो एक गाउ तथा बे हजार धनुष्यनो एक गाउ ए हीसाबे अढी गाउ चोरस जमीन थइ. ए प्रमाणे पांचसें हळनी साडाबारसें गाउ चोरस जमीन थइ. आ प्रमाण लीलावती मध्ये छे. (पूर्वे कहेलां बे प्रमाणमां प्रथमनुं प्रमाण खरुं जणाय छे. कारण आणंद श्रावक मगध देशमां हतो.)

१. B. C. (बी. सी.) तदा°. २. A. B. (ए. बी.) खित्त°. A. (ए) °विह°. C. D. E. omits. विहि (सी. डी. इ. मां विहि नथी.) ३ A (ए.) °सएणं ४. A. D. E. (ए. डी. इ) °वत्थुं, Omit. विहिं (नथी). विहि

उपर कथा मुजब सो निवर्त्तननुं एक हळ एवां पांचसे हळ राखवा, ए सिवाय बीजी उघाडी जमीन तथा ढांकी जमीन बीलकुल राखवी नहि, मने करी, वचने करी, कायाए करी, ए प्रमाणे एक करण, त्रण जोगे बीजा राखवाना पच्चखाण करे छे. ॥ १९ ॥

अर्थः—॥ २० ॥ त० ते । अ० वार पछी । च० णं० वळी । स० सकट गाडानी । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । पं० पांच । स० गाडा । स० सो एटले पांचसे–गाडा, दि० परदेश (देशान्तर) । आ० वेपार अर्थे जाय एहवा मोकळा । प० पांच । स० सकट । स० सो एठले पांचसो गाडा । सं० धरे । वहे । खेत्र । खड । काष्ट । इंधण आणे ते मोकळा । अ० ते उपरांत शेष थाकतां–बीजा । स० सर्व । स० सकट गाडानी । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ २० ॥

मूळपाठः—॥ २० ॥ तयाणन्तरं[1] च णं सगडविहिपरिमाणं[2] करेइ । "नन्नत्थ पञ्चहिं सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं,[3] पञ्चहिं सगडसएहिं[4] संवाहणिएहिं,[5] अवसेसं सव्वं[6] सगडविहिं[7] पच्चक्खामि ३" ॥ २० ॥

---

१ B (बी.) तदा°. २. A. (ए) °विह°. ३. A (ए.) दिसाइत्ति°. E. A. E (इ. ए. इ.) °जत्ति° ४ D. E. (डी. इ.) सगडी°. ५ D. E A C. E, (डी इ. ए. सी इ.) संवहणिएहिं. ६. A. (ए. मां नथी.) Omit ७ A B (ए. बी.) °विहं.

भावार्थः—॥ २० ॥ त्यार पछी गाडी-गाडानुं प्रमाण करे ते एवी रीते के देशावर जाय एवां पांनसें मोटां गाडा अने लाकडां, घास, चारो विगेरे लाववा माटे पांचसे नाना गाडा ए विना-बीजां गाडां-गाडी राखवा नहि मने करी, वचने करी, कायाए करी एक प्रमाणे एक करण ने त्रण जोगे करी बीजां राखवानां पच्चखाण करे. ॥ २० ॥

अर्थः—॥ २१ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । वा० वाहण-नावा । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । च० चार । वा० वाहण । दि० दिशाए एटले परदेश । आ० नवा आववा माटे । च० चार । वा० वाहण । सं० जावा आववा घर काम काजे । अ० ते उपरांत शेष थाकता बीजा । स० सर्व । वा० वाहण-नावानो । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ २१ ॥

मूळपाठः—॥ २१ ॥ तयाणन्तरं च णं वाहणविहिपरिमाणं करेइ । " नन्नत्थ चउहिं वाहणेहिं[१] दिसायत्तिएहिं, चउहिं वाहणेहिं संवाहणिएहिं,[२] अवसेसं सव्वं[३] वाहणविहिं[४] पच्चक्खामि[५] ३[६] " ॥ २१ ॥

१. A B reads (ए बी मां नीचे मुजब पाठ छे) चउहिं दिसायत्तिएहिं वाहणेहिं, चउहिं संवाहणिएहिं, C चउहिं वाह० दिसा.० Omitting the rest ('सी' मां फक्त उपला शब्दो छे.) २. A (ए.) संवह०. ३. A. (ए मां नथी.) Omits ४. A (ए.) वहणविहं, B (बी.) विहं. ५. A. (ए.) ०क्खामि, B. क्खामि, ६. A. B. (ए. बी. मां नीचला शब्दो छे.) Give it in full. मणसा वयसा कायसा.

भावार्थः—॥ २१ ॥ त्यार पछी वाहाणनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के समुद्र मध्ये चाली देशांतर जाय एहवा चार मोटा वाहाण अने माल प्रमुख उतारवा माटे चार नाना वाहाण (होडकां), ए विना बीजा वाहाण राखवा नहि. मने करी वचने करो, कायाए करो. एवी रीते एक करणने त्रण जोगे बोजां राखवाना पच्चखाण करे. ॥२१॥ ए पांचमुं व्रत संपूर्ण. ॥ [इहां छट्टा व्रतनी धारणानो खुल्लो पाठ नथी, पण पांचमा व्रतमां पांचसे हळ मोकळा राखेल छे तेनी छ हजार अथवा साडा बारसें गाउ जमीन मोकळी राखेल छे. तेटला गाउ चारे दिशामां जवानी छूट राखेल होय एवुं जणाय छे. एवी रीते पांचमां व्रतमां छट्टा व्रतनो समावेश थतो होवाथी छट्टुं व्रत खुल्लुं लखेल नथी.] ॥ २१ ॥

अर्थः—॥ २२ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । उ० एकवार भोगवे ते उवभोग पुष्पादिक । प० वारंवार—भोगविए ते परिभोग वनितादिक । वि० विधिनो । प० पच्चखाण । मा० मान करे । उ० स्नान जल आदि भीनुं शरीरना लोहण (लुवाना) वस्त्र । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे । न० एटलो विशेष । ए० एक । गं० सुगंध । का० कसाय (शाल) वस्त्र मोकळा । अ० ते उपरांत । स० सर्व वस्त्र । उ० शरीर लोहण लुवाना वस्त्र । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे. ३. ॥ २२ ॥

मूळपाठः—॥ २२ ॥ तयाणन्तरं च णं उवभोगपरिभोगविहिं[१] पच्चक्खाएमाणे,[२]

---

१. A. (ए) ° विहं. D. विधि. २ A. B. (ए. बी) पच्चक्खयमाणा. D. (डी मां) पच्चक्खामि तया ° ण माणे उल्ल, ° E (इ. मा) पच्चक्खामि तयाणंतर च ण माणे, उल्ल °

उल्लणियाविहिपरिमाणं[1] करेइ। "नन्नत्थ एगाए[2] गन्धकासाईए,[3] अवसेसं सव्वं उल्लणियाविहिं पच्चक्खामि[4] ३" ॥ २२ ॥

भावार्थः—॥ २२ ॥ त्यार पछी उवभोग ते जे वस्तु एकवार भोगववामां आवे ते, अन्न प्रमुख वस्तु अने परिभोग ते जे वस्तु एनी एज वारंवार भोगववामां आवे ते वस्त्र, घरेणां, घर, स्त्री विगेरे, तेनुं पच्चखाण करे ते एवी रीते के स्नान कर्या पछी भीनुं शरीर होय तेने लुसवा माटे वस्त्रनुं प्रमाण करे ते एक सुगंधी कसाय, राती साडी मोकळी ए शिवाय स्नान करी शरीर लुसवाना सर्व वस्त्र न कल्पे. तेनुं मन, वचन, कायाए करी पच्चखाण करे ॥२२॥

अर्थः—॥ २३ ॥ त० ते वार। अ० पछी। च. ण. वळी। दं० दातणनी। वि० विधिनो। प० परिमाण। क० करे छे। न० एटलो विशेष। ए० एक। अ० जेठी। ल० लाकडीनो दातण। म० मधनी। जेठी मधनुं दातण। अ० ते उपरांत। द० बीजा दातणनी। वि० विधिनुं। प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ २३ ॥

मूळपाठः—॥ २३ ॥ तयाणन्तरं[5] च णं [6]दन्तवणविहिपरिमाणं[7] करेइ। "नन्नत्थ एगेणं अल्ललट्ठीमहुएणं,[8] अवसेसं[9] दन्तवणविहिं[10] पच्चक्खामि[11] ३" ॥ २३ ॥

---

१ A B. (ए. बी.) उल्लणिगा, A. (ए) ०विह,० २. E. (इ.) एगेणं. ३ A. (ए) ०कसाइए. ४ A. B C D (ए बी. सी डी) ०क्खाइ ५ B (बी.) तरा०. ६ A B (ए. बी) दंतण०. ७ A (ए.) ०विह पच्चक्खाइ, B. C. D E (बी सी डी इ) ०विहिपच्चक्खाइ. ८. A. (ए) ०लट्ठं०. ९. C. Add (सी. मां वधारे छे.) सव्वं. १०. A. (ए.) दतवाणि विहं; D. (डी) दतण०. ११. A. B C. (ए बी. सी) ०क्खाइ.

भावार्थः—॥ २३ ॥ त्यार पछी दातण-विधिनुं पच्चखाण करे ते एवी रीते के, एक जेठी मधनुं दातण मोकळुं ए सिवाय बीजां सर्व दातण न कल्पे. तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे ॥ २३ ॥

अर्थः—॥ २४ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । फ० फळनी । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे । न० एटलो विशेष । ए० एक । खी० खीर सरीखां । आ० बीज विनाना, आमला नामना फळ मोकळां । अ० शेष थाकतां सर्व । फ० फळनी । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ २४ ॥

मूळपाठः—॥ २४ ॥ तयाणन्तरं च णं फलविहिपरिमाणं[1] करेइ । "नन्नत्थ[2] एगेणं खीरामलएणं,[3] अवसेसं[4] फलविहिं[5] पच्चक्खामि ३" ॥ २४ ॥

भावार्थः—॥ २४ ॥ त्यार पछी फळ विधिनुं पच्चखाण करे ते एवी रीते के, दुध सरिखुं मधुर एवुं खीर आंवळुं (राय आंवळुं) मोकळुं, ए सिवाय बीजां तमाम फळ न कल्पे ते, मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे ॥ २४ ॥

अर्थः—॥ २५ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । अ० अभ्यंगण (तेल आदि शरीरे मर्दन करवानी) । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । स० सो औषधीनो । पा० पाक ।

१. A. B (ए. बी)°विह° २. C. (सी. मां वधारे छे) Adds ण. ३ B. D. (बी डी) छीर°, A. C. E (ए. सी. इ. मां) have खीर°; A (ए)°मलेणं ४ E (इ. मां वधारे) Adds सव्व, ५. A. C. (ए. सी.) °विहं.

स० सहस्र हजार औषधीना । पा० पाकवाळां । ते० तेल ते मोकळां । अ० शेष थाकतां सर्व तेले । अ० अभ्यंगण (मर्दन) । वि० विधि करावा । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ २५ ॥

मूळपाठः—॥ २५ ॥ तयाणन्तरं च णं [1]अब्भङ्गणविहिपरिमाणं[2] करेइ । " नन्नत्थ सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं,[3] अवसेसं अब्भङ्गणविहिं पच्चक्खामि[4] ३ " ॥ २५ ॥

भावार्थः—॥ २५ ॥ त्यार पछी अभ्यंगण (शरीरे मर्दन करवानुं तेल) नी विधिनुं प्रमाण करे ते एवी रीते ते शत पाक (सो औषधीनुं सत्व काढेलुं होय ते) तेल, सहस्रपाक (हजार औषधीनुं सत्व काढेलुं होय ते) तेल ए बे जातिना तेल मोकळा ए सिवाय बीजां सर्व तेल न कल्पे तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे ॥२५॥

अर्थः—॥ २६ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । उ० उवटण (पीठी चोळवानो) । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । ए० एक । सु० सुगंधी । गं० गंधयुक्त । अ० पीठुं एवुं उवटणुं मोकळुं । अ० शेष थाकतो सर्व । उ० उवटणनी । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ २६ ॥

मूळपाठः—॥ २६ ॥ तयाणन्तरं च णं [5]उव्वट्टणविहिपरिमाणं[6] करेइ । " नन्नत्थ एगेणं सुरहिणा[7] गन्धट्टएणं,[8] अवसेसं उव्वट्टणविहिं पच्चक्खामि ३ " ॥ २६ ॥

---

१. A. C. E (ए. सी. इ) अब्भि०. २. A, (ए.) °विहं ३ B. (बी. मां नथी.) omits. A. C. (ए सी.) तिल्लेहिं ४. A B. C. (ए बी सी.) °क्खाइ. ५. A. D. E. (ए डी. इ), उवटण °; C. (सी.) उव्वट्टणा ° ६ A. (ए.) °विह °. ७. C. D. E. (सी. डी इ.) सुरभिणा ८. C. C. C. (सी. सी. सी.) गधवट्टएणं E. (इ.) गंधवट्टिएणं, D (डी.) गंधकएणं.

भावार्थः—॥ २६ ॥ त्यार पछी पीठीनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के, सुगंधी युक्त एक घउंना लोटनी पीठी मोकळी ए शिवाय वीजी सर्व पीठी न कल्पे तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे. ॥ २६ ॥

अर्थः—॥ २७ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च. णं. वळी । म० स्नाननी । वि० विधिनो । प० प्रमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेप । अ० आठ । उ० उंचा । (मोटा) माटीना भाजन विशेप । उ० (एहवा आठ) पाणीना । घ० वडा मोकळा । अ० शेपथाकता । म० स्नान करवाना पाणीनी । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ २७ ॥

मूळपाठः—॥ २७ ॥ तयाणन्तरं च णं मज्जणविहिपरिमाणं करेइ । " नन्नत्थ अट्ठहिं उट्टिएहिं[1] उदगस्स घरूएहिं,[2] अवसेसं मज्जणविहिं पच्चक्खामि ३ " ॥ २७ ॥

भावार्थः—॥ २७ ॥ त्यार पछी स्नानविधिनुं प्रमाण करे. ते एवी रीते के, अति नाना नहि, अति मोटा नहि, एवा आठ वडा पाणी स्नान करवा माटे मोकळुं ए शिवाय स्नान करवा माटे वीजुं सर्व पाणी न कल्पे तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे. ॥ २७ ॥

अर्थः—॥ २८ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । व० वस्त्रनी । वि० विधिनो । प० । परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेप । ए० एक । खो० कपासियानुं (सुतराउ) वस्त्र । जु० जुगल जोडो बे

---

१ A. (ए.) उट्टेएहि. २. A B C. (ए बी सी) घडेहि D. E. (डी, इ) घडएहिं.

पटकुळ दररोज पेहेरवा ओढवा मोकळा । अ० शेष थाकता । व० वस्त्र । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥२८॥

मूळपाठः—॥ २७ ॥ तयाणन्तरं च णं वत्थविहिपरिमाणं करेइ । "नन्नत्थ एगेणं[1] खोम-[2]जुयलेणं, अवसेसं वत्थविहिं पच्चक्खामि ३ " ॥ २७ ॥

भावार्थः—॥ २८ ॥ त्यार पछी वस्त्रविधिनुं प्रमाण करे, ते एवी रीते के पहेराय-ओढाय एवां बेवडां बे जोड कपासनां वस्त्र मोकळा ए सिवाय बीजां सर्व वस्त्र न कल्पे. तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्च-खाण करे. ॥ २८ ॥

अर्थः—॥ २९ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । वि० सुगन्ध आदि अंग उपर विलेपणनी । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । अ० अगर । कुं० कंकु । चं० चंदन । आ० आदि विलेपन मोकळुं । अ० शेष थाकता । वि० विलेपन । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ २९ ॥

मूळपाठः—॥ २९ ॥ तयाणन्तरं च णं विलेवणविहिपरिमाणं[3] करेइ । "नन्नत्थ [4]अगरुकुङ्कुमचन्दणमादिएहिं,[5] अवसेसं विलेवणविहिं पच्चक्खामि ३ " ॥ २९ ॥

---

१ A B. (प नी) एगेणं. C (सी) नमःमेलणं. २ D E. (डी. इ.) गोमयजुयलेण. ३. A. (प.) ° विह परि. ° B E (बी. इ) ° विह परि ° ४. A. (प) अगरु चंदण कुकुम ° A. C. E. (ए. सी. इ) अगुरु°. ५ A C. E. (ए. सी इ.) ° माइएहिं

भावार्थः—॥ २९ ॥ त्यारपछी विलेपन विधिनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के एक अगर, कंकु, चंदन, कपुरादिकनुं विलेपन मोकळुं ए सिवाय वीजा विलेपन न कल्पे, ते मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे. ॥२९॥

अर्थः—॥ ३० ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । पु० फुलनी । वि० विधिनो । प० परिमाण । कु० क० करे । न० एटलो विशेष । ए० एक । सु० स्वेत वर्ण । प० पुष्प जातिमांहि कमळपद्म । मा० मालति । जाइ फुलनी । दा० माळा । वा० वळी । अ० शेष थाकतां । बाकी सर्व । पु० पुष्प । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ ३० ॥

मूळपाठः—॥ ३० ॥ [1]तयाणन्तरं च णं पुप्फविहिपरिमाणं करेइ[2] । "नन्नत्थ एगेणं सुरूपउमेणं [3]मालइकुसुमदामेणं[4] वा, अवसेसं पुप्फविहिं पच्चक्खामि ३" ॥ ३० ॥

भावार्थः—॥ ३० ॥ त्यार पछी पुष्पविधिनुं पच्चखाण करे. ते एवी रीते के, एक धोळुं पद्मकमळ अने मालतीना फूलनी माळा मोकळी, ए शिवाय वीजां सर्व फूल न कल्पे तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे. ॥ ३० ॥

अर्थः—॥ ३१ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । आ० आभरणनी । वि० विधिनो । प० परि-

---

१ B. D (बी. डी.) तदा.० २. A. (ए.) ०विह परि०; B (बी) ०विहिं परि० ३. A (ए) मालई०, C. (सी.) मालई D E (डी. इ.) मालति० ४ D. E (डी. इ.) ०दामणेण.

माण । क० करे । न० एटलो विशेष । म० आभरण मांहि-(मठार्यां) चित्रामण रहित । क० कानना । आभरण । ना० नामांकित । मु० मुद्रिका ए बे आभरण मोकळां । य० वळी । अ० शेष थाकतां । आ० आभरण । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ ३१ ॥

मूळपाठः—॥ ३१ ॥ तयाणन्तरं च णं आभरणविहिपरिमाणं करेइ । " नन्नत्थ मट्ठक[1]-लेज्जएहिं नाममुद्दाए[2] य, अवसेसं आभरणविहिं पच्चक्खामि ३ " ॥ ३१ ॥

भावार्थः—॥ ३१ ॥ त्यार पछी आभरण (घरेणां) विधिनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के, चित्रामण रहित कानमी कडी अथवा कुंडळ अने पोतांना नामवाळी मुद्रिका (वींटी) ए बे घरेणां मोकळां ए सिवाय बीजां सर्व घरेणां न कल्पे. तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे. ॥ ३१ ॥

अर्थः—॥ ३२ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । धू० धूपनी । वि० विधि । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । अ० अगर अने । तु० सिलहक (सेलारस–सीलाजीत) । धू० धूप । आ० आदि द्रव्य मोकळां । अ० शेष थाकतां । धू० धूपनी । वि० विधिनो । प० पच्चकखाण करे ॥ ३ ॥ ३२ ॥

मूळपाठः—॥ ३२ ॥ तयाणन्तरं च णं धूवणविहिपरिमाणं करेइ । " नन्नत्थ अगरु-

---

१. D. E. (डी इ) मट्ठका°, A C. E. (ए सी इ.) मट्ठकन्ने°. २. A. B C. (ए, बी सी) °मुद्दीपहि.

तुरुक्कधूवमादिएहिं,[१] अवसेसं धूवणविहिं पच्चक्खामि ३ " ॥ ३२ ॥

भावार्थः—॥ ३२ ॥ त्यार पछी धुपनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के, अगर सेलारसादिक (सीलाजीत) दश प्रकारनो धूप मोकळो. ए शिवाय बीजा सर्व धूप न कल्पे तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे.॥३२॥

अर्थः—॥ ३३ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । भो० भोजननी । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करता थका । पे० पेज मुगनी दाळ तेनी । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । ए० एक । क० मुगनी दाळादिकनुं पाणी । तथा घीमां तळी छे चाउल ते । पे० पेया कहीए ते मोकळो। अ० शेप थाकतो । पे० पेज । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ ३३ ॥

मूळपाठः—॥ ३३ ॥ तयाणन्तरं च णं भोयणविहिपरिमाणं[२] करेमाणे,[३] पेज्जविहिपरिमाणं[४] करेइ । " नन्नत्थ एगाए[५] कट्ठपेज्जाए,[६] अवसेसं पेज्जविहिं[७] पच्चक्खामि ३ " ॥३३॥

भावार्थः—॥ ३३ ॥ त्यार पछी भोजनविधिनुं प्रमाण करे, ते मांहि पेज विधिनुं प्रमाण करे, ते एवी रीते के मगनुं पाणी उत्तम द्रव्ये करी संस्कारेलुं ते पेज कहीए अथवा गायना दुधनी राबडी अथवा घी तथा तेलमांहि

१ C E. (सी इ) माइएहिं. २. D. E. (डी. इ.) °माणे ३. A (ए) करेइ माणे,. C. (सी) करेइ. ४ A B D (ए बी. डी) ° पिज्ज.° ५. C (सी) एगेहिं. ६ A. B. (ए बी) ° पिज्जाते ७ A. (ए) पिज्जिविहिं; B. (बी.) पिज्जिविहिं.

चोखा तळी, मगना पाणी साथे पीए ते अथवा मगनी ढीली दाळ ते पण पेज कहीए. ते पेज पीवा माटे मोकळी, ए शिवाय बीजां सर्व पेज न कल्पे, तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे ॥ ३३ ॥

अर्थः—॥ ३४ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । भ० सुखडी खावानी । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । ए० एक । घ० घृत । पु० पुरी (घेवर) । खं० खांडभर्या । ख० खाजां । ए० ए बे जाणवा ते । वा० वळी । अ० शेष थाकता । भ० पकवान खावानी । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ ३४ ॥

मूळपाठः—॥ ३४ ॥ तयाणन्तरं च णं भक्खविहिपरिमाणं[1] करेइ । " नन्नत्थ एगेहिं घयपुन्नेहिं[2] खण्डखज्जएहिं वा,[3] अवसेसं भक्खविहिं[4] पच्चक्खामि ३ " ॥ ३४ ॥

भावार्थः—॥ ३४ ॥ त्यार पछी पकवान विधिनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के एक घीथी भरपुर एवुं घेवर, खांडथी भरेलां खाजां ए बे पकवान मोकळां ए शिवाय बीजा पकवान न कल्पे. तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे. ॥ ३४ ॥

अर्थः—॥ ३५ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । ओ० उदन (चावल) जमवानी । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । क० कमल । सा० सालिनो ते । ओ० उदन—कुर

१ D. E. (डी इ.) भक्खण० २. D E (डी. इ.) ° पुन्नेहिं. ३ A. (ए.) या. ४. (इ.) भक्खणविहिं.

मोकळो । अ० शेष थाकतां । ओ० चोखानी । वि० जातनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ ३५ ॥

मूळपाठः—॥ ३५ ॥ तयाणन्तरं च णं [1]उदणविहिपरिमाणं करेइ । " नन्नत्थ कलम [2]-सालिउदणेणं, अवसेसं उदणविहिं [3] पच्चक्खामि ३ " ॥ ३५ ॥

भावार्थः—॥ ३५ ॥ त्यार पछी चावल (चोखा) नुं प्रमाण करे ते एवी रीते के कलमसाळी (डांगर) ना चोखा मोकळा ते शिवाय बीजा सर्व चोखा न कल्पे तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्च-खाण करे. ॥ ३५ ॥

अर्थ—॥ ३६ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । सू० सुप एटले कठोरनी दाळनी । वि० विधिनुं । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । क० मसुरनी । सू० दाळ । वा० वळी । मु० मुगनी दाळ । मा० उडदनी । सू० दाळ । वा० वळी । अ० ते उपरांत । सू० कठोर दाळनी । वि० विधिनो । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ ३६ ॥

मूळपाठः—॥ ३६ ॥ तयाणन्तरं च णं [4]सूवविहिपरिमाणं करेइ । " नन्नत्थ कलाय [5]-सूवेण [6] वा मुग्गमाससूवेण वा, अवसेसं सूवविहिं पच्चक्खामि ३ " ॥ ३६ ॥

---

१. C E. (सी इ) ओयण० २ C E. (सी इ.) कलिसशाल० ३ A (ए) उद्दण विहिं, D. (डी.) ० विधि. ४. A B. C. (ए. बी सी.) सूय ० ५. A (ए) कलय. ० ६ A, C. (ए. सी) ० सूएण.

भावार्थः—॥ ३६ ॥ त्यार पछी कठोळनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के, मसुरनी दाळ, मगनी दाळ, अडदनी दाळ, ए त्रण कठोळनी दाळ मोकळी ए शिवाय बीजी सर्व दाळ न कल्पे तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे. ॥ ३६ ॥

अर्थः ॥ ३७ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । घ० घृतनी । वि० विधिनुं । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । सा० शरद ऋतुनो एटले आसो । कार्तिक संबंधी । गो० गायनुं घी । मं० प्रधान । अ० शेष सर्व । घ० घी नी । वि० जातनुं । प० पच्चख्खाण करे ॥ ३ ॥ ३७ ॥

मूळपाठः—॥ ३७ ॥ तयाणन्तरं च णं घयविहिपरिमाणं करेइ । "नन्नत्थ [1]सारइएणं गोवयमण्डेणं, अवसेसं घयविहिं पच्चक्खामि ३" ॥ ३७ ॥

भावार्थः—॥ ३७ ॥ त्यार पछी घीनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के, आसो, कार्तिक महीनानुं गायनुं घी थएलुं होय ते घी मोकळुं. ए सिवाय बीजुं सर्व घी न कल्पे. तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे ॥ ३७ ॥

[आसो, कार्तिक महिनामां थएलुं गायनुं घी घणुं करी स्वच्छ होय छे. तेने उष्ण करे ते वखते केटलीक एवी वस्तु नांखवामां आवे छे के जेथी तमाम घी बराबर स्वच्छ थइ जाय छे. ते घी बार महिना सुधी राखवाथी बीलकुल बगडतुं नथी.]

१. C. (सी.) सारदिएण. D. E (डी. इ.) सारएणं.

अर्थः—॥ ३८ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । सा० शाक । त्रि० जातिनो । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । व० वत्थु (वालोर) ए हवे नामे । सा० शाक । वा० अथवा । सु० एक सोयानी भाजी (अगथीयानी) वगेरेनी भाजी । य० वळी । सा० शाक । वा० अथवा । मं० मंडुक डोडीनो । सा० शाक । ए त्रण शाक पत्र विशेष । वा० वळी मोकळा । अ० शेष थाकता सर्व । सा० शाकनी । वि० जातना । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ ३८ ॥

मूळपाठः—॥ ३८ ॥ तयाणन्तरं च णं सागविहिपरिमाणं करेइ । " नन्नत्थ [1]वत्थुसाएण वा [2]सुत्थियसाएण वा मण्डुक्कियसाएण वा, अवसेसं सागविहिं पच्चक्खामि ३ " ॥३८॥

भावार्थः—॥ ३८ ॥ त्यार पछी शाकनुं पच्चखाण करे ते एवी रीते के वथुआ (वालोर), अगथीयानुं, रायडोडी ए त्रण जातना शाक मोकळां ए शिवाय बीजां शाक न कल्पे. तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी, पच्चखाण करे. ॥ ३८ ॥

अर्थः—॥ ३९ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । मा० मधुरां सालणा । आम्ररस । वि० विधिनुं । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । ए० एक । पा० पालक चिकण । मा० मधुर । अ० शेष थाकता । मा० मधुरा साक । वि० जातनुं । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ ३९ ॥

१. A. (ए) वच्चु.° B (बी.) भच्चु.° C (सी.) चुच्चु.° २ C (सी.) सुवत्थिय ° D E. (डी. इ) सोतत्थिय °

मूळपाठः—॥ ३९ ॥ तयाणन्तरं च णं [1]माहुरयविहिपरिमाणं करेइ। " नन्नत्थ एगेणं [2]पालङ्गामाहुरएणं,[3] अवसेसं माहुरयविहिं पच्चक्खामि ३ " ॥ ३९ ॥

भावार्थः—॥ ३९ ॥ त्यार पछी मधुरा मेवा फळनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के पालकनो फल चिकण अथवा चीभडुं मोकळुं. ते सिवाय बीजां मधुर फळ न कल्पे. तेनुं मने, वचने ने कायाए करी पच्चख्खाण करे. ॥ ३९ ॥

अर्थः—॥ ४० ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । जे० वटक पूरणादिक एटले वडां । दालो-यानी । वि० विधिनुं । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । से० घोल वडादिक शेप सर्व । दा० दाळना खाटां घेघरादिक (ढोकळां) मोकळां । अ० शेप थाकतां । जे० वटणपूरणादिक एटले वडानुं । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ ४० ॥

मूळपाठः—॥ ४० ॥ तयाणन्तरं च णं [4]जेमणविहिपरिमाणं[5] करेइ । " नन्नत्थ सेहं-वदालियंवेहिं,[6] अवसेसं [7]जेमणविहिं पच्चक्खामि ३ " ॥ ४० ॥

भावार्थः—॥ ४० ॥ त्यार पछी पुरणादिक (कठोळनावडां पुडला विगेरे) ना जमणनुं प्रमाण करे ते एवी

१ A. B C (ए. बी. सी) माधु.° २. A (ए) पालका; B. C (बी सी) पालका° ३. A. B. (ए बी.) °मधुरतेणं. ४. A (ए.) जमण° ५ A. B (ए. बी.) °विहिपरि ° ६ D. E (डी. इ.) °यवेहिं ▫ ७. A B. (ए. बी.) जिमण.° D. (डी.) °विधि.

रीते के, ए शिवाय बीजुं सर्व पुरणादिकनां जमण न कल्पे तेनुं मने, वचने, अने कायाए करी पच्चखाण करे. ॥४०॥

अर्थः—॥ ४१ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । पा० पाणीनुं । वि० जातनुं । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो । विशेष । ए० एक । अं० हस्त नक्षत्रनुं आकाशनुं पाणी ते । उ० पाणी मोकळुं । अ० शेष सर्व द्रह, तळावादिकना । पा० पाणीनी । वि० जातनुं । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ ४१ ॥

मूळपाठः—॥ ४१ ॥ तयाणन्तरं च णं पाणियविहिपरिमाणं करेइ । " नन्नत्थ एगेणं [1]अन्तलिक्खोदएणं, अवसेसं पाणियविहिं पच्चक्खामि ३ " ॥ ४१ ॥

भावार्थः—॥ ४१ ॥ त्यार पछी पाणीनुं प्रमाण करे. ते एवी रीते के, एक आकाशनुं पाणी टांकामां भरी राखे ते पाणी मोकळुं. ए सिवाय बीजुं सर्व पाणी न कल्पे. तेनुं मने करी, वचने करी, कायाए करी पच्चखाण करे ॥४१॥

अर्थः—॥ ४२ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं । वळी । मु० मुखवास । वि० विधिनो । प० परिमाण । क० करे छे । न० एटलो विशेष । प० पांच । सो० सुगंध द्रव्ये वासीत । तं० तंबोल ते क्यां । १. एलची । २, लवींग । ३. कपुर । ४. जायफळ । ५. सोपारी । अ० शेष सर्व । मु० मुखवासनी । वि० जातनुं । प० पच्चखाण करे ॥ ३ ॥ ४२ ॥

मूळपाठः—॥ ४२ ॥ तयाणन्तरं च णं मुहवासविहिपरिमाणं करेइ । " नन्नत्थ पञ्च-

---

१ C. (सी.) अतिलि०

सोगन्धिएणं[1] तम्बोलेणं, अवसेसं मुहवासविहिं[2] पच्चक्खामि ३ " ॥ ४२ ॥

भावार्थः—॥ ४२ ॥ त्यार पछी जम्या वाद तंबोलादिक मुखवासनुं प्रमाण करे ते एवी रीते के, १. एलायची, २. लवींग, ३, कपुर, ४. जायफळ, ५. सोपारी. ए पांच सुगंधी द्रव्यथी वासीत एवुं तंबोल (पान) मोकळुं ए सिवाय बीजां सर्व मुखवास न कल्पे. तेनुं मने, वचने, कायाए करी पचखाण करे ॥ ४२ ॥

(ए पूर्वोक्त प्रमाणे सातमां व्रतमां एकवीस वोलनुं प्रमाण करे. ए सातमुं व्रत संपूर्ण.)

अर्थः—॥ ४३ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च. णं० वळी । च० चार । वि० प्रकारे । अ० अनर्थ (काम वगर) । दं० दंड । प० पचखे छे । तं० ते । ज० कहे छे । अ० अपध्यान आर्त, रुद्र, विकथारुप । आ० आचरण । प० प्रमाद (न) । आ० आचरे । हिं० हिंसा दान शस्त्रनुं दान देवुं नहि, घंटी, खांडण, मुसल, कोश, कोदाळी आदिक । पा० पाप कर्मनो । उ० उपदेश (न) देवो ॥ ४३ ॥

मूळपाठः—॥ ४३ ॥ [3]तयाणन्तरं च णं [4]चउव्विहं [5]अणट्ठा दण्डं पच्चक्खाइ । तं जहा । [6]अवज्झाणायरियं, पमायायरियं[7], [8]हिंसप्पयाणं, पावकम्मोवएसे[9] ॥ ४३ ॥

---

१ C (सी)° सोगंधण. २. B (बी) मुहवासकविहिं° ३ A. B. D. (ए. बी. डी.) तदा° ४ A (ए) चउविहिं; E (इ) चउविहं. ५ D. E. (डी. इ) अणत्थ° ६. C. (सी) अवज्झाय.° ७ D (डी) पमादा.° ८. D (डी)° प्पदाणं. ९. A. B. (ए बी) °वदेस. C. (सी.)° वएस.

भावार्थः—॥ ४३ ॥ हवे आठमुं व्रत कहे छे. त्यार पछी चार प्रकारे अनर्थादंडनुं पच्चखाण करे. धर्म अर्थ-काम रहीत देह स्वजन टाळी अनेराने माटे पाप कर्म करी आत्मा दंडाय ते अनर्थादंड कहीए. ते अनर्थादंड चार प्रकारे छे ते कहे छेः—

१. आर्त (दीलगीरी) ध्यान चार प्रकारे छेः—१. अनिष्ट वस्तुनो संयोग थएल होय अने इष्ट वस्तुनो वियोग थएल होय ते वखते जे, अरे! आ अनिष्ट वस्तु क्यारे जशे ने इष्ट वस्तु क्यारे मळशे ? एवी चिंतवणा करे. २. शरीरमां व्याधि (रोग) उत्पन्न थाय त्यारे चिंतवे जे, अरे! आ रोग क्यारे जशे ? ३. पूर्वे जे लक्ष्मी हती तेनो नाश थवाथी तेनो झुरापो करे, वर्तमानमां लक्ष्मी होय तेनुं रक्षण करवानी चिंतवणा करे अने भविष्यमां लक्ष्मी मेळववानी कल्पना करे ? ४. पूर्वे पांच इंद्रीना जे कामभोग भोगव्या छे, तेने संभारी झुरापो करे, वर्तमानमां कामभोग सेवे, अने भविष्यमां कामभोग सेववानी कल्पना करे. ए चार प्रकारे आर्त्तध्यान उत्पन्न थाय छे. ते एकला आर्त्तध्याननुं पच्चखाण करेल नथी पण तेनी साथे नीचे लख्या मुजब रौद्र ध्यान सहित आर्त्त ध्याननुं पच्चखाण करेल छे. जो शत्रुने मारी राजा थाउ तो वेरीना गाम लूटुं, जो विद्याधर तथा देवता थाउ तो स्वइच्छाए जइ मने जे गमे ते स्त्री भोगवुं, इत्यादिक रौद्रध्यान सहित आर्त्त ध्यान धरे. २. प्रमादाचरण ते (१) स्त्री कथा (वार्त्ता), (२) भक्त (भोजन) कथा, ३. देश कथा, ४. राज्य कथा. ए चार विकथा (व्यर्थ ते फोगट) करे तथा घी, तेल, पाणी वगेरे प्रवाही पदार्थादिकना वासण उघाडां मुकवा, ३. घंटी, खांडणीयो, कोश, कोदाळी वगेरे हिंसक (जेनाथी जीवहिंसा थाय तेवां) शस्त्रनुं दान करे अथवा परने माग्या आपे. ४. क्षेत्रादिक

खेडो, वृक्ष छेदो, इत्यादिक पापकर्मनो उपदेश दीए. ए चार प्रकारे अनर्थादंड सेववानुं पच्चखाण करे. ॥ ४३ ॥

[इति आठमुं व्रत संपूर्ण. नवमुं, दशमुं, अग्यारमुं, बारमुं, ए चार शिक्षाव्रत छे. ते अवसर आव्ये पुरतुं ध्यान राखी अवश्य करवा एमां शिखामण रूपे छे तेथी इहां तेनां पच्चखाण नहि करतां शिखामण रूपे धारण करेल छे.]

अर्थः—॥ ४४ ॥ इ० आ संसारने विषे । ख० निश्चे । आ० आणंदआदि देइने । उ० वळी । स० श्रमण । भ० भगवत । म० महावीर देव । आ० आणंद । स० श्रावक प्रते । ए० एम । व० बोल्या । ए० एम । ख० निश्चे । आ० हे आणंद । स० श्रावकने । अ० जाण्या वर्ते छे जेने । जी० जीव । अ० अजीवादिक १४ पदार्थ तेहने । जा० यावत । अ० अतिक्रमवुं नहि । अतिचार लगाडे नहि । श्रावकना व्रतथकी । स० सम्यक्त्वना । पं० पांच । अ० अतिचार । पे० मोटा अतिचार । जा० जाणवा । न० न । स० समाचरवा (अंगिकार करवा) नहि । त० ते । ज० कहे छे । (१) सं० जीन वचनमां शंका (संदेह) । (२) कं० परदर्शननी आकांक्षा (वांछना) । (३) वि० धर्मना फळ प्रत्ये शंका (संदेह) । (४) प० पर पा० पाखंडीनी । प० प्रसंशा । (५) प० पर । पा० पाखंडीनो । सं० संस्तवः (परिचय) ॥ ४५ ॥

मूळपाठः—॥ ४४ ॥ इह खलु "आणन्दा" इ[1] समणे भगवं महावीरे आणन्दं

१ A B C. (ए बी सी) omit (मां नथी) इहखलु. २. A (ए) हिं; B C, D, (बी सी डी) ई, a, c, o (ए सी इ) इ.

समणोवासगं एवं वयासी । " एवं खलु, आणन्दा, समणोवासएणं अभिगयजीवाजी-वेणं[2] जाव[3]* अणइक्कमणिज्जेणं[4] सम्मत्तस्स[5] पञ्च अइयारा पेयाला जाणियव्वा, न समाय-रियव्वा, तं जहा[6] । सङ्का, कङ्खा, [7]विइगिच्छा, परपासण्डपसंसा,[8] परपासण्डसंथवे ॥ ४४ ॥

भावार्थः—॥ ४४ ॥ ए पुर्वोक्त प्रमाणे आणंद गाथापतिए बारव्रत धार्या पछी, हे आणंद ! एम श्रमण भगवंत श्री महावीर देव ते आणंद श्रमणोपासक (साधुनी सेवाना करनार श्रावक) प्रत्ये एम कहेता हवा. एम निश्चे हे आणंद श्रावक ! जेणे (१) जीवनां पांससें ने त्रेसठ भेद, (२) अजीवना पांससे साठ भेद, (३) शुभ प्रकृती (सुख) रुप पुन्यना नव अने बेंतालीस भेद, (४) अशुभ प्रकृती (दुःख) रुप पापना अढार ने व्याशी भेद, (५) पाप कर्मनुं आववुं ते आश्रवना सामान्य प्रकारे वीस अने विशेष प्रकारे बेंतालीस भेद, (६) आतमा रुप तळाव, पांच इंद्रिओ रुप गरनाळे करी पापकर्म आवतां ने व्रत पच्चखाणरुप ढांकणे करी रोकवुं ते सं-

१. B C (बी. सी) आणन्द सम० २. A. (ए)°जीवे, Omit (नथी) णं * जूओ उववाय सूत्र पाठ १२४ उवलद्धपुण्णपावेण आसवसवर नि जर किरिया अहिगरण बध मुक्ख कुसलेण असहिज्ज [sic] देवासुरनाग सुवण्ण जक्खरक्खसकिंनर किंपुरसगरुलगंधव्व महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गत्थाओ पावयणाओ ३ D E. (डी. इ.) Omit (मां नथी.) जाव ४. A B (ए बी) अणतिक्कमनिणिज्जेण: C (सी) अणतिक्कमतिज्जेण, D. E (डी इ) अणतिक्कमणिज्जेणं ५ A (ए.) समत्तस्स ६ A P. (ए. बी) Omits. ७. B. (बी.) विगच्छा; C (सी.) वितिगंच्छा ८ A (ए)° पासडी०.

वरना सामान्य प्रकारे वीस अने विशेष प्रकारे सत्तावन भेद. (७) आत्माना प्रदेशथी थोडा थोडा कर्मनुं दूर थवुं ते निर्जराना बार भेद, (८) आत्माना प्रदेशे लोढाना गोळामां जेम अग्नि पेशी जवाथी एकत्र जणाय छे तेम आत्माना प्रदेशे अधिकरण (लाकडाना, लोढाना, पथरादिक शस्त्र) प्रमुख क्रियाए पापकर्मनुं बंधावु ते बंधना चार भेद,(९) आत्माना प्रदेशथी कर्मपुद्गलनुं दूर थवुं ते मोक्षना पन्नर भेद. ए नव तत्त्वना भेदने विषे जे कुशळ छे अने जे कष्टादिक पड्ये कोइ देवादिकनी सहाय (मदद) वांछे नहीं. वळी वैमानिक देव, भवनवासी, असुर कुमार देव, धरणेंद्रादिकनाग कुमार देव, चंद्र, सूर्यादि ज्योतिषी देव, (हवे-व्यंतर जातिना देव ते.) यक्ष देव, राक्षस देव, किन्नर देव, किंपुरिस देव, गुरुल देव, गंधर्व देव, महोरग देव इत्यादिक देवताओनो समुह (जथ्थो) मळी आवे तोपण श्रुत धर्म (ते भगवंतनो द्वादशांगी वाणी) अने चारित्रधर्म (ते श्रावक अने साधुना व्रत), निर्ग्रंथ प्रवचन मार्गथी डगावो शके नहि एवा समकितना मोटा पांच अतिचार जाणवा, पण अंगिकार करवा नहि. तेना नाम कहे छे. १. जीन वचनमां शंका (संशय) आणे, २. अन्य धर्मनी वांछना करे, ३. धर्म करणीनुं फळ हशे के नहि होय? ४. परपाखंडीनी प्रशंसा करे, ५. परपाखंडीनो धर्मनिमित्ते परिचय करे. ए पांच अतिचार टाळी शुद्ध निश्चल समकित राखवुं. ॥ ४४ ॥

अर्थः—॥ ४५ ॥ त० ते वार। अ० पछी। च० पं० वळो। थू० मोटा। पा० प्राणातिपातनो प्राणीजीवने। वे० वेरमणना (निवर्तवाना एटले उगारवाना)। स० श्रावकने। पं० पांच। अ० अतिचार। पे० मोटा। जा० जाणवा। न० नहीं। स० समाचरवा। तं० ते। ज० कहे छे। बं० गाढे बंधने (दोरडे) बांध्या होय। व० ला-

कडीथी घा कर्यो होय । छ० उपांगनो छेदवो । अ० अतिभार भर्यो होय । भ० भात । पा० पाणीनो । वो० छेद कर्यो होय ॥ ४५ ॥

मूळपाठः—॥ ४५ ॥ तयाणन्तरं च णं [1] थूलगस्स [2] पाणाइवायवेरमणस्स समणोवासएणं पञ्च [3] अइयारा [4] पेयाला जाणियव्वा, न समारियव्वा । तं [5] जहा । बन्धे, [6] वहे, छविछेए, अइभारे, भत्तपाणवोछेए । १ ॥ ४५ ॥

भावार्थः—॥ ४५ ॥ त्यार पछी मोटुं प्राणातिपात ते त्रस जीवनी हींसाथी निवर्तवा (तजवा) रुप पहेला व्रतना म्होटा पांच अतिचार श्रावकने जाणवा पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छे. १. क्रोध वशे करीने त्रस जीवने गाढे ट्रंके बंधने बांधे, (२) निर्दयपणे मारे, ३. कान, नाक, वृषणादिक अंगोपांग छेदन करे. ४. उपाडनारनी समर्थाइ उपरांत अति भार भरे, ५. ते जीवने खावा-पीवानो वखते खानपान आपे नहीं तथा ओछुं आपे. ए पांच अतिचार टाळी प्रथम व्रत शुद्ध पाळवुं. ॥ १ ॥ ४५ ॥

---

१. A. (ए) थूलवस्स. B. (बी.) थूलस्स. C. D, E (सी डी. इ.) थूलयस्स २ B. (बी.) पाणादि ० ३ A. (ए.) इतियारा. B. C. (बी. सी) तियारा. omit (नथी) अ D. (डी.) अतिचारा. ४. A. (ए.) पियाला. ५. B. (बी. मां नथी) Omit. ६. A. (ए.) बधे, वहे. D. (डी.) घधे, बंधे, छविच्छेदे. E. (इ.) वहबंधच्छविच्छेए.

अर्थः—॥ ४६ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च. णं. वळी । थू० थूल (मोटा)। मु० मृषावादनुं । वे० वेरमण (निवर्तवा छांडवा) ना । पं० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा पण । न० न । स० समाचरवा (आदरवा) नहीं । तं० ते । ज० कहे छे । स० सहसा अण मीछे (अण जाणे) जे चोर छे एम । भ० कहेवुं (कलंक देवुं) । र० रहीश—छांनी वात । भ० प्रगट कोधी होय । स० स्त्रीना । म० मर्म प्रकाश्या होय । मो० मृषा । उ० उपदेश दिधा होय । कू० कूडा । ले० लेख लखे तथा कूडां लेखां । क० करे ॥ ४६ ॥

मूळपाठः—॥ ४६ ॥ [1]तयाणन्तरं च णं[2] थूलगस्स[3] मुसावायवेरमणस्स[4] पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा । तं जहा । [5]सहसाब्भक्खाणे, रहसाब्भक्खाणे,[6] सदारमन्तभेए, मोसोवएसे,[7] कूडलेहकरणे । २ ॥ ४६ ॥

भावार्थः—॥ ४६ ॥ त्यार पछी म्होटुं जूठुं बोलवाथी निवर्तवारुप बीजा व्रतना म्होटा पांच अतिचार

---

१. A B. D (ए वी. डी) तदा° २. After णं D and E Insert (णं पछी डी ने इ मां नीचे मुजब पाठ छे) थूलग मुसावाय वेरमणस्स पचविहे पण्णत्ते । त जहा । कण्णालिअं, गोवालिअ, भोमालियं, नासावहारे, कूडसक्खे (C कूडसरे कज्जे) संधिकरणे. ३. A B C D E (ए.वी सी. डी.इ) थूलग. Omits स्स (स्स नथी.) ४. D E Omit (डी इ मां नथी.) °वेरमण° ५ A. B C (ए. बी. सी.) सहस्सा° a e. (ए इ मां) सहसा अब्भक्खाणे ६ A (ए.) रहस्सा°, D. (डी) रहस्स°; a. c (ए. सी) रहसा अब्भक्खाणे ७ D E Add (डी इ. मां) य. वधारे

जाणवा, पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छे. १. कोइ जीवने ध्रासको (फाळ) पडे एहवुं अणविचार्युं अछता-दोपनुं कहेवुं. २. कोइनी छानी मर्मनी वात प्रकाश करे. ३. पोतानी स्त्रीनी लजामणी एवनी वात प्रकाश करे. ४. कूडु (खोटुं) बोली लोकने प्रतित उपजावे, कारण पडे कूडी बुद्धीनो उपदेश दे, कूडा मारण, मोहन, स्थंभन, उचाटनादिक मंत्र शोखवे, पंचमां खोटी साक्षी पुरे, ५. खोटा लेख पत्र लखे; ए पांच अतिचार टाळी बीजुं व्रत शुभ पाळवुं ॥ २ ॥ ४६ ॥

अर्थः—॥ ४७ ॥ त० ते वार । अ० पछो । च० णं० वळी । थू० थूल मोटा । अ० अदत्ता । दा० दानना । वे० वेरमण (निवर्तवाना) । पं० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा पण । न० न । स० समाचरवा नहि । तं० ते । ज० कहे छे । ते० चोरनी । आ० आणी वस्तु ले । त० चोरने । प्प० साहज (मदद) नुं देवुं । वि० विरुद्ध । र० राज्य । अ० अतिक्रमे । राजानी आज्ञा विरुद्ध व्यापार करे (दाणचोरी करे) । कू० कूडां । तु० तोल । कू० कूडां । मा० माप कीधां होय । (अधिका ओछां माप राखे) । त० सारी वस्तु मांहि । प० नरसीवस्तु । भेळ संभेळ करी । व० वेपार कर्यो होय ॥ ३ ॥ ४७ ॥

मूळपाठः—॥ ४७ ॥ [1]तयाणन्तरं च णं [2]थूलगस्स [3]अदिण्णादाणवेरमणस्स[4] पञ्च

---

१. A. B D. (ए बी डी.) तदा० २ A B C D E. (ए बी सी डी इ.) थूलग, omit. (नथी) स्स ३. D (डी) अदिन्ना.० ४ C D. E. (सी डी. इ. मां नथी.) Omit. ० वरमणं ०

अइयारा[1] जाणियव्वा, न समायरियव्वा । तं जहा[2] । तेणाहडे, तक्करप्पओगे,[3] विरुद्धरज्जाइक्कमे,[4] कूडतुल्लकूडमाणे,[5] तप्पडिरूवगववहारे[6] । ३ ॥ ४७ ॥

भावार्थः——॥ ४७ ॥ त्यार पछी म्होटी चोरीथी निवर्तवारुप त्रीजा व्रतना म्होटा पांच अतिचार जाणवा, पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छेः–१. चोराउ वस्तु ले, २, चोरने कहे के, तारुं लावेलुं हुं लइश, तने खानपान प्रमुख जे जोशे ते आपीश, इत्यादिक–चोरने मदद करे, ३. राजानी दाण चोरी करे तथा जे काम करवानी राजाए मनाइ करी होय ते काम करे, ४. खोटां तोल, खोटां माप राखे, ५. सारी वस्तु बतावी नबली वस्तु आपे तथा सारी वस्तुमां नबली वस्तु भेळवी आपे. ए पांच अतिचार टाळी त्रीजुं व्रत शुद्ध पाळवुं ॥ ४७ ॥

अर्थः——॥ ४८ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० पं० वळी । स० सदारा (पोतानी स्त्री)। सं० संतोपना । प० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा । न० न । स० समाचरवा (नहीं) । तं० ते । ज० कहे छे । इ० थोडा काल । प० राखी होय भाडु दइने अने अवधि उलंघ्या पछी भोगवे अथवा नानी उंमरनी पण परणेली साथे । ग० भोग भोगवे । अ० कुंवारी (परणेली नथी) पण सगाइ थइ छे तेनी साथे भोग भोगवे अथवा वेश्या अथवा विधवा कने जाय । अ० अनेरी स्त्रीना । की० स्तन मुखादि स्पर्श क्रीडा । प० पराया । वि० वेवीशाळनो । क. मेळ-

१. A. B (ए बी.) इयारा D (डी) अतिचारा. २. B. (बी. मा नथी) Omits. ३. A. B C. (ए. बी. सी) °पओगे ४ B (बी.) °क्कमणे. ५ A B. C D. (ए बी सी. डी.) °तुल्ल. ६ A (ए) °रूयववहारे. B. (बी) °विवहारे.

ववो । का० काम । भो० भोगने विषे । ति० तिव्र । अ० अभिलाषा (इच्छा) करवी ॥ ४८ ॥

मूळपाठः—॥ ४७ ॥ तयाणन्तरं च णं सदारसन्तोसीए[1] पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तं जहा। इत्तरियपरिग्गहियागमणे[2], अपरिग्गहियागमणे, अणङ्गकीडा,[3] [4]परविवाहकरणे, कामभोगा तिव्वाभिलासे[5] । ४ ॥ ४७ ॥

भावार्थः—॥ ४८ ॥ त्यार पछी परस्त्रीनो त्याग ने पोतानी स्त्रीथीज संतोषरुप चोथा व्रतना पांच अतिचार जाणवा पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छेः—१. पोतानी परणेली स्त्री नानी उमरनी छे तेनी साथे गमन (भोग) करे (स्त्री उमर लायक थया सिवाय तेनो साथे गमन करवाथी शरीर मांहि अनेक प्रकारनी नुकशानी रुप दोष प्रगटवाथी इहां अतिचार कहेल छे.) २. सगाइ करेली स्त्री पोतानी छे, पण हजु पंचनी साक्षीए परण्यो नथी ते स्त्री साथे गमन करे. ३. परस्त्री साथे आलिंगन स्तन मुखादिक स्पर्श या रुप कुचेष्टाए (कंदर्प) (विषयनो) क्रिडा करे. ४. पारका पुत्र-पुत्रोना विवाह मेळवे. ५. पोतानी स्त्री संगाते तिव्र अभीलाषाए कामभोग सेवे अने अति विषय वधारवा माटेज पुष्टि पदार्थ वापरे. ए पांच अतिचार टाळी चोथुं ब्रह्मचर्य व्रत शुद्ध पाळवुं ॥ ४८ ॥

१ D E (डी इ) °सतोसिए A C. E. (ए सी इ) संतोसिय त्ति °सन्तोसियस्स २ A (ए) इतिरिय °३ C (सी) अनंग. ४. A C. D. E. (ए सी. डी इ) °वीवाह. ° ५. A B. C (ए वी सी) °भोगति ° D E. (डी इ) °भोगसु ति ° A C. E (ए. सी इ) °भोगति °

अर्थः—॥ ४९ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च. णं. वळी । इ० इच्छा । प० परिमाणना । स० श्रावकने । पं० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा पण । न० न । स० समाचरवा (नहीं) । तं० ते । ज० कहे छे । खे० क्षेत्र–उघाडी भूमिका । व० ढांकी भूमिका, घर, हाट, वखार प्रमुख । प० प्रमाण थकी । अ० अतिक्रमे (वधारे) । हि० हिरण्य (अणघडेलुं) सोनुं । सु० सुवर्ण (सोनाना सीका) नुं । प० परिमाण थकी । अ० अतिक्रमवुं । दु० दासी–दास । च० गाय प्रमुख तेहना । प० प्रमाणनुं । अ० अतिक्रमवुं । ध० रोकड । ध० धान्य प्रमुख । प० प्रमाणनुं । अ० अतिक्रमवुं । कु० भाजन–थाळी, वाटका, त्रांबाकुंडी प्रमुख तेहनां । प० प्रमाणथी । अ० अतिक्रमे (वधारे राखे) ॥ ५ ॥ ४९ ॥

मूळपाठः—॥ ४९ ॥ तयाणन्तरं च णं इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा । तं जहा । [1]खेत्तवत्थुपमाणाइक्कमे, हिरण्णसुवण्णपमाणाइक्कमे, [2]दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे, धणधन्नपमाणाइक्कमे[3], कुवियपमाणाइक्कमे[4] । ५ ॥ ४९ ॥

भावार्थः—॥ ४९ ॥ त्यार पछी परिग्रहनी इच्छानुं प्रमाणरूप पांचमां व्रतना म्होटा पांच अतिचार श्रावके जाणवा, पण अंगिकार करवा नहिं ते कहे छेः–१. उघाडी जमीन अने ढांकेली जमीन (घर वगेरे) नुं जे प्रमाण

१ A. B C (ए. बी सी) खित्त°, F (इ.) °परि°. २. D E.) °परिमाण° ३. E. (इ.) क्कमे. ४. F (एफ) कुव्वइपमाण° E. (इ) °परिमाण°.

करेल छे ते उपरांत वधारे राखे. २ सोनानुं जे प्रमाण करेल छे ते उपरांत वधारे राखे. ३. धन (रोकडनाणुं– राज्यनो सीको), धान्य (२४ प्रकारनुं अनाज) नुं जे प्रमाण करेल छे ते उपरांत वधारे राखे. ४. बे पगवाळां दास, दासी प्रमुख अने चार पगवाळां पशु के जे गर्भमांहि होय ते पण गणत्रिमां आवे तेनुं प्रमाण करेल छे ते उपरांत वधारे राखे. ५. घर वखरानुं छे प्रमाण करेल छे, ते उपरांत वधारे राखे. उपर मुजब १. उघाडी जमीन, २. ढांकेली जमीन, ३. अणघडेलुं सोनुं, ४. घडेलुं सोनुं, ५. धन, ६. धान्य, ७. बे पगवाळा माणस, ८. चार पगवाळा पशु, ९. घर वखरो. ए नव प्रकारना परिग्रहनुं जे प्रमाण करेल छे ते उपरांत वधेलुं, पुत्र, स्त्री, स्वजनादिकना नाम उपर चडावी राखे तो अतिचार लागे. ए पांच अतिचार टाळी पांचमुं व्रत शुद्ध पाळवुं ॥५॥४९॥

अर्थः—॥ ५० ॥ त० ते वार । अ० पछी । च. णं० वळी । दि० दिशि । व० व्रत ना. । पं० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा । न० न । स० समाचरवा । तं० ते । ज० कहे छे । उ० पर्वतादिक उर्द्ध उंची । दि० दिशीनुं । प० प्रमाण । अ० अतिक्रम्यो होय । अ० पर्वतथी अधो नीची । दि० दिशीनीचीनुं । प० प्रमाण । अ० अतिक्रमे । ति० त्रिछी । दि० दिशिनुं । प० प्रमाण । अ० अतिक्रम्यो होय । खे० क्षेत्र । वु० वृद्धि एक दिशि थकी घटाडी वधारी होय । स० विस्मृति । अ० अंतर्द्धान न जाणे । क० दिशिए केटलो चाल्यो (संदेह पडया छतां आगळ चाले । उपयोग न राखे) ॥ ६ ॥ ५० ॥

मूळपाठः—॥ ५० ॥ तयाणन्तरं च णं दिसिवयस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न

१. C. D. E (मी डी इ) दिमिझिदिमि पंच°, A (ए) °वयपच°

समायरियव्वा । तं जहा । [1]उड्ढदिसिपमाणाइक्कमे, अहोदिसिपमाणाइक्कमे, [2]तिरियदिसिपमाणाइक्कमे, [3]खेत्तवुड्ढी, [4]सइअन्तरद्धा । ६ ॥ ५० ॥

भावार्थः—॥ ५० ॥ त्यार पछी छट्ठा दिशीव्रतना म्होटा पांच अतिचार जाणवा पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छेः—१. स्वस्थानकथी उंची दिशाए जवानुं जे प्रमाण करेल छे, ते उपरांत वधारे जाय. २. स्वस्थानकथी नीची दिशाए जवानुं जे प्रमाण करेल छे ते उपरांत वधारे जाय. ३. त्रीछी (आडी सरखी जमीन) दिशाए जवानुं जे प्रमाण करेल छे ते उपरांत वधारे जाय. ४. चारे दिशाना गाउ एकठा करी एक दिशाए जाय. ५. प्रमाण करेली जमीनमां जउंछुं के एथी आगळ जउंछुं एवी शंका पड्या छतां निर्णय कर्या शिवाय आगळ जाय. ए पांच अतिचार टाळी छट्ठुं व्रत शुद्ध पाळवुं ॥ ६ ॥ ५० ॥

अर्थः—॥ ५१ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च. णं० वळी । उ० उवभोग एकवार भोगवाय । प० परिभोग वारंवार भोगवाय भोजन ते । दु० बे प्रकारे । प० परुपे छे । तं० ते । ज० कहे छे । भो० एक भोजनना । य० वळी ।

---

१ A (ए.) उड्ढहिसि° C D (सी. डी.) उड्ढदिसि°, E (इ.) °परिमाण°; B. E (बी. इ) °इकमे, A. (ए) °इकम्मे. २. E (इ.) °परिमाण° ३ A. B C. D. E (ए बी सी. डी. इ) खेत्तवुड्ढि, Before it D (तेनी पहेला डी मां छे.) inserts चउद्दिसिपमाणाइकमे; E (इ.) चउद्दिसिपरिमाणाइकमे, treating खेत्तवुड्ढिसइअन्तरद्धा as a Compound Word. ४. D. E. (डी. इ.) °अंतरद्धा.

क० त्रीजा कर्मना । य० वळी । त० ते । णं० वळी । भो० भोजनना । स० श्रावकने । पं० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा । न० न । स० समाचरवा नहि । त० ते । ज० कहे छे । स० (मर्यादा उपरांत) सचितनो । आ० आहर कीधो होय । स० सचेतनो आहार कीधो होय । प० अचेतनी बुद्धिए पाका खजुरादिकनो भक्षण कीधो होय । अ० तत्कालना दळ्या थान तथा भरड्या थान तेहनो । भ० आहार कीधो । दु० ओळो पहुंक प्रमुख दुपक्क तेहनो । भ० भक्षण करवो (काची पाकी चीज खाधी होय) । तु० तुछ (थोडु) खावुं ने नाखी देवुं घणुं ते । भ० भक्षण इक्षु (शेरडी) । सीताफळ । क० हवे कर्मथी । णं० वळी । स० श्रावकने । प० पंनर । क० कर्मादान । जा० जाणवा पण । न० नहि । स० समाचरवा । तं० ते । ज० कहे छे । इं० इंगाला (अग्निए) करी विक्रय (वेपार) करे ते इंगाल कर्म । व० वननो वृक्ष (झाड) छेदी विक्रय करे । सा० सकटादिक (गाडा-पैडा) घडी वेचे । भा० उंट-बलद राखी पारकां भाडां करे ते भाडी कर्म । फो० कोदालादिके करी भूमि फोडी जीवे । कुवा खणे । दं० हाथी प्रमुखनो दांत लीए ते दंतवाणिज्य । ल० लाखनो वेपार । र० मधु आदिक रसनो वेपार । वि० विष वच्छनागादिकनुं वेचवुं । के० वाळ चमरी गायना पुंछडानुं वेहेचवुं । जं० तल सरसवादिकनुं । पी० पीलाववुं । नि० कान नाक अवयवनुं । च्छ० कापवुं । द० क्षेत्रमां दवनुं (अग्निनुं) । दा० देवुं । स० सरोवर । द० द्रह । त० तलावनुं । सो० सोसवुं ते पाणी ए पोतानुं क्षेत्र वाडी सींचे । अ० बीलाडी । कुकडा प्रमुख पापी जीवनुं । पो० पोषवुं ॥ ७ ॥ ५१ ॥

मूळपाठः—॥५२॥ तयाणन्तरं च णं उवभोग परिभोग दुविहेपण्णत्ते । तं जहा । भोयणाउ

य[1] कम्मओ य । तत्थ[2] णं भोयणओ समणोवासएणं पञ्च अइयारा[3] जाणियव्वा, न समायरियव्वा । तं जहा । [4]सच्चित्ताहारे, सच्चित्तपडिबद्धाहारे, अप्पउलिओसहिभक्खणया, [5]दुप्पउलिओसहिभक्खणया, तुच्छोसहिभक्खणया । कम्मओ णं समणोवासएणं पन्नरस कम्मादाणाइं जाणियव्वाइं, न समायरियव्वाइं । तं जहा । इङ्गालकम्मे, वणकम्मे, [6]साडीकम्मे, [7]भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दन्तवाणिज्जे, [8]लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, जन्तपीलणकम्मे निल्लञ्छणकम्मे, [10]दवग्गिदावणया, सरदहतलावसोसणया[11], असईजणपोसणया । ७ ॥ ५१ ॥

---

१ C D, E (सी. डी इ मा नथी) Omit य. २ A, B C, (ए बी. सी. मां नथी) तत्थण. ३ A B, C (ए. बी सी) इयारा, D (डी) अतिचारा ४ A E. (ए. इ) सचित्त ° ५ C. (सी) अप्पओलिओ ओसहि ° D, E, (डी इ.) अप्पओलिओ सहि ° C. (सी.) अप्पओसहि. ° E (इ.) अप्पओसहि ° ६ D, E (डी इ) दुप्पोलि ° C (सी.) दुप्पओलि. ° E. (इ) दुप्पओसहि. ° ७. D E (डी इ) भाडिगकम्मे ८. D E (डी. इ) भाडियकम्मे ९ A B C. D E (ए. बी. सी. डी. इ) लक्खवा ° C D, E (सी डी. इ मा अनुक्रम नीचे मुजब छे) केस, ° रस, ° लक्ख °, विस °; A. B Place (ए बी मा छे) रस °, केस °, विस ° लक्ख ° १० C. (सी) दवग्गिदाणं. ११. D. (डी) ° तडाय ° E (इ.) ° तडाग °

भावार्थः—॥ ५१ ॥ (१) जे वस्तु एकवार भोगववामां आवे ते अनाज प्रमुख, (२) जे वस्तु एनी एज वारंवार भोगववामां आवे ते घरेणां, वस्त्र, घर विगेरे ए सातमुं व्रत बे प्रकारे कहेल छे ते कहे छे. १. एक भोजन संबंधी, २. बीजुं कर्म (व्यापार) संबंधी ए बे मांहि जे भोजन संबधी छे तेहना समुद्रना पताळ कळशा जेवा पांच मोटा अतिचार श्रावके जाणवा पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छे. (१) सचित (जीव सहित) वस्तुना पच्चखाण होय ने सचित खाय तथा मर्यादा धारेली छे ते उपरांत सचित वस्तु खाय तथा सचितमां अचित भेळवीने खाय. (२) सचितनी साथे वळगेली अचीत वस्तु खाय. जेम बावळ प्रमुख झाडथी गुंदर उखेडी खाय. ३. तत्काळ वाटेली, दळेली, खांडेली, भरडेली चीजमां जीवना प्रदेश रही गएला होय तथा बराबर पाकेल न होय तथा लुण प्रमुखथी बराबर अचित थएल न होय एवी वनस्पति फळादिक खाय. ४. ओळो (चण्यानो), पोंहोंक (घऊं प्रमुखनो), उंधोयुं (पापडी प्रमुखनुं). भरत (रींगणा प्रमुखनुं), इत्यादिक दुष्ट रीते पकवीने तथा पकवेली चीज खाय. ५. जेमां नाखी देवानुं घणुं ने खावानुं थोडुं एवुं बोर, शेरडी, सीताफळादिक तुच्छ वस्तु खाय. उपर कहेली सर्वे चीज सचीतना पच्चखाण होय ने खाय तो दोष. भोजनना संबंधमां ए पांच अतिचार टाळी सातमुं व्रत शुद्ध पाळवुं. हवे सातमां व्रतमां व्यापारनो बीजो भेद कहे छे. व्यापारना संबंधमां पंनर प्रकारना कर्मादान छे तेथी घणां पाप कर्मनो संचय थाय. एवां पंनर प्रकारना व्यापार श्रावके जाणवा पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छे. १. कोयला पडावी वेचे, लुहारनी, कुंभारनी, सोनीनी, भाडभुजानी, चुनानी इत्यादिक चोवीस प्रकारनी भट्ठी करी आजीविका करे. २. वन करी ते वन उजारे लइ लीलां झाड वढावी आजीविका करे.

३. गाडी-गाडा बनावी वेचे तथा गळो प्रमुखना सांड करी आजीविका करे. ४. गाडी, बळदीया, घोडा, ऊंट, गधेडा प्रमुख त्रस जीव घरे राखी तेने माथे भार भरो फेरवी आजीविका करे. ५. हळ, कोस, कोदाळा प्रमुखे धरतीना पेट फोडी खेती, सलाट, ओडना कसब करी आजीविका करे, ६. हाथीनां दांत कपावी आजीविका करे. ७. लाखनो वेपार करे. ८. दारु, ताडी, चरबी, मद्य प्रमुख निच रसनो व्यापार करे. ९. अफीण, सोमल, वछनाग प्रमुख झेरनो व्यापार करे. १०. चमरी गायना पूंछडाना केश कपावी वेचे तथा दासदासी, पशु लइ वेचे तथा उननो वेपार करे. ११. घाणी, चरखा, वाड (शेरडी पीलवानो), कपास पीलवाना, कपडा वणवाना, जीव मारवाना संचा, पाणी काढवानो रेंट, घंटी प्रमुखथी व्यापार करे. १२. त्रस जीवना कान-नाक विंधी-खांशी करे. १३. दावानळ सळगावे. १४. सरोवर, नदी, तळाव मांहिथी पाणी उलेची क्षेत्र, वाडी सींचे. १५. कूतरा, बीलाडां, कुकडादिक हींसक (जीव हिंसा करवा वाळा) जीवने पाळी पोषी वेचवानो व्यापार करे तथा दासीयु घेर राखी तेनी पासे वेश्यानो धंधो करावी ते पैसाथी पोतानी आजीविका चलावे. [ए पन्नर प्रकारना व्यापारमांहि केटलाकने, केटलाक खेतीवाडी जेवा कुळथीज व्यापार होय तो तेनी मर्यादा करे पण पचेन्द्रि जीवोनी हींसा करवा-कराववा जेवा कनीष्ट व्यापार कुळथीज होय तोपण छोडी देवा.] एवा पूर्वोक्त पन्नर प्रकारना व्यापार टाळी सातमुं व्रत शुद्ध पाळवुं. ॥ ७ ॥ ५१ ॥

अर्थः—॥ ५२ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च. णं. वळी । अ० अनर्थ । द० दड । वे० वेरमणना । स० श्रावकने । प० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा पण । न० नहि । स० समाचरवा । तं० ते । ज० कहे छे ।

कं० कंदर्पनी काम वधे तेवी कथा । कु० कुचेष्टा करे । मो० मोढे मीठुं वचन बोले । पाछळ खोटुं बोले । सं० एकठां करी राखे । अ० उपल मुसल प्रमुख हथीआरो लोक आवी खांडे । उ० एकवार भोगववानी । प० परिभोग वारंवार भोगववानी । अ० अतिरिक्त जेटलुं आपणे काजे आवे तेथी अधिकी स्नान भोजनादि सामग्री भेगी करे ॥ ८ ॥ ५२ ॥

मूळपाठः—॥ ५२ ॥ तयाणन्तरं च णं[1] अणट्ठा दण्डवेरमणस्स [2]समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा । तं जहा[3] । कन्दप्पे, कुक्कुइए[4], मोहरिए, सञ्जुत्ताहिगरणे[5], उवभोगपरिभोगाइरित्ते[6] । ८ ॥ ५२ ॥

भावार्थः—॥ ५२ ॥ त्यार पछी अनर्थादंडथी निवर्तवारूप आठमा व्रतना म्होटा पांच अतिचार जाणवा पण अंगिकार करवा नहिं ते कहे छे. १. माणस कामातुर थाय एवी कंदर्प (विषय) नी कथा करे. २. हाथ

---

[1] After 'ण D. E. (डी. इ. मा छे 'ण" पछी नीचेना शब्दो) insert अनत्थदंडे चउविहे पण्णत्ते । तं । अवज्झाणायरिए, पमायायरिए, हिंसप्पयाणे, पावकम्मोवएसे, । तस्स ण । २ C (सी मा नथी) Omits, D E. (डी इ) °वासगस्स ३. A B C D E (ए. बी सी डी इ मा नथी) Omits; E. (इ. मा वधारे छे) inserts ण्हाणवट्टणवण्णगविलेवणे, सद्दरूवरसगंधे, वत्थासणआभरणे, पडिक्कमणे, देवसिअं सव्वं ४. C. E (सी. इ) कुक्कुइए D (डी) कुकुइए ५ A. B C D E (ए बी सी. डी इ मां) °हिकरणे. ६. A. B. C. D E. (ए बी. सी डी इ. मा) °गातिरित्ते.

मुखादिके कंदर्पनी कुचेष्टा करे. ३. परस्पर वातनो संबंध मळतो न होय एवी जेम तेम भाषा बोले. ४. गांडेला, खांडणीया प्रमुख हिंसाना शस्त्र निरर्थक एकठां करी राखे. ५. जे वस्तु एनी एज एकजवार भोगववामां अने जे वस्तु एनी एज वारंवार भोगववामां आवे ते वस्तुनी पोताने जेटली जरूर होय तेथी वधारे बीजाने आपवा माटे राखे. जेम पोताने वशेर शाकनी जरूर होय तेने बदले मण शाक मंगावी राखे ने जेने जोइए तेने आपे. पोताने पांच पलंगनी जरूर होय तेने बदले, पचीस पलंग बनावी राखे ने भलाट लेवा जेने जोइए तेने आपे, इत्यादिक दरेक वस्तु पोताने जेटली जोइए तेथी वधारे राखे. ए पांच अतिचार टाळी आठमुं व्रत शुद्ध पाळवुं. ॥८॥ ५२ ॥

अर्थः—॥ ५३ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च. णं. वळी । सा० सामायकना । स० श्रमणोपासकने । पं० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा पण । न० नहि । स० समाचरवा । त० ते । ज० कहे छे । म० मन । दु० (घरना काम काज) माठुं ध्यान चिंतवे सामायिकमां बेठो । व० वचने । दु० माठुं ध्यान प्रवर्ताव्युं होय (कठोर वचन बोले) । का० काया । दु० माठे ध्याने प्रवर्तावी होय (पूंज्या विना बेसे) । सा० सामायिकमांहि । स० स्मृति न रहे के में सामायिक कीधी के । अ० न कीधी अथवा सामायिक निद्रादिक प्रमादे शून्यपणे करे । सा० सामायिक । अ० अनव-स्थित । क० करण एटले सामायिक लइने वहेली पाळे ॥ ९ ॥ ५३ ॥

मूळपाठः—॥ ५३ ॥ 'तयाणन्तरं च णं सामाइयस्स समणोवासएणं' पञ्च अइयारा

१. A. B. C D (ए बी. सी डी.) तत्ता° २. D F. Place this after पञ्च अइयारा (डी. इ. मां "पच अइयारा" पछी आ पाठ छे.)

जाणियव्वा, न समायरियव्वा । तं जहा । मणदुप्पणिहाणे[1], वयदुप्पणिहाणे,[2] कायदुप्पणि-हाणे[3], सामाइयस्स [4]सइअकरणया, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया । ए ॥ ५३ ॥

भावार्थः—॥ ५३ ॥ त्यार पछी सम एटले सम्यक् प्रकारे जेवो जोडए तेवो आयक एटले लाभ प्राप्त थयो ते सामायक व्रतना मोटा पांच अतिचार श्रावके जाणवा पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छे. १. सामायकमां मन दुष्ट प्रवर्तावे. (ते मनना दश दोष कहे छे). १. ओछु, अधिक, विपरीत ते जाणे. २. जश कीर्ति वांछे. ३. धननो लाभ वांछे. ४. गर्व करे. ५. शेठ प्रमुखथी डरतो सामायक करे. ६. पुत्र, स्त्री, धनादिकनुं नियाणुं करे. ७. सामायकनु फळ हशे के नहि होय एम संशय आणे. ८. क्रोध करे. ९. अविनय करे. १० भक्ति हिण करे. एवी रीते दश मनना दोष लगाडे. २. बीजाने दुःख थाय एवुं पापकारी दुष्ट वचन बोले (ते वचनना दश बोल कहे छे.) १. मम्मा चच्चादिकनी गाळ देवारुप दुष्ट वचन बोले. २. अजाण्युं एकदम वगर विचार्युं बोले. ३. संसारी गीत गाय. ४. भगवंतनी आज्ञा विरुद्ध पोतानी मरजी मुजब बोले. ५. अधुरुं वचन बोले, सूत्र संक्षेपे. ६. परजीवने रलेपकारी मर्म वचन बोले. ७. विकथा करे तथा कोइना विरुद्ध खोटुं बोले. ८. बीजानी हांसी मश्करी करे. ९. उतावळो उतावळो आने, बोले ने काम करे. १०. अव्रतीने काम भळावे ने कहे के उतावळा जाओ. ए दस वचनना दोष. ३. अजतनाए चाले, बेसे, उठे इत्यादिक कायाः दुष्ट प्रवर्तावे (ते कायाना बार

१ B. C. (वी सी मा) ०प्पणिहाणे २. A. P (ए बी. सी) वइदुप्प.० B C (वी. सी. मा) ०प्पणिहाणे. ३. C (सी)० प्पणिहाणे. ४. A. (ए) सविअ.०

दोष कहे छे.) १. वस्त्रनी तथा बे बाहुनो पलांठी वाळी बेसे तथा पग उपर पग चढावी बेसे. २. एक ठेकाणे आसन न राखे तथा आघुंपाछुं हाले एवा अस्थिर आसने बेसे. ३. चपळ द्रष्टिए तथा विषय द्रष्टिए स्त्री–पुरुषना रुप जोवे. ४. पापकारी काम करे तथा बाळक रमाडे. ५. वृद्धावस्था अने रोगादिकना कारण विना वगर पुंज्ये भींत तथा [illegible]लादिकनुं ओठींगण ले. ६. अंगोपांग अत्यंत संकोची राखे (आ प्रमाणे करवाथी कोट वखते पडी जवाय त[illegible]आत्मविराधना तथा परजीवनी विराधना थवानो संभव रहे.) ७. आळस मरडे. ८. हाथ–पगादिकना टाचका वगाडे. ९. शरीरे मर्दन करावे तथा शरीरनो मेल उतारे. १०. शरीरे खाज (खुजली) खणे. ११. हाथ पगादिक चंपावे. १२. उंघे. ए बार कायाना दोष जाणवा. ४. सामायक कर्युं के नही तेनो उपयोग चुके. ५. सामायक पुरु थया विना पाळे. (आ सामायक व्रतनी स्थिति बे घडी, चार घडी, छ घडी, एम बेकी रुप घडीथी ओछी घडीए नथी.) उपला पांच अतिचार टाळी नवमुं सामायक व्रत शुद्ध पाळवुं. ए नवमुं व्रत संपूर्ण ॥ ९ ॥ ५३ ॥

अर्थः—॥ ५४ ॥ त० ते[illegible]र । अ० पछी । च. णं. वळी । दे० देसावगासिक व्रतना । स० श्रावकने । पं० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा, [illegible] । न० नही । स० समाचरवा । तं० ते । ज० कहे छे । आ० अनेरा पासे घर थकी वस्तु । प० अणावे । पे० निमेल भूमिकाथी बाहीर वस्तु । प० मोकली होय । स० हुंकारो करी । अ० जणावे । रु० रुप । अ० देखाडीने पोताने जणावे । ब० बहार । पो० पुद्गल कांकरो । प० नांखो । पोताने छतो जणावे । १० ॥ ५४ ॥

मूळपाठः—॥ ५४ ॥ तयाणन्तरं च णं देसावगासियस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा

१ C (सी) दिसा°

जाणियवा, न समायरियवा । तंजहा । [1]आणवणप्पओगे, [2]पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाए, रुवाणुवाए, वहिया [4]पोग्गलपक्खेवे । १० ॥ ५४ ॥

भावार्थः—॥ ५४ ॥ छट्ठा व्रतमां छ दिशानुं जे प्रमाण करेल छे ते मांहियी संकोची १. जीवहिंसा, २. जूठुं वचन, ३. चोरी, ४. कुशील [विषय] ५. परिग्रह. ए पांच आश्रवनो त्याग करी तिविहार [१. अन्न, २. मेवो. ३. मुखवास, ए त्रण प्रकारना आहारनो त्याग अने एक अचित पाणी पीवा माटे मोकळुं ते] अथवा चौविहार [अन्न, पाणी, मेवो, मुखवास, ए चारे वस्तुनो त्याग ते.) उपवास करी एक अहो (दिवस) रात्रीनो संवर करी धर्म स्थानकमां रहे तथा पांच आश्रवनो त्याग करी अचित आहार–पाणी करी एक अहोरात्रि धर्म स्थानकमां रही धर्म ध्यान करे ते दसमां देसावगासिक व्रतना पांच म्होटा अतिचार श्रावके जाणवा पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छे. १. पोते जमीननी जेटली मर्यादा धारेल छे ते उपरांत बाहिर घरादिकथी वस्तु मंगावे. २. चाकर पासे मंगावे अथवा तेनी साथे मोकले. ३. पोते साद (उचार) करी जणावे. ४. पोते रुप देखाडी जणावे. ५. कांकरी प्रमुख नाखी जणावे. आ पांचे प्रकारे पोते धारेली हदनी उपरांतथी मगावे. ए पांच अतिचार टाळी दशमुं देशावगासीक व्रत शुद्ध पाळवुं. ए दशमुं व्रत संपूर्ण । १० ॥ ५४ ॥

अर्थः—॥ ५५ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च. णं. वळी । पो० पोसो । उ० उपवासना । स० श्रावकने ।

---

१ A B. (ए बी) ° पओए. D E (डी. इ.) पआगे. २. C. D. E. (सी. डी. इ.) ° पओगे ° णपओगे. ३ D. (डी.) ° वातिए ४ A. (ए) ° परिखेवे.

पं० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा पण । न० नही । स० समाचरवा । तं० ते । ज० कहे छे । अ० जीव रक्षा निमित्ते सेजा संथारो द्रष्टि करी वगवर न पडिलेहे न जुवे । दु० माठी रीते पडिलेहण कीधुं होय । सि० पाटपाटला । सं० तरणादि पथारी । अ० थोडुं पुंज्युं होय । दु० माठी रीते पुंज्युं होय । मि० सेजा । सं० सथारो। अ० बराबर तपासी पडिलेहण कीधुं न होय । दु० माठी रीते । पडिलेहण कीधुं होय । उ० वडीनीत जाजरु जवानी । पा० लघुनीत पेशावनी परठववानी । भ० भूमि । अ० थोडी पुंजी होय । दु० माठी रीते पुंजी होय । उ० वडी नीत । पा० लघु नीतनी । भू० भूमिका । पो० पोसह । उ० उपवास कीधो । आहारनी वांछा करे । प्रभाते भला आहार सुखडी लेशुं एम । स० सम्यग् । अ० न । पा० पाळे । ११ ॥ ५५ ॥

मूळपाठः—॥ ५५ ॥ तयाणन्तरं च णं पोसहोववासस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा[१] । तं जहा । अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारे, अप्पमज्जिय दुप्पमज्जियसिज्जासंथारे, अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणभूमी, अप्पमज्जियदुप्पमज्जिय उच्चार पासवणभूमी पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया ॥११॥५५॥

भावार्थः—॥ ५५ ॥ त्यार पछी चार आहारना पच्चखाण करी कुशोलना पच्चखाण करी सोनी पासे गया सिवाय नीकळी शके नहि एवी कडी प्रमुख तथा जेना वगर बीलकूल चाले नही एवी चीज, जेमके सौभाग्यवती स्त्रीने

१ A B. (प. बी.) तदा °

कानमां वाळी टोळीयु, वगेरे मादिक होय, नाकमां नथ कांटो होय, हाथमां चुडी उपर सोनानी-चीप होय, पगमां कडला, मांकळां होय, पुरुषना कानमां कडी, मरकी होय, पगमां सोना रुपानो वेडो होय इत्यादिक जरुरी चीज उपरांत सोना, रुपा, झवेरात प्रमुख घरेणाना पच्चखाण, पुष्पनी माळा तथा चंदनादिक विलेपननां पच्चखाण, शस्त्र, मांदला प्रमुख तमाम पापकारी कामनां पच्चखाण. एवी रीते पच्चखाण करो एक संपूर्ण अहोरात्री सुधी धर्म स्थानकमां रहो धर्म-ध्यान करवुं ते पोषध व्रत कहीए. ते पोषध व्रतना एकवीस दोष कहे छे. १. वगर पोषध व्रतवाळा पासे पाणी प्रमुख मंगावी लीए. २. पोषो करवा माटे सरस आहार लीए. ३. अतरवारणे (पोषो करवाने आगले दिवसे) सामग्री मेळवी आहार लीए. ४. पोषा निमित्ते शरीरनी विभूषा (नाहवुं-धोवुं विगेरे) करे. ५. पोषा माटे वस्त्र धोवरावे. ६. पोषा माटे बहु मूल्यवाळा आभरण पहेरे. ७. पोषा निमित्ते हजामत करावे, नख उतरावे. (बीजाथी सातमा सुधीना ए छ दोष पोषो करवा अगाउ लगाडे) ८. पोषा मांहि शरीरनो मेल उतारे. ९. दिवसे वगर कारणे सुवे. १०. माणस कामातुर थाय एवी कथा करे. ११. भोजननी कथा करे. १२. देशनी कथा करे. १३. राज्यनी कथा करे. १४. पारकी निंदा करे. १५. मातापितादिकने आवो जाव कहे. १६. ए चोर पापी हतो तेने भलो मार्यो इत्यादिक चोरोनी कथा करे. १७. स्त्रीना अंगोपांग नीरखे. १८. जे जग्याए स्त्री बेठेली होय त्यांथी गया पछी बे घडी थया पहेलां ते जग्याए बेसे. १९. पोषामांहि त्रण दिवसना काम आगळथी चिंतवी राखे. २०. मळ-मात्राना वासण एकलां मुके. २१. मेना (मकान), संथारो (पथारी) प्रमुख पुंज्या वगर वापरे.

(आटमाथी एकवीसमां सुधी १४ अने एक पहेलो ए पंदर दोष पोषामांहि लगाडे. ए एकवीस दोष टाळी पोषो करे.) ते अग्यारमा पोषधव्रतना मोटा पांच अतिचार श्रावके जाणवा पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छेः—

१. उपाश्रय, पाट–पाटला तथा पथारी जोवे नहि तथा दुष्ट रीते जोवे. २. उपाश्रय, पाट तथा पथारी पुंजे नहि तथा दुष्ट रीते पुंजे. ३. मळ–मात्रानी भूमिका जोवे नहि तथा दुष्ट रीते जोवे. ४. मळ–मात्रानी भूमिका पुंजे नहि तथा दुष्ट रीते पुंजे अने त्यां मळमात्रु परठवे (नाखे) ५. पोषामांहि जेटली वस्तुनो त्याग करेल छे तेनी अभिलाषा करेली होय अने एकवीस दोष रहित स्थिर चित्तपणे पोषो रुडी पेरे पाळ्यो न होय. ए पांच अतिचार टाळी इग्यारमुं पोषधव्रत शुद्ध पाळवुं. ॥ ११ ॥ ५५ ॥

अर्थः—॥ ५६ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च. णं. वळी । अ० अतिथि । सं. संविभागना । स० श्रावकने । प० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा पण । न० न । स० समाचरवा । तं० ते । ज० कहे छे । स० सचित उपरे । नि० सुजतो आहार मुक्यो होय । स० सचिते सुजतो आहार । पे० ढांक्यो होय । का० काळ । अ० अतिक्रमे एटले वंगडेली वस्तु वहोरावी होय । प० आपणो वस्तु पारकी । व० करे । एटले पोतानो आपवा जेवी वस्तु छतां बीजानी आपवा उपदेश करे अथवा पोते सुझता छतां पारकाने वहोराववानुं कहे । म० मत्सर सहित दान दे । १२ ॥ ५६ ॥

मूळपाठः—॥ ५६ ॥ तयाणन्तरं च णं अहासंविभागस्स [1]समणोवासएणं पञ्च [2]अइ

---

१ (' D. E (सां डी. इ मा नथी) Omit २ A B. (ए बी मा) " तिचारा, D. (डी) अनिचारा

यारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा । तंजहा [1]सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपेहणया, [2]कालाइ-क्कमे, [3]परववदेसे, [4]मच्छरिया । १२ ॥ ५६ ॥

भावार्थः—॥ ५६ ॥ त्यार पछी अतिथि ते जेनी तिथि निर्माण करेल नथी के अमुक दिवसे आवशे अने गृहस्थीए पोताने माटे जे वस्तु ग्रहण करेल छे तेमांहि जेनो भाग रहेल छे एवा साधुने चौद प्रकारनुं निर्दोष दान देवा रुप बारमा व्रतना म्होटा पांच अतिचार श्रावके जाणवा पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छेः—

१ सचित वस्तु उपर अचित वस्तु मूकी होय ते आपे. २ सचित वस्तुए करी अचित वस्तु ढांकेली होय ते आपे. ३ जे वस्तुनो काळ वीती जवाथी तेना रंगमां, गंधमां, स्वादमां फेरफार थइ गयेल होय एवी बगडेली वस्तु आपे. ४ नहि देवानी बुद्धिए पोतानी वस्तु होय अने कहे के, आ वस्तु मारी नथी पण पारकी छे तेथी हुं शी रीते आपुं ? एम द्वेषथी आपे नहि तथा द्वेषथी अपथ्य–(गेरफायदो करनार) कारी, नागेशरी ब्राह्मणीनी पेरे आपे तथा कोइ कारणथी के कोइना कहेणथी नहि छटके आपवुं पडे तो द्वेषभावथी आपे तथा पोते मुजतो होय ने बीजाने आपवानुं कहे. ५ जश, कीर्ति मेळववा अहंकारथी दान दे तथा दान दइ अहंकार करे. ए पांच अतिचार टाळी बारमुं व्रत शुद्ध पाळवुं. ॥ १२ ॥ ५६ ॥

१ C. E (सी इ.) सच्चित्त० २ A B (ए बी) ०कम्मे C (सी) ०कमेकसे D (डी.) ०कम्मदाणे E (इ) ०कमदाणे. ३. A (ए.) परउनवेसे B. (बी) परउवदेसे E. (इ.) परवदेसे. ४ D. E (डी इ) मच्छरया

अर्थः—॥ ५७ ॥ त० ते वार । अ० पछी । च० णं० वळी । अ० अपछिम छेल्ली । मा० मरणने । अ० अंते । सं० संलेखणा (माठा काम थकी दूर थवुं ते) । झू० अणसण सेववाना अथवा संथारा रुप अग्नि उपरे शरीर रुप काष्ठना । आ० आराधवाना नाखवाना । पं० पांच । अ० अतिचार । जा० जाणवा पण । न० नहि । स० समाचरवा । तं० ते । ज० कहे छे । इ० इहलोकनी । सं० आकंखा वांछा करे । प० परलोकनो । सं० आकंखा । जे हुं इंद्र थाउं ते अतिचार । जी० जीववानी । सं० वांछा करे । जे हुं घणुं जीवुं तो सलाघा (कीर्ति) थाय । म० मरणनी । सं० आकंखा करे । दुःख कष्ट आवे । का० काम भोगनी । सं० वांछा करे । विषयादिक चींतवे ॥ १३ ॥ ५७ ॥

मूळपाठः—॥ ५७ ॥ तयाणन्तरं च णं अपछिममारणन्तिय संलेहणाझूसणाराहणाए[1] पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा । तं जहा । इहलोगासंसप्पओगे[2], परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे । १३ ॥ ५७ ॥

भावार्थः—॥ ५७ ॥ त्यार पछी आयुष्यने अंते अमगळीक उपशमाववा माटे ज्ञान, दर्शन, चारित्रने आराधवा (सेववा) शरीररुप काष्ठने संथाराहप अग्निने विषे नाखवुं तेहना म्होटा पांच अतिचार जाणवा पण अंगिकार करवा नहि ते कहे छेः—१ संथारामां एवुं चींतवे के आ मनुष्य लोकमां राजा–प्रधानादिकनुं मने सुख मळजो

१. C (सी.) ० झूसिणा. ० २. A. B. (ए, बी.) ० प्पयोगे

एवी इच्छा करे. २ परलोकने विषे मने देवलोकना सुख मळजो एवी चिंतवणा करे. ३ पोतानी जश (पोताना देशमां लोको गुणग्राम करे ते) कीर्ति (सर्व देश देशने विषे लोको गुणग्राम करे ते) अने सुख जाणीने हुं घणो वखत जीवु तो सारुं एवी चिंतवणा करे. ४ दुःख, पीडा जाणीने मारुं मरण जल्दी थाय तो सारु एवी चिंतवणा करे. ५ आ करेलां तप, संयमनु फळ होय तो परभवने विषे मने काम (शब्द–रुप), भोग (गंध, रस, स्पर्श) मळे एवी चिंतवणा करे. ए संलेखणा (संथारो) पांच अतिचार टाळी मरणने अंते शुद्ध संथारो करवो. ॥ १३ ॥ ५७ ॥

[समकीत, बारव्रत ने संलेखणाना मळी ८५ अतिचार थया ने १४ ज्ञानना मळी ९९ अतिचार श्रावकना जाणवा.]

अर्थः—॥ ५८ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । आ० आणंद । गा० गाथापति । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । अ० समीपे पासे । प० पांच । अ० अणुव्रत । स० सात । सि० शिक्षाव्रत । दु० एम बार । वि० प्रकारे । सा० श्रावकनो । ध० धर्म । प० अंगिकार कीधो । प० अंगिकार करीने । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । वं० वांदी । न० नमस्कार करे । न० नमस्कार करीने । ए० एम । व० बोल्यो । नो० नहि । ख० निश्चे । मे० मुजने । भ० हे भगवंत । क० कल्पे । अ० आज पछी । अ० अन्यतीर्थि ते तीर्थंकरना शासनथी अनेरा दर्शननी ते सर्व अन्यतीर्थि कहीए. स्वहना अन्यतीर्थिना नपरनी (साधु) । वा० अथवा । अ० अन्यतीर्थिना । दे० देव हरी हरादिक । वा० अथवा । अ० अन्यतीर्थिए । प० ग्रही जे पुजवा लायक वस्तु तेने अथवा अन्यतीर्थिना ग्रह्या भ्रष्टाचारी आचार्य । वा० वळी । व० वांदवा । वा० अथवा । न० नमस्कार

करवा । वा० अथवा । पु० पहेलो मुजने । अ० अणबोलावे । आ० एकवार बोलाववुं । वा० अथवा । सं० वारं-वार बोलाववुं । वा० वळी । ते० तेहने । अ० असणादिक । वा० अथवा । पा० पाणी । वा० अथवा । खा० मुखडी । वा० अथवा । सा० मुखवास । वा० अथवा । द० देवुं । वा० अथवा । अ० अनेरा पासे देवराववुं न कल्पे पण । वा० वळी । न० एटलो विशेष । रा० राजाना । आ० आग्रहे देवुं । ग० घणा कुटुंबनो गणी ते गण तेहने । आ० आग्रहे करी देवुं । ब० बळात्कारे करी । आ० देवुं । दे० देवताने । आ० योगे करी देवुं । गु० कुटुंबमांहि वडेरो ते गुरुने । नि० जोगे करी देवुं । वि० अटवी ने विषे देवु कल्पे । क० कल्पे । मे० मुजने । स० श्रमण एटले अरिहंत भगवंत तथा तेना । नि० निग्रंथने (साधुने) । फा० फासुक अचित । ए० एषणीक वहोरवा लायक । अ० असण आहार । पा० पाणी । खा० मुखडी । सा० मुखवास । व० वस्त्र । कं० कांबळी । प० पात्र । पा० पायपुछणादिक । पी० बाजोठ । फ० पाटीयुं । सि० सेजा उपासरादिक । सं० संथारो तृणादिक । ओ० ओषध । भे० भेषध । घणां औषध मेळवेल होय ते । प० वळी । प० एटलां वानां देतो थको । वि० विचरवुं । त्ति० एम । क० करीने । इ० एम । ए० एहवा । रू० रूप एटले एहवो । अ० अभिग्रह । अ० ले । अ० लेइने । प० प्रश्न । पु० पुछे । पु० पुछीने । अ० अर्थ । आ० धारे । आ० धारीने । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महा-वीरने । ति० त्रणवार । व० वांदवा । वं० वांदीने । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । अं० समीपथी । दू० दूइपलास नामा । चे० उद्यान थकी । प० नीसरे । प० नीसरीने । जे० ज्यां । वा० वाणिज्य । गा० गाम । न० नगर । जे० ज्यां । स० पोतानुं । गि० घर । ते० त्यां । उ० आव्या । उ० आवीने । सि० सिवानंदा ।

भा० भार्या प्रते । ए० एहवुं । व० बोल्या । ए० एम । ख० निश्चे । दे० हे देवानुं प्रिय । म० मे । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देवनी । अं० समीपे। ध० धर्म । नि० सांभळ्यो । से० ते । वि० य० पण। ध० धर्म । मे० मे । इ० वांछयो । प० विशेषे वांछयो । अ० ए धर्म । रु० रुच्यो छे ते माटे । तं० तमे । ग० जाओ । णं० वळी । तु० तमे । दे० देवाणु प्रिय । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । वं० जइने वांदो । जा० यावत प० सेवा उपासना करो । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । अं० समीपे । प० पांच । अ० अणुंव्रत । स० सात । सि० शिक्षाव्रत । दु० बार प्रकारे । गि० गृहस्थ । ध० धर्म । प० पडिवर्जो ॥ ५८ ॥

मूळपाठः—॥ ५७ ॥ तए णं से आणन्दे [1]गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं [3]सावयधम्मं पडिवज्जइ, २त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, २त्ता एवं [4]वयासी । "नो खलु मे, [5] भन्ते, कप्पइ [6]अज्जप्पभिइं अन्नउत्थिए" वा अन्नउत्थियदेवयाणि वा अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि

१. L (डी.) ०वति E (इ) ०वइ २ D. E. (डी. इ मां नथी) omit ३ C D E (सी डी इ) सावग ४. A. B (ए बी) वदासी ५ A D E (ए डी इ. मा नथी.) omit ६. A B. C D E (ए. बी सी डी इ. मां) ०भिई. a. c e. (ए. सी इ) ०भिति ७ A. B (ए बी) ०उत्थिय C D E. (सी डी. इ) ०उत्थिया.

वा वन्दित्तए वा नमंसित्तए वा, पुव्विं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पदाउं वा. नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकन्तारेणं । कप्पइ मे समणे निग्गन्थे फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थकम्बल पडिग्गहपायपुञ्छणेणं पीढफलगसिज्जासंथारएणं ओसहभेसज्जेण य पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए । त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ. रत्ता पसिणाइं पुच्छइ, रत्ता अट्ठाइं आदियइ, रत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ.रत्ता सम-

१. A. B D (ए बी. डी मा यथार्थ छे) नेइयाई C. E (सी इ) अभिहन चेइयाइ But according to this author it should be नेइयाणि आ ग्रंथ कर्ता 'नेइयाणि' शब्द होवो जोइए एम कहे छे. २. A (ए.) या ३ C (सी.) अणालित्तेणं ४ C. (सी.) असिणं A. B. D E. (ए. बी. डी. इ. मां बाकीनुं नथी. फक्त (४) छे) Omit the rest only adding the numeral 4 ५. B (बी), °ताउ. ।' E. (डी इ) °याउं ६ A. (ए) °गेणण ७ A (ए.) वित्ती. B (बी) कत्तारेए. ८ A. C (ए. सी.) फासुएसणिज्जेण ९ C D. E. (सी. डी इ. मां "पडिग्गह" पछी 'कंबल' छे) place कंबल after पडिग्गह A. B (ए. बी.) °पाद° १० C. D E (सी. डी. इ) °सेज्जा, °; B. (बी.) °संथारेण । ११. A D E. (ए डी इ.) विहरित्तए. १२. A (ए.) अट्ठाइमादियति. C. (सी) °इमादियइ. १३ D. E. (डी. इ. मां नथी.) omit.

णस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ [1]पडिणिक्खमइ, त्ता जेणेव वाणियगामे [2]नयरे, जेणेव सए [3]गिहे, तेणेव उवागच्छइ, त्ता सिवनन्दं भारियं एवं वयासी । " एवं खलु, देवाणुप्पिए[4], मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए[5] धम्मे निसन्ते, से वि य[6] धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तं गच्छ[7] णं तुमं, देवाणुप्पिए, समणं भगवं महावीरं वन्दाहि जाव[8] [9]पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए[10] पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं [11]दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि " ॥५८॥

भावार्थः—॥ ५८ ॥ ते वारे ते आणंद गाथापतिए श्रमण भगवत श्री महावीर देवनीं पासे पूर्वे कह्या ते मुजब पांच अणुव्रत (पहेला पांच व्रत), सात शिक्षा व्रत (छट्ठाथी वारमा सुधी सात व्रत) ए बे मळीने बार व्रतरुप श्रावकनो धर्म अंगिकार करीने, त्यार पछी श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने (बत्रीस दोष टाळी)

१. B C (बी. सी) पडिनि° A. B C D. E (ए. बी सी डी इ) °क्खम° २. A. B. D (ए बी डी.) नगरे ३ B C (बी सी) गेहे. ४ A C (ए सी) °प्पिया. ५ B D E. (बी डी इ मां नथी) Omit ६. D. E (डी इ) अतिय धम्मंणिमत ७ D E (डी. इ) ए मेधम्म ८ B C (बी. सी) गच्छह जुओ ज्ञाता सूत्र पाट १३१ जुओ भगवती सूत्र पानु २५० जुओ निरयावलिया सूत्र पाट ४. ९ B (बी.) पज्जवासाहि. १०. D. E. (डी इ.) अतिय. ११ A (ए.) ° विहि °

वंदन नमस्कार करे. [ते वंदनना बत्रीस दोषना नाम कहे छे.]:—

१. आदर रहित वांदे, २. जात्यादिकनो मद करीने अक्कड रही वांदे. ३. वंदणा करतां नासी जाय. ४. एक वखते घणांने वांदे. ५. म्होटा म्होटाने वांदे. ६. रजोहरण अंकुशनी पेरे ग्रहीने वांदे. जेम हाथीने अंकुशे करी बेसाडे तेम वंदणा करवा शिष्य गुरुने हाथे झाली तथा वस्त्र झाली बेसाडे. ७. काचबानी पेरे रीगतो (ढील चोरानो चोरातो) वांदे. ८. एकने वांदी पछी माछलानी पेरे खेलतो (आडो अवळो) वांदे. ९. दुष्ट मनथी वांदे. १०. वेदीदा बध दोष लगाडतो वांदे एटले हाथ ढींचण उपर राखी वांदे पण पंचागी प्रणाम न करे. ११. जो हुं नहि वांदु तो मने ठपको आपशे अथवा गच्छबाहर काढशे एम बीहतो बीहतो वांदे. १२. एनो मारा उपर राग छे माटे वांदु एम जाणी वांदे. १३. ए म्हारो गृहस्थावासनो मित्र छे तेथी वांदु एम जाणी वांदे. १४. जो एने वांदु तो मने श्रावको—एम जाणशे जे ए समाचारीने विषे द्रढ (मजबुत) छे तथा असमाचारीने विषे दाखल करेल छे, एम गर्व सहित वांदे. १५. वस्त्र, पात्र, ज्ञानादिक लाभने माटे (गुरु पासे लटपट करी ज्ञानादिक वस्तु हुं लइ लउं ने पछी मारे गुरुनी बीलकुल गरज राखवी ज नहि एवी मनमां चोटाडथी) वांदे. १६, लघुतापणाना भयथी अनेरा थकी पोताना आत्माने गोपवतो चोरनी पेरे छांनो वांदे. १७. जो हुं वांदु तो मारी श्लाघा (वखाण) थाय एम जाणी वांदे. १८. जो हुं गुरुने सारी रीते वांदु ने लटपट करुं तो मने समाचारीमां भेळवी म्हारो आहार—पाणी भेळो करे एम मनमां चोटाडथी आहार—पाणी भेळो करवाने माटे वांदे तथा गुरुने आहार अने निहार करवानो समय होय ते वखते अटकावी वांदे. १९. क्रोधे धमधमतो वांदे. २० तमे काष्ट पुत-

ळा जेत्रा छो माटे तमने वांदवुं-अणवांदवुं सरखुंज छे, एम आंगळीए तर्जना करतो वांदे. २१. तमने वांदवाथी शुं थाय, एम धूर्त्तपणे हीलीने वांदे. २२. अर्धवंदन करी वचे विकथा-करतो वांदे. २३. जे साधुने देखे तेने वांदे अने न देखे तेने न वांदे. २४. उत्तमांगने एक देशे (एक पडखे माथुं नमावी) वांदे. २५. निर्जराने अर्थे नहिं वांदता राजानी वेठनी पेरे कर मानतो वांदे. २६. राजाना कर थकी छूटया पण गुरुनो वंदणाना कर थकी छूटया नहि एवुं जाणी वांदे. २७. वंदणानो अभिलाखाए आवश्यकादिक असंपूर्ण, अधुरो पाठ भणी वांदे. २८. वांदीने पछी गाढे गाढे शब्दे वांदे. २९. मूंगानी पेरे उच्चार करतो वांदे. ३०. म्होटे शब्दे उच्चार करतो वांदे. ३१. घोडानी लगाम चोकडानी पेरे रजोहरण छेडे ग्रहीने वांदे. ३२. अशिखिए वांदे. ए बत्रीस दोष रहित वंदणा नमस्कार करीने एम कहेता हवा हे भगवंत! नीर अतिचारपणे समकित पालवा अर्थे, १. अन्यतीर्थि (जैन शिवाय बीजा धर्म) ना साधुने; २. अन्यतीर्थिना हरीहरादिक देवने; ३. जैननो साधु संयमथी भ्रष्ट थइ गएलो होय तेने अन्य तीर्थिए पोताना धर्मनो साधु, बावो, जोगी, कापडी, तापस, सन्यासी विगेरे करी ग्रहण करेलो होय तेवा भ्रष्टाचारी साधुने; ए त्रणे जणाने आजथी मारे वांदवा कल्पे नहि, तेहने नमस्कार करुं नहीं तेनी साथे अणबोलावे बोलुं नहि, वगर बोलावे वारंवार बोलावुं नहि, तेने धर्म निमित्ते, तरण-तारण बुद्धिए, निर्जराने अर्थे, अन्न-पाणी, मुखडी, मेवो, मुखवास एकवार आपुं नहि, वारंवार आपुं नहि (अनुकंपा निमित्ते आपवुं पडे तेनी बंधी नथी), तेमां म्हारे छ कारणे करवुं पडे तो आगार ते छ आगार कहे छेः- १. राजाना हुकमथी, २. घणां लोकनो समुदाय मळीने कहेवाथी, ३. कोइ बळवतना बळात्कारे परवशपणाना

कारणे, ४. कोइ देवताना बळात्कारे, ५. मातापितादिक वडेराना कहेवाथी, ६. अटवीमां तथा दुर्भिक्षनं विपत्तिना कारणे. ए छ छींडीना कारण शिवाय पुर्वोक्त त्रणने वंदणादिक मारे म्हारे करवुं कल्पे नहि, अने कल्पे मुजने श्रमण एटले तीर्थंकरने तथा तेना एटले निग्रंथ साधुने अचित बेतालीश दोष रहित १. अन्न, २. पाणी, ३. मेवो, ४. मुखवास, ५. वस्त्र, ६. पात्र, ७. कांबली, ८. पायपुंछणुं-रजोहरण, (ए आठ प्रकारनां दान आप्या पछी पाछां लइ शकाय नहिं.) हवे पाडीहारुं ने जे आपेलुं पाछुं लइ शकाय तेहना नामः-९ पाछळ चोथांगण बेवानां पाटीयां; १०. बाजोठ, ११. उपाश्रय तथा पाट, १२. त्रणादिकनो संथारो (पथारी), १३. औषध (दवा), १४. भेषज. ते गोळी चूर्ण प्रमुख. (ए छ प्रकारना दान पाछा लइ-शकाय तेथी तेने पाडीहारं शब्द कहेल छे.) ए चौद प्रकारनुं दान प्रतिलाभतां (आपतां) विचरवुं मुजने कल्पे. एम करीने एवो उंचो अभिग्रह (धारणा) ग्रही (लइ) ने प्रश्न पुछयां, पुछीने अर्थ, हेतु, आदरे आदरीने श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने त्रणवार आवर्तन (हाथनी पोंहचना आठ पट करी गळामां छाती तरफ बे छेडा नाखी, एक भाग मोढा आडो बरावर रही शके एवी रीते राखी ते छेडो डाबा खंभा उपर नांखवो, बीजो छेडो बे हाथमां राखी जमणा कानथी डाबा काने जइ फरी जमणा काने बे हाथ लाववा तेने एक आवर्तन कहेवाय छे. एक आवर्तन शुरु थतां थकी तिख्खुत्तोनो संपूर्ण पाठ भणो जवो जोइए. एवो रीते त्रण आवर्तन देवा ते मात्र त्रण वखत तिख्खुत्तोनो पाठ भणवो अने बे हाथ, बे पग, एक माथुं ए पांच अंग नमावी त्रणवार उठो, बेसी वांदी नमस्कार करवा) दइने वांदे, नमस्कार करे, वांदी नमस्कार करीने श्रमण भगवंत श्री महावीरना पासा थकी दुतीपलाश नामे वनथकी नीकळीने ज्यां वाणिज्य गाम,

नगर के ज्यां पोतानुं घर छे त्यां आवीने पोतानी शिवानंदा भार्या ने एम कहेता हवा, एम निश्चे, हे देवाणुप्रिय! मे श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी पासे धर्म सांभळ्यो, ते धर्म मे सेव्यो, उच्छयो, विशेषे इच्छयो, ते धर्म मने अति रुच्यो, ते माटे हे देवाणुंप्रिय! तमे पण त्यां जाओ अने श्रमण भगवत श्री महावीर देवने वांदी, नमस्कार करी यावत पर्युपासना (सेवा) करी श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनो पासे पांच अणुंव्रत, सात शिक्षाव्रत, ए बार व्रतरुप गृहस्थनो धर्म अंगिकार करो ॥ ५८ ॥

*उपासकदशा सूत्रना पाठ ५८ नी बाबतमां ए. एफ. रुडोलफ होरनल साहेब जेणे १८९० मां आ सूत्रनो मूळपाठ पाठांतर साथे मागधी भाषामां अंग्रेजी तरजुमा साथे रची कलकत्तानी एसीयाटीक सोसाइटी तरफथी छपावेल छे तेना इंग्रेजी तरजुमाना पाने ३५ मे ९६ मी फुटनोट नीचे मुजब करी छेः—आ सूत्रनो मूळपाठ ते साहेबे आठ उपासक दशा सूत्रनी जूदी जूदी प्रतो उपरथी लख्यो छे ते आठ सूत्रोनी विगत प्रस्तावनामां इंग्रेजीमां तेज तुकमां आपी छे. ते सूत्रोना नाम "ए" थी मांडी "एम" सुधी आपेल छे. ते सूत्रो पैकी "ए–बी–डी नामनी त्रण प्रतोमां "अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि चेइयाइं" एवो पाठ छे ने "सी ने इ" नामनी बे प्रतोमां "अन्नउत्थिय परिग्गहियाणि अरिहंत चेइयाइं" एवो पाठ छे. वाकीनीमां "अन्नउत्थिय परिग्गहयाणि" एटलो पाठ छे. उपलो पाठ ते साहेबना बनावेल उपला सूत्रना मूळ पाठना पाने २३ मां मूळ पाठ ५८ तथा तेना पाठान्तरे ते पानाना फुटनोटमां लखेल छे तेथी जणाशे. उपलो पाठ तथा पाठान्तर बाबत ते साहेब इंग्रेजी तरजुमो करतां पाने ३५ मे ९६ नी फूटनोटमां लखे छे जे उपली पांच प्रतोमां "चेइयाइं" अथवा

"अरिहंत चेइयाइं" एवो पाठ जे वधारे जणाय छे ते अर्थनो विशेष खुलासो करवा टीका उपरथी दाखल करेल जणाय छे जेथी एम जणाय छे जे अन्य तीर्थिक पुजवा ग्रहण करेल चीजो कांतो "अर्हत" (अथवा मोटा माणसो) के "चैत्यम" एवो अर्थ बताववा खुलासा तरीके दाखल करी छे. जो सूत्रना मूळपाठमां "चेइयाइं" के "अरिहंत चेइयाइं" एवो पाठ असलमां होत तो ते पाठ "चेइयाणि" एवो होवो ज जोइए, एमां शक रहेतो नथी, पण "परिग्गहियाणि चेइयाइं" पाठ वणोज शक पडतो छे. उपर मुजबनो पाठ "उववाइ" सूत्रमां जणाय छे पण तेनो खुलासो ते एम करे छे जे ज्यारे एक पाठ खुलासा दाखल एक सूत्रमां दाखल थाय एटले तेवो ज पाठ तेरी ज जातनो ज्यां पाठ आवे त्यां ते फरीने लखी जवाय ए कुदरती रीते बने तेवुं छे. "चेय" शब्दनो टीकामां "प्रतिमा लक्षण" एवो अर्थ करेल छे. जेवी के भातु नामना नीच जातना ब्राह्मण मैनाशीयां गोवनो वीरभद्र अने महाकाळ नामनी बे जातनी प्रतिमा पुजे छे तेवी. उपर मुजबना ते साहेबना खुलासा उपरथी एम जणाय छे के ५८ मा पाठमां "अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि चेइयाणि" एवो पाठ जोइए. हा आ पाठनो अर्थ "अन्यतीर्थिक ग्रही जे पुजवा लायक चीजो" एवो जे साहेबे कर्यो छे ते अर्थ "चेइयाणि" शब्द दाखल कर्या विना कर्यो छे. तेनो अर्थ बंधबेसतो नथी, केम के एवी कइ चीजो अन्यतीर्थिए ग्रही छे जे आणंद श्रावकने पूजवालायक नहि पण जो "चेइयाणि" शब्द मूळमां होय तो तेनो अर्थ एम बेसे के अन्यतीर्थीए ग्रहण करेल पूजवा लायक "चेइयाणि" ए अर्थ बेसे छे, अन्यतीर्थीना साधु, अन्यतीर्थीना देवने अन्यतीर्थिए ग्रहण करेल "चेइयाणि" ए त्रण गणाता थया. हो अन्यतीर्थि शब्दे अन्यतीर्थिना

साधु एहवो अर्थ ज्ञाता सूत्रमां आराधिक अने विराधिक साधुना संबंधना अध्ययन ११ मुं जोवाथी सिद्ध थशे. ते अध्ययनमां भगवंते एम कह्यु के, मारा केटला एक साधु आराधिक छे ने केटलाएक विराधिक छे. आराधिक एटले मारी आज्ञा मुजब चालनारा ने विराधिक एटले आज्ञा विरुद्ध चालनारा छे. आराधिक कोने कह्या के जे साधुने तेना जेवो बीजो साधु, अथवा साध्वी अथवा श्रावक के श्रावीका एटले जेने जैन धर्ममां चार तीर्थ कह्यां छे, ते पैकी कोइएक अथवा अन्यतीर्थि ने गाहावइ एटले अन्यतीर्थिना साधु ने अन्यतीर्थिना गृहस्थ एटले के जैन मत सिवायना बीजा अन्य मत जेमां चार तीर्थ नथी पण साधुने संत एम बे तीर्थ कहेवाय छे, ते आवोने कडवा वचन कहे छतां ते साधुने क्रोध चडे नहि तेने भगवंते आराधिक कह्यो. एवीज रीते विराधिक एटले भगवंतनी आज्ञा विरुद्ध चालनारा बाबतमां पण उपला छ शब्दो एटले के साधु-साध्वी-श्रावक श्राविका; अन्यतीर्थिने गाहावही ए शब्दो ज वापर्या छे तेथी पण जणाशे के उपासकदशासूत्रमां आणंद श्रावकने अधिकारे पाठ ५८ मां " अन्नउत्थिए " शब्दे अन्यतीर्थिना साधु जाणवा. आवो पाठ " निसिथ " सूत्रमां तथा बीजा घणां सूत्रोमां ठेर ठेर आवे छे ते जग्याए आवोज अर्थ थाय छे. हवे " चेइयाणि " शब्दनो अर्थ करवानो रह्यो. " चेइए " शब्द उपासकदशा सूत्रना पहेला अध्ययनमां छे, तेनो अर्थ ते सूत्रना इंग्रेजी तरजुमाने पाने बीजे फूटनोट ४ मां नीचे मुजब करेल छे.

" चेइय " (संस्कृत) ' चैत्य ' एटले जैन मंदिर अथवा पवित्र देवालय पण सामान्य रीते आ शब्दनो शब्दनो अर्थ आखी पवित्र जग्या जेमां वाडी, बगीचो (उद्यान, वनसंड, अथवा वनखंड), देवालय अने

नोकरने रहेवाना मकानो होय. आ अर्थमां " चेइय, उद्यान अने वनखंड " ए बधानो अर्थ एक सरखो छे. विपाकसूत्रमां " दूइपलास चेइय " ने " दूइपलास उद्यान " कर्यु छे. उपर मुजब " चेइय " नो अर्थ देवल कर्यो छे. हवे आ उपासक दशामां " चेइए " शब्द नीचे ठेकाणे छे.

१. अध्ययन, पा. १. चम्पानयरी पुणभद्देचेइए. १. अध्ययन पा. २. वाणियगाम दूइपलासए नामं चेइए. ३. अध्ययन, पा. १२६ वाणारसीनयरी कोट्ठए चेइए. ८. अध्ययन, पा. २३१. रायगिहे नयरे गुणसिले चेइए. ९. अध्ययन, पा. २६७ सावत्थीनयरी कोट्ठए चेइए. आनो अर्थ पूर्णभद्र, गुणसिल वगेरे जक्षना देरा हता पण कोइ पण चोवीस तीर्थंकरना नामना देरा आ दश श्रावकना अधिकारे वर्णव्या नथी. आवा जक्षना नामना देरा बीजा सूत्रोमां पण छे तेथी अत्रे, १ 'चेइए' नो एक अर्थ जक्षनुं देरुं थाय छे. २ 'चेइए' नो बीजो अर्थ बगीचो पण थाय छे. ३ " चेइयं " (शब्द) उपासक दशाना सातमा अध्ययन पाठ १८७ मां छे त्यां पवित्र एम अर्थ करेल छे. ४ "चेइयं" आवो पाठ " तिखुत्तो " ना पाठे ठेकाणे ठेकाणे सूत्रोमां चाल्यो छे त्यां ज्ञानवंत एवो पण अर्थ करेल छे. ठाणंसूत्रमां भगवंतने जे झाड नीचे केवळज्ञान उत्पन्न थयुं तेने " चेइय वृक्ष " एवुं कहेल छे. ते " चेइय " शब्दे ज्ञानवंत पण थयुं. ५. जुओ वहेवार सूत्र उद्देसो १, पाठ ३८ "चेइयाई" शब्दनो अर्थ ज्ञानवंत एवो थाय छे.

उपर मुजब " चेइय " शब्दना अर्थ जणाव्या पछी उपासक दशाना ५८ मा पाठमां " चेइयाणि " शब्दनो अर्थ ज्ञानवंत साधु पण थइ शके. अरिहंतना एटले जैनना साधु भ्रष्ट थइ जवाथी अन्यतीर्थिमां गया होय तेवा अन्यतीर्थिए ग्रहेला साधु थइ शके, एटले अन्यतीर्थिना साधु, अन्यतीर्थिना देव ने अन्यतीर्थिए ग्रहेला

ज्ञानवंत पण भ्रष्ट थएला साधु जे सन्याशीना वेशमां होय तेवा. आ अर्थ बेसे छे तेनुं कारण एम जे आणंद ते पछी एम कहे छे, जे तेने वांदवा, नमस्कार करवा, पहेला मुजने अणबोलावे तेने एकवार के वारंवार न बोलावबुं तथा तेने चार आहार देवा के देवरावबा न कल्पे. एथी जणाशे के अन्यतीर्थिनी वस्तु के प्रतिमाने बोलाववा के चार आहार आपवानो अर्थ बेसतो नथी. वळी ते पछी श्रमण निर्ग्रंथने १४ चीज आपवी कल्पे, एम कहे छे, पण "अरिहंत चेइयाणि" एटले अरिहंतना चैत्य एवो त्रीजो पाठ नथी तेथी ते संबंध मेळवता पण अन्यतीर्थिना साधु, देव तथा अन्यतीर्थिए ग्रह्या भ्रष्टाचारी जैनना ज्ञानवंत साधु, ए पाठ मळतो आवे छे तो "चेइयाणि" पाठ ५८ ना पाठमां वधारवा बांधो लेवा जेवो नथी, केमके ते पाठ गमे ते रीते काढो नखाएलो जणाय छे. आ दश श्रावकोनो अधिकार पुरेपुरो वांचता उपलो अर्थ बेसे छे. आ सूत्रना मूळपाठना रचनारे पण आ बाबतमां टीका करी छे तेथी आटलो खुलासो कर्यो छे.

अर्थः—॥ ५९ ॥ त० ते वार । णं० पछी । सा० ते । सि० सिवनंदा । भा० भार्या । आ० आणंद । स० श्रावके । ए० एहवुं । वु० वचन । स० कहे थके । ह० हर्ष । तु० संतोष पामी । को० कुटुंबी । पु० पुरुष । स० तेडावे । स० तेडावीने । ए० एम । व० कह्युं । खि० शिघ्र । ए० वळी । ल० लघु करण नामा रथ जोत्रो । जा० यावत शब्दे । प० अनुक्रमे जइ वांदीने सेवा भक्ति करवा लागी ॥ ५९ ॥

मूळपाठः—॥ ५९ ॥ तए णं सा सिवनन्दा भारिया आणन्देणं समणोवासएणं एवं

वुत्ता[1] समाणा[2] हट्ठतुट्ठा [3]कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ, रत्ता एवं [4]वयासी । "खिप्पामेव [5]लहुकरण" जाव* पज्जुवासइ[6] ॥ ५९ ॥

भावार्थः--॥ ५९ ॥ आणंद श्रावके एवी रीते कयुं ते वारे तेमनी भार्या शिवानदा हर्ष-संतोष पामी अने सेवक (चाकर) पुरुषने तेडावीने एम कयुं, एम निश्चे, हे देवाणु प्रिय ! जहेना कान नाना, शरीरे धोळा, रुपाळा, चालवामां उतावळा एवा बळदने नवरावी पछी तेने सोनानी सींघडियुं घालो, सोनानी रासडी, सोनानी नाथ, सोनाना पटाना जोतर, गळे घुघरमाळ, पगमां झांझर, प्रयेरातथी जडेली झुल एवी रीते बळदने सारी रीते शणगारी रथे जोतरीने उतावळा मारी पासे लावो, एवी रीते कह्ये थके सेवक तेज प्रमाणे रथने शणगारीने शिवानंदानी पासे लाव्यो, ते वारे शिवानंदा स्नान करी, कौतुक मंगळ करी, सोळ शणगार सजी, अढार देशनी दासीओनी साथे रथमां बेसी, घणी दासीओ ने दासने परीवारे परवरी थकी वाणीज्य ग्राम नगरनी मध्योमध्य भागे थइ ज्यां दुतीपलास नामे वन के ज्यां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव छे तेमनी पासे जइ वंदन नमस्कार करी सेवा करती हवी. ॥ ५९ ॥ [उपर जाव शब्द होवाथी पुर्वोक्त बीना भगवतीमां देवानंदा अने अंतगडमां देवकीजीना अधिकारथी लखेल छे.]

१. B. (बी.) बहुवत्ता समाणा. २. C. (सी मां "समाणा" पछी "आय" वधारे छे) adds 'आय' after it ३. D. (डी.) कोडम्बि० ४. B. (बी.) वदासी. ५. A. C. D. E. (ए. सी. डी. इ.)० क-रणं. * बाकीनो पाठ आ सूत्रना पाठ २०६ मां जूओ ६. B (बी.) पज्जुवासइ.

अर्थः—॥ ६० ॥ त० ते वार । णं० पछी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देव । सि० शिवनंदा रुपणी । तीं० प्रषदा । य० प्रते । म० मोटी । जा० यावत । ध० धर्म । क० कथा । क० कहेता हवा ॥ ६० ॥

मूळपाठः—॥ ६० ॥ [1]तए णं समणे भगवं महावीरे [2]सिवनन्दाए तीसे य महः२ [3]जाव धम्मं[4] कहेइ ॥ ६० ॥

भावार्थः—॥ ६० ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देवे शिवानंदा प्रत्ये मोटी धर्म कथा कहीं. ॥ ६० ॥

अर्थः—॥ ६१ ॥ त० ते वार । णं० पछी । सा० ते । सि० सिवनंदा भार्या । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । अं० समीपे । ध० धर्म । सो० सांभळ्यो । नि० हैये अवधार्यो । ह० हर्ष संतोष पामी । जा० यावत । गि० गृहस्थ । ध० धर्म । प० पडीवर्जे । प० पडीवर्जिने । त० ते । ए० वळी । ध० धर्म । जा० जाण नामा । प० प्रधान रथने विषे । दु० बेसे । दु० बेसीने । जा० जे । ए० वळी । दि० दिशा थकी । पा० आवी । ता० ते । ए० ज । दि० दिशाने विषे । प० पाछी गइ ॥ ६१ ॥

मूळपाठः—॥ ६१ ॥ तए णं सा सिवनन्दा समणस्स भगवउ महावीरस्स अन्ति

---

१. B.C. D. (बी. सी. डी.) तओ समणे. २. D. E (डी. इ. मां वधारे छे). add भारियाए. B. C. D. E. (ए. बी. सी. डी. इ. मां नथी.) omit. ३ जुओ उववाइ सूत्र पाठ ५६ अने ज्ञाता सूत्र पाठ
४. A. (ए) धम्म कहेति, C. (सी.) धम्मकहाए; D. E. (डी. इ.) धम्मकहा.

ए[1] धम्मं सोच्चा[2] निसम्म[3] हट्ठ जाव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, रत्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं[4] दुरुहइ, रत्ता जामेव दिसं पाउब्भूया, तामेव दिसं पडिगया ॥ ६१ ॥

भावार्थः—॥ ६१ ॥ त्यार पछी ते शिवानंदा श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी पासे धर्म सांभळीने हृदयमां धारी, हर्ष संतोष पामीने यावत समकित सहित बार व्रतरूप गृहस्थनो धर्म अंगिकार करी धर्मना रथमांहि बेसीने जे दिशा थकी आवी हती ते दिशाए पाछी गइ. ॥ ६१ ॥

अर्थः—॥ ६२ ॥ भं० भगवंतने । त्ति० वळी । भ० भगवंत (पूज्य) । गो० गौतम । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० श्री महावीरने । वं० वांदे । न० नमस्कार करे । न० नमस्कार करीने । ए० एम । व० बोल्या । प० समर्थ छे । णं० वळी । भं० हे भगवंत । आ० आणंद नामा । स० श्रावक । दे० देवताने । पि० वलभ । अ० तमारा समीपे । मु० दिक्षा लेवा समर्थ छे । जा० यावत । प० प्रवर्जा लेशे ? । भगवंत बोल्या । नो० नहि । ति० ते । अ० अर्थ । स० समर्थ । गो० हे गौतम । आ० आणंद नामा । णं० वळी । स० श्रावक । ब० घणा । वा० वरसनी । स० श्रावकनी । प० पर्याय । पा० पाळे । पा० पाळीने । जा० अनुक्रमे । सो० सौधर्म । क० देवलोकने विषे । अ० अरुण नामा । वि० विमानने विषे । दे० देवतापणे । उ० उपजशे । त० तिहां । णं० वळी । अ० त्यां । ग०

१. C. D. E. (सी. डी. इ.) अतियं. २. E. (इ.) सुच्चा. ३. B. C. D. E. (बी. सी. डी. इ. मां नथी) omits. * जूओ ज्ञाता पाठ. २१. जूओ उववाइ पाठ १७. जूओ कळप पाठ ५. जूओ भगवती पाठ २६०. ४. D. E. (डी. इ.)० पवरं.

गएल केटलाएक । दे० देवतानी । च० चार । प० पल्योपमनी । ठि० स्थिति । प० कही । त० तिहां । णं० वळी । आ० आणंद । वि० वळो । स० श्रमणो पासकनी । च० चार । प० पल्योपमनी । ठि० स्थिति । प० कही ॥६२॥

मूळपाठः—॥ ६३ ॥ "भन्ते" त्ति[1] भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ,[2] रत्ता एवं वयासी[3]। "पहू[4] णं, भन्ते, आणन्दे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डे जाव पव्वइत्तए[5] ?"। "नो तिणट्ठे[6] समट्ठे, गोयमा। [7]आणन्दे णं[8] समणोवासए[9] बहूइं[10] वासाइं समणोवासगपरियागं[11] पाउणिहिइ,[12] रत्ता जाव+ सोहम्मे कप्पे अरुणे[13] वि-

१. A. (ए) ते, B. (बी.) ति. २. A B. D E. (ए बी. डी. इ. मां नथी) Omit. ३. B. (बी.) वदासी ४. A (ए.) पभू, D. E (डी. इ. मां नथी.) पहू णं *"जाव" ने ठेकाणे नीचेनां शब्द वधारवा.—"भवित्ता आगाराओ अणगारियं" ५ A (ए.) पवतित्ते; C. (सी.) पव्वत्तए; E. (इ.) पवत्तए. ६ A. F. (ए. एफ.) तेणट्ठे; C. E. (सी. इ) इणट्ठे. ७. D. E insert तए णं before आणन्दे (डी इ मां) "आणन्दे" पहेलां "तए ण" वधारे छे ८. A. (ए मां नथी.) omit. ९. D. E. add ण after समणो० (डी. इ मां "समणो०" पछी "ण" वधारे छे.) १० D. E (डी. इ) बहू ण. ११. C. E. (सी. इ.) ०याय १२. D (डी.) पाउणीहि E. (इ.) पाउणी + "जाव"ने बदले ८९ ना पाठमांथी नीचेनो पाठ उमेरवो "अप्पाण" थी "किच्चा" सुधी १३ A. B E F. G H. (ए बी. इ. एफ. जी. एच.) अरुणामे (पण जुओ ८९-२७७ ने नोट ३१९).

माणे देवताए उववज्जिहिइ । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई[1] पण्णत्ता। तत्थ णं आणन्दस्स [2]वि समणोवासगस्स[3] चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता"॥६२॥

भावार्थः—॥ ६२ ॥ त्यार पछी भगवंत (पूज्य) (गुणवंत, यशवंत, उद्योतवंत) गौतम स्वामि, श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदी, नमस्कार करी एम कहेता हवा, हे भगवंत ! समर्थ छे ? आणंद श्रावक तमारी पासे मुंड थवा यावत प्रव्रज्या (दिक्षा) लेवा ? ते वारे भगवंत कहे, हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी एटले दिक्षा लेशे नहि पण ए आणंद श्रावक घणा वरस श्रावकनी पर्याय पाळीने यावत पेहेला सुधर्मा देवलोके अरुणाभ विमानने विषे देवतापणे उपजशे त्यां गएल केटलाक देवनी चार पल्योपमनी स्थिति कही छे. त्यां आणंद श्रावक उत्पन्न थशे, तेनी पण चार पल्योपमनी स्थिति थशे. ॥ ६२ ॥

अर्थः—॥ ६३ ॥ त० ते वार । पं० पछी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० श्री महावीर । अ० अन्यदा । क० प्रस्तावे । ब० बहार जनपदने । जा० विषे । वि० विचरे छे ॥ ६३ ॥

मूळपाठः—॥ ६३ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ[4] बहिया जाव [5]विहरइ ॥ ६३ ॥

१. A. (ए.) ट्ठिती, B. (बी.) ठ्ठित्ति; E. (इ.) ठिइ. २. D E. (डी. इ.) णं. ३. D. E. (डी. इ. मां नथी.) Omits; ४. C. D. (सी. डी.) क्याई. * अत्रे "जाव" नी जग्याए ८८ पाठ मुजब नीचेनां शब्द वधारवा. "जणवय विहारं" जूओ भगवती पानुं ११६. ५. A. (ए.) विहरंति.

भावार्थः—॥ ६३ ॥ त्यार पछी श्रमण भगवंत श्री महावीर देव एकदा प्रस्तावे ते वाणिज्यगामथी बहार जनपद देशने विषे विहार करी गया. ॥ ६३ ॥

अर्थः—॥ ६४ ॥ त० ते वारे । णं० पछी । से० ते । आ० आणंद । स० श्रावक । जा० थयो । वली केवो श्रावक थयो । अ० समस्तपणे जाण्या छे । जी० जीव । अ० अजीवादिक १४ पदार्थ । जा० यावत । प० साधुने सुझता आहार पडिलाभतो थको । वि० विचरे छे. ॥ ६४ ॥

मूळपाठः—॥ ६४ ॥ तए णं से आणन्दे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव[*] पडिलाभेमाणे विहरइ ॥ ६४ ॥

भावार्थः—॥ ६४ ॥ ते वारे ते आणंद श्रावक जीवअजीवादिक नवतत्त्वने जाणतो थको ज्यां लगे साधुने सुझता चौद प्रकारना दान प्रतिलाभतो थको विचरे. ॥ ६४ ॥

अर्थः—॥ ६५ ॥ त० ते वार । णं० पछी । सा० ते । सि० सिवनंदा । भा० भार्या । स० श्राविका । जा० थइ । जा० यावत । प० ते पण साधुने सुझता आहार पडिलाभती । वि० विचरे ॥ ६५ ॥

मूळपाठः—॥ ६५ ॥ तए णं सा सिवनन्दा भारिया समणोवासिया जाया जाव[*] पडिलाभेमाणी विहरइ ॥ ६५ ॥

+ ४४ मे ५८ पाठ देखवो. वली जुओ उपपात पाठ १२४ ने भगवती पानुं १८९. १. A. (व.) विहरति.

* " जाव " शब्द ६४ मां पाठमां लख्या मुजब जुओ.

भावार्थः—||६५|| ते वारे ते शीवानंदा श्राविका थइ यावत चौद प्रकारना सुझता दान देती थकी विचरे.||६५||

अर्थः—|| ६६ || त० ते वार। णं० पछी। त० ते। आ० आणंद। स० श्रमण। उ० उपासक। उ० भला मोटा। व० व्रत। सी० सील। व० व्रतना। गु० गुणनुं। वे० वेरमण ते अनाचार निवारक। प० पच्चखाणे करी। पो० पोसह। उ० उपवासे करी। अ० आपणो आतमा। भा० भावतो थको। चोखो करतो। चो० चउद। सं० वरस। व० अतिक्रमे गए थके। प० पन्नरमा। सं० संवछर वरसने। अं० विचाले। एतावत पन्नरमुं वरस। व० वेसे त्यारे। अ० अन्यदा। क० प्रस्तावे। पु० मध्य। र० रात्रिने। का० काल। स० समयने विषे ते पोहोर रात्री। ध० धर्म। जा० जागरिका। जा० जागतो थको। इ० एहवे। रु० रुप जे आगल कहेशे ते। अ० अध्यवसाय। चि० चितवे। म० मननो। सं० संकल्प। स० उपनो। ए० एम। ख० निश्चे। अ० हुं। वा० वाणिय। गा० गामे। न० नगरने विषे। व० घणा। रा० राजादिक। जा० यावत। स० पोताना। वि० य० णं० वली। कु० कुटुंबने विषे। जा० यावत। आ० आधारभूत। तं० ते। ए० एणे कुटुंबादिकने। म० व्यग्रपणे करी। अ० हुं। नो० नहि। सं० करी शकतो नथी। स० श्रमण। भ० भगवंत। म० महावीर देवनी। अ० समीपे। ध० धर्म। प० परुप्यो। उ० अंगिकार करीने। वि० विचरी शकतो नथी। तं० ते माटे। से० श्रेय। ख० निश्चे। म० मुजने। क० काले। जा० जाव सवेपि। ज० सूर्य उगे थके। वि० विपुल घणुं। अ० असणादिक ४ आहार। ज० जेम। पू० पूरणे कुटुंबने जमाडीने। जा० यावत। जे० जेष्ट वडा। पु० पुत्रने। कु० कुटुंबने विषे। ठ० थाप्यो। तं० तेम। मि० मित्रने पुछीने। जा० यावत। जे० जेष्ट। पु० पुत्रने। च० वली। आ० पुछीने। को० कोल्लाग।

स० संनिवेस पाडाने विषे। ना० ज्ञात कूळ छे तेने विषे। पो० पोषधशाला मते। प० पुंजीने। स० श्रमण। भ० भगवंत महावीरनो। अं० समीपे। ध० धर्म। प० परूप्यो। उ० ते अंगीकार करी। वि० विचरशुं। ए० एहवुं। सं० चिंतव्यु। स० चिंतवीने। क० वहाणुं वाये। सूर्य उगे। वि० घणुं। त० तेमज। जि० जमी। मुं० रह्या। अ० अनंतर। तं० ते। मि० मित्र कुटुंबने। जा० जावत। वि० घणुं। पु० पुष्प फळ। पान सोपारी (५) वस्त्रादिके। स० सत्कार करी। स० आदरमान दीए। स० दइने। त० ते। ए० वळी। मि० मित्र। जा० यावत। पु० आगळ। जे० जेष्ट–वडा। पु० पुत्रने। स० साद करे। स० साद करीने। ए० एम। व० बोल्यो। ए० एम। ख० निश्चे। पु० अहो पुत्र। अ० हुं जेम। वा० वाणिय। गा० गाम नगरने विषे। व० घणा। रा० राजादिकने विषे। ज० जेम। चि० चिंता करुंछुं। जा० यावत। वि० विचरुंछुं तेम। तं० ते। से० श्रेय मुजने। ख० निश्चे। म० मुजने। इ० जो हमणां। तु० तमे। स० पोताना। कु० कुटुंबने विषे। आ० आलंबन भूतपणे (४)। ठ० थाप्यो छे। जा० यावत। वि० विचरे छे॥ ६६॥

मूळपाठः—॥ ६६॥ तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स [1] [2]उच्चावएहिं सीलव्वय-गुणवेरमण पच्चक्खाण [3]पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोदस[4] संवच्छराइं [5]वइक्क-

---

१ A. B. (ए बी.) ० सयस्व. २ A. (ए.) उच्चवएहिं ३. A. B. (ए बी.) ० पच्चक्खाणं पोस ० ४. C (सी.) चउदस. ५ B. (बी.) विइक्कंताइं D. E (डी. इ.) वीइक्कंताइं.

न्ताइं । पणरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा[1] वट्टमाणस्स [2]अन्नया [3]कयाइ [4]पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे [5]अज्झत्थिए चिन्तिए मणोगए सङ्कप्पे समुप्प-ज्जित्था[6] । "एवं खलु [7]अहं [8]वाणियगामे [9]नयरे बहूणं [10]राईसर जाव[11] सयस्स वि य [12] णं [13]कुडुम्बस्स जाव[+] आधारे । तं एएणं[14] वक्खेवेणं[15] अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं[16] धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरित्तए[17]" । तं सेयं खलु [18]ममं कल्लं जाव[!]

१. A. B. (ए बी.) अंतरे २ A. B. D. (ए. बी. डी.) अण्णदा ३. A. B D. (ए. बी. डी.) कदाइ. 13. C. E. (सी. सी. इ.) कयाई. ४. D. E. (डी. इ. मां टुकुं छे) abbreviate thus पुव्वरत्ता.० ५. A. B. D. E. insert 4 after अज्झत्थिए. and omit चि०, मणो०, सङ्क०. (ए. बी. डी. इ) मां "अज्झत्थिए" पछी "४" छे "ने "चि०, मणो० सङ्क०" शब्दो नथी. ६ D. (डी.) समुपन्ने. ७. D. (डी) अम्हे. ८. C. (सी.) वाणिअ०; D. (डी.) ०ग्गामे ९. D. (डी.) नगरे. १०. A. B. D. E. (ए. बी. डी इ.) ईसर० जुओ बाकीनो पाठ आ सूत्रना १२ मां मूळपाठमां तथा ज्ञाताना ३५ मां, उववाइना १५ मां ने कल्पसूत्रनां ६१ मां ११. A. B. (ए बी. मां नथी.) omit. १२. E. (इ. मां नथी.) omit. १३. D. (डी.) कुडं०; E. (इ) कुडुं० + जुओ बाकीनो पाठ आ सूत्रना पाठ ५ मां, पानुं ३-४ १४ A. B. C. D E. (ए. बी. सी. डी. इ.) एतेणं. १५. E. (इ.) वक्खेण. १६. A. D. E. (ए. डी. इ.) अंतिए. १७. A. B. D (ए बी डी.) विहरत्तए. १८. C. (सी.) मम. ! जूओ बाकीनो पाठ ज्ञातापाठ ३४, भगवती पाने २९२-२९३; ने कल्पनो पाठ ५९.

जलन्ते विउलं[1] असणं ४,[§] जहा पूरणो,[॥] [2]जाव[+] जेट्ठपुत्तं[3] कुडुम्बे[4] ठवेत्ता[5], तं मित्त [6]जाव जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता, [7]कोल्लाए सन्निवेसे[8] नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहित्ता, समणस्स भगवओ अन्तियं[9] धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरित्तए"। एवं सम्पेहेइ,[10] [11]रत्ता कल्लं विउलं तहेव[11] ×

१. A B. C. D.E (ए बी. सी डी. इ.) विपुलं § बाकीना पाठ माटे जूओ आ सूत्रनो पाठ ५८, उववायनो पाठ ८७ कल्पनो पाठ १०४ ज्ञातानो पाठ ५५, भगवतीने पाने २९९ ॥ जूओ भगवती पाने २१६. २ A. B (ए. बी.) °णे. + बाकीना पाठ माटे जूओ टीका तथा कल्पनो पाठ १०४; ज्ञातानो पाठ ११४ तथा आ सूत्रना पाने २९ नी फ़ुटनोट १ मां जुओ ३ A. (ए) जेट्ठ, B. (बी) जेट्ठे ४ E. (इ.) कुडुंबे. ५ B. (बी. ठावेत्ता C (सी.) ठावित्ता. D. E (डी इ) ठवित्ता ६. A B C. D E Omit (ए बी. सी डी. इ. मां नथी.) ᵛ जूओ बाकीनो पाठ आ सूत्रना पाठ ८ मां पाने ५ ७ B. (बी) कोल्लागसं°. ८. A. B. (ए बी.) संणिवेस्से ९ C. D. E (सी डी. इ) अतिए १० B. (बी) संपेहि, C. (सी) संपेहिइ. ११. So D E. G. H. but in addition to तहेव, A. B C. F insert असणं (F पाण खाइम साइमं) उवक्खडावेइ२ (C only त्ता मित्तनाइ° आमंतित्ता) तओ पच्छा ण्हाए (F ण्हाया कयवलिकम्मा) जाव* अप्पमहग्घाभरणालंकिय सरीरे (F °रा) भोयण मंडवंसि सुहासनवरगए तेणं (B तिण) मित्तनाइ नियगसयण संबंधिपरियणेणं (A. B. F. तं) सद्धिं त विउल असण (C F Only पाण खाइमं साइम) आसाएमाणे विसाएमाणे (A. F. वी°) विहरइ जिमिय भुत्तुत्तरागए विय (A. अ) ण समाणे आयंते चोक्खे परमसूइभूए। तहेव जिमि° etc. as in the text above. * बाकीनुं कल्प ६६, १०४ ने उववाइ १७ मां जुओ.

× आ पाठमा " विउल असण ४ " एम पुरवा जुओ कल्प. १०४ ज्ञाता ११४ ने फुटनोट १ पानुं २९.

जिमियभुत्तुत्तरागए तं[1] मित्त जाव[2] विउलेणं पुप्फ ५[3+] सक्कारेइ सम्माणेइ, रत्ता तस्सेव मित्त जाव पुरओ जेट्ठपुत्तं सद्दावेइ, रत्ता एवं वयासी । " एवं खलु, पुत्ता, अहं वाणियगामे बहूणं राईसर[4], जहा चिन्तियं, जाव[5] विहरित्तए। तं सेयं खलु मम इदाणिं तुमं [6]सयस्स कुडुम्बस्स आलम्बणं ४" [6]ठवेत्ता जाव विहरित्तए " ॥ ६६ ॥

भावार्थः—॥ ६६ ॥ ते वारे ते आणंद श्रावक भला शील व्रत, अणुव्रतादिक वारे व्रतना उत्तरोत्तर गुण धारतो अणाचार नीवारतो पचखाण, पौषध, उपवासादिक करी पोताना आत्माने भावतो थको विचरतो हवो. एम चौद वर्ष गया पछी पंदरमां वर्षने मध्य भागे वर्तता एकदा प्रस्तावे मध्य रात्रिना समयने विषे धर्म जाग्रीकाए

१ C. (सी मां नथी.) Omit २ A B C D E. G H. (ए. बी. सी. डी इ. जी. एच मां नथी) Omit. F. (एफमां वधु छे.) in full आ सूत्रनो पाठ ८ पाने पांचमे ३. C. D E. H. (सी. डी. इ. एच मां नथी) Omit. F. G. (एफ. जी मां पुरुं छे) in full + Supply (नीचेनो पाठ उमेरो) वत्थगन्धमल्लालङ्कारेण (उववाइनो पाठ १०८ मांथी) जूओ वळी टीका ४. A. B. D. F G. H. (ए. बी डी इ. जी एच) ईसर. ० § आज पाठ ६६ मांथी आवो पाठ आगळ छे ते उमेरवो ५ A. B. F. G (ए. बी एफ. जी मां वधारे छे.) add बहुयस्स. ॥ 'गमाणं, आहारे, चक्खू' ए पाठ, पाठ ५, पानु ४ मांथी उमेरो ६. E. (इ) ठाविता.

जागता थकां (आगळ कहीशुं) तेहवा प्रकारनो अध्यवसाय उपन्यो एवी प्रार्थना करे, एवो मनमां संकल्प उपजे एम निश्चे हुं वाणिज्य गाम नगरने विषे घणां राजा, इश्वर, तलवर, मांडबीना धणी, म्होटा कुटुंबना धणी, इभ्य शेठ, सेनाधिपति यावत स्वजन वर्ग, सगा संबंधी, कुटुंबादीकने आधार भूत तेथी ए कुटुंबादिकने विषे व्यग्र चित्तपणे करी श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी समीपनो परुपेलो धर्म हुं बरावर करी शकतो नथी तेमज अंगिकार करीने बरावर विचरी शकतो नथी, तो श्रेय छे निश्चे मुजने, काले प्रभाते जाज्वल्यमान यावत सूर्य उगे थके घणुं अन्न-पाणी, मेवो, मुखवास, एवा चार प्रकारना आहार बनावी कुटुंबादिकनी साथे पोते पूर्ण जमी, जमाडीने कुटुंबादिकने वस्त्रादिके सत्कारी, सन्मानी तेनी समक्षमां मोटा पुत्रने कुटुंबनो भार सोंपी मारी जग्याए तेने स्थापी ते मित्र, ज्ञाति पुत्रादिक तेमज म्होटा पुत्रने पुछीने कोलाग सन्नीवेशने विषे पोतानो ज्ञाति कुटुंबादिक वसे छे त्यां पौषध शाळा पुंजीने श्रमण भगवंत श्री महावीरनी पासे धर्म म्हें अंगिकार कर्यो छे ते पाळतो थको विचरुं. एम चिंतवीने काल प्रभाते सूर्योदय थये थके घणुं अन्न, पाणी, मेवो मुखवास निपजावीने, पोते स्नान करी यावत जेमां भार थोडो ने मूल्य घणुं एवा आभरणे (घरेणां) करी शरीर शणगारी भोजनने मंडपे सुखरुप आसन उपर बेठा. ते मित्र, ज्ञाति, पुत्र पोताना कुटुंबी, पित्रीया, वेवाइ, दास, दासी प्रमुख एटलानी साथे घणुं अन्न, पाणी, मेवो, मुखवास अने घणुं नाखी देवुं ने थोडुं खावुं ते शेलडी, सीताफळादिक ने घणुं खावुं ने थोडुं नाखी देवुं एवुं खजुर प्रमुख, एम जमता, जमाडता विचरे । जमी रह्या पछी भला पाणीए चळु करी, हाथ, मुख धोई परम पवित्र थया. तेमज जमी रह्या पछी अळगा बेसी ते मित्र, ज्ञाति पुत्रादिकने घणां फूल, वस्त्र, सुगंध द्रव्य

(वस्तु), फूलनी माळा, अलंकार ए सर्व आपवे करीने सत्कार्या, आदरमान तथा आसन प्रमुख आपवे करी सन्मान्या. ए प्रमाणे सत्कारी, सन्मानीने पोताना मित्रने कह्युं के म्हारा म्होटा पुत्रने म्हारी पासे तेडीलावो. ए प्रमाणे मित्रनी पासे पोताना म्होटा पुत्रने तेडावीने एम कहेता हवा हे पुत्र ! हुं जेम वाणीज्य गाम नगरने विषे घणा राजादिकना कामने विषे चिंता करतो यावत विचरुं छुं, तेम श्रेय निश्चे आ म्हारी जग्याए तमने आपणा घणां स्वजन कुटुंबादिकने विषे आधार रुप स्थापन करुंछुं. तेज प्रमाणे यावत म्हारी पेरे सर्व करता थका विचरजो. ॥६६॥

अर्थः—॥ ६७ ॥ त० ते वार । णं० पछी । जे० ते वडो । पु० पुत्र । आ० आणंद । स० श्रमणो । उ० पासकनुं वचन । त० तहत् करी (प्रमाण करी) । ए० ए । अ० अर्थ । वि० विनय सहित । प० सांभळे ॥ ६७॥

मूळपाठः–॥ ६७ ॥ तए णं जेट्ठपुत्ते आणन्दस्स समणोवासगस्स "तह" त्ति एय[1]-मट्ठंविणएणं पडिसुणेइ ॥ ६७ ॥

भावार्थः–॥ ६७ ॥ ते वारे ते मोटो पुत्र आणंद श्रावकनुं वचन तहत करी ए अर्थ विनय सहित सांभळे॥६७॥

अर्थः—॥ ६८ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । आ० आणंद नामा । स० श्रावक । त० ते । ए० वळी । मि० मित्र कुटुंब । जा० यावत । पु० आगळ । जे० जेष्ट वडापुत्रने । कु० कुटुंबने विषे । ठ० थापे । ठ० थापीने । ए० एम । व० बोल्यो । मा० म (रखे) । णं० वळी (पुछशो) । दे० देवाणुप्पिया । तु० तमे । अ० आजपछी । के० कांइ ।

1. B. (बी.) अयमट्ठं.

म० ए मुजने । ब० घणो । क० कार्य । जा० यावत ।आ० एकवार पुछवुं । वा० वळी । प० वारंवार पुछवुं । वा० वळी । म० माहरे । अ० अर्थ । अ० असणादिक । वा० वळी ४ । उ०.(न) नीपजावशो । उ० ए तावता माहारे काजे (मत) करो । वा० वळी ॥ ६८ ॥

मूळपाठः—॥ ६९ ॥ तए णं से आणन्दे समणोवासए तस्सेव मित्त [1]जाव पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठवेइ, ठवेत्ता एवं वयासी । " मा णं[2], देवाणुप्पिया, तुब्भे[3] [4]अज्जप्पभिइं केइ [5]मम बहूसु कज्जेसु[6] [7]जाव+ आपुच्छउ[8] वा, पडिपुच्छउ[9] वा, [10]ममं अट्ठाए असणं वा ४×उवक्खडेउ[11] उवकरेउ[12] वा ॥ ६९ ॥

१ All MSS. Omit (बधा सूत्रोमां नथी) * बाकीनो पाठ आ सूत्रना पाठ ८ पाने ५ मांथी उमेरवो २. A (ए. मां वधारे छे.) adds तुमं ३. B. (बी.) तुम्हे, F, Places तुब्भे before देवा° ('एफ' मां "देवा"नी पहेला "तुब्भे" छे) ४ A. C. G. (ए सी. जी.) °भिई, D (डी) भिति ५ B C E F. G. H. (बी सी. इ एफ जी. एच) ममं ६ B. C F H add य after कज्जेसु (बी. सी एफ. एच. मां "कज्जेसु" पछी "य" छे ७. C. D E H. (सी. डी. इ एच मां नथी) Omit. + बाकीनो पाठ आ सूत्र पाठ ५ पाने ३ ने ४ मांथी उमेरवो ८ D. E (डी. इ.) आपुच्छतं F आपुच्छिय ९.E (इ.) °पुच्छतं, F. पडिपुच्छियं १० C. D. E F. (सी. डी इ. एफ) मम. × बाकीनो पाठ ५८ मांथी जूओ ११ C (सी.) °क्खडईओ, E (इ.) °क्खड, F. (एफ.) °क्खडिउं, G. (जी) °क्खडेइ १२ C (सी) ओवक°, D. E. (डी. इ.) उदक°, F. (एफ.) °करेउ; G. (जी.) °करेइ.

भावार्थः—॥ ६८ ॥ ते वारे ते आणंद श्रावक ते मित्रादिकनी समक्षमां मोटा पुत्रने कुटुंबने विषे स्थापे, स्थापीने स्वजनादिकने एम कहेता हवा, हे देवाणुंप्रिय ! घणुं कार्य होय, थोडुं कार्य होय, एकवार पुछवानुं होय, वारंवार पुछवानुं होय ए सर्व आज पछी मने कांइ पण तमे पूछशो नहि (हवेथी जे जे काम होय ते सर्व आ म्हारा मोटा पुत्रने पुछजो) अने आज पछी म्हारे अर्थे अन्न प्रमुख चार प्रकारना आहार नीपजावशो नहि अथवा तमारे माटे शुं रसोइ करीए एम पण मने पूछशो नहि. ॥ ६८ ॥

अर्थः—॥ ६९ ॥ त० ते वार । पं० पछी । से० ते । आ० आणंद । स० श्रावक । जे० वडा । पु० पुत्रने । मि० मित्र । ना० ज्ञातिने । आ० पुछे । आ० पुछीने । स० पोताना । गि० घर थकी । प० नीसरे । प० नीसरीने । वा० वाणीय । गा० गाम । न० नगर । म० मध्यो । म० मध्य । नि० निसरे । नि० निसरीने । जे० ज्यां । को० कोला । स० सन्निवेस । जे० जिहां । ना० ज्ञातना । कु० कुल । जे० जीहां । पो० पोषधशाला । ते० त्यां । उ० आव्या । उ० त्यां आवीने । पो० पोषधशाला । प० पुंजे । प० पुंजीने । उ० उच्चार । पा० पासवण । भु० भूमिका । प० प्रति लेखे । प० प्रति लेखीने । द० दाभनो । सं० संथारो पाथरे । सं० पाथरीने । द० दाभना । सं० संथाराने विषे । दु० बेठा । दु० बेसीने । पो० पोषधशालाने विषे । पो० पोषो करे । द० डाभना । सं० संथाराने विषे । उ० बेठा थका । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । अं० समीपे । ध० धर्मनी । प० प्राप्ति । उ० अंगिकार करीने । वि० विचरे छे ॥ ६९ ॥

मूळपाठः—॥ ६ए ॥ [1]तए णं से आणन्दे समणोवासए [2]जेट्ठपुत्तं [3]मित्तनाइं [4]आपुच्छइ, रत्ता सयाओ गिहाओ [5]पमिणिक्खमइ, रत्ता वाणियगामं [6]नयरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ, रत्ता जेणेव कोल्लाए [7]सन्निवेसे, जेणेव [8]नायकुले, जेणेव [9]पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, रत्ता पोसहसालं पमज्जइ, रत्ता उच्चारपासवणभूमिं [11]पमिलेहेइ, रत्ता दब्भ[12]संथारयं संथरइ, दब्भसंथारयं [13]दुरुहइ, रत्ता पोसहसालाए पोसहिए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स [14]अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ॥६ए॥

भावार्थः—॥ ६९ ॥ एम कह्या पछी ते आणंद श्रावक म्होटा पुत्रने तेमज मित्र, ज्ञाति, कुटुंबादिकने पूछीने पोताना घर थकी नीकळीने वाणिज्य गाम नगरना मध्योमध्य भागे थइ नीकळी ज्यां पोतानी कोला सन्निवेश

---

१. C. D. E G. H. (सी. डी. इ. जी एच मां नथी) Omit तएण से. आ० सम० २. B. D. E. (बी डी इ.) °पुत्तमित्त° ३ A B F (ए बी. एफ.) °नाइ. ४ A (ए) आपुच्छंति ५. A B H. (ए बी एच) °नि°, A °मति ६ A B C F H. (ए. बी सी. एफ एच) नगरं, E. (इ.) णयरे. ७ A. B (ए बी) सण्णि° ८. A B. (ए. बी) मित्तनाय° ९ A. (ए) पोसहस्साला. १०. A. (ए) °च्छति ११ D E. (डी इ) पडिलेहइ. १२ E (इ) °संथारं. १३ D. (डी.) दुरूहइ E. (इ.) दूरूहइ. १४. A. (ए) अंतिए.

नामे पाडो हतो, ज्यां पोताना मित्र, ज्ञाति, स्वजनना घर हतां, ज्यां पोषधशाळा हती त्यां आवीने, पोषधशाळाने पुंजीने लघुनीत (ज्हेनी नानी धार छे ते मुत्र), वडीनीत (जेहनी म्होटी धार छे ते मळ) नी भूमि प्रति लेखे (जोवे) प्रति लेखीने डाभनो संथारो (पथारी) करी ते उपर बेसीने श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी पासे धर्म पाम्यो ते पाळतो थको विचरतो हतो ॥ ६९ ॥

अर्थः—॥ ७० ॥ त० ते वार । पं० पछी । से० ते । आ० आणंद । स० श्रावक । उ० श्रावकनी । प० पडिमा । उ० अंगिकार करीने । वि० विचरे । प० पेहेली । उ० श्रावक । प० प्रतिज्ञा ते दंसण पडिमा एक मास लगी । राजादिक छ आगार रहित शंकादिक दोष वर्जित सम्यक् दर्शन सदा निर्मळ पाळे । अ० जेम सिद्धांत मांहि । सु० कही छे तेम । अ० जेम । सिद्धांतमांहि । क० कल्पे तेम । अ० जेम । म० मार्ग छे तेम । अ० जेम छे । त० ते । प्रमाणे । स० सम्यग् प्रकारे । का० कायाए । फा० फरसीने । पा० पाळीने । सो० शोभे तेम । ती० तारे । कि० किर्तन करे । आ० आराधे ॥ ७० ॥

मूळपाठः—॥ ७० ॥ तए णं से आणन्दे समणोवासए उवासगपडिमाओ[1] उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ । पढमं उवासगपडिमं[2] अहासुत्तं[3] अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं[4]

१. A. C. D. E. पढमं ०पडिमं, B (बी.) only पडिमं; See 89 जूओ ८९ मो पाठ. २. B. (बी. मां नथी.) Omit. C. (सी.) पडिमा. ३. A. B. C. D. E have only । after अहासुत्त (ए. बी. सी. डी. ई. मां "अहासुत्त" पछी "।" छे ४. A. B. (ए. बी.) समं.

काएणं फासेइ, पालेइ, सोहेइ, तीरेइ, किट्टेइ, [1]आराहेइ ॥ ७० ॥

भावार्थः—॥ ७० ॥ ते वारे ते आणंद श्रावक पहेली श्रावकनी दर्शन प्रतिमां (विशेष अभिग्रहरुप) अंगिकार करीने विचरे ते एवी रीते के पहेली प्रतिमां एक महिनानी, ते एक महिना सुधी शंकादिक दोष रहित समकित निर्मळ पाळे, अतिचारादिक दोष लगाडे नहिं, कोइनो मजरो करे नहि, छ छींडीनो आगार राखे नहि, एक मास लगी एकांतर उपवास करे ने शास्त्रमां जेम आचार कल्प ज्ञानादिक मोक्ष मार्ग भगवते सत्य कह्यो छे तेम सम्यक् प्रकारे (जेवुं जोइए तेवी रीते), मन, वचन, कायाए करी फरसे, पाळे, शोभावे, कीनारे पहोंचाडे, कीर्ति, स्तुति करे, आराधे ॥ ७० ॥

अर्थः—॥ ७१ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । आ० आणंद । स० समणो । उ० उपासक । दो० बीजी व्रत पडिमा एटले अतिचार रहित मूळ गुण, पंच अणुव्रत, उत्तर गुण सात शिक्षाव्रत । उ० श्रावकनी । प० पडिमा एहने बे मास लगी अतिचार लगाडे नहि । ए० एम । त० त्रीजी पडिमा ते सामाइय तेमां त्रण मास लगी सामायक काळे करे । च० चोथी पोसह पडिमा ते चार मास लगे आठम पाखीनी तोथिने विषे चतुर्विध पोषध करे । [आ चारे पडिमामां रात्री भोजननो त्याग (घडपण मांदादि कारण सिवाय)] प० पांचमी पडिमा एटले पांच मास लगी पोषध काळे एक रात्रिनी प्रतिज्ञा काउस्सग रहित जोनना गुण स्तवि एकवार भोजन, रात्रि

[1] A B C D. E. have only जाव before आराहेइ, Bhag P. 283, has किट्टेइ (ए. बी सी. डी. इ. मां "जाव आराहेइ" छे. भगवती पा. २८३ मा "किट्टेइ" छे

भोजननो त्याग । निशि चतुर्विध आहार वर्जित । काछडी न वाळे । दिवसे ब्रह्मचर्य पाळे । रात्रे प्रमाण करे । पोषध करे ते दहाडे दिवसे रात्रे ब्रह्मचर्य पाळे । छ० छट्ठी अबंभ पडीमा छ मास लगी शृंगार कथा । विभुषा । उत्कर्षनी कथादिक वर्जे । सदा ब्रह्मचारी । स० सातमी पडिमा सात मास लगी सचित आहार वर्जे । अ० आठमी पडिमा आठ मास लगी स्वयंमेव आरभ न करे । न० नवमी पडिमा पेसण्ह । नव मास लगी पाप उपदेश न दीए । द० दसमी पडिमा उदिठ ते दश मास लगी उदेशिक आहार न ले । क्षुर मुंड शिषा धारी । ए० अग्यारमी पडीमा वजए समण भुयएय एटले अग्यार मास लगी क्षुर मुंड लोच करावे । रजोहरण मुहपति परिग्रहधारी श्रमण भूत थको विचरे एम ११ पडिमा । जा० यावत । आ० आराधे ॥ ७१ ॥

मूळपाठः—॥ ७१ ॥ तए णं से आणन्दे समणोवासए दोच्चं [1]उवासगपडिमं,एवं तच्चं, चउत्थं, पञ्चमं, छट्ठं, सत्तमं, अट्ठमं, नवमं, दसमं, [2]एक्कारसमं, जाव आराहेइ[3] ॥ ७१ ॥

भावार्थः—॥ ७१ ॥ (२) ते वारे आणंद श्रावक बीजी श्रावकनी प्रतिमा अंगिकार करे ते एवी रीते के बे मास लगी व्रत, पच्चखाण, अतिचार रहित पाळे, दोष लगाडे नहि, बे महिना सुधी बे बे उपवासनुं पारणुं करे. (३) त्यार पछी त्रीजी प्रतिमा अंगिकार करे, ते त्रण मास लगी सामायिक प्रमुख छए आवश्यक निरंतर उभय

१ C. (सी मां वधारे छे) adds उवसंपज्जित्ताणं विहरइ. २ C (सी) इक्कारसमं. * बाकीनो पाठ ७० पाठमांथी "अहासुत्तं" थी लेवो जूओ वळी भगवती पानुं २८३. ३ D. (डी) आराधेति

(बे) काळे करे, देशावगासीक व्रत लेवानी वेळाए करे, त्रण मास सुधी त्रण त्रण उपवासनुं पारणुं करे. (४) त्यार पछी चोथी प्रतिमां अंगिकार करे ते चार मास लगी चौदस ने अमावासीया तथा चौदस ने पुनमना बे छट्ठ पोषा करे अने बे आठमनो एकेको पोषो करे. ए प्रमाणे एक महिनामां छ पोषा अवश्यमेव करे अने चार मास लगी चार चार उपवासनुं पारणुं करे. (५) त्यार पछी पांचमी प्रतिमा अंगिकार करे ते पांच मास लगी पांच बोल पाळे, पोषाने दिवसे (१) चार पहोर रात्रिनो ओंगणीस दोष रहित काउसग्ग करे. (२) स्नान न करे, (३) रात्रि भोजन न करे. [पहेली चार पडिमामां त्रस जीवनी दया पाळवा माटे कूळ देवनी पल्ली विगेरे जे रात्रिए थाळ धराव्या पछी खवाय एवा गाढागाढ कारण शिवाय रात्रि–भोजनना पहेलेथीज पच्चखाण हता पण इहां पांचमी प्रतिमामां तो गाढागाढ कारण होय तोपण रात्रि–भोजन करे नहिं.] (४) काछडी न वाळे, (५) दिवसनुं ब्रह्मचर्य पाळे ने रात्रिनुं प्रमाण करे. [आ उपरथी दिवसे ब्रह्मचर्य पाळता नहता तथा पहेलेथी अनुक्रमे अग्यारे प्रतिमा व्रहन करता सुधी ब्रह्मचर्य पाळता नहोता, एम समजवुं नहिं. पडिमा वहन करतां सुधी सर्वथा प्रकारे जरुर ब्रह्मचर्य पाळेज, कोइ अनुक्रमे अग्यार प्रतिमा वहन करे नहिं अने एक पांचमीज वहन करे तो ते धणी दिवसे ब्रह्मचर्य पाळे ने रात्रिनुं प्रमाण करे; ए प्रमाणे समजवुं.] महिनामां छ छ पोषा अवश्यमेव करे. पांच मास सुधी पांच पांच उपवासे पारणुं करे. (६) त्यार पछी छट्ठी पडिमां अंगिकार करे ते छ महिना सुधी सर्वथा प्रकारे ब्रह्मचर्य पाळे, श्रृंगार, कथाने विभुषा करे नहिं. छ महिना सुधी छ छ उपवासनुं पारणुं करे. (७) त्यार पछी सातमी पडिमा अंगिकार करे. ते सात मास लगी सचितनो आहार करे नहि अने सात मास

सुधी सात—सात उपवासनुं पारणुं करे. (८) त्यार पछी आठमी पडिमा अंगिकार करे. ते आठ मास सुधी पोताने हाथे आरंभ करे नहि अने आठ मास सुधी आठ आठ उपवासनुं पारणुं करे. (९) त्यार पछी नवमी पडिमां अंगिकार करे ते नव मास लगी पोते बीजानी पासे आरंभ करावे नहि, अने नव नव मास सुधी नव नव उपवासनुं पारणुं करे. (१०) त्यार पछी दसमी पडिमां अंगिकार करे ते दस मास सुधी पोताने अर्थे आरंभ करीने आपे ते अन्न पाणी ले नहि अने माथे चोटली राखी बीजुं तमाम मस्तक मुडावे. दस महिना सुधी दस दस उपवासनुं पारणुं करे. (११) त्यार पछी अग्यारमो पडिमा अंगिकार करे ते अग्यार महिना सुधी माथे एक चोटली राखे (मस्तक, दाढी, मूछनो सर्व लोच (लुंचन ते हाथथी केश खेंची काढवो) करे, साधुनी पेरे पांच सुमती पाळे अने त्रण गुप्ति करी सहित वस्त्र विंट्या वगर उघाडी डांडीनो रजोहरण, मुखपती पात्र विगेरे सर्व साधुनो वेष राखे अने सर्व साधुना जेवो आचार पाळे, पोतानी ज्ञाति मांहि साधुनी पेरे गौचरी करे. तेने कोइ पुछे जे तमे साधु छो त्यारे कहे के, हुं साधु नथी, पण पडिमाधारी श्रावक छुं एम कहे. अने अग्यार महीना सुधी अग्यार अग्यार उपवासनुं पारणु करे. ए अग्यारे प्रतिमां वहन करतां सत्तरसें तेर उपवास थाय ने बसेंने सडसठ पारणां थाय तथा उपवासने पारणा ए बे मळीने ओगणोसेंने एंसी दिवस थाय. एटले ६६ महीना थाय. ए अग्यार प्रतिमां वही रह्या पछी कोइ घरमां जाय, कोइ दिक्षा ले, कोइ संथारो करे. [पांचमो पडिमां वहन करतां पोषाने दिवसे चार पहोर रात्रिनो काउसग करे, एटले के कायानी कांइपण सारवार नहिं करतां निश्चळताए मौनपणे रहेवुं ते. ते कायोत्सर्गना ओगणीस दोष छे. तेना नाम कहे छे. १. घोडानी पेरे एक पग उपर भार दइने रहे. २. पवनथी

जेम वेलडी आघी हाले तेम शरीर हलावे. ३. थांभलाने तथा भींतने टेको दइने रहे. ४. उपर मस्तक अडाडीने रहे. ५. नागी भीलडीनी पेरे आगळ हाथ दइने रहे. ६. नवी परणेली स्त्रीनी पेरे निचुं माथुं करीने रहे. [ए दोष पुरुषने माटे छे, पण स्त्रीने माटे नथी.] ७. साथळ घाल्यानी पेरे पग पोहोळो राखो तथा एकठा राखी जीन मुद्राए रहे, आगळ चार आंगळ, पाछळ त्रण आंगळ. ८. नाभीनी उपर अने ढींचणनी नीचे पेरणुं पेहेरो रहे. (आ दोष पूरुषने छे, पण साध्वीने तथा स्त्रीने माटे नथी.) ९. डांस, मच्छरना भयथी आखा शरीरे ओढोने रहे. (ए दोष स्त्री जातिने नथी.) १० गाडानी उधनी पेरे बे पानी मेळवे अने आगळ अंगुठा पोहळा राखी रहे. ११. महा सतीनी पेरे बे खंभा ढांकी रहे. (ए दोष स्त्री जातिनो नथी.) १२. घोडाना चोकडानी पेरे आडो रजोहरण करे. १३. कागडानी पेरे आडुं–अवळुं जुवे. १४. कउठनी पेरे पेहेरेलुं पगरचे चांपे (दबावे). १५. अद्रष्ट भुतनी पेरे मस्तक चंपावे. १६. काउसग्गमां मुंगानी पेरे हुंकार करे. १७. काउसग्गमां मधुपानना वासणनी पेरे वडवडे. १८. वांदरानी पेरे डोक हलावे. १९. काउसग्गमांहि आंगळीए संख्या गणे. ए ओगणीस दोष टाळीने कायोत्सर्ग करे. शास्त्रमांहि प्रतिमा वहेवानो जे मार्ग सत्य भगवंते कह्यो छे ते आचार, ज्ञानादिक, मोक्ष मार्ग ओलंघे नहिं, सम्यक् प्रकारे कायाए करो फरसे, पाळे, संपूर्ण भणी अनुमोदे (भलु जाणे), पारणाने दिवसे गुरु अने स्वधर्मिने दइने शोभावे, किनारे पहोंचाडे, पारणे एवुं कर्त्तव्य छे ते मे कर्युं एम संभारे तथा कीर्ति करे यावत जेवुं वितराग देवे कहेल छे ते प्रमाणे आराधे ॥ ७१ ॥

अर्थः—॥ ७२ ॥ त० ते वार । पं० पछी । से० ते । आ० आणंद । स० श्रावक । इ० ए । ए० एहवुं

१०

(रुडुं) । रु० रुप । उ० उदार प्रधान । वि० विपुल । प० प्रयत्नपणे । प० ग्रह्यो छे । त० तप । क० कर्म तेणे करी । सु० सुकाणुं छे शरीर । जा० यावत । कि० कृश । दुर्बळ छे । ध० लुहारनी धमण (निसा जाळ) तेने । सं० व्याप्त । जा० एहवो शरीर थयो ॥ ७२ ॥

मूळपाठः—॥ ७३ ॥ तए णं से आणन्दे समणोवासए इमेणं[1] एयारूवेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं[2] पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के जाव+ किसे[3] धमणिसन्तए[4] जाए ॥७३॥

भावार्थः—॥ ७२ ॥ ते वारे ते आणंद श्रावक एवा प्रकारना विस्तिर्ण श्रेष्ट प्रयत्ने निरंतर एवी तपश्चर्याए भूखथी शरीर सुकाणुं, लोही–मांस रहित दुर्बळ थयुं, नसो बधी देखाय ने लुहारनो धमणनी पेरे श्वास चडे. ॥७२॥

अर्थः—॥ ७३ ॥ त० ते वार । णं० पछी । त० ते । आ० आणंद । स० श्रावकने । अ० एकदा । क० प्रस्तावे । पु० मध्य । र० रात्रीने विषे । जा० यावत । ध० धर्म । जा० जागरीका । जा० जागतो थको । अ० एहवो । अ० अध्यवसाय उपनो ५ । ए० एम । ख० निश्चे । अ० हुं । इ० आ शरीर (अग्यार प्रतिज्ञाए करी) । जा० यावत । ध० दुर्बळ नसाजाळ धमण जेवो । सं० व्याप्त । जा० हुओ । तं० ते माटे । अ० छे । ता० तेमज इमणा । मे० मुजने । उ० गमनादिकनी । क० क्रियाने विषे । ब० बळ । वी० वीर्य । पु० पुरुषाकार । प० पराक्रमनुं

1 B. (बी) इमेतारूवेण C. (सी.) एमेण 2 A. (ए) पयतेणं. + बाकीनो पाठ भगवतीमां पाने २८८ अने २८९ मां जुओ. 3. C (सी.) किसिणे. 4. A. (ए.) ०संते. D. E (डी. इ.) ०संसत्ते.

करवुं। स० श्रद्धा। धि० धीर्यपणुं। सं० संवेग। तं० ते माटे। जा० यावत। ता० ज्यां सुधी। मे० मारे। अ० छे। उ० गमनादिकने विषे। स० श्रद्धा। धि० धीर्य। सं० संवेग। जा० जिहां। य० लगी। मे० माहरा। ध० धर्माचार्य। ध० धर्मोपदेशक। स० श्रमण। भ० भगवंत। म० महावीर देव। जि० जिन। सु० सुहस्तीपणे। वि० विचरे छे। ता० तावत। ता० त्यां सुधी। मे० मुजने। से० श्रेय। क० काले। जा० जावत। ज० सूर्य उगे थके। अ० छेहडे। मा० मरणने। अ० अंते। सं० संलेखणाए करी। झू० पोतानुं शरीर सेवुं। झ० जूस्युं। सेवीने। भ० भात। पा० पाणी। प० अणवांछतो। का० काळ (मरण)। अ० अणवांछतो। वि० विचरुं। ए० एम। सं० आलोचतो। सं० आलोचने करीने। क० काले सूर्य। पा० उग्ये थके। जा० यावत। अ० छेडे। मा० मरणने। अं० अंते। जा० यावत। का० संथारो करीने काळ (मरण)। अ० अणवांछतो। वि० विचरे छे ॥ ७३ ॥

मूळपाठः—॥ ७३ ॥ तए णं तस्स आणन्दस्स [1]समणोवासगस्स [2]अन्नया [3]कयाइ पुव्वरत्ता [4]जाव धम्मजागरियं जागरमाणस्स [6]अयं अज्झत्थिए [7]५ [8]। "एवं खलु अहं

१. E. (इ) Omits २. A. D. (ए. डी.) अणदा. ३. A. D. (ए. डी) कदाइ ४. C. D E. (सी. डी इ मां नथी). omit. † पानु २७ पाठ ६६ आ सूत्रनो जूओ तथा भगवतीमां पानुं २९१ ५ A adds जाव after it. (ए मां धम्मजागरिय जाव) एम पाठ छे. ६. D. E. (डी. इ.) ° माणे. ७. A. has the numeral Letter इ=५, B. C have the numeral figure 4; D E. Omit (ए मां '५' ने बदले 'इ' छे बी. सी मां "४" छे. डी इ. मां "५" नथी § नीचेना शब्दो कल्प पाठ ९० मांथी वधारो" चिन्तिए पत्थिए मणोगए सङ्कप्पे भगवती पानुं २५३ जूओ. आ सूत्रना पाने २७, पाठ ६६ ने कल्प पाठ ९३ मुजब पांचने बदले चारज शब्द होय छे.

इमेणं जाव[॥] धमणिसन्तए[२] जाए । [३]तं अत्थि ता मे उट्ठाणे [३]कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे[४] सद्धाधिइसंवेगे[५] । तं जाव ता[६] मे अत्थि उट्ठाणे सद्धाधिइसंवेगे[७], जाव य[८] मे धम्मायरिए धम्मोवएसए[९] समणे भगवं[१०] महावीरे जिणे [११]सुहत्थी विहरइ[१२], ताव ता मे सेयं कल्लं जाव जलन्ते अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूसणाझूसियस्स[१३], भत्तपाणपडियाइक्खियस्स, कालं अणवकङ्खमाणस्स विहरित्तए[१४] [॥] । एवं सम्पेहेइ, त्ता कल्लं पाउ जाव[१५] [+] अपच्छिममारणन्तिय जाव[+] कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ ॥ ७३ ॥

॥ बाकीनो पाठ आ सूत्रना पाठ ७२ मांथी उमेरो. जूओ भगवती पानुं २८८. १. A (ए) °सतिते, C °सति, D. °मयत्ते । २ C. D. E. (सी डी इ. मां नथी.) Omit. ३ E. (इ) कम्मबलवीरिए, A (ए) वलवीरिए ४ A P (ए पी.) °परिकमे. ५. E (इ) सद्दाठिईमवेगे ६ B. (बी) तमेव for तामे. 'तामे" ने बदले 'तमेव" ७ A. B. (ए बी.) सद्धाति सवेगे, C (सी) सद्धावेइसवेगे, E सद्दाठिइसंवेगे. ८. E. (इ. मां नथी) Omit ९. D. E. (डी इ.) धम्मेए, १०. D. E. (डी. इ मां नथी.) omit. ११. A. B (ए. बी) सुहत्थि, C. (सी.) सुह, D E मावरथी. भगवती पानु २९१ मां सुहत्थी. १२. A. (ए.) विहरंति - जूओ बाकीना पाठ माटे भाता पाठ ३४, भगवती पानु २९२-२९३, कल्पसूत्र पाठ ५०. १३. A. (ए.) °झूसतिनस्स. १४. C. (सी) विहरइ १५. A. B C D E (मां नथी.) Omit. + ७३ मांथी "जाव" नी पहेलाना वाक्यमांथी बाकीनुं उमेरो

भावार्थः—॥ ७३ ॥ ते वारे ते आणंद श्रमणोपासकने एकदा प्रस्तावे अर्ध रात्रीने विषे धर्म जागरीकाए जागता एवो संकल्प उपन्यो के एम निश्चे आवा प्रकारना श्रेष्ट तप कर्मे करी, भुखे करी मारु शरीर मुकाणुं मांसरहित दुर्बळ थयुं, लुहारनी धमणनी पेरे श्वास चडे, नशा जाळ व्याप्त थयुं एटले लीली नसो देखाइ, ते माटे ज्यां सुधी हजु जवा-आववा प्रमुख क्रियाने विषे बळ (शक्ति) वीर्य (हींमत), पुरुषाकार (उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि) प्राक्रम (बळ, प्रमुखनो उपयोग करवो) श्रद्धा, धैर्य वैराग मारे छे, ज्यांसुधी म्हारा धर्माचार्य, धर्म उपदेशना दातार, श्रमण भगवंत श्री महावीर जिनेन्द्र देव हाथीनी पेरे विचरे छे त्यां सुधी मुजने श्रेय छे जे काले प्रभाते जाज्वल्यमान सूर्योदय थए छेलो मरणने अंते संलेखणा सेवुं, सेवीने अन्न-पाणीनुं पच्चखाण करी काळ (मरण) ने अणवांछतो थको विचरुं एवुं चिंतवीने काल प्रभाते छेली मरणने अंते यावत संलेखणा (संथारो) करी मरणने अणवांछतो थको विचरतो हवो ॥ ७३ ॥

अर्थः—॥ ७४ ॥ त० ते वार । णं० पछी । त० ते । आ० आणंद । स० श्रावक । अ० एकदा प्रस्तावे । क० कोइ । सु० शुभ । अ० अध्यवसाए करी । सु० भले । प० परिणामे करी । ले० लेसाए करी । वि० भली । विशुद्ध लेशाए करी । त० ते । अवधिज्ञानना । आ० आवरणरुप । क० कर्म्म । ते । ख० क्षय थए । उ० उपसमे थके । ओ० अवधिज्ञान । स० उपनो ते कहेवो छे । पु० पुर्वे दिसे । ल० लवण समुद्रे । पं० पांच । जो० योजन लगी । स० सो (पांचसो जोजन) । खे० खेत्र । जा० जाणे । पा० देखे । ए० एम । द० दक्षिण दिसे पण पांचसे योजन । प० पश्चिम दिसे पण एटलुं देखे । य० वळी । उ० उत्तर दीसे पण । जा० यावत । चु० चुलहेम-

वंतनामा । वा० वर्षधर । प० पर्वत सुधी । जा० जाणे । पा० देखे । उ० उंचो । जा० यावत । सो० सौ धर्म नाम । क० देवलोक । जा० जाणे । पा० देखे । अ० नीचो । जा० यावत् । इ० इहांथी । र० रत्नप्रभानामा नरक । पु० पृथ्वीनो । लो० लोलुचो नामा । न० नरकावास । च० चउरासी । वा० वरस । स० हजार (सहस्र) वरसनो । द्वि० स्थिति । जा० जाणे । पा० देखे ॥ ७४ ॥

मूळपाठः—॥ ७४ ॥ तए णं तस्स आणन्दस्स [1]समणोवासगस्स [2]अन्नया कयाइ [3]सुभेणं अज्झवसाणेणं, [4]सुभेणं परिणामेणं, लेसाहिं [5]विसुज्झमाणीहिं [6]तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं [7]ओहिनाणे [8]समुप्पन्ने। [9]पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पञ्चजोयणसयाइं [10] खेत्तं जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं [11]पच्चत्थिमेणं [12]य । उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवन्तं [13]

१. A. B C. (ए. बी. सी. मां नथी) Omit. २. A. B. (ए. बी.) अण्णया ३ A. (ए) सुभेणं. ४. B. (बी) सोभणेणं. C. (सी) सोहणेण. ५. D. E (डी. इ.) सुज्झ०. ६ A (ए) तदाणं वर० D (डी.) णाणावर० ७. A. B. C. D. (ए बी. सी. डी.) ओहिणाणे. ८. A B. C. D. E. (ए. बी. सी डी. इ) समुप० , B C E (बी. सी. इ.) ०पणे ९. C. D. E (सी. डी इ.) ०त्थि० १०. A. (ए) सयइं; B D E (बी. डी इ.) सइय. ११. A. (ए.) पच्चत्थिमेणं, C. D. E (सी. डी. इ.) पच्छिमेणं १२ B C. D. E. (बी. सी. डी. इ मां नथी) Omit. १३ B. D E. (बी डी. इ) ०वंतवास०.

वासधरपव्वयं जाणइ पासइ । उड्ढं जाव [1]सोहम्मं [2]कप्पं जाणइ पासइ । अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए [3]लोलुयच्चुयं नरयं [4]चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं [5]जाणइ [6]पासइ ॥७४॥

भावार्थ—॥ ७४ ॥ ते वारे ते आणंद श्रावकने एकदा प्रस्तावे शुभ ध्याने करी, शुभ अध्यवसाए करी, शुभ परिणामे करी, भली पवित्र लेशाए करी, अवधिज्ञान अने अवधि दर्शननो आवरणरुप कर्मनो क्षयोपशम थए थके अवधिज्ञान उपन्युं तेथी पूर्व, दक्षिण, पश्चिम ए त्रण दिशाए लवण समुद्रमां पांचसे जोजन सुधी क्षेत्र जाणे देखे अने उत्तर दिशाए जीहां भरतक्षेत्रनी मर्यादानो करनार चुल हीमवंत पर्वत सुधी जाणे देखे, उंचुं ज्यां पेहेला सुधर्मा देवलोक सुधी जाणे देखे. नीचे ज्यां पहेली रत्नप्रभा नरक पृथ्वीमां लोलुचय नामे नरकावासो ज्यां नारकीनी चोराशी हजार वर्षनी स्थिति छे त्यां सुधी जाणे देखे ॥ ७४ ॥

अर्थः—॥ ७५ ॥ तें० ते । का० कालने विषे । ते० ते । स० समयने विषे । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देव । स० समोसर्या । प० परिखदा । नि० वांदवा आवी पछे । जा० यावत धर्म सांभळी । प० पाछी वळी ॥ ७५ ॥

---

१ A. B (ए बी) सोहम्मे २ B (बी) कप्पे ३ D E (डी इ) लोलुय अच्चुतं ४ C. (सी.) चोरासीइ० ५. B C D, E, (बी. सी डी इ मां नथी) Omit. ६ A (ए.) जाणति पासति

मूळपाठः—॥ ७५ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए । परिसानिग्गया 'जाव* पडिगया' ॥ ७५ ॥

भावार्थः—॥ ७५ ॥ ते काल (चोथे आरे) ते समयने विषे श्रमण भगवंत महावीर देव ग्रामानुं गाम विचरता, वाणीज्य गामनी बाहार दुतीपलास नामे उद्यानने विषे समोसर्या ते सांभळी नगरमांथी प्रषदा वांदवा नीकळी. तेने परमेश्वरे धर्मकथा कही. ते सांभळी प्रषदा पाछी वळी. ॥ ७५ ॥

अर्थः—॥ ७६ ॥ ते० तेणे । का० काळे । ते० तेणे । स० समये । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देवनो । जे० जेष्ट वडो शिष्य । अं० समीपे (पासे) रहेनार । इ० इंद्रभूती । ना० नामे । अ० अणगार । गो० गौतमनामा । गो० गोत्री । णं० वळी । स० सात हाथनो । उ० उचो शरीर । स० सम । च० चउरस । सं० संस्थाने करी । सं० सहित छे । व० वज्र । रि० रुषभ । ना० नाराच । सं० संघयणनो धणी । क० सुवर्ण । पु० घठारुं । नि० मठारुं देदीप्यमान एवी । प० पदकमळ सरखी । अतिशे । गो० गोरा छे । उ० मोटी उग्र । त० तपना करण हार । दि० दिप्त आकरा । त० तपना करणहार । त० तातो विशेषे करी । त० तपवंत । घो० घोर । त० तपनो धणी । म० मोटा । त० तपनो करणहार । उ० उदार मोटा । घो० घोर । गु० गुणवंत । घो० घोर । त० तपस्वी । घो० घोर । ब्र० ब्रह्मचर्यना । वा० पालणहार । उ० व्यक्त । स० (शरीर) देह छे ।

१. A C (ए. सी. मां नथी.) Omit. * "धम्मो कहिओ" निरियावलीकामांथी उमेर्यो. जुओ भगवती पानुं २४४, तथा ९ ने ११ मो पाठ आ सूत्रनो जुओ. २ C. (सी. मां नथी.) Omit.

सं० संक्षेपीं छे । वि० विपुल । तें० तेजु । ले० लेशा । छ० छठ । छ० छठ । अ० आंतरा रहित । त० तप करवे करी । सं० संजम । त० तपे करी । अ० पोताना आत्मा । भा० भावना थका । वि० विचरे छे ॥ ७६ ॥

मूळपाठः—॥ ७६ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अन्तेवासी [1]इन्दभूई नामं अणगारे गोयमगोत्ते[2] णं [3]सत्तुस्सेहे, समचउरंससंठाणसंठिए, वज्जरिसहनारायसङ्घयणे, कणगपुलगनिघसपम्हगोरे[4], उग्गतवे, दित्ततवे, तत्ततवे, घोरतवे[5], महातवे, उराले, घोरगुणे ५, घोरतवस्सी, घोरबम्भचेरवासी, उच्छूढसरीरे, सङ्खित्तविउलतेउलेसे[6], [7]छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ ७६ ॥

१. E. (इ.) °भइ २ A B. C, (ए बी. सी) °गुत्त. ३. A (ए.) सत्तसेहे B. C (बी. सी) सत्तुसेहे ४ E °पउम° foi °पम्ह° ('इ' मां °पउम° °पम्ह° ने बदले छे.) ५. D. E (डी इ. मा नथी) Omit. ६ C (सी) °विउलतेउ°. D E. (डी. इ. मां नीचेनो पाठ "तेउ°" पछी वधारे छे.) जियकोहे, जियमाणे, जियमाए. जियलोभे, जाइ-संपण्णे, कुलसंपण्णे, बलसंपण्णे, रूवसंपण्णे, जाव तेयंसी. ७. A. (ए.) छट्ठछट्ठेणं.

भावार्थः—॥ ७६ ॥ ते काळ ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनो मोटो शिष्य, इंद्रभूति नामे अणगार के जेनुं गौतम गोत्र हतुं ते इंद्रभूति अणगार सात हाथना उंचा, सम चउरस संस्थाने (पद्मासन वाळीने बेसे, पछी ढुंटीथी जमणा ढींचण सुधी भरता जे माप थाय ते मुजब ढुंटीथी डाबा ढींचण ने जमणा खभाने डाबा खभाने भरतां चारे तरफ माप सरखुं थाय ते) करी सहित, वज्र (खीली), ऋषभ (पाटो), नाराच (आंकडा भीडेला) (पहले आंकडा भीडेला मर्कट बंध हाडकां होय तेना उपर मजबूत चामडीनो पाटो, तेना उपर हाडकानी खीली, आखा शरीरमां ज्यां ज्यां सांधा होय त्यां त्यां एवी रीतनी मजबूती होय ते), संघयणना धणी, सोनुं घडायुं मढायुं, देदीप्यमान होय एवा अती गौरवर्णवाळा, बीजाथी चींतवी न शकाय एवा तपना करनार, जाज्वल्यमान तपरूपणी अग्निए करीने कर्मरूप वनने बाळे एहवा दीपता तपना करनार. भयंकर परिसह (परिश्रम) अने पांच इंद्रियोना विषयने निर्दयरूपे विनासवा घोर (बीजाथी करी न शकाय एवी) तपश्चर्यांना करनार, विशेष तपवंत के जे तपे करी कर्म अने शरीरने संतापे, आलोक ने परलोकना सुखादिकनी आकांक्षा दोष रहित एवा महाश्रेष्ठ तपना करनार, बीजाथी आदरी न शकाय एहवा गुणना धरणहार, बीजाथी करी न शकाय एहवा तपे करी तपस्वी, बीजा अल्प सत्व (शक्ति) ना धणीने पाळता दोहिलुं एहवुं ब्रह्मचर्य पाळनार, जेणे शरीरनी सारवार करवा रुप राग छोडयो छे, विस्तीर्ण तेजुलेशा शरीर मांहि संक्षेपी छे अने निरंतर छठ (बे उपवास भेगा करवा ते) छट्ट-तप कर्म करीने सत्तर प्रकारे संयम ने बारे भेदे तपश्चर्याए करी पोताना आत्माने भावता थका विचरता हवा (जेणे क्रोध, मान, माया (कपट) लोभ जीत्या छे, शांति संपन्ने (माताना पक्ष

निर्मळो), कूळ संपन्ने (पीतानो पक्ष निर्मळो), श्रेष्ठ बळे करी सहित, रुपे करीने सहित, तेजस्वी) अने निरंतर छट्ठ (बे उपवास भेगा करवा ते) तपे करीने सहित इंद्रभुति अणगार विचरता हता ॥ ७६ ॥

अर्थः—॥ ७७ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । भ० भगवंत—पूज्य । गो० गौतम स्वामी । छ० छठम । ख० तपने । पा० पारणे । प० पहेली । पो० पोरसीए । स० सझाय । क० करी । बि० बीजी । पो० पोरसीए । झा० ध्यान । झि० ध्याय । त० त्रीजी । पो० पोरसीए । अ० उतावळो नहि । अ० चपळपणा रहित । अ० संभ्रांतपणा रहित । मु० मोहपती । प० पडीलेही । प० पडीलेहीने पछी । भा० भाजन । व० वस्त्र । प० पडिलेहे । प० पडिलेहीने । भा० भाजन । व० वस्त्रने । प० पुंजे । प० पुजीने । भा० भाजन—पात्र । उ० ग्रहे । उ० भाजन ग्रहीने । जे० जीहां । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । ते० तिहां । उ० आवे । उ० आवीने । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । व० वांदे । न० नमस्कार करे । न० नमस्कार करीने । ए० एम । व० बोल्या । इ० वांछुछुं । णं० वळी । भं० हे भगवंत । तु० तुमारी । अ० आज्ञा होय तो । छ० छठ । ख० खमणने । पा० पारणे । वा० वाणीयगाम । न० नगरने विषे । उ० उंच । नी० नीच । म० मध्यम । कु० कुलने विषे । घ० घर । स० सामुदाणी । भि० भिक्षाने । आ० आहार लेवाने अर्थे । अ० अटन करुं—जाउं । अ० जेम । सु० सुख होय तेम करो । दे० हे देवाणु प्रिय । मा० न । प० प्रमाद । क० करो ॥ ७७ ॥

मूळपाठः—॥ ७७ ॥ तए णं से भगवं गोयमे छठक्खमणपारणगंसि[1] पढमाए [2]पोरि-

---

१. C. (सी.) °पारणयंसि. २. C. (सी.) पोरसीए.

सीए सज्झायं करेइ, [1]बिइयाए [2]पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए [3]पोरिसीए [4]अतुरियं अचवलं असम्भन्ते [5]मुहपत्तिं पडिलेहेइ, [6]त्ता [7]भायणवत्थाइं पडिलेहेइ, [8]त्ता भायण-वत्थाइं पमज्जइ, त्ता [9][10]भायणाइं उग्गाहेइ, [11]त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, [12]त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ [13]नमंसइ, [14]त्ता एवं वयासी।" इच्छामि णं, भन्ते, तुब्भेहिं [15]अब्भणुन्नाए [16]छट्ठक्खमणस्स पारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्च-

१ C. D. E. (सी. डी इ.) बीयाए. २. D. E. (डी. इ.) पोरसीए. ३. C. D. (सी डी.) पोरसीए ४. A. (ए.) अतुरियं अचलिममभंते. B C (बी. सी.) अतुरिय अचवलमसभंते. D. E. (डी. इ) अतुरियम चवलममभताए. ५. D E. (डी. इ)° पत्तियं. ६. A. B D E. (ए. बी. डी. इ मां नथी.) Omit. ७. A (ए.) भाइणं व°, B. (बी) भाइण व°. ८. B C D. E (बी सी डी. इ. मां नथी.) omit. ९. B. D. E (बी. डी. इ) only भायण A. C. (ए. सी) only भायण १०. A. (ए.) भाइणाइं. ११. A. in full भाइणाइं, उग्गाहेत्ता. (एमां आखो पाठ उपर मुजब छे.) B. C. D. E. (बी. सी डी इ मां नथी) Omit १२. A. D. (ए डी. मां नथी.) Omit. १३. A. (ए. मां नथी.) Omit. १४. B. C. D E Omit. (बी. सी डी. इ. मां नथी.) १५. A. C (ए. सी) अब्भुणु° १६. C. D. E. (सी डी इ)° कल्लाणपारणगंसि

नीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स[2] भिक्खायरियाए अडित्तए । अहासुहं, देवाणुप्पिया, मा पडिबन्धं करेह " ॥ ७७ ॥

भावार्थः—॥ ७७ ॥ तं वारे ते भगवंत एटले पूज्य गौतम छठने पारणे पेहेले पहोरे सज्झाय करे, बीजे पहोरे ध्यान ध्याय, त्रीजो पहोर आवे थके उतावळा नहि, चपळपणा रहित, संभ्रांतपणा रहित, मुखपती प्रतिलेखीने, पात्राने वस्त्रने प्रतिलेखे (जोवे) पछी पात्राने पुंजे, पुंजीने पात्राने ग्रहे, ग्रहीने (लइने) जीहां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव छे त्यां आवीने श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदी, नमस्कार करी एम कहेता हवा—वांदुं छुं, हे भगवंत ! तमारो आज्ञा होय तो छठने पारणे वाणीज्य गाम नगरने विषे उंच (क्षत्री), नीच, (ब्राह्मण—अहिं भीक्षाव्रती करवाथी ब्राह्मणने नीच गणेल छे) मध्यम (वाणीया प्रमुख) कूळने विषे समुदाणी घर (साधुने वार कूळनी गौचरी करवी कल्पे छे तेमांहि प्रथम निर्धनना घरनो आग्रह होय तेने तजी धनवंतने घेर जवुं नहि, कारण के निर्धननुं मन ढिलगीर थाय तेथी पहेला निर्धनने घेर जइ पछी धनवंतने घेर जवुं, एम अनुक्रमे भिक्षाव्रती करवी ते) ने विषे भिक्षाने अर्थे भ्रमण करुं ? ते वारे भगवंत कहे, हे देवने वल्लभवंत ! जेम तमने सुख उपजे तेम करो, ए वातनो प्रतिबंध (प्रमाद) करशो नहि. ॥ ७७ ॥

---

१. C. (सी.) °मज्झिमयाइं. २. So C. (सी. मां एमज छे.) A. B D E. (ए. बी. डी. इ. मां) समुया°.

अर्थः—॥ ७८ ॥ त० ते वार । णं० पछी । भ० भगवंत एटले पूज्य । गो० गौतम । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर स्वामीनी । अ० आज्ञा । स० पामे थके । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । अं० समीप थकी । दू० दूइपलास नामा । चे० चैत्य (उद्यान अथवा वन) थकी । प० नीसर्या । प० नीसरीने । अ० उतावळा नहि । अ० चपलपणा रहित । अ० संभ्रातपणा रहित । जु० धुसरा प्रमाण । प० जोता थका । दि० इर्या नजरे । पु० आगळे । इ० इर्या । सो० शोधतो थको । जें० जिहां । वा० वाणिय । गा० गाम । न० नगर । तें० तिहां । उ० आवे । उ० आवीने । वा० वाणीय । गा० गाम । न० नगरने विषे । उ० उंच । नी० नीच । म० मध्यम । कु० कूळने विषे । घ० घर । स० सामुदाणी । भि० भिक्षा । आ० गोचरीने विषे । अ० विचरे ॥७८॥

मूळपाठः—॥ ७७ ॥ तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं [1]अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ [2]दूइपलासाओ चेइयाओ [3]पडिणिक्खमइ, २त्ता अतुरियमचवलमसंभन्ते[4] जुगन्तरपरिलोयणाए[5] दिट्ठीए पुरओ [6]इरियं [7]सोहेमाणे, जेणेव वाणियगामे [8]नयरे, तेणेव[9] उवागच्छइ, २त्ता वाणियगामे [10]नयरे

१. C. (सी) अब्भुणु° २. B. C. D. E. (बी. सी. डी. इ.) °पलासस्सेइ°. ३. C. D. E. (सी. डी. इ.) पडिनि°. ४. C (सी.) °संभंताए. ५. A. C. (ए. सी.) °पलोय°. ६. D. E. (डी. इ.) इरिया. ७. A. E. (ए. इ) सोहमाणे. D. (डी.) साहमाणे. ८. A. B. (ए. बी.) नगरे. ९. A. Omits from तेणेव to नयरे. (एमां "तेणेव" थी "नयरे" सुधी नथी.) १०. B. C. D. E. (बी. सी. डी. इ.) नगरे.

उच्चनीयमज्झिमाइं[1] कुलाइं घर समुदाणस्स[2] भिक्खायरियाए अडइ ॥ ७७ ॥

भावार्थः—॥ ७८ ॥ ए प्रमाणे श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी आज्ञा थइ ते वारे भगवंत (पूज्य) गौतम स्वामी श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी पासेथी दुतीपलास नामे वनथी नीकळीने अति उतावळा नहि, अति धीमा नहि, चपळपणा रहित, संभ्रांत रहित, चार हाथ धूसरा प्रमाणे द्रष्टिने जोतां थकां नजर आगळ इर्या शोधता थकां, ज्यां वाणिज्य गाम नगर छे त्यां आवीने उंच, नीच, मध्यम कूळने विषे सामुदाणो (वार कूळनी गौचरी) घरने विषे भिक्षाने अर्थे फरे छे ॥ ७८ ॥

अर्थः—॥ ७९ ॥ त० ते वारे । णं० पछी । से० ते । भ० भगवंत (पूज्य) गो० गौतम । वा० वाणीय । गा० गाम । न० नगरे । ज० जेम । प० भगवतीने विषे । त० तेम । जा० यावत । भि० भिक्षाचरी । अ० करता थका । अ० जेटलुं जोइए तेटलुं । भ० भात । पा० पाणी । स० सरखी रीते । प० लीए । प० लइने । वा० वाणीय । गा० गाम नगरथी । प० नीसर्या। प० नीसरीने । को० कोलाग । सं० सनीवेस पाडा थकी । अ० नहि । दू० अति वेगळा । अ० नहि । सा० बहु ढुकडा । व० मार्गमां । व० आवता थका । व० घणा । ज० लोकना । स० शब्दने । नि० सांभळ्या । व० घणा । ज० लोक । अ० मांहो । अ० मांहि । ए० एम । आ० कहेता हवा ४ । ए० एम । ख० निश्चे । दे० हे देवानुं प्रिय । स० श्रमण । भ० भगवंत महावीरनो । अ० समीपे रहेनार

१. C. (सी.) °नीच°. २. A. B. C. D. E. (ए बी सी डी इ.) समुदा°.

शिष्य । आ० आणंद । ना० नामा । स० श्रावक । पो० पोषध शाळाने विषे । अ० छेहडे मरणने अंते । जा० यावत । अ० मरण अणवांछतो । वि० विचरे छे ॥ ७९ ॥

मूळपाठः—॥७०॥ तए णं से भगवं गोयमे वाणियगामे [1]नयरे, जहा पण्णत्तीए तहा, जाव भिक्खायरियाए [2]अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं [3]सम्मं [4]पडिग्गाहेइ, इत्ता वाणियगामाओ पडिणिग्गच्छइ, इत्ता [5]कोल्लायस्स सन्निवेसस्स [6]अदूरसामन्तेणं [7]वईवयमाणे, बहुजणसद्दं [8]निसामेइ । बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ [9] ४+ । "एवं खलु, देवाणुप्पिया, समणस्स भगवओ [10]अन्तेवासी, आणन्दे नामं समणोवासए [11]पोसहसालाए अपच्छिम जाव× अणवकङ्खमाणे विहरइ" ॥ ७० ॥

१. D E (डी. इ) नगरे ^ विवाह पण्णती एटले भगवतीनी मागे पानुं ३६८ थी ३७१ २. D. E. (डी इ. मां नथी) Omit जहापण्णत्तीए तहा & read (पण नीचे मुजब पाठ छे) जाव भिक्खायरिय जाव अडमाणे ३ A. B. C. (ए. बी. सी मां नथी.) Omit. D. (डी.) सम. ४. A. B D. E (ए बी डी. इ.) पडिगाहेइ. ५. E. (इ.) कोल्लायसन्निवेसस्स. ६. A. (ए.) ° समेतेणं ७. A (ए.) वतीवय ° B. (बी.) वीतीवतीयमाणे; C. (सी.) वीइवय; ° E D. (इ. डी.) बीतीवय °, ८. A. (ए मां नथी) Omit. ९ C. (सी. मां नथी) Omit. D. E. (डी. इ.) २ + नीचेना वधारे शब्दो कल्पसूत्र पाठ ६४ मां छे. "एवं भासइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ." १०. B. (बी.) ° वासि. ११. A. (ए) पोसहस्सालाए. × बाकीनो पाठ आ सूत्रना पाठ ५७ ने ७३ मां जुओ.

भावार्थः—॥ ७९ ॥ ते वारे ते भगवंत (पूज्य) गौतम वाणिज्य गाम नगरने विषे जेम भगवती सूत्रमां कह्युं छे तेम गौचरीने अर्थे फरतां जेटलो जोइए तेटलो आहार–पाणी संपूर्ण लइने, वाणिज्य नगर थको नीकळी कोल्लाग सन्निवेश पाडा थकी अति ढुकडा नहि, अति वेगळा नहि एवी रीते जाता थका घणा माणसो मांहोमांहि एम कहेता हवा, एम भासता हवा, एम परुपता हवा के एम निश्चे हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनो अंते वासी (शिष्य) आणंद नामे श्रमणोपासक (श्रावक), पोषधशाळाने विषे छेल्ली मर्णने अंते संलेखणा (संथारो) करी मर्णने अणवांछतो थको विचरे छे ॥ ७९ ॥

अर्थः—॥ ८० ॥ त० ते वार । णं० पछी । त० ते । गो० गौतम स्वामि । ब० घणा । ज० लोकनी । अ० समीपे । ए० ए अर्थ । सो० सांभळीने । नि० हैयामांहि धारीने । अ० एतान । रु० रुप । अ० अध्यवसाय उपनो ४ । तं० तीहां । ग० जाउं । णं० वळी । ज्यां । आ० आणंद । स० श्रावकने । पा० देखुं । ए० एम । सं० विचारे । सं० विचारीने । जे० जिहां । को० कोलाग । स० सन्निवेश नामा पाडो छे । जे० जिहां । आ० आणंद । स० श्रावक छे । जे० जिहां । पो० पोषधशाळा । तें० तिहां । उ० आवे ॥ ८० ॥

मूळपाठः—॥८०॥ तए णं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अन्तिए एयं[1] सोच्चा निसम्म [2]अयमेयारुवे [1]अज्झत्थिए ४[+] । “ तं गच्छामि णं, आणन्दं समणोवासयं पासामि ” । एवं सम्पेहेइ,

१. A. (ए.) एयमट्ठं; B. (बी.) एवं; D. E. (डी. ई.) एत. २. D E. (डी. ई.) अयं इमेयारूवे.
३. A. (ए. मां) ६=९. + बाकीनो पाठ ६६ तथा ७३ मा पाठनी फुटनोटमां जुओ.

रत्ता जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे, जेणेव आणन्दे समणोवासए, जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ ॥ ८० ॥

भावार्थः—॥ ८० ॥ ते वारे ते गौतमे घणा जणनी पासे ए अर्थ सांभळीने हैयामांहि धारीने एहवो अध्यवसाय चींतवी मनमां संकल्प उपन्यो के ज्यां आणंद श्रावक पौषधशाळाए छे त्यां हुं जाउं, एम चींतवीने ज्यां कोलाग सन्नीवेश नामे पाडो के ज्यां आणंद नामे श्रावक पौषधशाळामां छे त्यां आवे ॥ ८० ॥

अर्थः—॥ ८१ ॥ त० ते वार। णं० पछी। से० ते। आ० आणंद। स० श्रावक। भ० भगवंत (पूज्य) । गो० गौतमने। ए० पासे आवता। पा० देखे। पा० देखीने। हृ० हर्ष संतोष पाम्यो। जा० यावत। हि० हैयाने विषे। भ० पूज्य। गो० गौतमने। व० वांदीने। न० नमस्कार करे। न० करीने। ए० एम। व० कहे। ए० एम। ख० निश्चे। भं० हे पूज्य!। अ० हुं। इ० ए। उ० उदारतपे करी। जा० यावत। ध० धमण जेवो। सं० निसाजाल। जा० ज्यास दुर्बल छुं ते माटे। न० नथी। सं० समर्थाइ। मारा मांहे। दे० देवाणु प्रियनी। अं० समीपे। पा० साहमुं आवीने। ति० त्रणवार। मु० मस्तके। पा० पग। अ० वांदु एहवो शक्ति नथी परंतु। तु० तमारी। णं० वळी। भं० हे पूज्य!। इ० इच्छा होय तो। अ० माहरा कहेवा थकी। इ० इहां। ने० वळी। ए० आवे। जा० जेम। णं० वळी हुं। दे० देवानु प्रिय। ति० त्रणवार। मु० मस्तके करी। पा० पग। वं० वांदु। न० नमस्कार करुं ॥ ८१ ॥

मूळपाठः—॥ ८१ ॥ तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ जाव[+] हियए भगवं गोयमं [1]वन्दइ नमंसइ, [2]वंदित्ता एवं वयासी । " एवं खलु, भन्ते, अहं इमेणं उरालेणं जाव धमणिसन्तए [3]जाए, न संचाएमि देवाणुप्पियस्स अन्तियं पाउब्भवित्ताणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाए अभिवन्दित्तए । तुब्भे णं, भन्ते, [4]इच्छाकारेण [5]अणभिओएणं [6]इओ चेव एह, [7]जा णं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं [8]पाएसु वन्दामि नमंसामि " ॥ ८१ ॥

भावार्थः—॥ ८१ ॥ ते वारे ते आणंद श्रावके भगवंत (पूज्य) गौतमने आवता दीठा, देखीने हर्ष संतोष पाम्यो ने हर्ष करी हैयुं भराणु, हुल्लास पामीने भगवंत गौतमने वांदी नमस्कार करीने एम कहेता हवा । एम

+ बाकीनो पाठ ज्ञाता पाठ २३, उववाइ पाठ १७, कल्प पाठ ५ ने भगवती पाने २६० मे जुओ. १. C. (सी. मां नथी.) Omit व. न. वंदित्ता. २. A. B. C. D. E (ए बी. सी. डी. इ मां नथी) Omit. ; बाकीनो पाठ आ सूत्रना पाठ ७२ मां जुओ. ३ E. (इ मां नथी.) Omit. ४ A. (ए.) इच्छुकारेणं; B. (बी) इच्छुकारेणं; D. E (डी. इ.) इत्थकारेणं, G. (जी. मां नीचेनो पाठ वधारे छे.) inserts देवाणुप्पिया after it. ५. B. E. G. (बी. इ. जी.) अभिओएणं ६. C. (सी.) इओ वतेव एह, D. E. (डी. इ.) इतो चेव एव, ७. C. (सी.) जहा, H. (एच.) जाव. ८ A. B. G. H. (ए बी, जी. एच.) पादेसु.

निश्चे हे पूज्य । आ उदार तपे करी म्हारुं शरीर घणुंज दुर्बळ थयुं छे. यावत लुहारनी धमणनी पेरे मने श्वास चडे छे तेथी आपनी पासे आवी विनय करी त्रणवार मस्तक नमाडी तमारा पग वांदु एवी मारामां शक्ति नथी माटे हे देवने वल्लभकारी । हुं आपने हुकम करतो नथी पण जो म्हारा उपर कृपा द्रष्टि करी इच्छा होय अने इहां सुधी आवो तो हुं त्रणवार मारुं मस्तक नमाडी आपना पगने वदन करुं, नमस्कार करुं ॥ ८१ ॥

अर्थः—॥ ८२ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । भ० भगवंत (पूज्य) । गो० गौतम स्वामि । जे० जीहां । आ० आणंद । स० श्रमणो । उ० उपासक । ते० त्यां । उ० आव्या ॥ ८२ ॥

मूळपाठः—॥८२॥ तए णं से भगवं गोयमे, जेणेव आणन्दे समणोवासए, तेणेव [2]उवागच्छइ॥८२॥

भावार्थः ॥ ८२ ॥ ते वारे भगवंत (पूज्य) गौतम जीहां आणंद श्रावक हता त्यां आवे ॥ ८२ ॥

अर्थः—॥ ८३ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । आ० आणंद । स० श्रमण । उ० उपासक । भ० भगवंत (पूज्य) । गो० गौतमने । ति० त्रणवार । मु० मुस्तके । पा० पग लगाडी । वं० वांद्या । न० नमस्कार करे । न० करीने । ए० एम । व० बोल्या । अ० छे । णं० वळी । भं० हे भगवंत । गि० गृहस्थपने । गि० गृहस्थावास । म० मांहि । व० वसताने । ओ० अवधिज्ञान । णं० वळी । स० उपजे । हं० हा । अ० छे । ज० जो । णं० वळी । भं० हे पूज्य ! । गि० गृहस्थपने । जा० वळी । अवधिज्ञान । स० उपजे । ए० एम । स० निश्चे ।

१. H. सं for तए ण से. ('एच' मां " तए णं से " ने बदले " सं " पाठ छे. २. C D. E F. (सी. डी इ एफमां आ पाठ वधारे छे.) add २ सा.

भं० हे पूज्य । म० मुजने । वि० पण । गि० गृहस्थने । गि० गृहस्थावास । म० मांहि । व० वसता थका । ओ० अवधिज्ञान । स० उपनुं छे । पु० पूर्व दिशाने विषे । ल० लवण । स० समुद्रमांहि । पं० पांच । जो० जोजन । स० सो (पांचसो) जोजन । जा० यावत । लो० नीचुं लोलचु । न० नरकावास । जा० जाणुं । पा० देखुं ॥८३॥

मूळपाठः—॥ ८३ ॥ [1]तए णं से [2]आणन्दे समणोवासए भगवओ [3]गोयमस्स तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाएसु वन्दइ नमंसइ, रत्ता एवं वयासी। "अत्थि णं, भन्ते, गिहिणो [4]गिहिमज्झा वसन्तस्स ओहिनाणे णं [5]समुप्पज्जइ?"। "हन्ता, अत्थि"। "जइ णं, भन्ते, गिहिणो जाव समुप्पज्जइ, एवं खलु, भन्ते, [6]मम वि गिहिणो गिहिमज्झा वसन्तस्स ओहिनाणे समुप्पन्ने। [7]पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पञ्चजोयणसयाइं जाव+ लोलुयच्चुयं[8] नरयं जानामि

१. E. (इ. मां नथी.) तए णं से आ० स० २ A. B. C. D. E. H (ए बी. सी. डी. इ एच मां नथी) Omit ३. A. F. G. (ए. एफ. जी) भगवं गोयमं. ४ A B. (ए बी.) मज्जे, F (एफ.) गिहिवास-मज्झे; A. C. E. (ए. सी. इ.) also मज्झा. ५. A B. C. D. E (ए. बी. सी. डी. इ.) समुपज्जइ; F. G. H. (एफ. जी एच) समुप्प°. * बाकीनो पाठ आगळ पेरेग्राफमा जुओ. ६. A (ए.) ममं. ७. A (ए.) पुरत्थिण. C (सी.) पुरेच्छिमेणं. D. H. (डी. एच.) पुरच्छिमेण. E (इ) पुरिच्छिमेणं. F (एफ) पुरित्थमेणं G. (जी.) पुरुच्छमेणं. + बाकीनो पाठ ७४ मा जुओ. ८. D E. (डी. इ) लोलुयं, अच्चुयं F. (एफ.) लोलुच्चुयं. G. (जी.) लोलुचयं.

पासामि " ॥ ७३ ॥

भावार्थः—॥ ८३ ॥ ते वारे आणंद श्रावक भगवंत गौतमना पगे त्रणवार मस्त लगाडी, वांदी, नमस्कार करीने गौतमने आ प्रमाणे कहेता हवा, हे पूज्य ! गृहस्थने घरमांहि वसताने अवधिज्ञान उपजे ? ते वारे गौतम कहे हा, उपजे. ते वारे आणद श्रावक कहेता हवा हे पूज्य ! जो घरवासमांहि रहेतां गृहस्थने अवधिज्ञान उपजे छे तो एम निश्चे हे पूज्य ! मुजने पण गृहस्थावासमांहि वसतां अवधिज्ञान उपज्युं छे तेथी पूर्व, दक्षिणने पश्चीम दिशाए लवण समुद्रमां पांचसे जोजन सुधी देखुं छुं अने उत्तर दिशाए चुल (नानो) हिमवंत नामे पर्वत सुधी, उंचुं पेहेला सुधर्मा नामे देवलोक सुधी, नीचुं पेहेली रत्नप्रभा नरक पृथ्वीमां लोलुचय नामे नरकावासा सुधी देखुं छुं ॥८३॥

अर्थः—॥ ८४ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । भ० पूज्य । गो० गौतम स्वामि । आ० आणंद । स० श्रावक प्रत्ये । ए० एम । व० बोल्या । अ० छे । णं० वळी । आ० हे आणंद श्रावक । गि० गृहस्थ । जा० यावत । स० अवधिज्ञान । उपजे । नो० नहि । चे० णं० वळी । ए० एहवो । म० मोटो (न उपजे) । तं० ते । माटे । णं० वळी । ते ज्ञाननुं । तु० तमे । आ० हे आणंद । ए० ए । ठा० स्थानके । आ० आलोओ । जा० यावत । त० तप । क० कर्म । प० अंगिकार करो (प्रायश्चित लीओ) ॥ ८४ ॥

मूळपाठः—॥ ७४ ॥ तए णं से भगवं गोयमे आणन्दं समणोवासयं एवं [1]वयासी ।

१. A' B. H. (प्र. श्री पत्र.) वदासी.

"अत्थि णं, आणन्दा[1], गिहिणो जाव+ समुप्पज्जइ। नो चेव णं ए महालए[2]। तं णं तुमं, आणन्दा, [3]एयस्स ठाणस्स [4]आलोएहि जाव[§] तवोकम्मं पडिवज्जाहि" ॥ ८४ ॥

भावार्थः—॥ ८४ ॥ ते वारे पूज्य गौतम आणंद श्रावकने एम कहेता हवा के हे आणंद ! गृहस्थावासमां गृहस्थीने अवधिज्ञान उत्पन्न थाय, पण तमने जेटलुं अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं छे तेटलुं थाय नहि माटे हे आणंद ! तमे ए असत्य बोलवा रुप पापना स्थानकने-आलोवो, पडीकमो, यावत तेनो तप अंगिकार करो ॥ ८४ ॥

अर्थः—॥ ८५ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । आ० आणंद । स० श्रमण । उ० उपासक । भ० पूज्य । गो० गौतम स्वामी प्रत्ये । ए० एम । व० बोल्या । अ० छे । णं० वळी । भ० हे पूज्य । जि० जिन । व० वचनने विषे । स० सत्यनुं । त० तथ्यनुं । त० तहितनुं । स० छता । भा० भावनुं । आ० आलोववुं । जा० यावत । प० प्रायश्चितनुं लेवुं (पछी गौतम बोल्या) । नो० नहि । ति० ते । अ० अर्थ । स० समर्थ एटले साचानुं प्रायश्चित लेवानुं नथी । ज० जो । णं० वळी । भ० हे पूज्य । जि० जिन । व० वचनने विषे । सं० सत्य । जा० यावत । भा० भावनुं । नो० नहि । आ० आलोववुं । जा० यावत । त० तप । क० कर्म । नो० नहि । प० प्रायश्चितनुं लेवुं अंगिकार करवुं (नहि) । तं० ते माटे । णं० वळी । भं० हे पूज्य ! । तु० तमे । चे० निश्चे ।

---

१. H. (एच.) आणन्दे. + बाकीना पाठ माटे ८३ पाठ जुओ २. D. E. G. (डी. इ. जी.) एवं महालए, C. H. (सी. एच.) णो चेव महालए ए तन्नं ३. E. (इ.) तस्स. ४. E. G. (इ. जी.) आलोएह. § "पडिक्कमाहि पडिक्कमिज्जइ" आ पाठ वधारो.

ए० ए । ठा० पापना स्थानक । आ० आलोवो । जा० यावत । प० प्रायश्चित लीओ ॥ ८५ ॥

मूळपाठः—॥ ८५ ॥ [1]तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवं गोयमं एवं वयासी । "अत्थि णं, भन्ते, जिणवयणे [2]सन्ताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ जाव* पडिक्कमिज्जइ ?" । "नो [3]तिणट्ठे समट्ठे" । "जइ णं, भन्ते, जिणवयणे सन्ताणं[4] जाव* भावाणं नो आलोइज्जइ[5] जाव+ तवोकम्मं[6] नो पडिवज्जिज्जइ । [7]तं णं, भन्ते, तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स[8] आलोएह[9] जाव+ पडिवज्जह" ॥ ८५ ॥

भावार्थः—॥ ८५ ॥ ते वारे ते पूज्य गौतम प्रत्ये आणंद श्रावक एम कहेता हवा के हे पूज्य ! जीन वचनने विषे छती वस्तुनी साची वस्तुनी यथा तथ्य वस्तुनी आलोयणा होय ? यावत तप अंगिकार करवानो होय ? (अर्थात सत्य वस्तुनुं आलोयण होय के असत्य वस्तुनुं आलोयण होय ?). ते वारे पूज्य गौतम कहे, हे आणंद !

१. A. H. (ए एच.) तं. २. D. (डी.) संमासे; G. (जी.) सत्ताणं; H. (एच.) सत्ताणं (बदले) for सन्ताणं तच्चाणं. ३. C. E. F. G. (सी इ. एफ. जी) इणट्ठे. ४. E (इ) सत्ताणं. * आगला पेरेग्राफ मुजब पाठ मुकयो. ५. D. E. (डी इ.) आलोएज्जइ. + पडिक्कमाहि, पडिक्कमिज्जइ. ६. A. C. D. E. (ए. सी डी इ.) तवो. B. (बी.) तवे. ७ E (इ.) तए. ८. A. B. D. (ए. बी डी.) ठाणस्स. ९. A. (ए.) अलोएहि

सत्य वस्तुनुं आलोयण न होय. ते वारे आणंद कहे हे भगवंत ! जो जीन वचनमां छता भावनी । साचा भावनी आलोयणा न होय यावत तप अंगिकार करवानो न होय तो हे पूज्य ! तमे ए (असत्य वचन बोलवा रुप पाप) स्थानकने आलोवो यावत तप अंगिकार करो ॥ ८५ ॥

अर्थः—॥ ८६ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । भ० पूज्य । गो० गौतमने । आ० आणंद । स० श्रावके । ए० एम एहवुं । वु० वचन । स० कहे थके । सं० गौतमने शंका । कं० कंखा । वि० संदेह । स० उपनो पछी । आ० आणंद श्रावकनी । अं० समीपथी । प० नीसरे । प० नीसरीने । जे० जीहां । दू० दूइपलास । चे० उद्यान । जे० जीहां । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देव । ते० तिहां । उ० आव्या । उ० आवीने । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देवथी । अ० अति । दू० वेगळा नहिं । अ० अति । दूकडा नहि एटले समीपे आवीने । ग० (इरीयावही) जाता । आ० आवतानी । प० पडीकमे । प० पडीकमीने । ए० एषणीक । सुजतो । अ० अणएखणिक—असुजतो । भात—पाणी लीधो होय ते । आ० आलोवे । आ० आलोवीने । भ० भात । पा० पाणी । प० देखाडे । प० देखाडीने । स० श्रमण । भ० भगवंतने । वं० वांदी । न० नमस्कार करे । न० करीने । ए० एम । व० वोल्या । ए० एम । ख० निश्चे । भ० हे भगवंत । अ० हुं । तु० तमारी । अ० आज्ञा मागीने । तं० ते । चे० पूर्ववत् । स० सर्व । क० कहुं । जा० यावत । त० ते वार । णं० पछी । अ० हुं । सं० मुजने । शंका उपजी छे । आ० आणंद । स० श्रमणोपासकनी । अं० समीपथी । प० पाछो वळी । प० नीसरीने । जे० जीहां । इ० तमे । ते० तिहां । ह० शीघ्र । आ० आव्यो । तं० ते । णं० माटे । भं० हे भग-

वंत । किं० केम शुं । आ० आणंद । स० श्रमणोपासक श्रावकने । त० ते । ठा० स्थानकने । आ० आलोवधुं । जा० यावत । प० प्रायश्चित । तपनुं पडिवजवुं । उ० कहो केम हशे । म० मुजने (कहो) । गो० गौतम प्रत्ये । इ० वळी । वळतां । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । भ० पूज्य । गो० गौतमने । ए० एम । व० कहेता हवा । गो० हे गौतम । तु० तमे । चे० णं० वळी । त० ते । ठा० स्थानकने । आ० आलोवो । जा० यावत । प० प्रायश्चित लीओ । तप आदरो । आ० आणंद । च० वळी । स० श्रावकने । ए० ए । अ० अर्थे । खा० खमावो ॥८६॥

मूळपाठः—॥ ८६ ॥ [1]तए णं से भगवं गोयमे आणन्देणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे, सङ्किए कङ्खिए [2]विइगिच्छा समावन्ने, आणन्दस्स [3]अन्तियाओ पडिणिक्खमइ, रत्ता जेणेव दूइपलासे चेइये, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, रत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामन्ते [4]गमणागमणाए पडिक्कमइ, रत्ता [5]एसणमणेसणं आलोएइ, [6]रत्ता [7]भत्तपाणं [8]पडिदंसेइ, रत्ता समणं भगवं वन्दइ नमंसइ, रत्ता [9]एवं वयासी।

१ A. (ए) त. २ A (ए.) वितिगच्छस,° B. (बी.) विगच्छस °; D. E (डी. इ) वितिगिच्छस. ३. C (सी.) अतिए. ४. B (बी.) गमणागमणे ५ A (ए) एसण मन्नेसण; B (बी) एसणमन्नेसणं, C (सी) पम्मणमाणेसणो, D. (डी.) पम्मणंसणेसणं, E. (इ.) एसणंसणे ६ C. (सी) जाव, A. B D E (ए बी. डी इ मा नथी) Omit. ७ E. (इ) भत्तपाणी ८ A (ए) पडिदसेति; B (बी.) पडिदसते, D. (डी.) पडिदसंसेति, E. (इ) पडिदंसे. ९. D E. (डी इ मां नथी.) omit. एवं वयासी.

"एवं खलु, भन्ते, अहं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए। तं चेव सव्वं कहेइ जाव[1]। तए णं[2] अहं सङ्किए [3]3+ आणन्दस्स समणोवासगस्स [2]अन्तियाओ पडिणिक्खमामि[4], त्ता जेणेव [5]इहं तेणेव हव्वमागए। [6]तं णं, भन्ते, किं आणन्देणं समणोवासएणं तस्स [7]ठाणस्स आलोए-यव्वं[8] जाव[†] पडिवज्जेयव्वं[9], उदाहु मए?" ॥ "गोयमा" इ समणे भगवं [10]महावीरे भगवं [11]गोयमं एवं वयासी। "गोयमा, [12]तुमं चेव णं तस्स [13]ठाणस्स आलोएहि[14] जाव

---

* बाकीनुं पाठ ७८–८५ मांथी उमेरो. १ D. E. (डी. इ. मां छे.) insert पडिसंदेसेति; D. (डी.) and. (अने) पडिदंसेइ; E. (इ.) after (पछी) णं. (णं) पछी डी. मां पडिसंदेसेति (छे) अने (इ.) मां 'णं' पछी (पडिदंसेइ) छे. २ A B. (ए बी मां नथी) Omit. + आ पाठना आगला वाक्यमांथी बाकीनुं उमेरो ३. D. E. (डी इ.) अंतिए. ४ A. B. C D. E. (ए. बी सी. डी. इ. मां) (पडि) २। ५. B (बी) तुहं. ६. A. B. C. (ए बी. सी.) ते, D. E. (डी इ.) नए. ७. A. D. (ए डी.) ठाणस्स. ८. D (डी) अलोएह तव्वं. E (इ.) आलोएहतव्वं. C. (सी.) आलोएव्वं. † पडिक्कमाहि पडिक्कमिज्जइ. ९. A (ए.) पडिकमते, B. C. (बी सी) मां फक्त merely पडि, D E. (डी. इ) पडि २. १०. A. B. C. D. E. (ए. बी सी. डी. इ मां नथी) Omit भगव महावीरे ११. A. (ए) गोयम; C. 1' (सी. डी. मां मात्र) गो, E. (इ.) गोयमा. १२. A. (ए.) तुब्भे; B. (बी.) तुमे. १३. A. B. C D. E. (ए. बी. सी. डी. इ.) ठाणस्स. १४. D. (डी.) आलोएह.

पडिक्कमाहि[1], आणन्दं च[2] समणोवासयं एयमट्ठं खामेहि " ॥ ८६ ॥

भावार्थः—॥ ८६ ॥ ते वारे भगवंत गौतमने आणंद श्रावके एम कहे थके शंका (आनुं शी रीते हशे ?), कांक्षा (ए कहे छे ते खरुं हशे ?), वितिगिच्छा (आ बेमां खरी वात शुं हशे ?) उत्पन्न थइ, पछी आणंद श्रावकनी पासेथी नीकळीने ज्यां दुतीपलास नामे वन के ज्यां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव हता त्यां आवीने श्रमण भगवंत श्री महावीरथी अति ढूकडा नहि, अति वेगला नहि, एवी रीते रही इरिया वही (रस्ते जतां आवतां जे पाप लाग्युं होय ते तेना निवारण रुपे कायोत्सर्ग करवो ते) पडीकमे, पछी एखणा, अनेषणा आलोवे अने आहार–पाणी देखाडीने श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदे, नमस्कार करे, पछी एम कहेता हवा एम निश्चे हे भगवंत ! हुं तमारी आज्ञा थएथी गौचरीए गयो हतो यावत आणंद संबंधी सर्व वात कहे, ते वारे मने शंका, कांक्षा, वितिगिच्छा उत्पन्न थइ. त्यार पछी आणंद श्रावकनी पासेथी निकळ्यो ने ज्यां तमे त्यां हुं उतावळो आव्यो. ते माटे हे भगवंत ! आणंद श्रावकने ते स्थानकनुं आलोववुं यावत प्रायश्चित अंगिकार करवानुं छे ? के म्हारे आलोववानुं यावत प्रायश्चित अंगिकार करवानुं छे ? एम पूछ्ये थके श्रमण भगवंत श्री महावीर, गौतम स्वामिने एम कहेता हवा, एम निश्चे हे गौतम ! ते स्थानकने तमेज आलोवो यावत अंगिकार करो अने आणंद श्रावकने तमे खोटो पाडवा रुप जे अपराध करेल छे ते माटे खमावो ॥ ८६ ॥

---

१. A (ए.) पडिक्कतेह; B. C. (बी. सी.) meroly पडि; D. E. (डी. इ.) पडिवज्जेह. २. C. E. (सी. इ. मां नथी.) Omit.

अर्थः—॥ ८७ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । भ० पूज्य । गो० गौतम । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनुं वचन । त० तहित कर्युं (प्रमाण कर्युं) । त्ति० वळी । ए० ए । अ० अर्थ । वि० विनय संयुक्त । प० सांभळे । प० सांभळीने । त० ते । ठा० स्थानके गौतमे । आ० आलोव्युं । जा० यावत । पा० प्रायश्चित लीधुं । आ० आणंद । च० वळी । स० श्रावक प्रत्ये । ए० ए । अ० अर्थ । खा० खमाव्युं ॥ ८७ ॥

मूळपाठः—॥ ८७ ॥ [1]तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स " तह " त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, त्ता तस्स [2]ठाणस्स आलोएइ जाव* पडिवज्जइ[3], आणन्दं [4]च समणोवासयं[5] एयमट्ठं खामेइ ॥ ८७ ॥

भावार्थः—॥ ८७ ॥ तेवारे ते पूज्य गौतम श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनुं वचन तहत करी, विनये करीने सांभळीने ते स्थानकने आलोवे यावत तपश्चर्या अंगिकार करे अने आणंदनी पासे जइ ए अर्थ खमावे ॥ ८७ ॥

अर्थः—॥ ८८ ॥ त० ते वार । णं० पछी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । अ० एकदा । क० प्रस्तावे । ब० बाहिर । ज० जनपदने विषे । वि० विहार करवा । वि० विचर्या ॥ ८८ ॥

---

१. A. (ए.) ते; D (डी.) तं २. A B. C D. E (ए. बी. सी डी इ) ट्ठाणस्स. * बाकीनो पाठ ८५ पाठनी फूटनोटमां जुओ ३ A B C (ए बी. सी) पडिव; D. E. (डी. इ.) पडिक्कमेइ. ४. C, E. (सी. इ मां नथी) Omit. ५ A. (ए.) °वासए.

मूळपाठः—॥ ८८ ॥ [1]तए णं समणे भगवं महावीरे [2]अन्नया कयाइ बहिया जणवय [3]विहारं विहरइ ॥ ८८ ॥

भावार्थः—॥८८॥ ते वार पछी श्रमण भगवंत श्री महावीर देव बाहिर जनपद देशने विषे विहार करे ॥८८॥

अर्थः—॥ ८९ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । आ० आणंद । म० श्रमणोपासक । ब० घणुं । सी० सील । व० व्रत । पाळवे करी । जा० यावत । अ० पोतानो आतमा । भा० भावतो थको । वी० वीस । वा० वरस । स० श्रावकनी । प० प्रतिज्ञा । पा० पालीने । ए० अग्यार । ग० वळी । उ० श्रावकनी । प० प्रतिज्ञा । स० सम्यग प्रकारे । का० कायाए करी । फा० फरसीने । मा० मास एकनी । सं० संलेखणाए करी । अ० पोताना आत्माए । झू० (झूस्यो) सेवीने । स० साठ । भ० भक्त (जमण) । अ० अणसण करी । छे० छेदीने । आ० पापकर्म आलोइ । प० पडीकमीने । स० समाधि । प० पामीने । का० काल–मरणने । मा० समे । का० काल । कि० करीने । सो० सौधर्म । क० देवलोकने विषे । सो० सौधर्म । व० वमसकनामा । म० मोटो । वि० वेमानथी । उ० उत्तर । पु० पूर्वनी वच्चे इशान खूणाने विषे । अ० अरुणनामा । वि० विमानने विषे । दे० देवतापणे । उ० उपन्यो । त० ते देवलोकने । णं० विषे । अ० त्यां । ग० गएल । दे० देवतानो । च० चार । प० पल्योपमनी । ठि० आउखानी स्थिति । प० कही छे । त० तिहां । णं० वळी । आ० आणंद । वि० वळी । दे० देवतानी । च० चार । प० पल्योपमनी । ठि० स्थिति । प० कही ॥ ८९ ॥

१. C. (सी.) तं, A B. D E. (ए बी. डी. इ मां नथी.) Omit. तए णं. २. D E transpose बहिया अण्णया क०. (डी इ. मां उपर मुजब पाठ छे.) ३. B D. E. (बी डी. इ. मां नथी) Omit विहारं

मूळपाठः—॥ ८९ ॥ [1]तए णं से आणन्दे समणोवासए बहूहिं सीलव्वएहिं [2]जाव+ अप्पाणं भावेत्ता, वीसं वासाइं [3]समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, [4]एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता, मासियाए संलेहणाए [5]अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं [6]अणसणाए छेदेत्ता, [7]आलोइयपडिक्कन्ते, समाहिपत्ते, [8]कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स[9] महाविमाणस्स [10]उत्तरपुरच्छिमेणं [11]अरुणे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं आणन्दस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ ८९ ॥

भावार्थः—॥ ८९ ॥ ते वारे आणंद श्रावक घणां शीयळव्रतादिक धर्म करी पोताना आत्माने शुद्ध करीने वीस वर्ष श्रावकनी पर्याय पाळी श्रावकनी अग्यार प्रतिमा सम्यक प्रकारे कायाए करी फरसीने एक महीनानी संलेखणा

१. B. D. E. (बी डी इ.) त, (नथी) Omit णं. २. C (सी मां नथी) Omit. जावअप्पाणं भावेत्ता. + बाकीनो पाठ, पाठ ६६ मांथी लेवो ३ E. (इ.) समणोवासयं परियायं ४. A (ए.) एक्कारस्स, E (इ.) एक्कारस्स. ५. C (सी) अप्पाण ६ C. (सी.) अणसणाइं. ७. C. (सी.) अलोइए.° ८. A (ए.) कालमासे, B. (बी.) कालेमासे ९ B (बी) °वडंसगस्स. E. (इ.)°वडिंसयस्स. १०. A. B. (ए. बी.)°पुरिथमेणं C (सी.) °पुरिच्छिमेणं D. E. (डी. इ.)°परच्छिमेणं. ११. D. E. (डी. इ.) अरुणेहिं विमाणेहिं.

करी आत्माने झोसीने साठ भक्त (एक दिवसना सवार अने सांझ एम बे भोजन गणता एक महीनाना साठ भोजन थाय ते), अणसण छेदीने, आलोवी, पाप निवर्तावी, समाधि पामीने काळ (मरण) ने समे काळे (आयुष्य पूर्ण) करी पहेला सुधर्मा देवलोके सुधर्मावतंसक म्होटा विमाने उत्तर अने पूर्वनी वचमां इशान खूणे अरुण विमानने विषे देवतापणे उत्पन्न थयो. त्यां केटलाएक देवतानी चार पल्योपमनी स्थिति कहेल छे, त्यां आणंद देवनी आयुष्यनी पण चार पल्योपमनी स्थिति कही छे. ॥ ८९ ॥

अर्थः—॥ ९० ॥ गौतम स्वामि भगवतने पूछे छे । आ० आणंद नामा । णं० वळी । भं० हे भगवंत । दे० देवता । ता० ते । दे० देवलोक थकी । आ० ते देवतानुं । आउक्खं-भव स्थिति पुरी करीने ३ । अ० आंतरा रहित । च० चवे । च० चवीने । क० किहां । ग० जाशे । क० किहां । उ० उपजशे । भगवंत कहे छे । गो० हे गौतम । म० महाविदेह क्षेत्रने विषे । वा० अवतरीने । सि० सिझशे ॥ ९० ॥

मूळपाठः—॥ ९० ॥ "आणन्दे णं, भन्ते, देवे ताओ [1]देवलोगाओ आउक्खएणं[2] अणन्तरं [3]चयं चइत्ता, कहिं [4]गच्छिहिइ, कहिं [5]उववज्जिहिइ ?" । "गोयमा, महाविदेहे वासे [6]सिज्झिहिइ" ॥ ९० ॥

१. C (सी.) देवलोयाओ: ॥ F (डी. इ.) लोगाओ. २. A B, C (ए. बी. सी. मां नथी.) Omit * वधारो "भवक्खएण ठिइक्खएण" आचारांग २, १५, २. ने भगवती पानुं ३०३. ३. E (इ.) चइ ४ A. (ए.) गच्छति C. D. (सी. डी.) गच्छहिति. E. (इ) गच्छहिति. ५. A. B. (ए. बी) उववज्जहिति. C. (सी.) उववन्नई. E (इ) उववज्जिहिति ६. C (सी.) सिज्झहिति. E. (इ.) सिज्झिहिति

भावार्थः—॥९०॥ ते वारे गौतमस्वामि श्रमण भगवंत महावीर देवने पूछता हवा के, हे भगवत! आणंद देवता देवलोकथी आयुष्य क्षय करी देवनो भव पूर्ण करी, वैक्रेय शरीरनी स्थिति पूर्ण करी क्यां जशे। क्यां उपजशे ? ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव गौतमने कहेता हवा के हे गौतम ! ते आणंद महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्यपणे उपजी। दशांगो सुख भोगवी, दिक्षा धारण करी, कर्म क्षय करी सीझशे, बुझशे (तत्त्वज्ञान समजशे), आठ कर्मथी मुकाशे, कर्मरुप दावानळ ओलवीने शीतळीभूत थशे, सर्व दुःखनो अंत करशे. ॥ ९० ॥ ए प्रमाणे आणंद श्रावकनो अधिकार संपूर्ण जाणवो. ॥

अर्थः—॥ १ ॥ नि० छेवटनु वाक्य। स० सातमा। अ० अंग। उ० उपासक। द० दशाङ्गनो। प० प्रथम। अ० अध्ययन। स० समास ॥ १ ॥

मूळपाठः—॥ १ ॥ निक्खेवो ॥ सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पढमं अज्झयणं समत्तं ॥ १ ॥

भावार्थः—॥ १ ॥ हवे सुधर्मा स्वामि पोताना जंबू नामना शिष्यने कहेता हवा हे जंबू। एम निश्चे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव यावत मोक्ष पहोंच्या तेमणे सातमा उपासक दशांग सूत्रना पहेला अध्ययननो ए अर्थप-रुप्यो. जे प्रमाणे श्रमण भगवंत श्री महावीर देवे कहेल छे, तेज प्रमाणे हुं तमने कहुं छुं. इति सातमा अंग उपासक दसानुं पेहेलुं अध्ययन संपूर्ण ॥ १ ॥

बीयं अज्झयणं.

बीजुं अध्ययन.

अर्थः—॥ ०१ ॥ ज० जे वारे । णं० वळी । भं० हे भगवंत (पूज्य) । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । जा० यावत । मं० मोक्ष पहोंच्यां ते भगवंते । स० सातमा । अं० अंग । उ० उपासक । द० दशांगना । प० पहेला । अ० अध्ययनना । अ० ए । अ० अर्थ । प० परुप्या । दो० बीजा । णं० वळी । भं० हे पूज्य । अ० अध्ययनना । के० कोण । अ० अर्थ । प० परुप्या ॥ ०१ ॥

मूळपाठः—॥ ए१ ॥ जइ णं, भन्ते, समणेणं [1]भगवया महावीरेणं जाव[*] सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं [2]पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स [3]णं. भन्ते, अज्झयणस्स के [4]अट्ठे पण्णत्ते ॥ ए१ ॥

१. So F but A. B. D. E. Omit. ('एफ' मां छे, पण ए. बी. डी इ. मां नथी.) * उववाइ सूत्र. पाठ १६; ज्ञाता सूत्र पाठ ८. २. F. (एफ.) पढमज्झयणस्स, ३. A. B. (ए. बी. मां नथी.) Omit, णं भ० अज्झ०. F. ('एफ' मां नथी) Omit णं भ०. ४. F. (एफ.) केवट्ठे.

भावार्थः—॥ ९१ ॥ सुधर्मा स्वामीने जंबू स्वामि पूछता हवा के हे पुज्य ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देव यावत मोक्ष पहोंच्या तेमणे सातमा उपासक दशांगना पहेला अध्ययननो पूर्वे तमे मने कह्यो ते मुजब अर्थ परुप्यो तो बीजा अध्ययननो शुं अर्थ कहेल छे. ॥ ९१ ॥

अर्थः—॥ ९२ ॥ ए० एम । ख० निश्चे । ज० हे जंबू ! । ते० ते । का० काल । ते० ते । स० समयने विषे । चं० चंपा । ना० नामे । न० नगरी । हो० हती । पु० पुर्णभद्र जक्षनुं । चे० चेत्य । जि० जितशत्रु । रा० राजा । ते नगरने विषे । का० कामदेव । गा० गाथापति । तेहने । भ० भद्रा नामा । भा० भार्या हती । छ० छ । हि० सुवर्णनी । को० क्रोड । नि० भूमि । प० गत डाटी छे । ते निधान । छ० छ । व० व्याजे । प० मुकेल छे । छ० छ क्रोड । प० व्यापार तथा घरवखरा (थाळी कचोळादिक) मां । प० नांखेल छे । छ० छ । व० वर्ग गोकुळ । द० दस । गो० गायो । सा० सहस्र गायो एटले दस हजार गायोनो । व० एक वर्ग—एक गोकुल । स० भगवंत । समोसर्या (पधार्या) । ज० जेम । आ० आणंद वांदवा गयो । त० तेम । नि० निकळ्यो । त० तेम । कामदेव पण । सा० श्रावक । ध० धर्म । प० पडो वर्जो । सा० सर्व । चे० निश्चे । व० वक्तव्यता—एम आगल्या बोल सर्व आणंदनी पेरे जाणवा । जा० यावत । जे० जेष्ट (वडा) । पु० पुत्रने (कामदेवे वडा पुत्रने) । मि० मित्र । ना० ज्ञातने । आ० पुछीने कुटुंबने थाप्यो । जे० जिहा । पो० पोषधशाळा । ते० तिहां । उ० आवे । उ० आवीने । ज० जेम । आ० आणंद (जेम आणंदे फरस्यो तेमज कामदेव पण) । जा० यावत । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । अं० समीपे । ध० धर्म । प० पामीने । उ० अंगिकार करीने । वि० विचरे छे ॥९२॥

मूलपाठ—॥ ९२ ॥ एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। जियसत्तू राया। कामदेवे [1]गाहावई। भद्दा भारिया। छ हिरण्णकोडीओ [2]निहाणपउत्ताओ, [3]छ [4]वड्ढिपउत्ताओ, [5]छ पवित्थरपउत्ताओ[4], छ वया[5] दसगोसाहस्सिएणं[6] वएणं। [7]समोसरणं। जहा आणन्दो तहा निग्गओ। तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ। सा[8] चेव वत्तव्वया जाव[8]। [9]जेट्ठपुत्तं [10]मित्तनाइं आपुच्छित्ता, जेणेव पोसहसाला, तेणेव उवागच्छइ, [11]उवागच्छित्ता जहा आणन्दो[12] जाव[+] समणस्स भगवओ महावीरस्स[13] अन्तियं[14] धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ ९२ ॥

१, F. adds ('एफ' मां वधारे छे) परिवसइ २ D. E. (डी. इ.) °पत्ताओ ३. A. adds ('ए' मां वधारे छे) हिरण्ण कोडीओ. ४. D E. (डी. इ. मां नथी.) Omit पउत्ताओ. ५ A. B. D E. (ए. बी डी. इ.) वया. ६. B E. (बी. इ.) साहस्सीएण, D. (डी.) ° साहस्सीण एण. ७. F. has, ('एफ' मां छे.) सामी समोसरिए ८. A F. (ए एफ) सच्चेव वत्तव्वया, B. (बी) सच्चेव वत्तया. ‹ पहेला अध्ययनना १० ने ६८ मा पाठमांथी बाकीनु उमेरो. ९. D. E. add (डी. इ. मां वधारे छे) कुडुंबे य ठवेत्ता. १०. A. B. (ए. बी. मां नथी) Omit नाइ; D. E. F. (डी. इ. एफ) ° नाइ. ११. A. B. (ए. बी. मां नथी.) Omit. त्ता. १२. A. B. D. E. F. (ए. बी डी. इ. एफ) आणन्दे. + ६९ मा पाठमांथी बाकीनु उमेरो. १३. A. B. (ए. बी. मां नथी.) Omit. १४. D E (डी. इ.) अन्तिए.

भावार्थः—॥ ९२ ॥ ते वारे सुधर्मा-स्वामी कहता हवा, एम निश्चे हे जंबू ! ते काळ ते समयने विषे चंपा नामे नगरी हती. पूर्णभद्र नामे यक्षनुं चैत्य तथा वन हतुं. जीतशत्रु नामे राजा हतो, कामदेव नामे गाथा पति वसतो हतो, तेनी भद्रा नामे स्त्री हती, छ क्रोड सोनैया धरतीमांहि दाटेला, छ क्रोड सोनैया वृद्धि थवा माटे व्यापारमां, छ क्रोडी सोनैयानो धरवखरो, दशहजार गायो होय ज्यारे एक गोकुळ थाय, एवा छ गोकुळ हता. ते वारे श्रमण भगवंत महावीर देव ग्रामानु गाम विचरता ते चंपानगरीना पुर्णभद्र वनमां आवी समोसर्या. जेम आणंद श्रावक वांदवा माटे गया हता तेम कामदेव पण वांदवा निकळ्या अने आणंदनी पेरेज श्रावकनो धर्म अंगिकार करे, तेमज सर्व व्रत धारण करे, तेमज मोटा पुत्रने तथा मित्र, ज्ञाति पुरुषने पुछीने ज्यां पोषधशाळा, त्यां आवे, आवीने जेम आणंदे कर्युं तेम श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनो परुपेलो धर्म अंगिकार करीने ते पोषो करीने विचरे ॥९२॥

अर्थः—॥ ९३ ॥ त० ते वार । णं० पछी । त० ते । का० कामदेव । स० श्रमण । उ० उपासकनी पासे । पु० पहेली । र० रात्रिने । अ० अतिक्रमे । का० मध्य रात्रि । स० समयने विषे । ए० एक । दे० देवता । मा० मायावी । मि० मिथ्या । दि० द्रष्टि । अं० कामदेवनी समीपे । पा० आवी । प्रगट थयो ॥ ९३ ॥

मूळपाठः—॥ ए३ ॥ तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे[1] देवे मायी[2] मिच्छदिट्ठी[3] अन्तियं पाउब्भूए ॥ ए३ ॥

१. A. (ए) एक्के; B. (बी.) एके २ B. (बी.) माया, D. E. (डी. इ.) माई; F. (एफ.) माइ.
३. A. B. D. F. (ए. बी. डी. एफ.) मिच्छादिट्ठी

भावार्थः—॥ ९३ ॥ ते वार मध्यरात्रिना समये कामदेव श्रावकनी पासे कपटी, महा मिथ्यात्वद्रष्टी एक देवता प्रगट थयो ॥ ९३ ॥

अर्थः—॥ ९४ ॥ तं० ते वार । णं० पछी । से० ते । दे० देवता । ए० एक । म० मोटो । पि० पिशाच । रू० रुप । वि० विकुर्वीने । त० ते । णं० वळी । दे० देवता । पि० पिशाच । रु० रुपनुं । इ० ए आगळ कहेशे । ए० एहवा । रु० रुप । व० वर्णव । प० कह्यो । ते देवता पिशाचनो । सी० सीस । मस्तक । से० ते । गो० गायने । किं० गोतु एटले खाण मेलवानो सुंडलो, ते मुंडलो उधो पाड्यो छे तेहवा । सं० संस्याननुं । सं० माथुं मोडु छे । सा० डांगरना । भ० डुंडा । स० सरिखा । से० ते । पिशाचना । के० केश । माथाना वाळ कहीए । क० ते केश ख़ुखरा छे । ते० तेणे करी । दि० तेजे करी शोभायमान छे । म० मोटा गोळानुं । उ० हेठला पासानुं । क० ठीकरुं । सं० ते सरखा । आकार । सं० जेवा । नि० कपाळ छे । मु० खोसकोली । स० तेहना । पुं० पुछडा । व० सरखी । त० तेनी । भु० भमर छे । फु० ते डोलायमान । फु० हालती छे । वि० विकार सहित देखाती थकी । वी० भयंयर विहामणी । द० देखाय छे । सी० मस्तक तथा कपाळथी । घ० घडाना जेवा गोळ । नि० तेमांथी वहार । ग० नीकळता । अ० आंखना डोळा । वि० गड छे शोभा जेनी । वी० विहामणां भयंकर । दं० देखाय छे । क० कान केवा छे । ज० जेवु । सु० सुपडानो आकार तेवा कान छे मोटा । चे० वळी । वि० शोभा रहित । वी० विहामणां । दं० देखाय छे । उ० बोकडा । पु० नाकना । स० सरखुं । से० तेनुं । ना० नाक । झु० चीपडा अति मोटा । ज० बे जोडी । चु० चुलाना । सं० आकार । सं० जेवा । दो० बे । वि० वळी ।

त० तेना । ना० नाकना । पु० फोरणां । घो० घोडानां । पुं० पुंछडा सरखी । व० वळी । त० ते पिशाचनी । मं० मूछ (डाढी) । क० अतिभूरा । क० लांबा पीळा । त्रि० विकार सहित । बो० भयंयर । दं० देखाय छे । उ० होठ । उ० उंटना सरखा । चे० वळी । ल० लांबा । (पिशाचना होठ छे) । फा० लोढानी कोश । स० सरिखा । से० ते पिशाचना । द० दांत छे । जि० जीभ–केवी छे । ज० जेहवो । सु० सुपडु चामडे । क० जडयुं कठण एहवी जीभ । चे० निश्चे । वि० शोभा रहित । वी० भयंयर । विहामणी । दं० देखाय छे । ह० हळनो उपलो भाग । वक्र दांता वाळो एहवी । कु० कोदाळी । सं० सरखी । से० ते पिशाचनी । ह० (जडवा) हडपची छे । ग० गाल । क० कलोडा । च० सरिखा उंडा । त० ते । पिशाचनी । ख० उंडा । फु० मंगुरवर्ण । क० कठण । फ० खराखरा एहवा । म० गाल छे । मु० मादलने । आ० आकार । उ० सरखा । से० ते पिशाचना । ख० स्कंध । (खंभा) छे । पु० महानगरनी पोळना । क० कमाड होय । उ० ते सरखुं पोहोळुं । से० ते पिशाचनुं । व० हैयुं (छाती) छे । को० लोहनी कोठीना । सं० आकार । सं० जेवी । दो० बे । वि० वळी । त० ते पिशाचनी । बा० वाहु । नि० निशातरो । पा० पथ्थर (पीसवाना पथर) । सं० सरखी । सं० देखाती । दो० बे । त्रि० वळी । त० तेनी । अ० अग्र । ह० हाथ एटले हथेलीओ । नि० पथरने । लो० लोढा । सं० जेहवी । सं० देखाती । एटले जाडी । ह० हाथनी । अं० आंगळीओ । सि० छीपना । पु० पड जेवा पहोळा । सं० देखाता । से० तेना । न० नख । एहा० नावी हजामनी । प० नरहणी वगेरे । व० वळी । उ० जेमांहि रहे ते भाजन एटले कोथळी सरखा । ल० लांबा । दो० बे । त्रि० वळी । त० तेना । य० स्तन (डींटडीओ) छे । पो० तेनुं पेट ।

अ० लोहना मोटा । को० कोटना बुरज (कोठा) जेवुं । व्व० वळी । व० वाटलुं (पोहोळुं) उदर जाणवुं ॥ पा० पाणी पीवानी । क० परनाळ । स० सरखी । से० तेनी । ना० नाभि (डुंटी) । सि० सिकाना । सं० आकार । सं० जेवा, लडवडता । से० तेना । ने० गुह्यस्थान (अथवा कुला) छे । कि० गोळ । पु० घडाना । सं० आकार । सं० जेवा । दो० बे । वि० वळी । त० तेना । व० वृषण । ज० बे । को० कोठीने । सं० संस्थाने । सं० आकारे । दो० बे । वि० वळी । त० तेना । ऊ० साथळ । अ० अंजन । गु० गुछ वनस्पति जेवा । व० वळी त० तेना । जा० ढींचण । कु० वांका । कु० अतिशेवांका । वि० भुंडा देखाता । वी० विहामणा । दं० देखाता । जं० जांघो । क० कठण । क० आकरी । लो० रोमराइए करी । उ० भरी छे । अ० एरणना । सं० आकार । सं० सरखा । दो० बे । वि० वळी । त० तेना । पा० पग । अ० एरण । लो० हथोडो । सं० तेना आकार । सं० जेवी । पा० पगनी । अ० आंगळीओ । सि० छीपना । पु० पड । सं० सरखा आकारे । से० तेना । न० नख ॥ ९४ ॥

मूळपाठः—॥ ९४ ॥ तए णं से देवे एगं [1]महं पिसायरूवं विउव्वइ ॥ तस्स णं [2]देवस्स पिसायरूवस्स इमे[3] एयारूवे[4] वण्णावासे पण्णत्ते । सीसं से [5]गोकिलञ्जसंठाणसंठियं, सालिभसेल्लसरिसा से केसा कविलतेएणं[6] दिप्पमाणा, महल्लउट्टियाकभल्लसंठाणसंठियं[7]

१. F. (एफ.) महंतं. २. A. (ए.) दिव्वस्स. ३. F. (एफ.) एमे. ४. F. (एफ.) इयारूवे ५. F (एफ.) गोकिलंज ६. A. D. E. (ए. डी इ.) कविला तेएण. F. (एफ.) कविला तेएण. ७ A. (ए) °उट्टिय° F. (एफ.) °केभल्ल°

[1]निकालं, मुगुंसपुंछं[2] व[3] तस्स [4]भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ विगयबीभच्छदंसणाओ, सीसघडिविणिग्गयाइं[6] अच्छीणि विगयबीभच्छदंसणाइं, कणा जह सुप्पकत्तरं[7] चेव विगयबीभच्छदंसणिज्जा, [8]उरब्भपुडसन्निभा से नासा, [9]झुसिराजमलचुल्लीसंठाणसंठिया दो[10] वि तस्स नासापुडया, घोडयपुंछं[11] व[12] तस्स मंसूइं[13] कविलकविलाइं[14] विगयबीभच्छदंसणाइं, उट्टा उट्टस्स चेव लम्बा. फालसरिसा से [15]दन्ता. जिब्भा जह[16] सुप्पकत्तरं चेव विगयबीभच्छदंसणिज्जा, हलकुद्दालसंठिया[17] से हणुया, गल्लकडिल्लं च[18]

१. B. (बी) निडाणं. २. A. (ए.) मुगुस °, E. (इ.) मुगस °, F. (एफ.) मुगुंस °, E (इ) मगुंस ° मुंगुंसा. F. (एफ) मुंगुंस ° मुगुस'. B. (बी.) पुंछं, A. F (ए. एफ.) पुछं, D E. (डी इ) पुच्छं ३ B (बी) च्च, F. (एफ.) च, ४. A. (ए) भुमहाओ; B D. (बी डी.) भुमकाओ, E (इ.) भुमुकाओ; F (एफ) भुमगाओ ५ A. B. (ए. बी.) बीभत्स ° ६. A. (ए.) णिग्गयाइ (नथी.) Omit वि, F. (एफ) ° विणिग्गयाणि. ७. D. E. (डी. इ) ° कत्तरे. ८ B F. (बी एफ) उरब्भडपुड °, A. B (ए. बी) ° सणिणभा. ९. F (एफ) झूसिरा °, A. (ए.) ° चुल्ला ° १०. A (ए) दोवे ११. A. B. F. (ए बी एफ) पुछं, D E (डी इ.) पुच्छ १२ A. D. F (ए. डी एफ) च १३ F (एफ) ममंसुइ १४ D. E (डी इ) Omit the first कविल (पहेलु कविल नथी.) १५. A. (ए.) दंदा, F (एफ) दन्ता. १६. F. (एफ) जहा. १७ B (बी) ° कूडा, D. (डी.) ° कुद्दा ° E. (इ.) कुद्दाल °; F. (एफ) ° कुडा °; A. F. (ए. एफ) ° कुद्दा °, B. (बी.) संठिता D. E. (डी इ.) ° संठिय. १८. D E. (डी. इ) व

यमान देखाता, बिहामणा एहेवा तेनी भमरना केश हतां. माणसना माथा जेवडी चैकय करेली, बाहार नीकळेली, देखतां बिहामणी एवी तेनी आंख हती, सुपडाना जेवा, देखतां भयंकर एवा तेना कान हता, गाडरानी पेरे बेठेली, चीभडी, मोटा पर्पनी बील (राफडो अथवा दर) सरीखी उंडी, एवी तेनी नासीका हती. अनि पहोळा बे मोटा चुला जोडाजोड होय तेना जेवा नाकना पड (फोरणां–फागां) हता. घोडाना पुंछना सरखा मुछना केश हतां, ते केश अति भुरा अने देखवा भयंकर हता. उंटना सरिखा लांबा, लवडता (लटकता) तेना होट हता, लोढांनी कोश जेवा तथा हैताळीना जाडा दांता जेवा तेना दांत हता, नांवडे मडेलुं कठण सुपडुं होय तेना जेवी अति बिहामणी तेनी जीभ हती, हळना उपर मोटना आकार जेवो वांको लाकडानो भाग (ज्यां हाथनी मुठीवाळी हळ झलाय छे तेने हळनो उपली नकली पण कहे छे ते) होय छे तेना जेवी वांकी जाडी अने हडपची तेनी हती, कलाडा जेवा तथा खाडा जेवा उंडा तेना गाल हता, ते गाल लांबा अने तराडीया (चीरा) पडेला अने फाटेला फुटेला कलाडाना कठण फरस जेवा हता. म्होटा मादळने आकारे तेना बे खांध (स्कंभा) हता, म्होटा नगरना दरवाजाना जेवा कमाड होय तेवुं तेनुं हृदय (हैयुं) हतुं, लोहारनी शाळामां लोढुं धमवा माटीनी कोठी करे छे तेनां जेवा तथा अनाज भरवानी माटीनो मोटी कोठी होय छे तेना जेवी जाडी तेनी भुजा (हाथ) हती, अडदनी दाळ वाटवानी जेवी पोहोळी अने जाडी शीला होय तेना जेवा तेना बे हाथना पोंचा (हथेली) हतां, जेनाथी दाळ वटाय छे ते लांबाने जाडा निसाथा जेवी तेना बे हाथनी आंगळीयो हती, छीपना एक पड सरीखा तेना हाथना नख हता, हजामनी लोढा भरवानी कोथळीना जेवा छाती उपर तेना बे स्तन (डींटडीयुं)

हता, लोढाना कोठा जेवु गोळ अने मांहि कलाडानी पेरे उडुं एवुं तेनुं पेट हतुं, पाणी पीवाना वासण जेवी तथा पाणोनी कुंडी जेवी तेनी डुटी हती, मोटा सीका सरिखा वांका तेना बे पुंद (कूला) हता, कचराथी भरेली जाडी ने ढीली जेवी गुण होय तेना जेवा तथा मोटा सांढना वृषण होय तेनाथी पण मोटा तेना बे वृषण (गुप्त जग्याए कोथळीमां बे गोळीयुं होय छे ते) हता, अनाज भरवानी बे कोठी जोडाजोड होय तेना जेवी तेनी बे जंघा (साथळ) हती, अर्जुन नामे तृण (घास) नी जात थाय छे तेनी गांठा सरीखा अति वांका, कठण मांस रहित, देखतां बिहामणा एवा तेना बे ढींचण हता, जंघाने विषे कठण अने घणी ठांसेली रोमराइ (रुंवाडाना केश) हती, सोनीने घेर लोढानी अहीरण होय तेवा तथा दाळ वाटवानी पथ्थरनी सीलम जेवी होय तेना जेवा तेना बे पग हता, लोढानो हथोडो होय तेवी तथा दाळ वाटवानो लांबो ने जाडो जेवो निसात्रो होय ते सरिखी पगनी आंगळी हती तथा छीपना पड जेवा पगना नख हता. ॥ ९४ ॥

अर्थः—॥ ९५ ॥ ल० गाडाने पाछले विभागे लाकडुं होय गाडुं उलाळना रक्षणने काजे ते सरखां लडकता । म० जाडा । जा० ढींचण पिशाचना । वि० नीकळती । भा० भागी वांकी । भु० फरफरती । भु० भमर जेनी । अ० पसार्युं मोकळुं । व० मुख । वि० विवर (मुख) थी । नि० बहार काढी छे । जी० जीभ जेणे । स० काकीडानी । क० कीधी । मा० माळा । उं० उंदरनी । मा० माळा । प० पहेरी छे । जेणे । सु० सुष्टु एटले भलो रची छे । चिं० चिन्ह निशानी करी छे जेणे । न० नकल (नोळीया) नी माळाना । क० कीधा छे । क० काने । पू० कुंडल आभरण विशेष । स० सर्पनी । क० कीधी माळा । वे० गळे जनोइ करी छे । अ० हाथना ताळोटा

पाडतो । अ० अनेक भयकारी वचन बोलतो गाजतो । भी० भयकारी रौद्र । मु० मुकतो । अ० अट्ट (गाढ) । हा० हास्य करतो हतो । वळी ते पिशाच कहेवो छे । ना० नानाविध अनेक प्रकारे । प० पांच । व० वर्णे । लो० एहवा जे रोम तेणे करी । उ० उपचित एटले सहित छे । ए० एक । म० मोटुं । नी० लीलुं-काळुं । उ० कमळ । ग० भेंसना शींगडा जेवी गोळ । गु० गळी सरखी । अ० अलसी । कु० फूलनी । प्प० प्रभा सरखी । अ० खड्ग । खु० तीक्षण छरपला सरखी । धा० जेहनी धार छे एहवुं खड्ग । ग० हाथमां लइने । जे० ज्यां । पो० पोषधशाळा । जे० ज्यां । का० काम-देव । स० श्रावक । ते० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । आ० कषाय सहित । र० रातो तातो । रु० उठयो । कु० कोप्यो । च० क्रोधातुर थयो । मि० भ्रम । मि० भ्रमायमान थको । का० कामदेव । स० श्रावकने । ए० एम . व० कहे । ह० हे । भो० वळी । का० काम-देव । स० श्रावक । अ० मरण नहि वांछीए तेनो । प० वांछण हार । दु० दुष्टपणुं । प० जेमांहि । ल० लक्षण छे ते सहित । ही० ओछा । पु० पुन्यनो धणी । चा० चौदसें जाय (जन्मेल) । हि० लक्ष्मी । सि० लाज । धि० बुद्धि । कि० जस कीर्ति । प० रहित । ध० धर्मनो । का० कामी । पु० पुन्यनो । का० कामी । स० स्वर्गनो । का० कामी । मो० मोक्षनो । का० कामी । ध० धर्मना । क० अर्थनो वांछक । पु० पुन्यना अर्थनो । क० कामी । स० स्वर्गना अर्थनो । क० कामी । मो० मोक्षना अर्थनो । क० कामी । ध० धर्मनो । पि० तृषावंत । पु० पुन्यनो । पि० तृषावंत । स० स्वर्गनो । पि० तृषावंत । मो० मोक्षनो । पि० तृषावंत । नो० नहि । खु० निश्चे । क० कल्पे । त० तने । दे० हे देवाणुप्रिय । जं० जे । सी० शीयळ । व्र० व्रत । वे० वेरमण व्रत । प० पचखाणे । पो० पोसह । उ० उपवास

थकी । चा० चालवुं । वा० वली । खो० खोभ ना पामवुं । वा० वली । खं० खंडन करवुं । वा० वली । भं० भांगवुं । वा० वली । उ० अलगा करवु । वा० वली । प० नांखी देवुं । वा० वली (न कल्पे) । तं० तो । ज० जो कदाचित । णं० वली । तु० तमे । अ० आज । सी० शीगलादिक । जा० यावत । पो० पोसह । उ० उपवास । न० नहि । छ० छांडो तो । न० न । भं० भांगे तो । तो० तुजने । ते० ते । अ० हुं । अ० आज । इ० ए । नी० नील । उ० उत्पल कमल । जा० यावत । अ० तरवारथी । खं० खंडो । खं० खंड । क० करीश । ज० जेम । णं० वली । तु० तने । दे० देवाणु । पि० प्रिय । अ० आर्त्त । दु० दुर्ध्यानमां । व० वसे । अ० अकाले । चे० वली । जी० जीवतर थकी । व० अळगो । उ० करीश ॥ ९५ ॥

मूळपाठः—॥९५॥ तस्हमस्हजाणुए[1] विगयत्तागज्जुगज्जुमए[2] अवदालियवयणविवर-निल्लालियग्गजीहे[3] सरूकयमालियाए उन्दुरमालापरिणद्धसुकयचिंधे[4], नउलकयकण्पूरे[5],

१. A D (ए डी) जणुए G H (जी एच) जणुए; A F. (ए. एफ) जन्नुए २. A. (ए.) °भगुसुमए, B (बी) °भुगुभमीते, F (एफ) °भुग्गुसुमए, E (इ.) °भमुए, G. (जी. मां) नाणाविहगयभग्गमुए. ३. A B. H (ए बी एच) °वदण °D E (डी. इ) °निद्दालियअग्गं. G (जी.) °निल्ललिय ° ४. B E, F. H (बी इ. एफ. एच.) उंदरं. G. (जी) उंदिर°, F (एफ.) °परिणिद्ध° .E G H. (इ. जी. एच) °परिणद्ध ° ५. B. (बी.) णउणकय° D. E. (डी. इ) णउण° omit (नथी.) कय F (एफ) °कण्हपूरे.

सप्पकयवेगद्दे,[1] अप्फालन्ते,[2] अभिगज्जन्ते,[3] नीममुक्कट्टहासे,[4] नाणाविहपञ्चवर्णेहिं लोमेहिं उवचिए एगं महं नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं[5] असिं खुरधारं गहाय, जेणेव पोसहसाला, जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, २त्ता [6]आसुरत्ते [7]रुट्ठे कुविए चण्डिक्किए[8] मिसिमिसीयमाणे,[9] कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी। "हं भो कामदेवा समणोवासया, अप्पत्थियपत्थिया,[10] दुरन्तपन्तलक्खणा,[11] हीणपुण्णचाउद्द-

---

१ A. B. F (ए बी. एफ.) ०निमच्छे G (जी.) वीभच्छे. २. A. (ए) आफाडेंते B D, F H (बी डी एफ एच) आफालंते. ३ A B (ए बी) अभिगज्जंति G. (जी. मां नथी) Omit. ४ B E (बी. इ) ०मुकट्टहासे D G (डी जी) मुकअट्टहासे. ५ D, E (डी. इ) नीलोप्पल०. ६. F G. (एफ. जी) आसुरत्ते ७. A B H. (ए बी एच मां नथी.) Omit from रुट्ठे up to मिसि० (सुधी) F. (एफ) आसुरत्ते मिसिमिसे-तिब्वेचंडे कोविए G. Substitutes the Numoral ४ (जी. मां "४" छे.) ८. D (डी.) चंडिकीए. E. (इ.) चंडिकीए; F. (एफ.) चंडे (भगवती पानु २२४). ९. E. (इ.) मिसिमिसियमाणे; F. (एफ.) मिसिमिसे (जुओ भगवती पानु. २२४). A. F. (ए. एफ.) मिसिमिसीमणे १०. A B. H. (ए. बी. एच.) ०पत्थया ११. A. H. (ए. एच. मां नीचे मुजब टुंकुं छे) abbreviate the following thus दुरंत ५ जाव परिवज्जिया, where the Numeral stands for पंतलक्खणा हीणपुण्णचाउद्दसिया, and जाव for सिरिहिरिधिइकित्ति. B. (बी.) has the same, only omitting the numeral ५.

सिया,[1] हिरिसिरिधिइकित्तिपरिवज्जिया,[2] धम्मकामया पुण्णकामया सग्गकामया मोक्खकामया धम्मकङ्खिया पुण्णकङ्खिया सग्गकङ्खिया मोक्खकङ्खिया धम्मपिवासिया पुण्णपिवासिया सग्गपिवासिया मोक्खपिवासिया, तो खलु कप्पइ तव, देवाणुप्पिया, [3]जं सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं[4] [5]चालित्तए वा खोभित्तए[6] वा खण्डित्तए वा भञ्जित्तए वा उज्झित्तए[7] वा [8]परिच्चइत्तए वा, तं [9]जइ णं तुमं अज्ज [10]सीलाइं जाव* पोसहोववासाइं[11] न [12]छड्डेसि न [13]भञ्जेसि, तो [14]ते अहं अज्ज इमेणं [15]नीलुप्पल जाव*

---

१. E. (इ.) ° चाउदसिया; F. (एफ.) चउदसजाया, A. B. (ए. बी. मां नथी.) Omit. २ E (इ.) सिरिहरिधिकित्ति ४ जाव पडिवज्जिया, F. हरिसिरिपरिवज्जिया. A. B. F. (ए बी. एफ.) परिवज्जिया. ३. D E (डी. इ मां नथी.) Omit ४. A (ए) पोसहे ववासाइं. ५ D. E (डी. इ) चालंतए. ६. D. (डी.) खोभंतए ७. A. B. (ए. बी.) उज्झत्तए. F. (एफ.) उज्झियत्तए. ८. A. (ए.) परिच्चयित्तए. B. (बी.) परिच्चत्तए. E F. (इ. एफ) परिच्चइत्तए. ९ F. (एफ.) जया. १०. D. E. (डी इ.) सीलव्वयाइं. F. (एफ.) सीलाइं वयाइं वेरमणाइं. * पाछलो भाग तेज पेरीग्राफनो जुओ ११. A. (ए.) पोसहववासाइ. १२ A (ए.) छडेसि, B. (बी.) छड्डेसि. D. (डी.) छंडेसि; E. (इ.) छंडसि, F. (एफ) छडसि १३. A. (ए.) भजेसि; B. (बी) भुंजेसि १४. B. F. (बी. एफ.) ततो, D. E (डी. इ.) तो. १५ D. E (डी. इ.) नीलुप्पलेण जाव, F. (एफ मां पुरो.) in full नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमपगासेहिं (sic) खुरधारेहिं असिणा.

असिणा [1]खंडाखंडिं करेमि, जहा णं तुमं, [2]देवाणुप्पिया, अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाउ[3] ववरोविज्जसि[4] " ॥ ९५ ॥

भावार्थः-॥ ९५ ॥ गाडुं उछळी न जाय तेटला माटे गाडानी पाछळ एक लाकडुं चांधवामां आवे छे तेना जेवी मांस रहित कठण तेनी पींडी हती, नीकळती भांगीभांगी जेनी भमुह (भमर) हती, वांकु अने फाडेलुं एवुं जेहनुं मुख हतुं, मुखमांथी जेणे जीभ बहार काढी हती, गळाने विषे काकीडानी अने उंदरनी माळा तेणे पहेरी हती एवुं जेणे भलुं चिन्ह रचेलुं हतुं, कानने विषे नोळीयाना कुंडळादिक आभरण (घरेणां) जेणे कर्यां हतां, सर्पना उत्रासण कर्यां हतां, वींछीनी जनोइ पहेरी हती, भयंकर वाघ चित्रानां चांवडानां वस्त्र जेणे पहेर्यां हतां, लोही अने मांसे करीने जेनुं गात्र लींपेलुं हतुं, ते हाथना तालोटा वगाडतो, धरती संघाते हाथ कुटतो, सन्मुख गाजतो, भयंकर अट्टहास्य (अतीशे हसवुं ते) करतो हतो, जेनुं शरीर विचित्र प्रकारना पांच वर्ण (रंग) वाळा रुंवाडाए करी भरपुर हतुं. निलोत्पल कमळ जेवुं काळुं, पाडाना सींगडा जेवुं, घेटाना सींगडा मांहेली गोळी जेवुं, अळसीना फळना रंग जेवुं, छरपला (हजामना अस्त्रा) नी तिक्षण धारा जेवुं, एक मोटुं निक्षण धारवाळुं खड्ग (तरवार) हाथमां लइने ते पीशाच ज्यां पोषध शाळामां कामदेव श्रावक हतो त्यां आवीने राती आंख करीने, कपाळे त्रण लींटी चढावीने अतिशे कोप्यो थको, रीसे करी घमघमतो, कामदेव श्रावकने नीचे प्रमाणे कहेतो हवो-

१. B D. E. (बी डी. इ.) खंडाखंड २ A B D. E. (ए बी. डी इ. मां नथी) Omit ३. D. E. (डी. इ) जीवियाओ. ४ B (बी) ववरोजसि; D. E (डी. इ.) ववरोविज्जसि. F. (एफ.) ववरोवज्जसि.

अरे ! कामदेव श्रावक । अप्रार्थित वस्तुना प्रार्थनारा ! (मरणने कोइ इच्छतुं नथी तेने इच्छवावाळो), तुच्छ, दुष्ट, भुंडा लक्षणना धणी ! हीणी (जे तीथि पूर्ण न होय अने अंदर बीजी तीथिनो भेळ थएल होय एवी दुटती तीथि ते) काळी चौदश, अमावास्याना जन्मेला ! लज्या, लक्ष्मी, बुद्धि, शोभा, धैर्य, कीर्ति एटलाथी रहित ! श्रुत अने चारित्र धर्मना कामी (अभिलापी), पुन्यना कामी, स्वर्गना कामी, मोक्षना कामी, धर्मने इच्छनारा, स्वर्गने इच्छनारा, मोक्षने इच्छनारा, धर्मना तरस्या, पुन्यना तरस्या, स्वर्गना तरस्या, मोक्षनां तरस्या, ! हे देवने वल्लभकारी ! जे शीयळव्रत अणुव्रतादिकनी विरती, दशविधि पच्चखाण, पौषध, उपवासथी चलायमान (भेद-पाडयो ते) थवुं, क्षोभायमान थवुं, खंडित (थोडो भाग तजी देवो ते) थवुं, भांगवु (सर्वथा तजी देवुं ते), सर्व देश विरतीनुं छोडाववुं, समकिनीय चुकवुं, विशेषे करी छांडवुं ए सर्व बोल तने कलपता (खपता) नथी. (एवी तें धारणा करी छे) पण जो तुं आज शीयळ व्रत, अणुव्रतादिक सर्व व्रत, पच्चखाण, पौषध, उपवास छांडीश नहि, भांगीश नहि तो हुं आजे आ निलोत्पल कमळ जेवी काळी यावत तिक्षण धारवाळी तरवारे करी तारा खंडोखंड (कटका) करीश ! हे देवने वल्लभकारी । तुं आर्त्त रौद्र ध्याने परवश्य दुःखे पीडयो थको, निश्चे अकाळे जीवतरथी रहित थइश. ॥ ९५ ॥

अर्थः—॥ ९६ ॥ त० ते वार । पं० पछी । से० ते । का० कामदेव । स० श्रावक । ते० ते । दे० देव । पि० पिशाच । रु० रुपे । ए० एम । वु० कहे । स० थके । अ० नहि । भी० बीइनो । अ० नहि । त० त्रास पाम्यो । अ० नहि । उ० उद्वेग वाळो । अ० नहि । क्खु० क्षोभनावाळो । अ० नहि । च० चलायमान निश्चय । अ० न ।

सं० भ्रांतीवाळो । तु० संतोषी थको (अणबोल्यो थको) । ध० धर्म । ज्झा० ध्यान । उ० धरतो । वि० विचरे ॥९६॥

मूळपाठः—॥ ९६ ॥ तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं[1] पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे, अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे[2] अक्खुभिए[3] अचलिए असम्भन्ते तुसिणीए[4] धम्मज्झाणोवगए विहरइ[5] ॥ ९६ ॥

भावार्थः—॥ ९६ ॥ ते वारे ते कामदेव श्रावक, ते पिशाच रुप देवताए एम कहे थके तथा ते पिशाचनुं भयंकर रुप जोइने बीलकूल बीनो (डर्यो) नहिं, त्रास पाम्यो नहि, आ शुं करशे एम उद्वेग पाम्यो नहि, क्षोभायमान थयो नहि, चलाय मान थयो नहि; आकुळ-व्याकुळ थयो नहि, भयभ्रांत रहित अणबोल्यो थको त्रिशेषे धर्म ध्यानने विषे विचरतो (प्रवर्तंतो) हवो. ॥ ९६ ॥

अर्थः—॥ ९७ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देव । पि० पिशाच । रु० रुप । का० कामदेव । स० श्रावकने । अ० अण । भी० बीहतो । जा० यावत । ध० धर्म । ज्झा० ध्यान । उ० धरतो । वि० विचरतो । पा० देखे । पा० देखीने । दो० बीजीवार । पि० वळी । त० त्रीजीवार । पि० वळी । का० कामदेवने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । का० कामदेव । स० श्रावक । अ० अप्रार्थ नानो । प० प्रार्थनार । ज० जो । ण०

---

१ D. F (डी इ.) दिव्वेण २. A. B. D E (ए बी. डी इ) अणुव्विग्गे. ३. F. (एफ.) अक्खुभीए; D. E. (डी इ,) अणुक्खुभिए; B. (बी) अभिक्खुते. ४ D. E (डी इ) तुसणीए after which they add चिट्ठइ. (पछी " चिट्ठइ ") शब्द मुक्यो छे ५. A (ए) विहरन्ति.

वळी। तु० तुं। अ० आज। जा० वळी। नहि छोडे तो। व० जीवथी। उ० चुकावीश॥ ९७॥

मूळपाठः—॥९७॥ तए णं से देवे[1] पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं[2] जाव* धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चं[3] पि तच्चंपि कामदेवं एवं वयासी। "हं भो कामदेवा समणोवासया अपत्थियपत्थिया,[4] जइ णं तुमं अज्ज जाव+ ववरोविज्जसि[5]" ॥ ९७ ॥

भावार्थः—॥ ९७ ॥ ते वारे ते पिशाच रुप देवे, काम देव श्रावकने अणबीतो यावत धर्म ध्याननेे विषे विचरतो देखीने बीजीवार, त्रीजीवार, कामदेव श्रावकने एम कहे, अरे काम देव श्रावक! अप्रार्थित वस्तुना प्रार्थनारा! (मरणना इच्छनार) जो तुं आज शीयळादिय व्रत भांगीश नहिं तो अकाळे मरण पामीश ॥ ९७ ॥

अर्थः—॥ ९८ ॥ त० ते वारे। णं० वळी। से० ते। का० कामदेव। स० श्रावक। ते० ते। दे० देवे। दो० बे वार। पि० वळी। त० त्रणवार। पि० वळी। ए० एम। वु० बोल्ये। स० थके। अ० अण। भी० बीन्हो।

१. A. B. D. E (ए बी डी. इ.) दिव्वे. २. After अभीयं, D E. (डी. इ. मां "अभीय" पछी add (छे) अतत्थं. * ९६ मां पाठमांथी बाकीनुं लखो. ३. F. (एफ.) दुच्चं ४ A. (ए.) अपत्थिया, B. (बी.) अपत्थियपत्थया + ९५ मां पाठमांथी बाकीनुं लखो. ५. D. (डी.) ववरोविज्जसि, B. (बी.) ववरोवज्ज; F. (एफ.) थिवरोविज्जसि.

भावार्थः—॥ १०० ॥ ते वारे न खमाय एवी जाज्वल्यमान यावत खमता दोहीली एवी वेदना (पीडा) कामदेव श्रावक सम्यक् प्रकारे सहन करे यावत खमे. ॥ १०० ॥

अर्थः—॥ १०१ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । दे० देव । पि० पिशाच । रु० रुप । का० कामदेव । स० श्रावकने । अ० अणबीहतो । जा० यावत । वि० विचरतो । पा० देखे । पा० देखीने । जा० जे वारे । नो० नहि । मं० धर्मथी चलाववा समर्थ । का० कामदेव । स० श्रावकने । नि० निर्ग्रंथना । पा० प्रवचन थकी । चा० चलावी न शके । वा० वळी । खो० खोभावी न शके । वा० वळी । वि० विपरीत । प० परिणाम करी न शके । वा० वळी । ता० ते वारे । सं० थाक्यो । तं० घणो थाक्यो । प० विशेषे थाक्यो । स० हळवे । स० हळवे । प० पाछो वळे । प० पाछो वळीने । पो० पोषध । सा० साळाथी । प० नीकळे । प० नीकळीने । दि० देवता संबंधी । पि० पिशाच । रु० रुप । वि० छांडे । वि० छांडीने । ए० एक । म० मोटो । दि० दिव्य । ह० हाथीनुं । रु० रुप । वि० विकुर्वे नीपजावे । स० सात । अ० अंग । प० धरतीए अडया छे (एटले ४ पग । सूंढ–५ । पुंछ–६ अने लींग ७ ए सात अग)। स० सरखो मांसे भर्यो । स० रुडा कारीगरे नीपजाव्यो । पु० पुरे मासे । जा० जनम्यो छे । पु० आगळ । उ० उंचो । पि० पुठे । वा० नीचो । अ० बकराना सरखी । कु० कुंख छे । अ० नहि । ल० लांबी । कु० कुंख । प० विशेष लांबी । ल० लांबु छे । उ० पेट । अ० होठ ने । क० सुंढ जेना । अ० विकास पाम्या । म० मालती । म० माळा सरखी । वि० निर्मळ । ध० धोळा । द० दंतोसळ । कं० सोनानी । को० खोळ । प० मांहि घालेल छे । द० दांत जेना । आ० नमावेल ॥ चा० धनुष्यना । सं० संकोच्या छे । अ० अग्र

भाग । सो० सुंढनो जेणे । कु० काचबा सरखा । प० प्रतिपुर्ण । च० पग जेहना । वी० वीस । न० नख सहित । अ० सुंदर । प० प्रमाणोपेत । जु० मोटुं । पु० पुंछडुं ॥ १०१ ॥

मूळपाठः—॥१०१॥ तए णं से देवे[1] पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव* विहरमाणं पासइ, रत्ता [2]जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गन्थाओ पावयणाओ [3]चालित्तए वा खोभित्तए वा [4]विपरिणामित्तए वा, ताहे सन्ते [5]तन्ते [6]परितन्ते सणियं सणियं [7]पच्चोसक्कइ, रत्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ[8], रत्ता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ, रत्ता एगं [9]महंदिव्वं[10] हत्थिरूवं विउव्वइ, सत्तङ्गपइट्ठियं[11] सम्मं[12] संठियं सुजायं, पु-

१. A. B. D. E. (ए बी. डी. इ.) दिव्वे. * ९६ मांथी बाकीनो पाठ लीओ २. A. B D E (ए बी. डी. इ.) जाव. ३ D (डी.) चालेत्तए. ४. A. (ए) विप्परिणामत्तए. B. F. (बी. एफ.) विप्परिणामेत्तए D E (डी इ.) विपरिणामतए ५. E G (इ जी मां नथी) Omit ६. B. (बी) परिसंते H (एच मां नथी.) Omit ७ B (बी.) पच्चोरुहति. ८. A B F. H. (ए. बी. एफ. एच.) °नि. ९. F (एफ.) महंत. १० D. E place दिव्वं एगंमहं (डी. इ. मां उपर मुजब पाठ छे.) ११. E (इ.) °पयिट्ठिय. १२. A. B. (ए. बी.) सम, A (ए.) समसठिया, G (जी. मां नथी) सम्मंसंठियं

रञो उदग्गं पिट्ठओ [1]वाराहं अयाकुच्छिं [2]अलम्बकुच्छिं पलम्बलम्बोदराधरकरं[3] अब्भुग्गयमउलमल्लियाविमलधवलदन्तं[4] कञ्चणकोसीपविट्ठदन्तं [5]आणामियचावललियसंवेल्लियग्गसोण्डं [6]कुम्मपडिपुण्णचलणं वीसइनखं [7]अल्लीणपमाणजुत्तपुच्छं ॥ १०१ ॥

भावार्थः—॥ १०१ ॥ ते वारे ते पिशाच रुप देवे कामदेव श्रावकने अणवीहतो यावत विचरतो थको देखीने जेवारे कामदेव श्रावकने निर्ग्रंथ प्रवचनथी चलावी शक्यो नहि, क्षोभावी शक्यो नहि, देशथी तथा सर्वथी व्रत भंगावी शक्यो नहि ते वारे थाक्यो, विशेषे थाकीने धीमे धीमे पाछो वळीने पौषध शाळा थकी नीकळीने दिव्य पिशाचनुं रुप छांडीने (बीजीवार) एक मोटुं हाथीनुं रुप बनावे. ते हाथीना चार पग–४, गुदा (गुप्त स्थान) ५, सुंढ–६, पूंछडुं–७. ए सात अंग धरती पर लागेलां हतां, जेनो सारो आकार हतो, हाथीना चारसे ने चालीस सारा लक्षणे करी सहित हतो. भलो जातिवंत, पूर्ण दिवसे जन्मेलो, आगळ उंचो, मस्तक उंचु, सुवर (भुंड) नोपेरे पाछळनींचो, बकरीनी पेरे बे कुंख नीकळेली हती, जेनी कुंख लांबी नीकळेली नहोती, लांबी सुंढ अने

१ A D E. G. H. (ए डी. इ जी. एच) वराहं ० २ B (बी) अयाकुच्छिय लवकुच्छियंपल ०, F. (एफ.) अयाकुच्छि अलघहुकुच्छि. H (एच मा नथी.) अलम्बकुच्छिं ३ G. (जी) ० दराकारं. ४. A (ए.) ० कोसए विट्ठदंतं; B. (बी.) ० कोसीए विट्ठदंतं ५. D. E F. (डी इ. एफ) अणामिय ० D E. (डी इ.) ० सवेल्लितंअग्गसोंडं H. (एच) सवेल्लियायग्गसोंड, G (जी) चावचेलियसंवेल्लिय. ० ६. F (एफ.) ० पडिपुडि ०, D. (डी.) ० चलवणं. ७ F. (एफ.) अलीणयपमाण ०: H. (एच.) अल्लीणमाण. ०

होठ हता, जाइ (एक जातनुं सुगंधी नानुं वृक्ष) नी कळी सरिखा निर्मळ, धोळा दांत अने ते दांत सोनानो
खोळीए वींटेला हता, धनुष्य जरा नमेलुं होय तेनी पेरे लीला करतो, जरा संकोचेलो सुंढनी अग्र (टोच) भाग
हतो, कांचवाना जेवा संपूर्ण जेहना पग हता, शोभनीक वीस नख अने प्रमाण सहित शोभतुं जेहनुं पुंछडुं हतुं ॥१०१॥

अर्थः—॥१०२॥ म० मातो । मे० मेहनी । इ० परे । गु० गण । गु० गणाट करे । म० माता । प० वायर । ज० सरखो । वे० वेग । दि० प्रधान एहवुं । ह० हाथीनुं । रु० रुप । वि० विकुर्वि । वि० विकुर्विने । जे० ज्यां । पो० पोषधशाला छे । जे० ज्यां । का० कामदेव । स० श्रावक छे । ते० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । का० कामदेव । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । का० कामदेव । स० श्रावक । त० तेमज पूर्वनी पेरे । भ० कहे । जा० यावत । न० नहि । भ० जो भांगे । तो० तो । ते० तने । अ० आज । अ० हुं । सो० सुंढे करीने । गि० ग्रहिश । गि० ग्रहीने । पो० पोषधशाळामांथी । णी० बहार काढीश । नी० बहार काढीने । उ० उंची । वे० आकाशे । उ० नांखीश । उ० नांखीने । ति० तिक्षण अणीयाळा । दं० दंत । मु० मुसले करी । प० पडतो झालीश । प० पडतो झालीने । अ० पछी हेठो । ध० भोंय । त० तळे । ति० त्रण वार । पा० पगे । लो० रोळीश । ज० जेम । णं० वळी । तु० तुजने । अ० आर्त । दु० दुःख । व० थशे । अ० अकाळे । चे० वळी । जी० जीवतरथी । व० अलगो थइश ॥१०२॥

मूळपाठ ॥ १०२ ॥ मत्तं मेहमिव [1]गुलगुलेन्तं [2]मणपवणजइणवेगं दिव्वं हत्थिरूवं

[1] B. (बी.) गुलगुलंतं, D E H (डी. इ. एच.) गलगुलेंतं, F G (एफ जी) गुलगुलित [2] A. (ए.) °जयणि°, D. E. G. (डी. इ. जी) °जणिय.°

विउव्वइ, रत्ता जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, रत्ता कामदेवं [1]समणोवासयं एवं वयासी । " हं भो कामदेवा [2]समणोवासया, तहेव [3]भणइ जाव* न [4]भञ्जेसि,तो ते [5]अज्ज अहं सोण्डाए [6][7]गिण्हामि, रत्ता पोसहसालाओ नीणेमि, रत्ता उड्ढं वेहासं [8] उव्विहामि, रत्ता तिक्खेहिं दन्तमुसलेहिं पडिच्छामि, रत्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा [9] णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे [10] अकाले चेव जीवियाओ [11]ववरोविज्जसि " ॥ १०२ ॥

भावार्थः—॥ १०२ ॥ पाणीथी भरेला मेघ (वादळा) ना गर्जारवनी पेरे गुलगुलाट शब्द करतो, मन अने पवननी पेरे उतावळी गति हती एवुं श्रेष्ठ हाथीनुं रुप विकोवी (बनावी) ने ज्यां पोषधशाळामां कामदेव श्रावक हतो त्यां आवीने कामदेव श्रावकने आ प्रमाणे कहेतो हवो. अरे कामदेव श्रावक ! जेम प्रथम कह्युं हतुं तेज प्रमाणे

१. A. D. E (ए डी. इ मां नथी) Omit. २. A. B. D. E. H. (ए. बी. डी. इ. एच. मां नथी.) Omit. ३. G. (जी. मां नथी.) Omit. तहेव भणइ. * बाकीना पाठ ९५ जुओ. ४. A. B. G. H. (ए. बी. जी. एच.) भंजसि. ५ F. G (एफ. जी.) अज्जेव. ६. F. (एफ.) सुंडाए ७. D. E. H. (डी इ एच.) गेण्हामि. ८. F. (एफ.) विहासि; H (एच.) विहासं. ९. D. E (डी. इ) अया. १०. F. (एफ.) ० विसट्टे. ११ A. (ए.) ० विजमे, D. E. G. (डी इ. जी) विवरो. ०

कहें के, जो तुं आ व्रत पोपादिक नहि भांगे तो तुजने आ सुंढवंती ग्रहश अनें पोषधशाळाथी लइ जइने उंचो आकाशे उछाळीश अने पडता सांबेला जेवा अति तिक्षण आ दंतुशळे झीलीश, पछी हेठो धरती उपर नाखीने त्रणवार पगतळे रगदोळीश (एटले आडो अवळो खुंदीश) जेथी तुं आर्त्त रौद्र ध्याने करी अकाळे जीवतरथी रहित थइश. ॥ १०२ ॥

अर्थः—॥ १०३ ॥ त० ते । णं० वारे । सें० ते । का० कामदेव । स० श्रावक । ते० ते । दे० देवता । ह० हाथी । रु० रुपे । ए० एम । वु० बोलतो । स० थको । अ० अणवीहतो । जा० यावत । वि० विचरे ॥ १०३ ॥

मूळपाठः—॥ १०३ ॥ [1]तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं [2]देवेणं हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे, अभीए जाव* विहरइ ॥ १०३ ॥

भावार्थः—॥ १०३ ॥ ते वारे ते कामदेव श्रावक ते देवनुं हाथी रुप एवुं वचन सांभळीने निर्भयपणे यावत विचरतो हवो ॥ १०३ ॥

अर्थः—॥ १०४ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवता । ह० हाथी । रु० रुपे । का० कामदेव । स० श्रावकने अ० अणवीहतो । जा० यावत । वि० विचरतो । पा० देखे । पा० देखीने । दो० बीजीवार । पि०

१. D. E. H. (डी. इ. एच.) तं for तए णं. २. A. D. E. G. H. (ए. डी. इ. जी. एच) दिव्वेणं B. (बी.) देव्वेणं. F. (एफ.) दिवेणं. * ९६ पाठ जुओ.

वळी । त० त्रीजी वार । पि० वळी । का० कामदेव । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । का० कामदेव । त० तेमज । जा० यावत । सो० ते । त्रि० वळी । वि० विचरे ॥ १०४ ॥

मूळपाठः—॥ १०५ ॥ तए णं से देवे[1] हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव[1] विहरमाणं पासइ, पासित्ता [2]दोच्चं पि तच्चंपि कामदेवं समणोवासयं[3] एवं वयासी । "हं भो कामदेवा"[4] तहेव[4] जाव[4] सो[1] वि विहरइ ॥ १०५ ॥

भावार्थः—॥ १०५ ॥ ते वारे हाथीरूप देव, कामदेव श्रावकने निर्भयपणे विचरतो देखीने बे-त्रणवार कामदेव श्रावकने एम कहेतो हवो, अरे कामदेव ! यावत पूर्वोक्त प्रमाणे सर्व कहे तोपण कामदेव धर्म ध्यानने विषे विचरे ॥ १०५ ॥

अर्थः—॥ १०५ ॥ त० ते वारे । पं० वळी । से० ते । दे० देवता । ह० हाथी । रू० रूपे । का० कामदेव । स० श्रावकने । अ० अणबीहतो । जा० यावत । वि० विचरतो । पा० जाणी । पा० देखीने । आ० रीसे भराणो ४ । का० कामदेव । स० श्रावकने । सो० सूंढथी । गि० लीए । गि० लइने । उ० उंचे । वे० आकाशे ।

१. A. D. E. F. G H (ए. डी. इ. एफ. जी. एच.) दिज्जे. B. (बी.) देज्जे. + २६ पाठ जुओ. २. F. (एफ.) तुमं. ३. A. B. D. E. (ए बी. डी. इ मां नथी.) Omit. ४ E. (इ.) णो for (बदले) सहेव जाव सो वि. + २७-२८ पाठ जुओ. ५ D. (डी. मां नथी.) Omit. सोवि.

उ० उलाळे । उ० उलाळीने । ति० तिक्षण अणीयाळे। दं० दंतुपळे । ध० धरे । ध० धरीने । अ० नीचे । ध० भोय । त० तळे । ति० त्रणवार । पा० पगथी । लो० रगदोळे ॥ १०५ ॥

मूळपाठः—॥१०५॥ [1]तए णं से [2]देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं [3]जाव[+] विहरमाणं पासइ, रत्ता [4]आसुरत्ते ४ [5] [*],कामदेवं समणोवासयं सोएणाए गिण्हेइ,[6] रत्ता उड्ढं [7]वेहासं उव्विहइ, रत्ता तिक्खेहिं [8]दन्तमुसलेहिं पडिच्छइ, रत्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ ॥ १०५ ॥

भावार्थः—॥ १०५ ॥ ते वारे ते हाथीरुप कामदेव श्रावकने अणबीहतो यावत धर्म ध्यानने विषे विचरतो देखीने उतावळो कोप्यो, रीसने वस्ये धम धमायमान थयो, तीव्र आकरो कोपीने कामदेव श्रावकने सूंढे ग्रहीने उंचे आकाशे उछाळे, पछी पडतां सांबेला जेवा तिक्षण दंतुशळे झीलीने हेठो धरती तळे त्रणवार पगे करी रगदोळे ॥१०५॥

अर्थः—॥ १०६ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । का० कामदेव । स० श्रावक । तं० ते । उ० आकरो । जा० यावत । अ० परिसह खमे ॥ १०६ ॥

---

१. D. E (डी. इ.) तं for तएणं २. A B. D. E. F. (ए. बी. डी. इ एफ) दिव्वे. ३ E. (इ. मां नथी.) Omits. + ९६ पाठ जुओ. ४. A. B. (ए बी.) आसुरुत्ते ५. B (बी. मां नथी) Omit. F. (एफ. मां पुरो पाठ) in full मिसिमिसे तिव्वे चंडे कोविए * ९५ पाठ जुओ. ६. F. (एफ.) गिण्हइ. ७ E. F. (इ एफ.) विहासं. ८ A. (ए.) °मुसलेणं

मूळपाठः—॥१०६॥ तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव* अहिया-
सेइ ॥ १०६ ॥

भावार्थः—॥ १०६ ॥ ते वारे ते कामदेव श्रावक ते उजळी (आकरी) वेदना यावत खमे ॥ १०६ ॥

अर्थः—॥ १०७ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवता । ह० हाथी । रु० रुप । का० कामदेव । स० श्रावकने । जा० जेवारे । नो० न । सं० चलाववी शक्यो । जा० यावत । पूर्वनी पेरे । स० हळवे । स० हळवे । प० पाछो नीकळे । प० नीकळीने । पो० पोषधशाळाथी । प० नीकळे । प० नीकळीने । दि० देवता संबंधी । ह० हाथीनुं । रु० रुप । वि० छांडे । वि० छांडीने । ए० एक । म० मोटा । दि० दिव्य । स० सर्प । रु० रुप । वि० विकुर्वे । उ० उग्र । वि० विषवंत । च० रोद्र । वि० विष । घो० आकरु । वि० विष । म० लांबु । का० शरीर । म० मसी । मू० उंदर सरखा । का० काळो । न० नेत्रमांहे । वि० विष । रो० रोष भर्यो । पु० पुर्ण । अ० मसीनो । पु० ढगलो । नि० सरिखो । ए० काळो । र० राती । लो० लोही सरीखी । लो० आंख छे । ज० साथे । जु० बे । चं० चपळ । जी० जीभ छे । ध० धरती रुप स्त्री तेनी । वे० वेणी समान छे । उ० उत्कृष्टि । फु० प्रगट । कु० वांकी । ज० जटा । क० कठण । वि० विकट । फु० पहोळी मोटी । डो० फणा टोप । क० धरतो । द० सर्प ॥ १०७ ॥

* बाकीनो भाग टीकामां छे.

मूळपाठः—॥ १०७ ॥ तए णं से देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं जाहे[1] नो संचाएइ जाव[*] सणियं सणियं पच्चोसक्कइ, रत्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ,[2] रत्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ, रत्ता एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ, उग्गविसं चण्डविसं[3] घोरविसं महाकायं [4]मसीमूसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं [5]अञ्जणपुञ्जनिगरप्पगासं रत्तच्छं[6] लोहियलोयणं [7]जमलजुयलचञ्चलजीहं [8]धरणीयलवेणिभूयं उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्कसवियडफुडाडोवकरणदच्छं[9] ॥ १०७ ॥

भावार्थः—॥ १०७ ॥ ते वारे ते हाथीरुप देव, कामदेव श्रावकने दुःख देतां कामदेव श्रावक बीलकूल चलायमान थयो नहि त्यारे हळवे हळवे पोपधशाळाथी बहार नीकळीने दीव्य हाथीनुं रुप मुकी एक मोटुं सर्पनुं रुप

१. A. B. D. E. (ए बी. डी. इ.) जाव. बाकीनो पाठ १०१ पाठमां छे. २. A. B. F. (ए. बी. एफ.) ° निक्खमइ. ३ A. B. D. E. F. (ए. बी. डी. इ. एफ) दिट्ठीविसं instead of चंडविसं घोरविस (ने बदले) ४ A. B (ए. बी.) कालगयं, F. (एफ.) कालगतं. ५ F. (एफ.) ° निग्गर ° ६. D E (डी. इ.) रत्तत्थ. A. B F. (ए. बी. एफ.) रत्तच्छलो ° ७. D E. (डी. इ.) जमलज्जुयलं चं° ८. D. E. (डी इ.) धरणि ° D. E. (डी इ)° भुअ. ९. D E F (डी. इ. एफ.)° जटिल. ° D. E. (डी. इ.)° विअव ° for, ° वियड °(ने बदले), D (डी.) ° वच्छ, E. (इ.)° दत्थं.

विकोवे (बनावे) ते सर्प उग्र (घणुंज आकरुं) विष सहित दृष्टिवाळो, म्होटी कायावाळो, जेवो काजळ, उंदर अने आंजणनो ढगलो होय तेवा काळा रंगवाळो, तेना शरीरनो प्रकाश हतो, तेनी आंख विषथी अने रीसथी पूर्ण भरेली अने लोहीना जेवी राती हती, बे जीभ माथे रहेली चपळताए लवकारा करती हती, कठोर जटा सहित पृथ्वीरुप जे म्होटी मुंछ अने स्त्रीनी माथानी वेणी समान उत्कृष्टो वांको तिरस्निर्ण (पोळोळो) म्होटो फणाटोप जेणे करेलो हतो ॥ १०७ ॥

अर्थः—॥ १०८ ॥ लो० लुहारना । अ० लोढाना । ध० धमवानी पेरे । ध० धम । ध० धमतो एहवो । घो० शब्द घणा करतो । अ० घणो । ति० तीव्र । न० अति आकरो । रो० रोस सहित । स० सर्प । रु० रुप । वि० विकुर्वे । वि० विकुर्वीने । जे० ज्यां । पो० पोषधशाळा । जे० ज्यां । का० कामदेव । स० श्रावक । ते० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । का० कामदेव । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । का० कामदेव । स० श्रावक । जा० यावत । न० न । भं० भांगे तो । तो० तो । ते० तने । अ० आज । अ० हुं । स० उतावळ-सर । स० सरसराट शब्द करतो । का० कायाए । दु० चढीश । दु० चढीने । प० पाछले । भा० भागे । ति० त्रण फेरा । गी० कोटे । वे० वींटी । वे० वींटीने । ति० तीखी । वि० विष । प० सहित । दा० दाढे करीने । उ० हैयाने विषे । ने० वळी । नि० डंख दइश । ज० जेम । णं० वळी । तु० तु । अ० आर्त ध्यान । दु० रौद्र ध्याने । व० वर्ततो । अ० अकाळे । वे० वळी । जी० जीवतव्यथी । व० मुकीश ॥ १०८ ॥

मूळपाठः—॥ १०७ ॥ लोहागर धम्ममाणधमधमेन्तघोसं[1] अणागलियतिव्व चण्ड-रोसं सप्परूवं [2]विउव्वइ, रत्ता जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, रत्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी। "हं भो कामदेवा समणोवासया,[3] जाव[*] न [4]भञ्जेसि, तो[5] ते अज्जेव अहं सरसरस्स[6] कायं [7]दुरुहामि, रत्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, रत्ता [8]तिक्खाहिं विसपरिगयाहिं दाढाहिं [9]उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं [10]अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव[11] जीवियाओ ववरोविज्जसि" ॥ १०७ ॥

भावार्थः—॥ १०८ ॥ लुहारनी धमणनी पेरे फुंफारा करतो महा दुष्ट प्रचंड क्रोधी के जेहनो रोस नीवारी शकाय नहि एवुं सर्पनुं रुप करीने ज्यां पौषधशाळामां कामदेव श्रावक छे त्यां आवीने कामदेव श्रावकने एम कहेतो

१. A. (ए.) °धमधमित.° B. (बी) °धमिमित° D E. (डी. इ.) °धम्मित° F (एफ.) °धम्मधमित.° २. D. E. (डी इ. मां नथी.) Omit ३. A B D E. (ए बी डी. इ. मां नथी.) Omit. * बाकीनो पाठ ९५ मां जुओ. ४ A B. D. F. (ए बी. डी एफ) भंजसि. ५. D. (डी) ततो, F. (इ.) तओ for तो ते (ने बदले); ६. A. (ए.) सरस्स रस्स, B (बी.) सरस्स सरस्स. ७. B. D (बी. डी.) दुरुहामि E (इ.) दूरूहामि. ८ A B. (ए. बी.) तिक्खाई ९ A B. E (ए. बी. इ.) उरसि. १०. A. B. D. E (ए. बी. डी. इ. मां नथी.) Omit वसट्टे, F. (एफ.) °विसट्टे. ११. A. B. H. (ए. बी. एच. मां नथी) Omit the rest भेच जी °वव °

हवो, अरे कामदेव श्रावक ! यावत जो तुं व्रत नहि भांगे तो आज हुं तारी काया उपर सरसराट (एकदम) चडीश अने पाछळना भागे त्रणवार वींटीने (भरडो लइ) पछी ग्रीवा (डोक) ए वींटीने तिक्षण विषभरी डाढाए करीने तारुं हैयुं डंसीश (करडीश) जेथी तु आर्त्तरौद्र ध्याने करीने अकाळे जीवतरथी रहित थइश ॥ १०८ ॥

अर्थः—॥ १०९ ॥ त० ते वार । णं० वळी । से० ते । का० कामदेव । म० श्रावक । ते० ते । दे० देवताए । वि० विस० सर्पना । रु० रुपे । ए० एम । वु० कहेल । म० छते । अ० बीहनो नहि । जा० यावत पूर्वनी पेरे । वि० विचरे । सो० ते । वि० पण । दो० बे वार । पि० वळी । त० त्रणवार । पि० वळी । भ० कहे । का० हे कामदेव । वि० वळी । जा० यावत । वि० विचरे ॥ १०९ ॥

मूळपाठः—॥ १०९॥ [1]तए णं से कामदेवे [2]समणोवासए तेणं [3]देवेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे, अभीए, जाव* विहरइ ॥ सोवि दोच्चंपि तच्चंपि भणइ, [4]"कामदेवोत्ति" जाव[5] विहरइ ॥ १०९ ॥

१. A. B D. H. (ए. बी. डी. एच) तं for तएण (ने बदले) २. A. B H. (ए. बी. एच. मां नथी.) Omit. ३. A. D. E. F. H. (ए. डी इ. एफ. एच.) दिव्वेणं, B. (बी. मां नथी) Omit * १६ पाठ जुओ ४. A. B. (ए. बी) कामदेवे; F. (एफ.) reads कामदेवा समणोवासया for कामदेवो वि. ५ E. (इ. मां नथी.) Omit. + २७-२८ पाठ जुओ.

भावार्थः—॥ १०९ ॥ ते वारे ते कामदेव श्रावक सर्परुप देवे एम कहेलुं सांभळी निर्भयपणे विचरे ते वारे ते सर्परुप देवे बे वार, त्रण वार एम कह्ये थके कामदेव श्रावक तेमज निर्भयपणे विचरतो हवो ॥ १०९ ॥

अर्थः—॥ ११० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवता । स० सर्प । रु० रुप । का० कामदेव । स० श्रावकने । अ० निर्भय । जा० यावत । पा० देखे । पा० देखीने । आ० कोप्यो थको ४ । का० कामदेव । स० श्रावकने । स० सरसरतो । का० कायाए । दु० चढे । दु० चढीने । प० पाछळ । भा० भागे । ति० त्रणवार । गी० कोटे । वे० वींटयो । वे० वींटीने । ति० तीखी । वि० विष । प० मय । दा० दाढे करीने । उ० हैयाने विषे निश्चे । चे० वळी । नि० डंसे ॥ ११० ॥

मूळपाठः—॥ ११० ॥ तए[1] णं से [2]देवे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव* पासइ, पासित्ता आसुरत्ते[3] ४[4]+ कामदेवस्स [5]समणोवासयस्स [6]सरसरस्स कायं [7]दुरूहइ, रत्ता

१. D H. (डी. एच) तं for तएणं (ने बदले) २. A. D. E. H (ए. डी. इ. एच.) दिव्वे; B. F. (बी एफ.) देव्वे. ◦ जुओ पाठ ९६. ३. A. B H. (ए बी. एच) आसुरुत्ते. ४. D E. (डी इ. मां नथी. Omit. F. ('एफ' मां पुरु) in full मिसिमिसे तिव्वे चंडेकोविए + जूओ पाठ ९५. ५. A. B. D. E F. G (ए बी डी इ एफ जी. मां नथी.) Omit. ६. A (ए) सरसर; E. (इ.) सरसस. ७. D. (डी) दुरूहइ, E (इ) दूरूहइ.

पच्छिमभाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ, रत्ता तिक्खाहिं विसपरिगयाहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेइ ॥ ११० ॥

भावार्थः—॥ ११० ॥ ते वारे ते सर्परुप देव कामदेव श्रावकने निर्भयपणे विचरतो देखीने शिघ्र अत्यंत कोपी कपाळे त्रण लीटी उंची चडावीने कामदेव श्रावकनी कायापर सडसडाट चडीने पाछली बाजुए गळे, त्रणवार वळगी (भरडा दइ) ने तीक्षण विष भरी दाढाए करी ते सर्प हैये वळगी डंसवा लाग्यो ॥ ११० ॥

अर्थः—॥ १११ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । का० कामदेव । स० श्रावक । तं० ते । उ० आकरी वेदना । जा० यावत । अ० सहे ॥ १११ ॥

मूळपाठः—॥ १११ ॥ [1]तए णं से कामदेवे [2]समणोवासए तं उज्जलं जाव अहियासेइ ॥ १११ ॥

भावार्थः—॥ १११ ॥ ते वारे ते कामदेव श्रावकना आखा शरीरे उजळी वेदना थवा लागी यावत ते तिव्र वेदना खमे ॥ १११ ॥

अर्थः—॥ ११२ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवे । स० सर्प । रु० रुपे । का० कामदेव । स०

१. A. B. D. H. (ए. बी. डी. एच.) तं for तएणं (ने बदले). २. A. B. D. E. H. (ए. बी. डी. इ. एच. मां नथी.) Omit. * बाकीनो भाग टीकामां छे.

श्रावकने । अ० अणबीहतो । जा० यावत (ज्यारे) । पा० देखे । पा० देखीने । जा० जेवारे । नो० नहि । सं० समर्थ । का० कामदेव । स० श्रावकने । नि० निग्रन्थना । पा० प्रवचनथी । चा० चळाववा । वा० अथवा । खो० क्षोभाववा । वा० अथवा । वि० विपरीत परिणाम । वा० एटले वळी । ता० ते वारे । सं० थाक्यो ३ । म० हळवे । स० हळवे । प० पाछो वळे । प० पाछो वळीने । पो० पौषधशाळाथी । प० पाछो । नि० नीकळे । प० पाछो । नि० नीकळीने । दि० देवता संबंधी । स० सर्पनुं । रु० रुप । वि० छांडे । वि० छांडीने । ए० एक । म० मोटो । दि० दिव्य । दे० देवतानुं । रु० रुप । वि० विकुर्वे । हा० हार । वि० विराजीत । व० हृदय छे । जा० यावत । द० दस । दि० दिसा । उ० उद्योत करतो । प० प्रभास करतो । पा० मन पसंद करतो । द० जोवा योग्य । अ० मनोहर रुप । प० प्रतिबिंब सहित ॥ ११२ ॥

मूळपाठः—॥ ११२ ॥ [1]तए णं से [2]देवे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं [3]जाव पासइ, रत्ता जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गन्थाओ [4]पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा [5]विपरिणामित्तए वा, ताहे सन्ते [6]३[+] सणियं सणियं पच्चोसक्कइ, रत्ता

१. A. B. D. H. (ए बी डी एच मां) तं in तए णं (ने बदले) २. A. B. D. E. H (ए. बी डी. इ. एच) दिव्वे. ३. D E. (डी. इ. मां नथी.) Omit. * ९६ पाठ जूओ. ४. E. (इ.) पवयणाओ. ५. A. B. D. E. H. (ए. बी. डी. इ. एच.) विप्परित्तए. ६. F in full (आखो पाठ 'एफ' मां छे.) + १०१ पाठ जूओ.

पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ,[१] रत्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ,[२] रत्ता एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ [३]हारविराइयवच्छं जाव[४] दसदिसाओ उज्जोवेमाणं [५]पभासेमाणं [६]पासाईयं [७]दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥ ११२ ॥

भावार्थः—॥ ११२ ॥ ते वारे ते सर्परूप देव कामदेव श्रावकने अणबीहीतो देखीने ते देवना कामदेव श्रावकने निर्ग्रंथ प्रवचन मार्गथी चळाववा, क्षोभाववा, विपरित परिणाम कराववाने ज्यारे समर्थ न थयो त्यारे थाक्यो, ते वारे ते देवता हळवे हळवे पाछो उतरीने पौषधशाळाथी नीकळीने ते दिव्य सर्परूप छांडीने एक मोटुं दिव्य देवतानुं रुप करे, ते देवतानुं हृदय हारे करीने शोभायमान, दश दिशाए उद्योत करतो, प्रकाश करतो, चित्तने प्रसन्नकारी देखवा योग्य एवुं देवरुप करे ॥ ११२ ॥

अर्थः—॥ ११३ ॥ दि० दिव्य । दे० देव । रु० रुप । वि० विकुर्वे । वि० विकुर्वीने । का० कामदेव । स० श्रावकनी । पो० पौषधशाळामां । अ० पेसे । अ० पेसीने । अ० आकाशने विषे । प० रहीने । स० घुघरादिक शब्द करे । प० पांचे । व० वर्ण । व० वस्त्र । प० प्रधान । प० पेहेरीने । का० कामदेव । स० श्रावकने । ए०

१ A. B. F. H. (ए. बी. एफ. एच.) °निक्खमइ. २. H. (एच.) विप्पजहइ. ३. A. D. E. (ए. डी इ.) °वत्थं. ४ उववाइ ३३ पाठ. ५. B (बी. मां नथी.) Omit ६. F. (एफ) पासाइयं; D E. (डी. इ.) पासइ. ६. C. F. (सी. एफ. मां पुरु) in full. A. B. H. (ए. बी. एच. मां मात्र) ७ D E. (डी. इ. मां नथी.) Omit.

एम । व० कहे । ह० हं । भो० अरे । का० कामदेव । स० श्रावक । ध० धन्य । सि० छे । णं० वळी । तु० तुजने दे० हे देवाणुं प्रिय । सं० संपूर्ण । क० कृतार्थ । क० भला । ल० लक्षण तारा । सु० भलो । ल० लाध्यो । णं० वळी । त० तने । दे० हे देवताना प्रिय । मा० मनुष्यनो । ज० जन्म । जी० जीवतव्यनो । फ० फळ । ज० जेह कारण भणी । णं० वळी । न० ते । नि० निग्रंथ । पा० प्रवचन । इ० एहवाज । रु० रुपे । प० पाळ्यो । ल० लाध्यो । प० पाम्यो । अ० सन्मुख थयो (आगलो भव समार्यो) । ए० एम । ख० निश्चे । दे० हे देवताना प्रिय । स० सक्र । दे० देवेन्द्र । दे० देवतानो । रा० राजा । जा० यावत । स० सक्र । सी० सिंहासनने विषे बेठा । च० चोराशी । सा० (इंद्र सरखा) सामानीक । सा० हजार देवता । जा० यावत । अ० अनेरा बीजा । च० वळी । ब० घणा । दे० देवता । य० वळी । दे० देवांगनाए । य० वळी । म० मध्य सभामांहि बेठा । ए० एम । आ० कहे । ४ । ए० एम । ख० निश्चे । दे० देवताओ । ज० जंबुद्वीप नामना । दी० द्विपे । भा० भरत । वा० क्षेत्रे । चं० चंपा । न० नगरने विषे । का० कामदेव । स० श्रावक । पो० पोषधशाळामां । पो० पोषो लीधो छे । ब० ब्रह्मचारी । जा० यावत । द० डाभना । सं० संथारे । उ० बेठा थका । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । अ० समीपे । ध० धर्म । प० पामीने । उ० अंगिकार करीने । वि० विचरे छे । नो० नहि । ख० निश्चे । से० तेने । स० समर्थ नहि । के० कोइ । दे० देवता । वा० अथवा । दा० दानव । भवनपति । वा० वळी । जा० यावत । गं० गंधर्व । वा० वळी । नि० निग्रन्थ । पा० प्रवचन थकी । चा० चळाववा । वा० वळी । खो० खोभाववा । वा० अथवा । वि० विपरीत । प० परिणाम करवा । वा० वळी । त० तेवारे । णं० वळी । अ० हुं । स०

सक्क । दे० देवेन्द्र ।दे० देवतानो । र० राजा । ए० ए । अ० अर्थ । अ० साचो नहि मानतो ३ । इ० आंहि । ह० उतावळो । आ० आव्यो । तं० ते । अ० आश्चर्य । णं० वळी । दे० देवाणुप्रिया । इ० ऋद्धि पामे तेवी ६ । ल० लाधी-पामी ३ । तं० ते । दि० दिठी । णं० वळी । दे० हे देवाणुप्रिय । इ० रुधी । जा० यावत । अ० सन्मुख थइ । तं० ते । खा० खमावुं छुं । णं० वळी । दे० हे देवताना प्रिय । ख० तमे खमजो । म० मुजने । दे० हे देवताना प्रिय । ख० खमजो । ण० वळी । दे० हे देवताना प्रिय । ना० नहि । भु० बीजीवार । क० करुं । कायाए करी । ति० त्रण । क० करणे । पा० पगे लागे । प० बे हाथ जोडी । ए० ए कारणभणी । अ० ए अर्थ । भु० वारम । भु० वार । खा० खमावे । खा० खमावीने । जा० जेणी । दि० दिशाथी । पा० आव्यो । प्रगट थयो हतो । ता० तेज । दि० दिशाए । प० पाछो पोताने ठामे । ग० गयो ॥ ११३ ॥

मूळपाठः—॥ ११३ ॥ दिव्वं देवरूवं [1]विउव्वइ, रत्ता कामदेवस्स समणोवासयस्स[2] पोसहसालं [3]अणुप्पविसइ, रत्ता अन्तलिक्खपडिवन्ने[4] सखिङ्खिणियाइं पञ्चवण्णाइं वत्थाइं [5]पवरपरिहिए कामदेवं [6]समणोवासयं एवं वयासी। "हं भो कामदेवा समणोवासया, धन्ने सि णं [7]तुमं,

१. A B F H. (ए. बी एफ एच. मां नथी.) Omit. २. D. E H (डी. इ. एच. मां नथी) Omit. ३. F (एफ) अणुपविस्सइ. ४ E. (इ) अंतरिक्ख०. ५. E. (इ मां नथी.) पवर. ६. B D. E. (बी. डी इ मां नथी) Omit. ७. F (एफ.) तुमे.

[1]देवाणुप्पिया, [2]सम्पुन्ने [3]कयत्थे कयलक्खणे, सुलद्धे णं तव, देवाणुप्पिया, माणुस्सए[4] जम्मजीवियफले, जस्स णं[5] तव [6]निग्गन्थे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । एवं खलु, देवाणुप्पिया, सक्के [7]देविन्दे देवराया[8] जाव सक्कंसि सीहासणंसि [9]चउरासीईए सामाणियसाहस्सीणं[10] जाव अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य मज्झगए [11]एवमाइक्खइ [12]४+।" "एवं खलु, देवा[13], जम्बुद्दीवे[14] [15]दीवे भारहे वासे

१ F. (एफ) देवाणुप्पिये २ A B. (ए. बी.) सपुन्ने for संपुण्णे; C. (सी) सप्पुरिसे, F (एफ.) संपुण्णे सि णं तुमं देवाणुपिये ३ D E (डी इ) कयत्थे ४ D. E. (डी. इ) माणुस्सजन्म °. ५ D. E. (डी. इ मां वधारे) add देवाणुप्पिया. ६. D E. (डी इ. मां छे.) read निग्गथाओ पावयणाओ मेव ष्व for नि० पा० इमेयारूवा ७. A. B F H. (ए बी एफ. एच.) देवेंदे ८. After देवराया (पछी) A. B. F (ए. बी. एफ मां वधारे) add सयक्कऊ, D. E. (डी. इ मां वधारे) add सयक्काऊ सहस्सक्खे * बाकीनो भाग टीकामां ने कल्पसूत्र पाठ १४ मां छे. ९ F. H. (एफ एच) चउरासीए. १० F. (एफ) ° सहस्सीए. ११. E (इ.) आहिक्खइ १२. F. (एफ. मां पुरु) in full एव भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ. १३. E (इ.) देव °. F. (एफ.) देवाणुप्पिया. H. (एच. मां नथी.) Omit. १४. A. B. D. E. (ए. बी. डी इ.) जबुद्दीवे (incorrect अशुद्ध) F. (एफ) जंबूदीवे. (शुद्ध) १५. A. B. D. E F. (ए. बी डी. इ. एफ.) only 2 for दीवे. (दीवे ने बदले २)

गणता जेनी एक हजार आंख थाय तेथी तेनुं नाम सहश्राक्षी पडेल छे ते) शक्र नामे सिंहासननने विषे बेठा थका चौराशी हजार सामानिक (सरखी सुरधीए बेसवा लायक) देवनाने परिवारे करी सहित यावत बीजा पण घणा देवता देवीनी सभाना मध्य भागे बेठा थका एम कहेता-परुपता हवा. एम निश्चे हे देवने वल्लभकारी ! जंबुद्विपना भरत क्षेत्रने विषे चंपा नगरी मांहि कामदेव नामे श्रावक पोपधशाळा मांहि, ब्रह्मचर्य सहित पौपध व्रत ग्रही यावत डाभनी पथारीए बेसी श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी पासे जे धर्म अंगिकार कर्यो छे ते पाळतो थको विचरे छे तेने निश्चे कोइ वैमानीक देवता, दानव, असुर कुमार, किन्नर, किंपुरीस, गंधर्व, राक्षस, निग्रंथ प्रवचन थकी चळाववा, क्षोभाववा, मुंडा परिणाम कराववा समर्थ नथी एवुं शक्र देवेन्द्र देवताना राजाना मुखनुं वचन सांभळीने ए वातने श्रद्धी नहि प्रतित आणी नहि, हृदयमां नहि रुचवाथी तारी परीक्षा लेवा माटे इहां उतावळो आव्यो. हे देवने वल्लभकारी ! तारी ज्योति, जश, बळ, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम, रुप ऋद्धिनुं फळ आश्चर्यकारी तने लाध्युं, पाम्युं ने सन्मुख प्राप्त थयुं ? हे देवने वल्लभकारी ! (जेवी ईंद्रे वखाणी हती तेवी) पुर्वोक्त ऋद्धि तने जे प्राप्त थइ तेवीज में दीठी तेथी हे देवने वल्लभकारी ! तमने दुःख देवा रुप जे में अपराध करेलो छे ते अपराध माटे हुं तमने वारंवार खमावुं छुं तमे क्षमावा योग्य छो. हे देवने वल्लभकारी ! हवेथी बीजी-वार एवो अपराध नहि करुं. एम कहीने पगे लाग्यो अने बे हाथ जोडीने ए अर्थ वारंवार खमावीने जे दिशा-एथी आव्यो हतो ते दिशाए पाछो गयो ॥ ११३ ॥

अर्थः—॥ ११४ ॥ त० ते वारे । णं० नक्की । से० ते । का० कामदेव । स० श्रावक । नि० रहित थयो ।

उ० उपसर्गथी । इ० एम करीने । क० करेल । प० काउस्सग प्रतिज्ञा । पा० पाळे ॥ ११४ ॥

मूळपाठः—॥ ११४ ॥ [1]तए णं से कामदेवे समणोवासए " निरुवसग्गम् " [2]इइ कट्टु पडिमं पारेइ[3] ॥ ११४ ॥

भावार्थः—॥११४॥ ते वारे ते कामदेव श्रावक उपसर्ग रहित थयो जाणीने पोते कायोत्सर्गरुप प्रतिज्ञा पाळे॥११४॥

अर्थः—॥ ११५ ॥ ते० ते । का० काळे । ते० ते । स० समे । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देव । जा० यावत । वि० विचरे ॥ ११५ ॥

मूळपाठः—॥ ११५ ॥ [4]तेणं कालेणं तेणं समएणं [5]समणे [6]भगवं महावीरे जाव*[7] विहरइ ॥ ११५ ॥

---

१. B. (बी मां आखो पेरेग्राफ ११४ नथी.) Omits paragraph 114 entirely २. A. B. D. E. F. G. H (ए बी. डी इ. एफ जी. एच.) इति ३. D (डी.) पारिइ, E (इ.) पारइ. ४. B (बी. मां ११५ पेरेग्राफ आखो नथी) Omits paragraph 115 entirely. ५ F (एफ. मां नथी) Omits. ६. A. (ए. मां नथी.) Omits. भगवं, महावीरे * बाकीनो पाठ उववाइ ३८ पाठमां जुओ. " आइगरे " थी ' भावेमाणे " सुधी. D E (डी. इ मां) " इहचम्पाए " थी " भावेमाणे " सुधी पाठ छे जुओ ज्ञाता पाठ, ४, १२७, १२९. ७ Before जाव (जावनी पहेला डी. इ मां छे) D E insert समोसरिए समणे. G. places it before समणे (जी. मां " समणे ' पहेला " समोसरिए " छे.)

भावार्थः—॥ ११६ ॥ ते वारे ते कामदेव श्रावके एवी वात सांभळी के श्रमण भगवंत श्री महावीर देव यावत इहां विचरे छे तेथी एम निश्चे मुजने श्रेय के श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदी प्रणाम कर्या पछी मारे पोषो पाळवो एम चिंतवीने जेनो भार थोडो अने मूल्य घणुं एवा शुद्ध निर्मळ वस्त्र पहेर्या अने घणा मनुष्यना परिवारे परवर्यो—थको पोताना घर थकी नीकळीने चंपा नगरीनी मध्योमध्य थइ जीहां पूर्णभद्र उद्यान हतुं तीहां जेम भगवतीमां शंखश्रावके भगवंतने वांद्या ते प्रमाणे अहिं कामदेव श्रावके भगवंतने वांदी यावत पर्युपासना (सेवा भक्ति) करी ॥ ११६ ॥

अर्थः—॥ ११७ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरे । का० कामदेव । म० श्रावकने । ती० ते । य० वळी । जा० यावत । ध० धर्म । क० कथा । स० पुरी थइ ॥ ११७ ॥

मूळपाठः—॥ ११७ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स [1]समणोवासयस्स तीसे य जाव+ धम्मकहा समत्ता ॥ ११७ ॥

भावार्थः—॥ ११७ ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव ते कामदेव श्रावकनी आगळे यावत धर्म कथा कहे ते धर्म कथा संपूर्ण थइ ॥ ११७ ॥

१. B. D. E. H. (बी डी. इ. एच. मां नथी) Omit; F. (एफ) has कामदेवं समणोवासयं.
+ बाकीनो पाठ उववाइ ५६ ने ज्ञाता पाठ १३२ मां जुओ.

अर्थः—॥ ११८ ॥ का० कामदेव । इ० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । का० कामदेव । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । से० ते । नू० निश्चे । का० कामदेव । तु० तमने । पु० मध्य । र० रात्रिने । स० समये । ए० एक । दे० देवता । अ० तमारो समीपे (पासे) । पा० प्रगट थयो । त० ते । णं० वारे । से० ते । दे० देवे । ए० एक । म० मोटो । दि० दिव्य । पि० राक्षसनुं । रु० रुप । वि० विकुर्व्युं । वि० विकुर्विने । आ० रीसाणो ४ । ए० एक । म० मोटुं । नी० लीलुं । उ० कमल । जा० यावत । अ० खडग । ग० ग्रहीने । तु० तमने । ए० एम । व० कह्युं । हं० हे । भो० अरे । का० कामदेव । जा० यावत । जी० जीवतव्यथी । व० चुक्या । त० तुजने । तु० तमने । ते० ते । दे० देवताए । ए० एम । वु० कह्ये । स० थके । अ० अणबीहता । जा० यावत । वि० विचरे । ए० एम । व० वर्णन । र० रहित । ति० त्रण । वि० वळी । उ० उपसर्ग । त० तेमज । प० कह्या । जा० यावत । दे० देवता । प० पाछो गयो । से० ते । नू० निश्चे । का० कामदेव । अ० ए अर्थ । स० समर्थ (एटला वातो थया ?) । कामदेव कहे । हं० हा स्वामी । अ० थयां ॥ ११८ ॥

मूळपाठः—॥ ११९ ॥ "[1]कामदेवा" इ समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासयं[2] एवं वयासी । "से नूणं, कामदेवा, [3]तुज्झं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे [4]अन्तिए

१. A (ए) कामदेवा ति. B G H (बी जी एच.) कामदेवा दि, D (डी) कामदेव दुइ E (इ.) कामदेवे इ, F (एफ) कामदेवा य २ D E. (डी. इ. मां नथी) Omit. ३ E (इ.) तुम्मं ४. B. (बी. मां नथी) Omit D. E G H. (डी इ एच) अंतिय-

पाउब्भूए । तए णं से देवे एगं महं [1]दिव्वं पिसायरूवं विउव्वइ, रत्ता [2]आसुरत्ते [4]+ एगं महं नीलुप्पल जाव+[4] असिं गहाय तुमं एवं [5]वयासी। "[6]"हं भो कामदेवा जाव"[6]जीवियाउ [7]ववरोविज्जसि""। [8]तं तुमं तेणं देवेणं एवं वुत्ते [9]समाणे अभीए जाव[10]विहरसि"॥ एवं [11]वण्णगरहिया तिण्णि[12]वि उवसग्गा [13]तहेव [14]पडिउच्चारेयव्वा जाव; देवा [15]पडिगओ॥ "से नूणं [16]कामदेवा [17]अट्ठे समट्ठे"?। "हन्ता, अत्थि"॥ ११८॥

भावार्थः—॥ ११८ ॥ पछी श्रमण भगवंत श्री महावीर देव कामदेव श्रावकने एम कहेता हवा, एम निश्चे हे

१ E. G (ई जी. मां नथी.) Omit २ A. B G H. (ए बी. जी. एच.) आसुरत्ते ३. F. in full मिसिमिसे तिव्वे चंडे कोविए (पुरेपुरु छे) + ९५ मो पाठ जुओ. ४. A. B. D. E. H. (ए बी डी ई एच. मां नथी.) Omit G (जी. मां पुरुं) in full ५. A (ए.) वदासी ×९५ मो पाठ जुओ ६. D E G (डी. ई. जी.) जीवाओ. ७ D.(डी) ववरोविज्जासि. F. (एफ.) ववरोयेति ८ A. B F. G H (ए. बी. एफ जी एच मां नथी.) Omit. ९ A. P. H. (ए. बी एच. मां नथी.) Omit. × ९६ मो पाठ जुओ. १०. A. B. G. (ए बी. जी.) विहरति. ११. B. H. (बी. एच.) ° रहिदा F. (एफ.) ° सहिता. १२. G. (जी. मां वधारे) add आलावगा. १३. A B. (ए बी.) तं चेव. १४. F. (एफ.) ° उच्चारियव्वा. G. (जी.) only उच्चारेयव्वा. ‡ ९७-९८ मो पाठ जुओ. १५. E F. (ई. एफ) पडिगया, H. (एच.) ° गते; G. prif. ति ("ति" प्रत्यय छे.) १६. F. (एफ.) कामदेवे. १७. A. B. F. G. (ए. बी. एफ. जी.) अत्थे समत्थे.

कामदेव ! मध्य रात्रिना समयने विषे एक देवता तारी पासे आव्यो हतो ? ते देवताए एक मोटुं वैक्रिय पिशाच रूप करीने, अत्यंत कोपी, कपाळे त्रण लींटी चडावी, एक मोटुं निलोत्पल समान यावत खड्ग देखाडीने तुजने एम कहेतो हवो, अरे कामदेव ! जो तुं धर्म नहि मुके तो आ खड्गथी तारा शरीरना खंडोखंड करी तुजने अकाळे जीवतरथी रहित करीश. एम ते देवताए कहे थके तुं भय रहित धर्म ध्यानने विषे निश्चळपणे रह्यो. एम १ पीशाच, २. हाथी, ३. सर्प ए त्रण उपसर्ग कर्या. तेमज देवता गयो ए सर्व कहे. ते निश्चे हे कामदेव ! ए अर्थ सत्य छे ? ते वारे कामदेव कहे, हा प्रभु ! ए सर्व वात साची छे ॥ ११८ ॥

अर्थः—॥ ११९ ॥ अ० हे आर्यो । इ० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । व० घणा । स० श्रमण । नि० निग्रंथ (साधु) । य० वळी । नि० निग्रंथी (साधवी) । य० वळी । आ० आमंत्री तेडो । ए० एहवुं । व० कहे । ज० जे कारण । ता० भणी । अ० हे आर्यो । स० श्रावक । गि० गृहस्थाश्रम । गि० घर । म० मांहे । व० वसता । दि० देवताना । मा० मनुष्य । ति० तिर्यंच । जो० योनीना । उ० उपसर्ग । स० समो । स० सही शके । जा० यावत । अ० अहीयासे (खमे) तो । स० शक्तिवान थाओ । पु० वधारे । अ० अरे आर्यो । स० श्रमण । नि० निग्रंथ । दु० द्वादशांगी चौद पूर्व महित । ग० गणी (आचार्यनी) । पि० पेटी । अ० भणीने । दि० देवता । मा० मनुष्य । ति० तिर्यंच । जो० योनीयाए करी उपसर्ग । स० समो । स० सहे । जा० यावत । अ० अहीयासे ॥ ११९ ॥

मूळपाठः—॥ ११९ ॥ "अज्जो" इ समणे भगवं महावीरे बहवे समणे निग्गन्थे य[1] निग्गन्थीओ य आमन्तेत्ता[2] एवं वयासी । "जइ ताव, [3]अज्जो, समणोवासगा गिहिणो[4] गिहिमज्झा[5] वसन्ता दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिए उवसग्गे [6]सम्मं सहन्ति[7] जाव [8]अहिया-सेन्ति, सक्का पुणाइं, अज्जो, समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्गं गणिपिडगं[9] अहिज्जमाणेहिं [10]दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिए सम्मं[11] सहित्तए[12] जाव* अहियासित्तए" ॥ ११९ ॥

भावार्थः—॥ ११९ ॥ ते वारे श्रमण भगवत श्री महावीर देवे, हे आर्यो ! एम संबोधन वचने घणा साधु साध्वीने तेडावीने एम कहेता हवा, हे आर्यो ! जुओ, आ श्रावक, गृहस्थ, घरमांहि वसता थका देवता, मनुष्य, अने तिर्यंचना करेला उपसर्ग सम्यक् प्रकारे सहन करे छे, तेने इन्द्र वखाणे छे तेथी हे आर्यो ! तमे तो श्रमण

१ A. G. (ए. जी मां नथी) Omit. B. (बी. मा) वि. २ F. (एफ.) आमंतित्ता. ३ B. (बी.) अजा. ४. B. G (बी जी. मां नथी) Omit. ५ E. (इ.) गिह० A. B. F. (ए बी. एफ.) ० मज्झे. ६. B. E. H. (बी. इ. एच.) सम्म. ७. A. (ए.) सहसि. B. D. H. (बी. डी. एच.) सहंति; E F. G. (इ. एफ. जी.) सहइ * खमइ तितिक्खइ (कल्पमां छे.) ८ A. (ए.) ० यांसेन्ति; B. H. (बी एच.) ० यांसिन्ति; D. (डी.) यासेन्ति E. F. (इ. एफ.) ० यासेइ, G. (जी.) ० यासेय. ९. A. B. D. F. (ए. बी. डी. एफ.) पडिगं. १० A. (ए.) देव्व० F. (एफ.) देवमणुस ० ; A B. (ए बी.) ० माणुसे; तिरि-क्ख ० , E. (इ.) ० जोणिएहिं. ११. A. B. E (ए बी. इ.) सम्मं. १२. E. (इ.) सहित्तए अहियासेत्तए.

निग्रंथ छो, द्वादशांगीना भणनार छो माटे देवता, मनुष्य, तिर्यंचना करेला उपसर्ग सहन करजो, विशेषे सहन करजो एम प्रभुए कह्युं ते वारे ते घणां साधु, साध्वी श्रमण भगवंत श्री महावीरनुं वचन प्रमाण करे अने ए अर्थ विशेषे करी सांभळे ॥ ११९ ॥

अर्थः—॥ १२० ॥ त० ते वार पछी । ते० ते । ब० घणा । स० श्रमण (साधु) । नि० निग्रन्थ । य० वळी । नि० साध्वीओ । य० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनुं । त० ते । त्ति० खरुं (तहेत) । ए० ए । अ० अर्थ । एम करी । वि० विनय सहित । प० सांभळे ॥ १२० ॥

मूळपाठः—॥ १२० ॥ तओ[1] ते बहवे समणा निग्गन्था य[2] निग्गन्थीओ य[3] समणस्स भगवओ महावीरस्स[4] "तह" त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणन्ति[5] ॥ १२० ॥

भावार्थः—॥ १२० ॥ एम प्रभुए कह्युं ते वारे ते घणा साधुसाध्वी श्रमण भगवंत श्री महावीरनुं वचन प्रमाण करे अने ए अर्थ विनये करी सांभळे ॥ १२० ॥

अर्थः—॥ १२१ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । का० कामदेव । स० श्रावक । ह० हर्ष संतोष पाम्या ।

---

१ D. E (डी. इ.) तएण से for तओ ते. २. B. (बी. मां नथी.) Omit. ३. F. (एफ. मां नथी) Omit. ४. A. B. (ए. बी. मां नथी) Omit. भगव° महावीर°. ५. B. (बी.) पडिसुणेंति. D (डी.) पडिसुणे, E. पडिसुणेइ

भावार्थः—॥ १२३ ॥ ते वारे ते कामदेव श्रावके पहेली श्रावकनी प्रतिमां वही. एम अग्यारे प्रतिमां वही विचरता-हवा ॥ १२३ ॥

अर्थः—॥ १२४.॥ न० ते वार । णं० पछी । से० ते । का० कामदेव । स० श्रावक । व० घणी । जा० यावत । भा० भावना । वो० वीस । वा० वरसनी । स० श्रावकपणानी । प० पर्याय (प्रवर्ज्या) । पा० पाळीने । ए० अगियार । उ० श्रावकनी । प० प्रतिज्ञा । स० सम्यग साचे प्रकारे । का० कायाए । फा० फरसीने । मा० एक मासनी । सं० संलेखणा करी । अ० आत्माने । झू० सेवीने । स० साठ । भ० भक्त । अ० अणसण करी । छे० छेदीने । आ० (आगणा पूर्वे करेला सर्व पाप) आलोइने । प० पडिक्रमीने । स० समाधी । प० पाम्या । का० काळ । मा० समे (अवसरे) । का० काळ । कि० करी । सो० सौधर्म । क० देवलोके । सो० सोधर्म । व० वतसक नामा । म० मोटा । वि० विमानथी । उ० उत्तरे । पु० पुर्व दिशाने विषे एटले इशान खूणे । अ० अरुणाभ नामा । वि० विमाने । दे० देवतापणे । उ० उपनो । त० त्यां । णं० वळी । अ० छे । ते देवलोक । ग० गएला केटलाक । दे० देवताने । च० चार । प० पल्योपमनी । ठि० स्थिति । प० कही छे । का० कामदेवनी । वि० वळी । दे० देवतानी । च० चार । प० पल्योपमनी । ठि० स्थिति । प० कही ॥ १२४ ॥

मूळपाठः—॥ १२४ ॥ तए णं से कामदेवे समणोवासए 'बहूहिं जाव* भावेत्ता[2] वीसं

---

१. A. D. E. F. (ए. डी. इ. एफ.) बहुहिं. * जुओ पाठ ६६ ने ८९. २. F. (एफ) भाविता.

वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, [1]एक्कारस [2]उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता[3], मासियाए[4] संलेहणाए [5]अप्पाणं झूसित्ता[6], सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए[7] छेदेत्ता[8], [9]आलोइयपडिक्कन्ते, [10]समाहिपत्ते, [11]कालमासे [12]कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे [13]सोहम्मवडिंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरच्छिमेणं[14] अरुणाभे विमाणे देवत्ताए [15]उववन्ने। तत्थ णं अत्थे गइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई[16] पण्णत्ता। कामदेवस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई [17]पण्णत्ता ॥१२४॥

भावार्थः—॥ १२४ ॥ ते वारे ते कामदेव श्रावक घणा शिलव्रतादिक पाळवे करी यावत पोताना आत्माने

---

१. B. (बी मा नथी.) Omit, F. (एफ) एक्कारस्स २ D E (डी इ.) °पडिमं. ३ F (एफ.) फासित्ता ४. E (इ) दुमासियाए. ५ D. E. (डी. इ) अत्ताणं ६. F (एफ.) झुसित्ता. ७ F (एफ) अणसणाइं ८ E. (इ.) छेएत्ता, F (एफ.) छेदित्ता ९ A. B D. E. (ए. बी. डी. इ. मां टुंकु छे.) अलोइय° १० B (बी) समाधि° ११. A E. (ए. इ.) कालमासे. १२. B. (बी मां नथी.) कालं किच्चा. १३ A. B (ए बी.) °वडंसयस्स १४ D. E (डी इ) °पुरच्छिमेणं. १५. D. (डी.) उववन्नो .१६ A (ए) ठ्ठिती, B. D (बी डी.) ठिती, E. (इ) ठिइ. F. (एफ) ठ्ठिइ १७. A (ए.) ठिती, D (डी.) ठिति; F. (एफ.) ठ्ठिइ

भावना थका वीस वर्ष श्रावकनी पर्याय पाळीने, इग्यार श्रावकनी प्रतिज्ञा सम्यक् प्रकारे कायाए फरसीने एक मासनी संलेखणा करीने पोताना आत्माने झुसीने साठ भक्त अणसण छेदीने आलोइ, पडीकमी समाधि पामीने मरणने समये काळ करीने सौधर्म देवलोके सौधर्म वतंसक म्होटा विमानने विषे इशान खूणे अरुणाभ नामे विमानने विषे देवपणे उपन्यो. त्यां केटलाक देवना आयुष्यनी स्थिति चार पल्योपमनी कही छे तेम कामदेव देवतानी पण चार पल्योपमनी स्थिति कही छे ॥ १२४ ॥

अर्थः—॥ १२५ ॥ से० ते । णं० वळी । भं० हे भगवंत । का० कामदेव । ता० ते । दे० देवलोकथी । आ० आउखुं । ख० क्षिण करी । भ० भव । ख० क्षय करी । ठि० स्थिति । ख० क्षिण करी । अ० आंतरा रहित । च० चवे । य० वळी । च० चवीने । क० क्यां । ग० जाशे । क० क्यां । उ० उपजशे । गो० हे गौतम । म० महाविदेह । वा० वासे । अवतरी । सि० सिजशे ॥ १२५ ॥

मूळपाठः—॥ १२५ ॥ "से णं,[1] भन्ते, [2]कामदेवे [3]ताओ देवलोगाओ[4] आउक्खएणं [5]भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणन्तरं च [6]यं चइत्ता, कहिं [7]गमिहिइ, कहिं [8]उववज्जिहिइ"?।

१. B. D. (बी डी मां नथी.) Omit २. B (बी.) कामदेवो ३ D. E. (डी. इ.) तओ चेव. ४. A. B. (ए. बी) देवलोयाओ. ५ B. D. E. Only 3 as in 90. (बी. डी. इ मां फक्त ३ (९० माफक). ६. E (इ.) चइ. ७ E. (इ.) गमिहिति, F. (एफ.) गमेहिं ८. A. B. E. (ए. बी. इ.) उववज्जिहिति F. (एफ.) उववज्जेहिति.

"गोयमा, महाविदेहे वासे [1]सिज्झिहिइ" ॥ १२५ ॥

भावार्थः—॥ १२५ ॥ ते वारे गौतम स्वामी पुछता हवा हे पूज्य! कामदेवे ते देवलोकथी आयुष्य क्षय करी, देवनो भव क्षय करी, वैक्रेय शरीरनो स्थिति क्षय करी, आंतरा रहित चवी (मरी) ने क्यां जशे? क्यां उपजशे? ते वारे भगवंत कहेता हवा हे गौतम! महाविदेह क्षेत्रने विषे मनुष्यनो अवतार पामीने सीझशे यावत सर्व दुःखनो अंत करी मोक्षमां जशे ॥ १२५ ॥

अर्थः—॥ नि० समास ॥ स० सातमा । अ० अंगनुं । उ० उपासग दशानुं । बी० बीजुं । अ० अध्ययन । स० संपूर्ण ॥ ७ ॥ २ ॥

मूळपाठः—॥ निक्खेवो ॥ सत्तमस्स अङ्गस्स [2]उवासगदसाणं [3]बीयं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥ २ ॥

भावार्थः—॥ समाप्ति ॥ हवे सुधर्मा स्वामि कहेता हवा एम निश्चे हे जंबू! श्रमण भगवंत श्री महावीर देव

१. E. F. (इ. एफ) सिज्झिहिति. २ A. B. D E. F. (ए. बी डी इ एफ. मां नथी) Omit. सत्तअङ्ग–उवा ° ३. after बीयं A. B. insert कामदेवयं (ए. बी मां "बीय" पछी "कामदेवयं" छे

मोक्ष पहोंन्या तेमणे उपाशक दशांगना त्रीजा अध्ययननो ए प्रमाणे अर्थ कह्यो. हे जंबू ! जेम में श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी पासे सांभळ्युं हतुं, तेज प्रमाणे में तुज प्रत्ये कह्युं. इति सातमा अंग उपासग दसानुं वीजुं अध्ययन पुरुं थयुं ॥ ७ ॥ २ ॥

॥ तइयं अज्झयणं ॥



त्रीजुं अध्ययन.

अर्थः—॥ उ० शरुआत । त० त्रीजा । अ० अध्ययननी ॥

मूळपाठः—॥ [1]उक्खेवो तइयस्स [2]अज्झयणस्स ॥

भावार्थः—॥ त्रीजा अध्ययननी शरुआत.

---

१. G. (जी.) उक्खेवओ २. A. B. D. E. (ए. बी. डी. इ. मा नथी.) Omit.

अर्थः—॥ १२६ ॥ ए० एम । ख० खरेखर । ज० हे जम्बू । ते० ते । का० काळे । ते० ते । स० समे । वा० वाणारसी । ना० नामनी । न० नगरी । को० कोठग । चे० चैत्य (उद्यान) । जि० जितशत्रु । रा० राजा ॥ १२६ ॥

मूळपाठः—॥ १२६ ॥ एवं खलु, जम्बू, तेणं कालणं तेणं समएणं [1]वाणारसी नामं नयरी । कोट्ठए चेइए । जियसत्तू राया[2] ॥ १२६ ॥

भावार्थः—॥ १२६ ॥ सुधर्मा स्वामीने तेमना जंबू नामना शिष्य पूछता हवा, हे पूज्य! श्रमण भगवंत श्री महावीर देव यावत मोक्ष पहोंच्या तेमणे उपासक दशांगना बीजा अध्ययननो ए अर्थ परुप्यो, तो हे पूज्य! त्रीजा अध्ययननो शुं अर्थ परुप्यो? एम निश्चे, हे जंबू! ते काळ ते समयने विषे वणारसी नामे नगरी हती, कोष्टक नामे वन हतुं, त्यां जीतशत्रु नामे राजा हतो ॥ १२६ ॥

अर्थः—॥ १२७ ॥ त० त्यां । णं० वळी । वा० वाणारसी । न० नगरीए । चु० चुलणीपिय । ना० नामे । गा० गाथापति । प० वसे छे । अ० रुद्धिवंत । जा० यावत ।'अ० गांज्यो न जाय । सा० सामा नामे । भा० स्त्री (तेहनी) । अ० आठ । हि० सोनानी । को० कोडी । नि० निधान । (भूमिमां) । प० मुक्या (दाटया) छे । अ० आठ सोनानी कोडी । व० व्याजे । प० मुक्या छे । अ० आठ सोनानी कोडी । प० व्यापारमां । प०

१. E (इ) समयेण. २ B (बी.) राजा, D E. (डी इ. मां वधारे) महड्डिए

मुक्या छे । अ० आठ । व० वर्ग । द० दस । गो० गाय । सा० हजार (दस हजार गायनुं एक गोकुळ) । व० वळी । वर्ग । ज० जेम । अ० आणंद तेम । रा० राजा । जा० यावत । स० सर्व । क० कार्य । व० प्रवर्तावे । या० वळी । हो० हुओ । सा० स्वामी । स० समोसर्या—पधार्या । प० परिखदा । नि० नीकळी । चु० चुलणी । पिता । वि० वळी । ज० जेम । आ० आणंद । त० तेम । नि० गयो । त० तेमज । गि० गृहस्थ । ध० धर्म । प० पाम्यो । गो० गौतमे । पु० पुछा करी । त० तेमज । से० शेप थाकतां । ज० जेम । का० कामदेवने । जा० यावत । पो० पौषधशालाए । पो० पोपो करे । व० ब्रह्मचारी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । अ० पासे । ध० धर्म । प० पर्याय । उ० उपजावतो । वि० विचरे ॥ १२७ ॥

मूळपाठः—॥ १२८ ॥ तत्थ णं वाणारसीए[1] नयरीए[1] चुलणीपिया[2] नामं [3]गाहावई परिवसइ अड्ढे [4]जाव* अपरिभूए। [5]सामा भारिया। अट्ठ हिरण्णकोडीओ [6]निहाणपउत्ताओ, अट्ठ[7]

---

१ B. D. E (बी डी. इ. मां नथी) Omits, G. (जी. मां नथी.) Omit. वाणा ° नय० २ A. B. (ए. बी) चुलणिपिया; F. (एफ) चुलणिप्पिया ३. E. F. (इ एफ) ° वइ. ४. F. (एफ) दित्तं, A. B. G. (ए. बी. जी. मां नथी.) Omit. जाव अपरि.° * जुओ उववाइ पाठ ११ ने १०२. ५ D E. जी.) सोमा. ६. F. (इ.) ° पत्ताओ. ७. D. E. (डी. इ. मां नथी.) Omit. F. (एफ मा वधारे) हिरण्णकोडीओ.

[1]वड्डिपउत्ताउ, [2]अट्ठ पविछरपउत्ताउ[3], अट्ठ वया[4] दसगोसाहस्सिएणं वएणं। जहा [5]आण-न्दो [6]राईसर जाव* सव्वकज्जवड्ढावए [7]यावि होत्था। सामी [8]समोसढे। परिसा [9]निग्गया। चुलणीपिया[10] वि जहा आणन्दो तहा निग्गउ। तहेव गिहिधम्मं[11] पडिवज्जइ। गोयम-पुच्छा। तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव+ पोसहसालाए पोसहिए [12]बम्भचारी समण-स्स भगवउ महावीरस्स [13]अन्तियं धम्मंपणत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ॥ १२७॥

भावार्थः—॥ १२७॥ त्यां चुलणीपीता नामे गाथापति वसतो हतो, जे ऋद्धिवंत, दीपतो ने तेने कोइ पराभवी शके नहि तेवो हतो. तेने शामा नामे स्त्री हती. आठ क्रोडी सोनैया धरती मांहि दाटेला हता, आठ क्रोडी सोनैया व्यापारमां वृद्धिने माटे हता, आठ क्रोडी सोनैयानो घर वखरो हतो, दश हजार गाए एक गोकुळ थाय

१. B. D. E G (बी डी इ. जी) वुड्डि° E (इ.)° पत्ताओ. २ D. E (डी इ मां नथी) Omit A B. (ए. बी.) अट्ठप्पवि°. ३ A B. (ए. बी.)° प्पउत्ताओ. E. (इ)° पत्ताओ ४. D. E (डी. इ) व्वया. ५ A B. (ए. बी.) आणन्दे. ६. A. B (ए. बी.) इसर, D. E G (डी. इ. जी) ईसर * पांचमो पाठ जुओ. ७. G. (जी.) आवि. ८ D. E G (डी. इ. जी)° सढो ९. A. B F. (ए. बी. एफ. मां नथी.) Omit. परि° निग्ग° १०. D (डी) चुल्लणी°; A B. F (ए. बी एफ.) चुलणि°. ११. G (जी. मा नथी.) Omit. गिहि. + पाठ १० ने ६९ जुओ १२. F (एफ.) बंभयारी. G (जी.) बंभचेर. १३. A. B. F. G. (ए. बी. एफ जी. मां नथी) Omit; D. E (डी. इ.) अंतिए

तेवा आठ गोकुळ हता. जेम आणंद कुटुंबमांहि, राज्यमांहि सर्व कार्य करवामां मुख्य हतो एज प्रमाणे चुलणीपीता पण हतो. त्यां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव समोसर्या. आणंदनी पेरे चुलणीपीताए प्रभुने वांदी, नमस्कार करी, धर्म सांभळी श्रावकनो धर्म अंगीकार करी श्रावक थयो. तेमज गौतम स्वामिए पूछयुं. शेष अधिकार कामदेव श्रावकनी पेरे जाणवो. यावत एक दिवसे चुलणीपिता पौषधशाळाए ब्रह्मचर्य सहित पौषध व्रत लइ श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी पासेज धर्म अंगिकार कर्यो छे ते पाळतो विचरतो हवो ॥ १२७ ॥

अर्थः—॥ १२८ ॥ त० ते वार पछी । णं० वळी । त० ते । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । पु० मध्य । र० रात्री । का० काळ । स० समयने विषे । ए० एक । दे० देवता । अ० पासे । पा० प्रगट थयो ॥ १२८ ॥

मूळपाठः—॥ १२८ ॥ तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकाल-[1]समयंसि एगे देवे अन्तियं पाउब्भूए ॥ १२८ ॥

भावार्थः—॥१२८॥ ते वारे चुलणीपीता श्रावकने मध्य रात्रिना समयने विषे एक देवता पासे प्रगट थयो ॥१२८॥

अर्थः—॥ १२९ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवता । ए० एक । नी० नीलोत्पल कमळ सरीखुं । जा० यावत । अ० तरवार । ग० लइने । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । ज० जेम । का० कामदेवने । जा० यावत । न० नहि । भ० भांजे ।

१. D. E. (डी. इ.) ० समए. G. (जी.) ० काले.

तो० तो । तै० ते । अ० हुं । अ० आज । जे० वडो । पु० पुत्र । सा० ताहरो । गि० घर थकी । नी० काढीश । नी० काढीने । त० तारी । अ० आगळ । घा० मारीश । घा० मारीने । त० त्रण । मं० मांस । सो० सोला (कटका) । क० करीश । क० करीने । आ० (उदक-पाणी) तेले । भ० भरी । क० कडाहमांहि । अ० तळीश । अ० तळीने । त० तारा । गा० गात्र शरीरने । मं० मांस । य० वळी । सो० लोहीए । य० वळी । आ० सींचीश । ज० जेम । पं० वळी । तु० तमने । अ० आर्त्त । दु० रौद्र । व० वसे वर्तता । अ० अकाले । चे० वळी । जी० जीवतव्यथी । व० चुकावीश ॥ १२९ ॥

मूळपाठ-॥ १३० ॥ तए णं से देवे एगं [1]नीलुप्पल जाव असिं गहाय चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी । " हं भो चुलणीपिया[2] समणोवासया जहा कामदेवो[3] जाव" न भञ्जसि, तो ते[4] अहं [5]अज्ज जेट्ठं पुत्तं [6]साओ गिहाओ नीणेमि, रत्ता तव अग्गओ [7]घाएमि, रत्ता तओ मंस [8]सोल्ले करेमि, रत्ता [9]आदाणभरियंसि कडाहयंसि [10]अद्दहेमि,

१ A F (ए एफ) निलु° * ९५ पाठ जुओ. २ F add (एफमां वधारे छे) अपत्थियपत्थिया हीणचउद्दसजाया हिरिसिरिपरिवज्जिया ३. A. B. D. E. F (ए बी. डी. इ एफ) °देवे ४. D (डी.) तो, E. (इ) तओ for तो ते ५. G. (जी. मा नथी.) Omit ६ F (एफ) सयाओ. ७. G (जी) हनेमि. ८ G. (जी.) °सोला ९ F. (एफ) आयाण°. १० F. (एफ.) अदेहेमि

रत्ता[1] तव [2]गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि[3], जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले [4]चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि[5] " ॥ १२९ ॥

भावार्थः—॥ १२९ ॥ ते वारे ते देव एक निलोत्पल समान तरवार ग्रहीने चुलणीपिता श्रावकने एम कहेतो हवो, अरे ! चुलणी पीता ! अप्रार्थित वस्तुना प्रार्थनारा ! एटले मरणना इच्छनारा ! हीण चौदशना जन्मेला ! लज्या अने लक्ष्मीए करी रहित ? वगेरे जेम कामदेवने कह्युं तेम सर्व जाणवुं, यावत जो तुं आ तारुं पौषध व्रत नहि भांगे तो हुं आज तारा म्होटा पुत्रने तारा घरथी लइने तारी पासे हणीश अने तेना शरीरना त्रण ककडा करीश ! अने पछी ते ककडाने तेलथी भरेली कडाइमां तळीश, अने ते लोही—मांसे करी तारा गात्र (शरीर) ने सींचीश ने खरडीश तेथी तुं आर्त्त रौद्र ध्याने करी अकाळे जीवतरथी रहित थइश ॥ १२९ ॥

अर्थः—॥ १३० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । ते० ते । दे० देवताए । ए० एम । वु० बोले । स० थके । अ० निर्भय । जा० यावत । वि० विचरे ॥ १३० ॥

१. A. D. E. G. (ए डी. इ जी मा नथी.) Omit. २ A B. D E. G. (ए बी. डी. इ जी.) गातं. ३ E (इ) आइंछामि Corrected to आइंचामि, A. B (ए. बी) आसिंचामि ४ B. D. E G (बी. डी इ जी. मां नथी.) Omit ५. D. E. (डी इ) ववरोवेज्जसि, G. (जी.) विवरवज्जसि

मूळपाठः—॥ १३० ॥ [1]तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते [2]समाणे अभीए जाव* [3]विहरइ ॥ १३० ॥

भावार्थः—॥ १३० ॥ तेवारे ते चुलणीपिता श्रावक ते देवताए एम कह्ये थके निर्भयपणे यावत विचरे ॥१३०॥

अर्थः—॥ १३१ ॥ तं० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवताए । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । अ० निर्भय । जा० यावत । पा० देखे । पा० देखीने । दो० बीजीवार । पि० वळी । त० त्रीजीवार । पि० वळी । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । चु० चुलणीपिया । स० श्रावक । तं० तेमज । चे० वळी । भ० कहे । सो० ते । जा० यावत । वि० विचरे ॥ १३१ ॥

मूळपाठः—॥ १३१ ॥ [4]तए णं से देवे [5]चुलणीपियं [6]समणोवासयं [7]अभीयं जाव+ पासइ, रत्ता [8]दोच्चं पि तच्चं पि [9]चुलणीपियं समणोवासयं[6] एवं वयासी । "हं भो चुलणीपिया समणोवासया[6]," तं चेव भणइ, सो[10] जाव× विहरइ ॥ १३१ ॥

१. A . B (ए बी.) तं से D. E (डी इ) तओ for तए ण से २ B D E (बी. डी. इ. मां नथी) Omit * ९६ मो पाठ जुओ. ३. A (ए.) विहरंति. ४. A, B. D E. (ए. बी. डी. इ.) तं for तए णं, G (जी. मां नथी.) Omit the whole paragraph ५ B (बी)° पिता. ६. A. B. D. E G. (ए बी. डी इ. जी. मां नथी) Omit. ७. F (एफ.) अभीइं + ९६ पाठ जुओ ८. F. (एफ) दुच्चं ९. A. B (ए बी)° पिता. १० B F. (बी एफ) से. × ९५–२६ पाठ जुओ

भावार्थः—॥ १३१ ॥ ते वारे ते देवताए ते चुलणीपीता श्रावकने निर्भयपणे देखीने बे वार, त्रण वार चुलणीपिता श्रावकने पूर्वे जेम कह्युं हतुं तेमज कह्युं, तोपण ते धर्मध्यानने विषे विचरे ॥ १३१ ॥

अर्थः—॥ १३२ ॥ त० ते वार । णं० पछी । से० ते । दे० देवताए । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । अ० निर्भय । जा० यावत । पा० देखे । आ० कोप्यो ४ । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकना । जे० जेष्ट वडा । पु० पुत्रने । गि० घर थकी । नी० काढे । नी० काढीने । अ० आगळ । घा० मारे । घा० मारीने । त० त्रण । मं० मांसना । मो० मोळा कटका । क० करे । क० करीने । आ० उदक तेले । भ० भरेल । क० कडाह मांहे । अ० तळे । अ० तळीने । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । गा० गात्र शरीरने । मं० मांसे । य० वळी । सो० लोहीए । य० वळी । आ० सींचे ॥ १३२ ॥

मूळपाठः—॥ १३२ ॥ [1]तए णं से देवे चुलणी पियं [2]समणोवासयं अभीयं जाव" पासित्ता [3]आसुरत्ते ४ [4][5]चुलणीपियस्स समणोवासयस्स जेट्ठं [6]पुत्तं गिहाओ[6] नीणेइ, रत्ता

१. A B D E. (ए. बी डी. इ.) तं for तए णं. २ A B D, E. G. (ए बी. डी. इ. जी. मां नथी) Omit. « ९६ पाठ जुओ ३. A. (ए.) आसुरत्ते ४. A (ए. मां ५ छे.) has ५ F. (एफ. मां पुरो पाठ छे.) reads the four terms in full असुरत्ते मिसमिसे चंडे कोविए; if five terms are read, (जो पाच होय तो नीचेनो पाठ उमेरवो.) रुट्ठे or (अथवा) तिब्बे must be added, as in 95 (९५ पाठ जुओ.) § ९५ मो पाठ जुओ ५. B. D. E (बी. डी. इ.) जेट्ठपुत्तं. F. (एफ.) जेट्ठपुत्ते. ६. F (एफ. प्रथम मुक्यो) prefixes मयाओ.

अग्गउ घाएइ, रत्ता तउ [1]मंससोल्लए करेइ, रत्ता [2]आदाणभरियंसि [3]कडाहयंसि [4]अ-
द्दहेइ, रत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स [5]गायं मंसेणं य सोणिएण य [6]आयश्चइ ॥ १३२ ॥

भावार्थः—॥ १३२ ॥ ते वारे ते देव चुलणीपीता श्रावकने निर्भयपणे देखीने उतावळो कोप्यो यावत कपाळे त्रण लींटी चडावीने चुलणीपिना श्रावकना म्होटा पुत्रने तेना घरमांथी लावीने तेनी पासे मारी तेना मांसना त्रण ककडा करी तेलथी भरेली लोढानी कडाइमां तळीने ते मांसे अने लोहीए करी चुलणी पीता श्रावकना गात्रने सींचतो हवो खरडतो हवो ॥ १३२ ॥

अर्थः—॥ १३३ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । तं० ते । उ० सुखरहित । जा० यावत । अ० खमे ॥ १३३ ॥

मूळपाठः—॥ १३३ ॥ तए णं से चुलणीपिया समणोवासए[7] तं उज्जलं जाव* अ-
हियासेइ ॥ १३३ ॥

---

१. B (बी.) °सोलेए. D E (डी. इ.) °मोल्लिते. (सोल्लिए), F. (एफ.) सुल्लाइ, G (जी.) °सोला. २ F (एफ) आदाणु°. ३. A. B (ए. बी) कडाहियसि D E. (डी इ) कडाहंसि. ४. B. D. E G. (बी डी. इ जी) अद्देहेइ; F (एफ) अद्हेइ. ५. G. (जी) गातं. ६. A. (ए) आइंवइ B. D E (बी. डी. इ.) आइचइ. ७ F. (एफ) °पिय. °सय * बाकी पाठ टीकामां छे

भावार्थः—॥ १३३ ॥ ते वारे ते चुलणीपिता श्रावक ते उजळी वेदना यावत गहन करतो हवो ॥ १३३ ॥

अर्थः—॥ १३४ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवना । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । अ० निर्भय । जा० यावत । पा० देखे । पा० देखीने । दो० बीजीवार । पि० वळी । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । अ० अप्रार्थनो । प० प्रार्थनार । जा० यावत । न० नहि । भं० भांगे । तो० तो । ते० ते । अ० हुं । अ० आज । म० वचला । पु० पुत्रने । सा० पोताना । गि० घरथकी । नी० काढीश । नी० काढीने । त० तारी । अ० आगळ । घा० घात करीश । ज० जेम । जे० जेष्ट । पु० पुत्रने । त० तेमज । भ० कहे । त० तेमज । क० करे । ए० एम । त० तेना । पि० वळी । क० नाना वेदाने । जा० यावत । अ० अहियासे समे ॥ १३४ ॥

मूळपाठः—॥ १३४ ॥ तए णं से देवे [1]चुलणीपियं [2]समणोवासयं अभीयं जाव[2] पासइ, रत्ता दोच्चं पि[3] चुलणीपियं समणोवासयं एवं [4]वयासी । "हं भो चुलणीपिया समणोवासया, अपत्थियपत्थिया[5] जाव[6] न [6]भंजसि, तो ते [7]अहं अज्ज मज्झिमं[8] पुत्तं

१. F G (एफ. जी.) ०पियस्स ०सयस्स २. A. D. E. (ए डी. इ. मां नथी) Omit. + ९६ पाठ जुओ. ३. A. D. E. F. G. (ए. डी इ. एफ जी. मां वधारे) तथं पि. ४. A. (ए.) वदासी. ५. D. (डी) अपत्थियपत्थया. F. (एफ.) अपत्थयपत्थिया § ९५ पाठ जुओ ६ E (इ.) भंजेसि. ७ A. D. (ए. डी.) तो; E. तओ for तो ते. ८. B. (बी) मज्झिमपुत्तं. G (जी.) मज्झिमयपुत्तं.

[1]साउं गिहाओ [2]नीणेमि, रत्ता तव अग्गओ घाएमि" जहा जेट्ठं[3] पुत्तं तहेव भणइ, तहेव करेइ[4] ॥ एवं तच्चं पि [5]कणीयसं जाव" अहियासेइ ॥ १३४ ॥

भावार्थः—॥ १३४ ॥ ते वारे ते देव, चुलणीपीता श्रावकने निर्भयपणे विचरता देखीने बीजी वार, त्रीजीवार चुलणीपीता श्रावकने एम कहेता हवा, अरे, चुलणीपिता श्रावक ! अप्रार्थित वस्तुना प्रार्थनारा ! यावत जो तुं पोषो नहि भांगे तो हुं आज तारा वचला पुत्रने तारा घरथी लावी तारी पासेज तेनी घात करीश जेम मोटा पुत्रनुं कह्युं तेमज कर्युं, एम नाना पुत्रनुं पण कर्युं, यावत ए सर्व पीडा सहन करी ॥ १३४ ॥

अर्थः—॥ १३५ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवता । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । अ० निर्भय । जा० यावत । पा० देखे । पा० देखीने । च० चोथी वार । पि० वळी । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । अ० अप्रार्थनो । प० प्रार्थनार ४ । ज० जो । णं० वळी । तु० तुं । जा० यावत । न० नहि । भ० भांगे । न० ते वारे । अ० हुं । अ० आज । जा० वळी । इ० ए । त० ताहरी । मा० माता । भ० भद्रा । स० सार्थवाह । दे० देवतासमान । गु० गुरु समान । ज० माता । दु० दुकर । दु० दुक्कर । का० कारणी । तं० ते । ते० तेने । सा० पोताना । गि० घरथकी ।

१. F. (एफ) सयाओ २. F (एफ) नीणिमि. ३. F (एफ.) जेट्ठपुत्तं ४ F G. (एफ जी) करइ ५ A B D. E F G. H. (ए बी. डी. इ. एफ. जी. एच) एवं कणीयसं पि. । १३२, १३३ पाठ जुओ

नी० काढीश । नी० काढीने । त० तारी । अ० आगळ । घा० घात करीश । घा० घात करीने । त० त्रण । मं० मांस । सो० कटका । क० करीश । क० करीने । आ० उदक तेले । भ० भरी । क० कडाह मांहि । अ० तळीश । अ० तळीने । त० तारा । गा० गात्रने । मं० मांस । य० वळी । सो० लोहीए करी । य० वळी । आ० सींचीश । ज० जेम । ण० वळी । तु० तने । अ० आर्त्त । दु० रुद्र । व० वसे । अ० अकाळे । चे० वळी । जी० जीवतव्यथी । व० चुकीश ॥ १३५ ॥

मूळपाठः—॥ १३५ ॥ [1]तए णं से देवे चुलणीपियं[2] समणोवासयं अभीयं जाव† पासइ, पासित्ता चउत्थं पि[3] चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी। "हं भो [4]चुलणीपिया [4]समणोवासया, अपत्थियपत्थिया ४[5]†, जइ णं तुमं जाव† न भञ्जसि, तओ[6] अहं अज्ज जा इमा[7] तव[8] माया भद्दा सत्थवाही [9]देवयगुरुजणणी [10]दुक्करदुक्करकारिया, तं ते[11] साओ[12] गिहाओ

१ A B D (ए बी. डी.) तं for तए ण. २ F. (एफ.) तं. B. (बी.) ° पिता + ९६ पाठमां जुओ. ३. E. (इ मां "पि" ने बदले) reads जाव ४ F. (एफ.) ° पियं ° सयं ५ A. H (ए एच) हं=५ † ९५ पाठमां जुओ ६ G. (जी) तो ते ७ B. जाव for जा इमा ८ D E. G. (डी. इ. जी. मां नथी.) Omit ९ B. (बी) देवता गुरुजी. A. D. E H. (ए डी इ एच.) देवतं गुरु जणणी; F (एफ) देवयं गुरुजणणी; G (जी) देवगुरुजणणि १०. A. दुक्करिकारिया, B (बी.) दुक्कर कारिया, D E. ° कारियं, G. (जी.) ° करयं. ११. A. (ए.) तो, Omit (नथी) तं. E. (इ) से, G (जी.) ततो १२ F (एफ.) सयाओ.

नीणेमि, रत्ता तव अग्गउ घाएमि, रत्ता तउ मंससोल्लए[1] करेमि, रत्ता आदाणभरियं[2]-सि [3]कडाहयंसि [4]अद्दहेमि, रत्ता तव [5]गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि[6], जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले[7] चेव जीवियाउ ववरोविज्जसि[8] " ॥ १३५ ॥

भावार्थः—॥ १३५ ॥ ते वारे ते देव चुलणीपीता श्रावकने निर्भयपणे विचरतो देखीने चोथीवार कहेतो हवो, अरे चुलणीपीता श्रावक ! मरणना इच्छनारा ! यावत जो तुं आ तारुं पौषधव्रत नहिं भांगे तो हुं आज तारी जे माता भद्रा सार्थवाहीणी जे देवगुरु समान छे अने दुक्कर करणीनी करनारी छे, तेने तारा घरथी लावीने तारी आगळ तेनी घात करीश अने तेना त्रण ककडा करीश, तेने तेलथी भरेली लोढानी कडाइमां तळीश; पछी ते मांस अने लोहीए करी तारा गात्रने सींचीश ! तेथी तुं आर्त्तरौद्र ध्याने अकाळे जीवतरथी रहित थइश ॥ १३५॥

अर्थः—॥ १३६ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । ते० ते । दे० देवताए । ए० एम । वु० कहे । स० थके । अ० अणवीहतो । जा० यावत । वि० विचरे ॥ १३६ ॥

---

१. F (एफ) सोल्लेए, G (जी) सोल्लउ २ B (बी.) आदाणं भ°. F (एफ.) अद्दाणभ°, G (जी) अणाण°. ३ A. B (ए. बी) कडाहियसि ४ B (बी) अद्देहेमि, F. (एफ) अदहिमि ५ D E G (डी. इ जी.) गात. ६. A. B. D. E. G H (ए बी. डी. इ जी. एच) आइंचामि. ७. D. (डी. मां नथी) Omit. ८. E, G. (इ. जी.) विवरो°.

मूळपाठः—॥ १३६ ॥ तए णं से चुलणीपिया[1] समणोवासए[1] तेणं देवेणं एवं वुत्ते [2]समाणे अभीए जाव* विहरइ ॥ १३६ ॥

भावार्थः—॥ १३६ ॥ ते वारे ते चुलणीपीता श्रावक ते देवनुं वचन सांभळी यावत निर्भयपणे धर्मध्यानने विषे विचरतो हवो ॥ १३६ ॥

अर्थः—॥ १३७ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवता । चु० चुलणीपीता । स० श्रावकने । अ० निर्भय । जा० यावत । वि० विचरतो । पा० देखे । पा० देखीने । चु० चुलणीपीता । स० श्रावकने । दो० बीजीवार । पि० वळी । त० त्रीजीवार । पि० वळी । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । त० तेमज । जा० यावत । व० जीवतव्य थकी चुकावीश (मारीश) ॥ १३७ ॥

मूळपाठः—॥ १३७ ॥ तए णं से देवे [3]चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव* विहरमाणं पासइ, पासित्ता चुलणीपियं समणोवासयं दोच्चं पि [4]तच्चं पि एवं वयासी ॥ "हं भो चुलणीपिया समणोवासया तहेव जाव+ ववरोविज्जसि[5] " ॥ १३७ ॥

---

१. F (एफ.) °पियं° सयं. २. D E. H. (डी. इ. एचमां नथी.) Omit. B. (बी.) जाव. * २६ पाठ जुओ. ३ A. B. (ए बी.) °पिता. * २६ पाठ जुओ. ४. D. E. G. H. (डी इ. जी. एचमां नथी.) Omit. तच्चं पि. + १३५ पाठ जुओ. ५ E. G. (इ जी.) विवरो°

भावार्थः-॥ १३७ ॥ ते वारे ते देवताए ते चुलणीपीता श्रावकने निर्भयपणे यावत धर्म-ध्यानने विषे विचरतो देखीने चुलणीपीता श्रावकने, बे वार, त्रणवार एम कहेतो हवो, अरे चुलणीपीता श्रावक ! यावत अकाळे जीवतरथी रहित यइश ॥ १३७ ॥

अर्थः-॥ १३८ ॥ न० ते वारे । णं० वळी । त० ते । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । ते० ते । दे० देवताए । दो० वीजीवार । पि० वळी । त० त्रीजीवार । पि० वळी । ए० एम । वु० कह्ये । स० थके । इ० एहवा । रू० प्रकारनो । अ० आश्चर्य थयो ५ । अ० अहो । णं० वळी । इ० ए । पु० पुरुष । अ० अनार्य । अ० अनार्य । बु० बुद्धिनो धणी । अ० अनार्य । आ० आचार (भूडां आचारनो धणी) । पा० पाप । क० कर्म । स० आचरे । जे० जेणे । म० मारा । जे० वडा । पु० पुत्रने । सा० पोताना । गि० घर थकी । नी० आणी । नी० आणीने । म० माहरे । अ० आगळ । घा० मारे । घा० मारीने । ज० जेम । क० कीधुं । त० तेम । चि० चींतवे । जा० यावत । गा० शरीरने । आ० सींचे । जे० जेणे । म० माहरो । म० वचलो । पु० पुत्रने । सा० पोताना । गि० घरथकी । जा० यावत । सो० लोही । य० वळी । आ० सींचे । जे० जेणे । म० माहरो । क० न्हानो । पु० पुत्र । सा० पोताना । गि० घरथकी । त० तेमज । जा० यावत । आ० छांटे । जा० जे । वि० य० णं० वळी । इ० ए । म० मारी । मा० माता नामे । भ० भद्रा । स० सार्थवाही । दे० देव । य० वळी । गु० गुरु समान । ज० माता । दु० दुक्करमां । दु० दुकर । का० कार्य करनार । तं० तेने । पि० य० णं० वळी । इ० इच्छे । सा० पोताना । गि० घर थकी । नी० आणीने । म० मारी । अ० आगळ । घा० मारवा । तं० तेने । से० श्रेय ।

ख० निश्चे । म० मुजने । ए० ए । पु० पुरुषने । गि० ग्रहवो । झालवो । त्ति० एम । क० करीने । उ० उठयो । से० ते । वि० य० वळी । आ० आकाशे । उ० गयो । ते० तेणे । ते देवने वदले । च० वळी । ख० थंभ । आ० झाल्यो । म० मोटा । म० मोटा । स० शब्दे । को० कोलाहल । क० कीधो ॥ १३८ ॥

मूळपाठः—॥ १३० ॥ तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं [1]दोच्चं पि [2]तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स [3]इमेयारूवे [4]अज्झत्थिए [5]५* । "अहो णं इमे[6] पुरिसे अणारिए[7] अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समायरइ[8], जेणं[9] ममं जेट्ठं[10] पुत्तं साओ[11] गिहाओ नीणेइ,[12] २ त्ता मम अग्गओ [13]घाएइ, २ त्ता जहा कयं तहा चिन्तेइ[14]

१. F. (एफ) दुच्चं. २. B E. (बी. इ. मां नथी.) Omit. तच्चं पि. ३. F. (इ. मां वधारे) adds जाव ४ A. B. (ए. बी) अज्झित्थिए ५. A has the numeral letter ह्=5 (ए मां) ह्=५ छे D. E. (डी इ मां) reads । B. (बी मा नथी.) Omit F has in full (एफ. मां पुरु छे.) चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जेत्था ' ६६ पाठ अने ७३ पाठ जुओ ६ F. (एफ. मां वधारे) add ण. ७. A (ए) अणायरिए, B (बी मां नथी) Omit. ८ A. B (ए. बी) समाचरइ, D (डी.) समाचरेइ, E. (इ.) समाचरए. ९ D. E. (डी. इ.) जेण. १० B. D E. F (बी. डी इ. एफ) जेट्ठपुत्त. ११. F (एफ.) सयाओ १२ B. D. E. G. (बी डी. इ जी.) नीणेमि १३ A. (ए) घाएमि. १४. D. E (डी. इ.) चिंचितइ

जाव+ गायं[1] आयञ्चइ,[2] जेणं[3] ममं[4] मज्झिमं[5] पुत्तं साओ गिहाओ[6] जाव+ सोणिएण[7] य आयञ्चइ,[8] जेणं[9] ममं[10] कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जाव+ आयञ्चइ, जावि य णं इमा[11] ममं माया भद्दा सत्थवाही देवयगुरुजणणी[12] दुक्करदुक्करकारिया,[13] तं पि य णं इच्छइ साओ[14] गिहाओ नीणेत्ता मम[15] अग्गओ [16]घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए[17]" त्ति कट्टु उद्धाइए,[18] से वि य [19]आगासे उप्पइए, तेणं[20] च [21]खम्भे

+ १३२ मो पाठ जुओ. १ F. (एफ.) गाइं, G. (जी.) गातं. २. A. B. E. G (ए. बी. इ. जी.) आइंचइ, F. (एफ.) आयंचेइ. ३. D. E (डी इ.) जेणेव. ४. B D. E. (बी डी. इ.) मम. ५. B (बी.) मज्झिमपुत्तं. ६ F. (एफ. मां वधारे) नीणेइ. ७. A. (ए. मां नथी.) Omit सो ० य E (इ.) सोणि यं. ८. A. B. D. E. G. (ए. बी. डी. इ. जी.) आइंचइ, F. (एफ) आयचेइ. ९. E. (इ) जेणेव. १०. A. D. E. (ए डी. इ.) मम. ११. F. (इ) इमं. १२ A. (ए.) देवतं गुरुजणणी, B. (बी.) देवतं गुरुं जणणी; F. (एफ.) देवयं गुरु जणणी; D. E. (डी. इ.) देवत गरुं जणणिं, G. (जी.) देवतं गुरुजणणं. १३. A. B. D. E G (ए. बी. डी. इ. जी) ० कारियं १४. F (एफ.) सयाओ. १५. F. (एफ.) ममं १६. B. E. (बी. इ.) घाइत्तए. १७. B E (डी इ) गिण्हेत्तए. १८. A. (ए.) उद्धाएइ. १९. F (एफ.) अगासे. २०. A. (ए) तेण व, B. (बी) तेणं व, D. E. (डी. इ.) तेण य, F. (एफ.) तेणेव; G. (जी.) तेणे य. २१ A. (ए.) खंभं.

आसाइए,[1] महया महया सद्देणं कोलाहले [2]कए ॥ १३८ ॥

भावार्थः—॥ १३८ ॥ ते चुलणीपीता श्रावकने देवतानु बे वार, त्रण वार, एवुं वचन सांभळीने (आगळ कहीशुं) तेवा प्रकारनो अध्यवसाय–चिंतवणा–प्रार्थना मनने विषे एवी अभिलाषा उत्पन्न थइ. अहोहो! (अरेरे!) ए पुरुष केवो अनार्य छे? अनार्य पाप बुद्धिए करी सहित भुंडा पाप कर्म करे छे! जेणे मारा म्होटा पुत्रने मारा घरथी लावी यावत रुधीर मांसे करी मारा गात्रने सींच्युं, तेमज मध्यम अने नाना पुत्रने पण मारा घरथी लावीने यावत मारा शरीरने सींच्युं अने हवे देवगुरु समान दुष्कर करणीनी करनार मारी भद्रा सार्थवाही माताने पण मारा घरथी आणी मारी पासे तेनी घात करवा इच्छे छे। अने ते मारा घरथी लावीने मारी माताने मारी पासे जरुर मारशेज! तेथी श्रेय छे निश्चे मारे ए पुरुषने पकडवो. एम चिंतवीने ते देवताने झालवा माटे उठयो, ते वारे ते देवता आकाश मार्गे चाल्यो गयो अने चुलणीपीता श्रावक त्यां थांभलो हाथ आववाथी तेने पकडीने म्होटे म्होटे शब्दे कोलाहल करी (बराडा पाडी) रोवा लाग्यो ॥ १३८ ॥

अर्थः—॥ १३९ ॥ त० ते वारे। णं० वळी। सा० ते। भ० भद्रा। स० सार्थवाही। तं० ते। को० कोलाहल। स० शब्द। सो० सांभळी। नि० विचारीने। जे० ज्यां। चु० चुलणीपिता। स० श्रावक। ते० त्यां। उ० आवे। उ० आवीने। चु० चुलणीपिता। स० श्रावकने। ए० एम। व० कयुं। कि० केम। पु० हे दीकरा। तु० तमे। म० मोटे। म० मोटे। स० शब्दे। को० कोलाहल। क० कर्यो ॥ १३९ ॥

मूळपाठः—॥ १३९ ॥ तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं [1]कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव [2]चुलणीपिया [2]समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, २त्ता चुलणीपियं [3]समणोवासयं एवं वयासी । " किसं, पुत्ता, [4]तुमं महया महया सद्देणं कोलाहले कए ? " ॥ १३९ ॥

भावार्थः—॥ १३९ ॥ ते वारे ते भद्रा सार्थवाहीए ते कोलाहल शब्द सांभळी, हैयामांहि धारीने ज्यां चुलणीपीता श्रावक हतो त्यां जइने चुलणीपीता श्रावकने एम कहेती हवी, अरे पुत्र ! आ म्होटे म्होटे शब्दे करी केम तमे कोलाहल करोछो ? ॥ १३९ ॥

अर्थः—॥ १४० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । अ० माता । भ० भद्रा । स० सार्थवाहीने । ए० एम । व० कहे । ए० एम । ख० निश्चे । अ० हे माता । न० न । जा० जाणुं । के० कोइ । पु० पुरुष । आ० क्रोधातुर थयो ५ । ए० एक । म० मोटो । नी० नीलोत्पल कमल सरीखो । जा० यावत । अ० खड्ग (तरवार) । ग० ग्रहीने । म० मने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । अ० अपार्थना । प० प्रार्थनार ४ । व० लज्जारहित । ज० जो । णं० वळी । तु० तुं । जा० यावत । व० मरीश । अं० हुं । तें० ते । पु० पुरुषे । ए० एम । वु० कह्यो । स० थके । अ० अणवीहतो । जा०

१. F. (एफ) कोलाहलं सद्दं. २ D. E (डी. इ) ° पियं ° सयं. ३. G. (जी. वधारे) inserts सद्दावेइ ४. D. E. F. G. (डी इ एफ. जी.) तुमे.

यावत । वि० विचरुं । त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । पु० पुरुष । म० मुजने । अ० अणवीहतो । जा० यावत । वि० विचरतो थको । पा० देखे । पा० देखीने । म० मुजने । दो० ने वार । पि० वळी । त० त्रणवार । पि० वळी । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । त० तेमज । जा० यावत । गा० गात्र–शरीर । आ० सींचीश । त० ते वारे । णं० वळी । अ० हुं । तं० ते । उ० दुखकारी । जा० यावत । अ० वेदना सही । ए० एम । त० तेमज । उ० पूर्वली पेरे आल्यावो केहेवो । स० सर्व । जा० यावत । क० न्हानो । जा० यावत । आ० सींचे । अ० एम । तं० ते । उ० अणसेहवा योग्य । जा० यावत । अ० वेदना सही । त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । पु० पुरुष । म० मने । अ० अणवीहतो । जा० यावत । पा० देखे । पा० देखीने । म० मुजने । च० चोथीवार । पि० वळी । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । अ० मरणनो वांछक । जा० यावत । न० नहिं । भं० भांजे । तो० तो । ते० ते । अ० आज । जा० जे । इ० तारी । मा० माता । गु० गुरु समान । जा० यावत । व० जीवतव्यथी चुकीश–मरीश । त० ते वारे । णं० वळी । अ० हुं । ते० ते । पु० पुरुषे । ए० एम । वु० बोले । स० थके । अ० अणवीहतो । जा० यावत । वि० विचरुं । त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । पु० पुरुषे । दो० बीजीवार । पि० वळी । त० त्रीजीवार । पि० वळी । म० मुजने । ए० एम । व० कह्युं । हं० हे । भो० अरे । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । अ० आज । जा० यावत । व० जीवथी मुकावीश । त० ते वारे । णं० वळी । ते० ते । पु० पुरुषे । दो० त्रीजीवार । पि० वळी । त० त्रीजीवार । पि० वळी । म० मुजने । ए० एम । वु० कहेतो । स० थको । इ० एहवा प्रकारनो । अ० त्रि-

चार उपनो ५ । अ० अहो । णं० वळी । इ० ए । पु० पुरुषे । अ० अनार्ये । जा० यावत । स० ए काम समाचरे (आदरे) । जे० जेणे । म० मारो । जे० मोटो । पु० पुत्र । सा० पोताना । गि० घरथी । त० तेमज । जा० यावत । क० नाह्नो । जा० यावत । आ० सींचे । तु० तमने । वि. य. णं० वळी । इ० वांछे । सा० पोताना । गि० घर थकी । नी० आणीने । म० मारी । अ० आगळ । घा० हणवो । तं० ते । से० श्रेय । ख० निश्चे । म० मुजने । ए० ए । पु० पुरुषने । गि० पकडवो । त्ति० एम । क० कही । उ० उठयो-धायो । से० ते । वि. य. वळी । आ० आकासे । उ० गयो । म० मे । त्रि० य. वळी । खं० स्थंभने । आ० झालयो पकडयो । म० मोटे । म० मोटे । स० शब्दे । कों० कोलाहल । क० कीधो ॥ १४० ॥

मूळपाठः—॥ १४० ॥ तए णं से चुलणीपिया[१] समणोवासए[१] [२]अम्मयं जहं [३]सत्थवाहिं एवं वयासी । " एवं खलु, [४]अम्मो, न [५]जाणामि, केवि पुरिसे [६]आसुरत्ते [७]५ [८]एगं महं नीलुप्पल "जाव" असिं गहाय ममं एवं वयासी, " " हं भो चुलणीपिया

१. F (एफ.) ° पियं ° सयं. २ A B F G. (ए बी. एफ जी.) अमयं. ३. F. (एफ) भद्दां ° वहीर्णी ४. B. (बी.) अम्मे; ५ A (ए.) पाणामो, B. (बी) याणामि F. (एफ.) गामोमि, G. (जी) यणिमि ६. A. B. F. G (ए बी एफ. जी) आसुरुत्ते. ७. F. (एफ. मां पुरु.) in full मिसिमिसे तिव्वे चडे कोविए × ९५ पाठ जुओ. ८. A B D. E. F. G (ए. बी डी. इ. एफ जी. मां नथी.) Omit.

[1]समणोवासया, अपत्थियपत्थिया [2]४* वज्जिया, जइ णं तुमं जाव+ [3]ववरोविज्जसि ""। [4]अहं तेणं पुरिसेणं[5] एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव+ विहरामि। तए णं से पुरिसे[6] ममं[7] अभीयं जाव+ विहरमाणं पासइ, २ त्ता [8]ममं दोच्चंपि तच्चंपि एवं [9]वयासी, ""हं भो चुलणीपिया समणोवासया, "" तहेव [10]जाव[§] गायं[11] आयञ्चइ[12]। तए णं अहं तं उज्जलं जाव+ अहियासेमि। एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव+ [13]आयञ्चइ। अहं तं उज्जलं जाव+ अहियासेमि। तए णं से [14]पुरिसे [15]ममं अभीयं जाव पासइ, २ त्ता ममं[16]

१. A B. D. E. (ए. बी. डी इ. मां नथी.) Omit २. A. (ए) has the numeral letter ह=5; B. (बी मां नथी.) Omit; F. (एफ) read in full दुरंतपंतलक्खणा, हीणपुण्णचाउद्दसिया हरीसिरीपरिवज्जिया. + ९५ पाठ जुओ. ३. E. G (इ. जी.) चियरो°. ४. D. E. G (डी. इ. जी.) prefix तए णं (आ शब्द पहेलो छे.) ५. A B. D E F. G (ए बी. डी इ. एफ. जी.) देवेणं, ६. D. E F. G. (डी इ. एफ जी.) देवे ७ D. E F. (डी. इ. एफ.) मम. + ९६ पाठ जुओ ८. A. (ए.) मम. ९ D. E (डी. इ.) वयासि. १०. E. (इ. मां नथी.) Omit § १३१–१३२ पाठ जुओ. ११. E. (इ.) गाइं. १२ A. B. (ए. बी) आसिचइ. D. E G. (डी. इ. जी.) आइंचइ * १११ नी टीकामां छे. + १३४–१३२ पाठमां छे. १३. A. B. (ए. बी.) आसिचइ. D E. G. (डी. इ जी.) आइंचइ. १४. A. B D. E. F. G. (ए. बी. डी. इ. एफ. जी.) देवे. १५. A. (ए.) मम, B. (बी.) इमं. ॥ ९६ पाठ जुओ.

चउत्थं पि एवं वयासी,[1] " "हं भो चुलणीपिया समणोवासया[2], अपत्थियपत्थिया,[3] जाव* न भञ्जसि, तो[4] ते [5]अज्ज जा इमा माया [6]गुरु जाव‖ ववरोविज्जसि" "। तए णं अहं तेणं [7]पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव‡ विहरामि। तए णं से [8]पुरिसे दोच्चं पि तच्चं पि [9]ममं एवं वयासी, " "हं भो चुलणीपिया समणोवासया[10] अज्ज जाव‖† ववरोविज्जसि" "। तए णं तेणं[11] पुरिसेणं[12] दोच्चं पि तच्चं पि ममं[13] एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[13] ५*, " "अहो णं इमे पुरिसे [14]अणारिए जाव+ समायरइ,[15]

१. A. D. (ए डी) वदासि, E (इ) वयासि २ A B. D E (ए बी डी इ. मां नथी.) Omit ३. A B (ए बी) °पत्थया *९५ पाठ जुओ ४ E (इ.) तओ. ५ F (एफ.) अज्जो. ६. A. (ए.) गुरू. ‖ १३५ पाठ जुओ ७ A B (ए बी मां नथी) Omit. D E. F. (डी इ एफ.) देवेणं. ‡ ९६ मो पाठ. ८. A. B D E. F G. (ए. बी. डी इ एफ जी) देवे ९ A (ए) मम. १०. A. B. F. G. (ए बी एफ जी.) से, D E. (डी. इ) prefix अह ‖+ ९५ ने १३५ जुओ ११. A F. (ए एफ) देवे. B. D E. G (बी. डी इ. जी) देवेणं. १२. D. E. (डी इ मा नथी) Omit दो° पि त° पि ममं ‖ १३ D. (डी.) ४, E (इ मा नथी.) Omit F (एफ मा पुरं) पत्थिए चिंतिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था. * ६६ पाठ जुओ. १४. A. (ए.) अणायरिए. + १३८ पाठ जुओ १५ D. E. (डी. इ.) समायरए.

जेणं ममं[1] जेट्ठं[2] पुत्तं [3]साओ गिहाओ तहेव जाव कणीयसं जाव[4] आयञ्चइ,[5] तुञ्भे वि य णं इच्छइ साओ [6]गिहाओ नीणेत्ता[7] मम[8] अग्गओ घाएत्तए, तं [9]सेयं खलु ममं एयं पुरिसं [9]गिण्हित्तए"[10] त्ति कट्टु उट्ठाइए, से वि [10]य [11]आगासे [12]उप्पइए, मए[13] वि य खम्भे [14][15]आसाइए, महया महया सद्देणं कोलाहले कए" ॥ १४० ॥

भावार्थः—॥ १४० ॥ ते वारे ते चुलणीपीता श्रावक माता भद्रा साथे वाडी मल्ये एम कहेतो हवो एम निश्चे हे माता हुं न जाणुं के ए पुरुष कोण हतो. ते पुरुष नित्र कोपी, त्रण लींटी कपाले चडावीने एक मोटी निलोत्पल सरीखी तरवार ग्रहीने मुजने एम कहेतो हवो, अरे चुलणीपीता श्रावक! मरणना इच्छनारा यावत जो तुं पोषो नहिं भांगे तो यावत अकाले जीवनरथी रहित थइश! एवुं देवतानुं वचन सांभळी हुं निर्भयपणे

१. F. (एफ) मम २ B. D. E. F. (बी. डी इ एफ) जेट्ठपुत्तं. ३ F (एफ.) नयाओ ॥ १३१-१३२ पाठ जुओ. ४ A. B. D. E. G (ए बी. डी. इ. जी.) आइच्इ. ५ D. E. (डी. इ. मां वधारे) जाव. ६. F. (एफ,) नीणित्ता ७ F. (एफ) ममं ८ F. (एफ) मियं ९. D (डी.) गेण्हेत्तए. १०. D. E. (डी. इ. मा वधारे) add से F (एफमां वधारे) adds ण. ११ E. G (इ. जी.) अगासे. १२. A. (ए.) उपेतिते. E. (इ.) उपणतिते. १३ D. E. (डी. इ.) ममए. १५. D. E. (डी. इ.) आसाहिते.

धर्म ध्यानने विषे विचरतो हवो. ते वारे ते पुरुषे मुजने निर्भयपणे विचरतो देखीने बे वार, त्रण वार एम कह्युं, तेमज म्होटा पुत्रने मारीने तेनां लोही मांसे करी मारुं गात्र सींच्युं. ते उजळी वेदना में सहन करी, तेमज वचला अने नाना पुत्रने मारी मारुं गात्र सींच्युं ते उजळी वेदना पण में सहन करी, ते वारे ते पुरुषे मने भय रहित विचरतो देखीने चोथीवार मुजने एम कहेतो हवो, अरे चुलणीपीता श्रावक ! मरणना इच्छनारा ! जो तुं तारुं व्रत नहि भांगे तो हुं आज तारी माता जे देव गुरु समान छे तेने तारी आगळ मारीश ! अने तेना लोही मांसे करी तारा गात्रने सींचीश ! तेथी तुं आर्त्त रौद्र ध्याने अकाळे जीवतरथी रहित थइश !

ते वारे ते पुरुषे एम कह्ये थके, हुं निर्भयपणे विचरतो हवो. ते वारे ते पुरुषे बे त्रण वार एम मने कहेवाथी मारा मनमां एवो अध्यवसाय, प्रार्थना, चिंतवणा, सकल्प, उत्पन्न थयो के अहो हो ! ए पुरुष अनार्य यावत अनार्य पाप कर्म समाचरे छे के जेणे म्हारा मोटा वचला अने नाना पुत्रने मारा घरथी लावी, मारी पासे मारी यावत मारा गात्रने सींच्युं अने हे मातां ! तमने पण आपणा घरथी लावीने मारी पासे घात करवा इच्छे छे ! तो श्रेय छे, निश्चे ए पुरुषने मारे पकडवो, एम करीने उठयो ते वारे ते पुरुष आकाशमार्गे गयो अने मारा हाथमां थांभलो आव्यो तेथी में म्होटे म्होटे शब्दे कोलाहल कर्यो. ॥ १४० ॥

अर्थः—॥ १४१ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । सा० ते । भ० भद्रा । स० सार्थवाही । चु० चुलणीपिता । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । नो० नथी । ख० निश्चे । के० कोइ । पु० पुरुष । त० तारा । जा० यावत । क० लघु । पु० पुत्रने । सा० पोतानां । गि० घर थकी । नी० आणी । नी० आणीने । त० तारी । अं० पासे ।

घा० हण्यो । ए० एहवुं । न० नथी । के० कोइ । पु० पुरुष । त० तमने । उ० उपसर्ग । क० करवा आव्यो हशे । ए० एनो । णं० वळी । तु० तमने । वि० पण । द० दर्शन । दि० दिठो । तं० ते माटे । णं० वळी । तु० तमे । इ० ए । भ० भांग्यो । व० व्रत । भ० भांग्यो । नि० नियम । भ० भांग्यो । पो० पोषध विराध्यो । वि० विचरो छो । तं० ते माटे । णं० वळी । तु० तमे । पु० हे पुत्र । ए० एह पापना । ठा० ठाम । आ० आलोइ । जा० यावत । प० प्रायश्चित लीओ ॥ १४१ ॥

मूळपाठः—॥ १४१ ॥ तए णं सा भद्दा सत्थवाही[1] चुलणीपियं[2] समणोवासयं एवं वयासी । " नो खलु केइ पुरिसे तव जाव* कणीयसं पुत्तं [3]साओ गिहाओ नीणेइ, २ त्ता तव अग्गओ घाएइ, एस [4]न केइ पुरिसे तव उवसग्गं [5]करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे । तं [6]णं तुमं [7]इयाणिं [8]भग्गव्वए भग्गनियमे भग्गपोसहे [9]विहरसि । तं णं तुमं, पुत्ता, एयस्स ठाणस्स[10] आलोएहि जाव+ पडिवज्जाहि[11] " ॥ १४१ ॥

१. D. E (डी इ. मा नथी.) Omit. २. F (एफ) चुलणिप्पियं. * १३२–१३४ पाठ जुओ ३ F. (एफ) सयाओ ४ A. D. E. F G (ए. डी. इ. एफ जी.) ण, B (बी.) ण. ५ F. (एफमा वधारे) add २ त्ता. ६. A (ए.) तेणं, B. (बी) तेण्णं E. (इ.) तए णं, F. (एफ.) तिण्णं. G (जी.) तणं ७. A. D, (ए डी.) इदाणिं ८. A. (ए) भगावते, D. (डी. भग्गवते) E. (इ.) भग्गवया. F. (एफ.) भग्गवए. ९. A. (ए.) विहरतिसि; D. (डी) विहरति. १० F D. (एफ डी) ट्ठाणस्स + उमेरो पडिक्कमाहि अने पडिक्कमिज्जइ. ११. G. (जी.) परिवज्जेहि.

भावार्थः—॥ १४१ ॥ ते वारे ते भद्रा सार्थवाही ते चुलणीपिता श्रावकने एम कहेती हवी. अरे पुत्र ! तारा मोटा, वचला अने नाना पुत्रने आपणा घरथी लावीने तारी पासे बिलकुल मार्या नथी ए तु निश्चेथी जाणजे. ए कोइ पुरुष तने उपसर्ग करे छे. एनुं स्वरुप जोइने तमे जे कोलाहल कर्यो तेथी हमणां ए तमारा स्थुलादिक व्रत भांग्यां तेमज तमारा पौषध व्रत पण भांगी तुं विचरे छे तेथी हे पुत्र ! तमे ए पापना स्थानकने आलोवो यावत प्रायश्चित अंगिकार करो. ॥ १४१ ॥

अर्थः—॥ १४२ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । अ० माता । भ० भद्रा । स० सार्थवाहीने । त० तमे कह्युं ते साचुं । त्ति० वळी । ए० एहवो । अ० अर्थ । वि० विनयथी । प० सांभळे । प० सांभळीने । त० ते । ठा० स्थानकने । आ० आलोइने । जा० यावत । प० प्रायश्चित लीए ॥१४२॥

मूळपाठः—॥ १४२ ॥ तए णं से चुलणीपिया समणोवासए [1]अम्मगाए भद्दाए सत्थ-[2]वाहीए " तह " त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, २त्ता तस्स ठाणस्स[3] आलोएइ जाव[*] [4]पडिवज्जइ ॥ १४२ ॥

१. F (एफ) अम्मग्गाए (संस्कृत अम्बकाया) D. E (डी. इ.) अम्माए, G. (जी.) अंमयाए. २. A. (ए. मां नथी.) Omit F. (एफ. मां वधारे) add वयणं ३. D. E. F (डी. इ एफ.) ट्ठाणस्स. * उभेरो पडिक्कमाहि अने पडिक्कमिज्जइ. ४. D. E. (डी इ) ° वज्जेइ, A. (ए.) ° वज्जसि.

भावार्थः—॥ १४२ ॥ ते वारे ते चुलणीपिता श्रावक, माता भद्रा सार्थवाहीनुं वचन तहेत (प्रमाण) करे अने ए अर्थ विनये करी सांभळीने ते पापना स्थानकने आलोवे यावत प्रायश्चित अंगिकार करे. ॥ १४२ ॥

अर्थः—॥ १४३ ॥ त० ते वार । णं० वळी । से० ते । चु० चुलणीपिता । स० श्रावक । प० प्रथम । उ० श्रावक । प० पडिमा । उ० अंगिकार करी । वि० विचरे । प० प्रथम । उ० उपासक । प० पडिमा । अ० जेम । सु० सूत्रमां कही वीतरागे । ज० जेम । आ० आणन्दे । जा० यावत । ए० अगियार प्रतिमा वही । वि० तेम ॥१४३॥

मूळपाठः—॥ १४३ ॥ तए णं से चुलणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ[1] । पढमं उवासगपडिमं [2]अहासुत्तं जहा आणन्दो[3] जाव* एक्कारस वि ॥ १४३ ॥

भावार्थः—॥ १४३ ॥ ते वारे ते चुलणीपिता श्रावक प्रथम श्रावकनी प्रतिमा (अभिग्रह) अंगिकार करे अने जेम शास्त्रमां कह्युं छे तेज प्रमाणे वहन करे; जेम आणंद श्रावके अंगिकार करी तेज प्रमाणे इग्यारे प्रतिमा वही ॥ १४३ ॥

१ A. (प.) विहरंति. २. G. (जी) Omit पढमं उवा० अहा०, H. (पच.) reads, २ अहासुत्तं. ३. G. H. (जी. पच.) आणंदे. * ७०, ७१ पाठ जुओ

अर्थः—॥ १४४ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । चु० चुलणीपित्ता । स० श्रावक । ते० ते । उ० उग्र तपे करी । उदारिक शरीर दुर्वळ थयो । ज० जेम । का० कामदेव । जा० यावत । सो० सुधर्म । क० देवलोक । सो० सुधर्म । व० वंतसक एहवे नामे । म० मोटुं । वि० वेमान थकी । उ० उत्तर । पु० पुर्व वचलो इशान खूणे । अ० अरुण । प्प० प्रभ नामे । वि० विमाने । दे० देवतापणे । उ० उपनो । च० चार । प० पल्योपम । ठि० स्थिति । प० कही । म० महा । वि० विदेह । वा० वासे । सि० मोक्ष जाशे ५ ॥ १४४ ॥

मूळपाठः—॥ १४४ ॥ तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं[1] उरालेणं जहा कामदेवो[2] जाव[+] सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं[3] [4]अरुणप्पभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । चत्तारि[5] पलिओवमाइं [6]ठिई पण्णत्ता । महाविदेहे [7]वासे सिज्झिहिइ[8] [9]५[†] ॥ १४४ ॥

१. F. (एफ) तयेणं. २ A. B. D E. F H. (ए बी. डी. इ. एफ. एच) ° देवे. + ७२, ८९ मा जुओ. ३. A. (ए.) ° पुरित्थमेणं, D E. H. (डी. इ. एच.) ° पुरच्छिमेणं. F. (एफ.) ° पुरित्थिमेणं, G. (जी) ° पुरुच्छमेणं. ४. E. (इ. मां वधारे) adds नामे ५. F. (एफमां वधारे) prefixes तेणं देवेणं ६. A. (ए) ठ्ठिई, E (इ.) ठिइ; F (एफ) ठ्ठिइ. ७ A. B (ए बी. मां नथी.) Omit. ८. B. E. (बी. इ.) सिज्झहिंति. ९ A. B. (ए बी. मां नथी.); F (एफ मां पुरु) in full. बुज्झिहिंति मुच्चेहिंति परिनिव्वाएहिंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिंति † उववाइ ११६ पाठ, भगवती ३०३, ३०४ पाठ जुओ.

भावार्थः—॥ १४४ ॥ ते वारे ते चुलणीपिता श्रावक ते उदार (श्रेष्ट) तपश्चर्याए करी तेनुं शरीर सुकाणुं यावत जेम कामदेवनी पेरे मरणने अंते अणसण लइ पहेला सौधर्म देवलोके सौधर्म वितंसक नामे म्होटा विमानथी इशान खूणे अरुण प्रभ विमाने देवपणे उपन्यो. ते देवनी चार पल्योपमनी स्थिति परुपी छे अने त्यांथी मरीने महाविदेह क्षेत्रमांहि सीझशे यावत सर्व दुःखनो अंत करी मोक्ष जशे ॥ १४४ ॥

अर्थः—॥ नि० समाप्त ॥ स० सातमा । अ० अंग । उ० उपासग । द० दशांगनुं । त० त्रीजुं । अ० अध्ययन ! स० समाप्त ॥ ७ ॥ ३ ॥

मूळपाठः—॥ निक्खेवो ॥ सत्तमस्स [1]अङ्गस्स उवासगदसांणं [2]तइयं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥ ३ ॥

भावार्थः—॥ ए चूलणीपिता श्रावकनो अधिकार पुरो थयो ॥ इति सातमा अंग उपासक दशानुं त्रीजुं अध्ययन पुरुं थयुं ॥ ७ ॥ ३ ॥

---

१. A. B. D. E. F. G H. (ए. बी. डी. इ. एफ. जी. एच. मां नथी.) Omit सत्त० अङ्ग०
२. G. (जी.) तीज.

॥ [1]चउत्थं अज्झयणं ॥

॥ चोथुं अध्ययन ॥

अर्थः—॥ उ० शरुआत । च० चोथा । अ० अध्ययननी ॥

मूळपाठः—॥ उक्खेवउ[2] चउत्थस्स अज्झयणस्स[3] ॥

भावार्थः—चोथुं अध्ययन शरु ॥

अर्थः—॥ १४५ ॥ ए० एम । ख० निश्चे । जं० हे जम्बू । ते० ते । का० काळे । ते० तेणे । स० समे । वा० वाणारसी । ना० नामे । न० नगरी । को० कोठग । चे० उद्याननेे यक्षनुं देरु । जि० जित शत्रु । रा० राजा । सु० सुरादेव । गा० गाथापति । अ० धनवंत । छ० छ । हि० हिरण । सोनानी । को० कोडी । जा० यावत । छ० छ । व० वर्ग । द० दस । गो० गाय । सा० सहस्त्रनो । व० एक वर्ग । ध० धना नामे । भा० भार्या । सा० स्वामि । स० पधार्या । ज० जेम । आ० आणंद । त० तेम । प० पडिवर्जे । गि० गृहस्थ धर्म । ज० जेम । का०

---

१ प्रतोमां आ शब्दो लखेला नथी. २. E (इ.) उक्खेवो. ३ A. B. D. E F. G. (ए बी डी. इ. एफ. जी मा नथी.) Omit.

कामदेव । जा० यावत । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरे । ध० धर्म । प० परूप्यो ते । उ० अंगिकार करीने । वि० विचरे ॥ १४५ ॥

मूळपाठः—॥ १४५ ॥ एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं बाणारसी नामं[1] [2]नयरी । कोट्ठए चेइए । [जियसत्तू राया । [3]सुरादेवे [4]गाहावई [5]अड्ढे । छ हिरण्णकोडीओ[6] जाव* छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । धन्ना[7] भारिया । सामी समोसढे[8] । जहा[9] [9]आणन्दो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं । जहा [10]कामदेवो [11]जाव* समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ १४५ ॥

१. B. D E. G H. (बी. डी. इ. जी. एच. मां नथी.) Omit. २. B. H. (बी एच.) नगरी ३. F (एफ मां वधारे) adds नामं. ४. F. (एफ. मां वधारे) adds परिवसइ. ५. D. E. (डी. इ. मां वधारे) adds दित्ते, F (एफ. मां वधारे) adds वित्ते अपरिभूए, G. (जी. मां नथी.) Omit. ६. D. E. (डी इ. मां वधारे.) add निहाणपत्ताओ. * ९२ मो पाठ जुओ. ७, A. B. (ए. बी. मां प्रथम छे.) prefix तए णं, A. D. E F. H (ए डी इ. एफ एच,) धण्णा. ८. D E. (डी. इ.) सढो. G. (जी.) समोसढो; H (एच) समोसढ़ो + १०, ६५ पाठ जुओ. ९ A B. (ए. बी.) आणंदे. १०. B. (बी.) कामदेवे. ११ A. (ए. मा नथी.) Omit. * ९२ पाठ ने ६६, ६९ पाठ जुओ.

भावार्थः—॥ १४५ ॥ एम निश्चे हे जंबू ! ते काळ ते समयने विषे वाणारसी नामे नगरी हती. त्यां कोष्टक नामे वन हतुं. ते नगरीनो जीत शत्रु नामे राजा हतो. त्यां सुरादेव नामे गाथापति वसतो हतो. ते रुद्धिए करी सहित होवाथी तेने कोइ पराभवी शके नहिं. तेने छ कोडी सोनैया धरती मांहि दाटेला हता, छ क्रोडी सोनैया व्यापारमां वृद्धिए हता अने छ क्रोडी सोनैयानो घरवाखरो हतो. दशहजार गाए एक गोकुळ थाय तेवा छ गोकुळ हता अने तेने धना नामे स्त्री हती. त्यां श्रमण भगवंत श्री महावीरदेव समोसर्या. जेम आणंद श्रावके व्रत अंगिकार कर्यो, तेम सुरादेवे पण गृहस्थनो धर्म अंगिकार कर्यो. कामदेवनी पेरे यावत श्रमण भगवंत श्री महावीरनो परूपेलो धर्म अंगिकार करीने विचरतो हवो. ॥ १४५ ॥

अर्थः—॥ १४६ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । त० ते । सु० सुरादेव । स० श्रावकने । पु० मध्य रात्रिने । स० समे । ए० एक । दे० देवता । अ० समीपे । पा० प्रगट थयो ॥ १४६ ॥

मूळपाठः—॥ १४६ ॥ तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं [1]पाउब्भविठ्ठा ॥ १४६ ॥

भावार्थः—॥ १४६ ॥ ते वारे मध्यरात्रिना समये सुरादेव श्रावकनी पासे एक देवता प्रगट थयो ॥ १४६ ॥

अर्थः—॥ १४७ ॥ से० ते । दे० देव । ए० एम । म० मोटो । नी० कमल सरीखो । जा० यावत । अ०

१. B. F. (बी. एफ.) पाउभवित्था.

तरवार खड्ग । ग० लइने । सु० सुरादेवनामा । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । मु० सुरादेव । स० श्रावक । अ० अणवाछना वांछणहार । मरणना वांछक ४ । ज० जो । णं० वळी । तु० तुं । सी० सीलव्रत आचार । जा० यावत । न० नहिं । भ० भांगे । तो० तो । ते० तारा । जे० वडा । पु० पुत्रने । सा० तारा । गि० घरथी । नी० आणीश । नी० आणीने । त० तारी । अ० आगळ । घा० हणीश । घा० हणीने । पं० पांच । सो० मांसना कटका । क० करीश । आ० तेल उदकनो । क० कडाहमांहे । अ० तळोश । अ० तळीने । त० तारा । गा० गात्रने । मं० मांसथी । य० वळी । सो० लोहीथी । य० वळी । आ० छांटीश । ज० जेम । णं० वळी । तु० तुं । अ० अकाळे । चे० वळी । जी० जीवतव्यथी । व० चुकीश । मरीश । ए० एम । म० वचलो बेटो । क० नाहनो पुत्र । ए० एकेकना । पं० पांच । सो० कटका । त० तेमज । क० करे । ज० जेम । चु० चुलणीपिताने उपसर्ग कर्यो तेम । न० एटलो विशेष । ए० एकेकना । पं० पांच । सो० कटका ॥ १४७ ॥

मूळपाठः—॥ १४७ ॥ से देवे एगं महं नीलुप्पल जाव[+] असिं गहाय [1]सुरादेवं समणोवासयं[1] एवं [2]वयासी । "हं भो सुरादेवा[3] समणोवासया[4], [5]अपत्थियपत्थिया [6]४[+], जइ णं तुमं सीलाइं जाव[+] न भञ्जसि, तो ते[7] जेट्ठं[8] पुत्तं [9]साओ गिहाओ नीणेमि, २ त्ता

१. F. (एफ.) °देवस्स °समस्स. २ B, (बी.) वयासि. D (डी.) वदासी ३. F. (एफ) °देवे °सप. ४. B. D. E. (बी. डी इ) Omit. ५. A. (ए.) °पत्थया, ६ A. (ए मां छे) ह्=5. + ९५ मांथी जुओ. ७. D (डी. मां नथी.) Omit. ते. E. (इ) तओ for तो ते. ८. D. E. F. (डी. इ. एफ.) जेट्ठपुत्तं. ९. F. (एफ.) सयाओ

तव अग्गओ घाएमि, २ त्ता पञ्च सोल्लए करेमि, आदाणभरियंसि[1] कडाहयंसि[2] अद्दहेमि, २ त्ता तव [3]गायं मंसेण य सोणिएण य [4]आयञ्चामि, जहा णं [5]तुमं अकाले चेव[6] जीवियाओ ववरोविज्जसि" ॥ एवं [7]मज्झिमयं, कणीयसं; एक्केक्के पञ्च सोल्लया। तहेव करेइ, जहा चुलणीपियस्स*; नवरं एक्केक्के पञ्च सोल्लया ॥ १४७ ॥

भावार्थः—॥ १४७ ॥ ते देवताए एक निलोत्पल जेवी यावत तरवार लइने सुरादेव श्रावकने एम कहेतो हवो। अरे सुरादेव श्रावक! मरणना वांच्छनारा! जो तुं आ तारा शीलव्रतादिक नहिं भांगे तो तारा मोटा पुत्रने तारा घरथी लावीने तारी आगळ मारीश अने तेनां पांच पांच ककडा करीने तेलनी कडाइमां तळीने ते लोही मांसे करी तारा गात्रने सींचीश! तेथी तुं अकाळे जीवतरथी रहित थइश! जेम चुलणीपिता पासे कर्युं तेज प्रमाणे सुरादेवना मोटा, मध्यम अने नाना पुत्रना पांच पांच ककडा करे तेमां एटलोज फेर छे के चुलणी पिताना पुत्रना त्रण त्रण ककडा करीने देखाडया अने सुरादेवना पुत्रना पांच पांच ककडा करी वताव्या बाकी सर्व सरखुं जाणवुं ॥ १४७ ॥

१. A. B. D. E G (ए. बी. डी इ. जी.) आयाण°. २ D. E (डी. इ) कडाहगंमि. ३ G. (जी.) गातं. ४. A. B D. E. G. (ए बी, डी इ. जी.) आइंचइ. ५ A. (ए.) तुं. ६ B D. E. G. (बी. डी. इ. जी.) जाव f01 चेव जीवि°. ७. F G (एफ. जी.) मज्झिमं. * १३२-१३४ पाठ जुओ.

मूळपाठ—॥ १५० ॥ [1]एवं देवो दोच्चंपि तच्चंपि जणइ जाव+ "ववरोविज्जसि" ॥१५०॥

भावार्थः—॥ १५० ॥ एम देवता बे वार, त्रण वार कहे, ज्यां लगे जीवतरयी मुकाइश ॥ १५० ॥

अर्थः—॥ १५१ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । त० ते । सु० सुरादेव । स० श्रावकने । ते० ते । दे० देवे । दो० बे वार । पि० वळी । त० त्रण वार । पि० वळी । ए० एम । वु० कहो । स० थके । इ० एहवा । रु० प्रकारनो । अ० विचार उपनो ४ ॥ अ० अहो । णं० वळी । इ० आ । पु० पुरुष । अ० अनार्य । जा० यावत । स० माठा काम आचरे । जे० जेणे । म० मारा । जे० वडा । पु० पुत्रने । जा० यावत । क० कनिष्ट । जा० यावत । आ० छांट्यो । जे० जे । वि० य० । वळी । इ० ए । सो० सोळ । रो० रोग । ते० ते । वि० य० वळी । इ० इच्छे छे । म० मारा । स० शरीरने विषे । प० प्रक्षेपे उपजावे । तं० ते माटे । से० श्रेय । ख० निश्चे । म० मुजने । ए० ए । पु० पुरुषने । गि० झालवो । त्ति० एम । क० कही । विमासीने । उ० उठीने धायो । से० ते । वि० य० वळी । आ० आकाशे । उ० उपन्नो । ते० तेणे एटले सुरादेवे । य० वळी । ख० स्थंभ । आ० झाल्यो । म० मोटे । म० मोटे । स० शब्दे । को० कोलाहल । क० कर्यो ॥ १५१ ॥

मूळपाठः—॥ १५१ ॥ तए णं तस्स सुरादेवस्स[2] समणोवासयस्स[3] तेणं देवेणं दोच्चं पि

१. F. (पफ. मां आखुं वाक्य नथी.) omits the whole paragraph. + पाठ ९७-९८-९६ जुओ.
२. A. B. (प. बी.) ० देवे. F. (पफ.) से. ० देवे ० सप. ३ A. B. D. E. (प. बी. डी. इ. मां नथी.) omit.

तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स [1]इमेयारूवे अज्झत्थिए ४" । " अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जाव[+] समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं[2] पुत्तं जाव कणीयसं जाव" [3]आयञ्चइ, जे वि य इमे सोलस रोगायङ्का[4], ते वि य [5]इच्छइ मम सरीरगंसि पक्खिवित्तए, तं सेयं खलु [6]ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए " त्ति कट्टु उद्धाइए । से वि य आगासे उप्पइए । तेण[7] य[8] खम्भे आसाइए, महया महया सद्देणं कोलाहले कए ॥ १५१ ॥

भावार्थः—॥ १५१ ॥ ते वारे ते सुरादेव श्रावकने देवताए, बे त्रणवार एम कहेवाथी यावत एम अध्यवसाय उपन्यो, अहोहो ! ए अनार्य पुरुष, भूंडा कर्मनो करनारो, जेणे मारा मोटा, वचला अने नाना पुत्रने मारी यावत तेना लोही मांसे करी मारा गात्रने सींच्युं. हजु पण मारा शरीरमां एक साथे सोळ रोग मुकवा इच्छे छे तो श्रेय निश्चे मारे ए पुरुषने झालवो, एम विचारीने उठयो, ते वारे ते पुरुष आकाशे गयो अने सुरादेवना हाथमां थांभलो आव्यो ते झालीने मोटे मोटे शब्दे कोलाहल करवा लाग्यो ॥ १५१ ॥

अर्थः—॥ १५२ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । सा० ते । ध० धना । भा० भार्या । को० कोलाहल । सो०

१ A. B (ए बी) इमे; D. (डी.) इमे णं, F (एफ) एयमेयारूवे. ॥ पाठ ६६ जुओ. + १३८ पाठ जुआ. २. D. E F. (डी इ. एफ.) जेट्ठपुत्तं. १३८ पाठ जुओ ३ A. B D. E. G (ए. बी डी इ. जी) आइंचइ. ४ A. (ए) रोगायके, F. (एफ) रोगाइका. ५ A (ए) य तिच्छति. ६ F (एफ) मेम. ७ B. (बी.) तए णं. ८. A. B. (ए. बी. मां नथी) Omit.

सांभळीने । नि० हैये धारी । जे० ज्यां । सु० सुरादेव । स० श्रावक । ते० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । ए० एम । व० कहे । कि० केम । दे० हे देवाणु प्रिय । तु० तमे । म० मोटे । म० मोटे । स० शब्दे । को० कोलाहल । क० कर्यो ॥ १५२ ॥

मूळपाठः—॥ १५२ ॥ तए णं सा धन्ना[1] भारिया कोलाहलं सोच्चा[2] निसम्म, जेणेव सुरादेवे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, २त्ता एवं वयासी । "किस्स[3], देवाणुप्पिया, [4]तुब्भेहिं महया महया सद्देणं [5]कोलाहले कए?" ॥ १५२ ॥

भावार्थः—॥ १५२ ॥ ते वारे ते सुरादेवनी धना स्त्रीए कोलाहल सांभळी, हैये धारीने ज्यां सुरादेव श्रावक हतो त्यां आवीने एम कहेती हती, हे देवने वल्लभकारी! केम तमे म्होटे म्होटे शब्दे कोलाहल कर्यो? ॥१५२॥

अर्थः—॥ १५३ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । सु० सुरादेव । स० श्रावक । ध० धना । भा० स्त्रीने । ए० एम । व० कहे । ए० एम । ख० निश्चे । दे० हे देवाणु प्रिय । के० कोइ । पु० पुरुष । त० तेमज । क० कह्युं । ज० जेम । चु० चुलणीपिता । ध० धना । वि० वळी । प० फरी । भ० कहे । जा० यावत । क० लघु पुत्रने । नो० नहि । ख० निश्चे । दे० हे देवाणुप्रिय । तु० तमने । के० कोइ । पु० पुरुष । स० शरीरने विषे । ज० सम-

१ A. B. (ए बी) धण्णा. २. E. (इ.) सुच्चा. ३ B. Adds (बी. मां वधारे) तुमे; F. (एफ.) तुम ४. A. G. (ए. जी.) तुब्भे, B. D. E. F. (बी. डी. इ एफ.) तुब्भे णं. ५. A. B. (ए. बी. मा वधारे) adds णं.

काळे । सो० सोळ । रो० रोग । प० प्रक्षेपे । ए० एहवुं । न० नथी । के० कोइ । पु० पुरुषे । तु० तमने । उ० उपसर्ग । क० कर्यो छे । से० सेस । ज० जेम । चु० चुलणीपिता । त० तेम । भ० कहे ॥ १५३ ॥

मूळपाठ—॥ १५३ ॥ तए णं से सुरादेवे समणोवासए [1]धन्नं भारियं एवं वयासी । " एवं खलु, [2]देवाणुप्पिए, केवि पुरिसे " तहेव [3]कहेइ जहा चुलणीपिया । [4]धन्ना वि पडिभणइ जाव* कणीयसं । " नो खलु, देवाणुप्पिया, [5]तुब्भं [6]केवि पुरिसे सरीरंसि जमगसमगं सोलस रोगायङ्के पक्खिवइ[7], एस [8]न केवि पुरिसे तुब्भं उवसग्गं करेइ " । सेसं+ जहा चुलणीपियस्स [9]तहा भणइ ॥ १५३ ॥

भावार्थः—॥ १५३ ॥ ते वारे ते सुरादेव श्रावक ते धना स्त्रीने एम कहेतो हवो, एम निश्चे हे देवने वल्लभकारी !

१. A B. D. E. (प बी. डी. इ.) धण्णं. २ A. D. E. (प. डी. इ.) देवाणुप्पिया. ३. E. (इ.) कहइ; F. (एफ.) कहेंति placing it after जहा चुल° (पछी मुकवुं). ४. A. B. D. (प. बी डी) धण्णा; G (जी मां वधारे) adds भारिया. * १४०, १४१ पाठ जुओ ५. A. B F. G. (प. बी. एफ. जी.) तुब्भे. ६ A. B. (प. बी) केय, D. E. G (डी इ. जी.) केइ. ७. B. (बी.) पक्खिवए, F. G. (एफ. जी.) पक्खेवइ ८ A B D. E. F G. (प बी. डी. इ. एफ जी.) णं + १४१ पाठ जुओ ९. A D. E. F. (प. डी. इ. एफ.) भद्दा.

हुं न जाणुं के ए पुरुष कोण हतो ? जेम चुलणीपिताए तेनी माताने कह्युं तेज प्रमाणे सुरादेवे तेनी धना नामे स्त्रीने कह्युं. ते वारे धना स्त्री सुरा देवने कहेती हवी के, तमारा मोटा, वचला अने नाना पुत्रने कोइए मार्या नथी. हे देवनें वल्लभकारी ! कोइ पुरुषे तमारा शरीरमां एक साथे सोळ रोग मुकवानुं कह्युं ए सर्व कोइ पुरुष तमने उपसर्ग करे छे. बाकी जेम सर्व चुलणीपीतानी माता भद्राए कह्युं तेम सर्व धना स्त्रीए कह्युं ॥ १५३ ॥

अर्थः—॥ १५४ ॥ ए० एम । से० सेस । वाकी । ज० जेम । चु० चुलणीपिता । नि० एटलो विशेष । जा० यावत । सो० सौधर्म । क० देवलोके । अ० अरुण । क० कन्त । वि० विमाने । उ० उपन्यो । च० चार । प० पल्योपमनी । ठि० स्थिति । म० महाविदेह । वा० वासे । सि० सिझशे ५ ॥ १५४ ॥

मूळपाठः—॥ १५४ ॥ एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव सोहम्मे कप्पे अरुणकन्ते विमाणे उववन्ने[1] । चत्तारि पलिओवमाइं [2]ठिई । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ[3] [4]५+ ॥ १५४ ॥

* १४२, १४४ पाठ जुओ १. A B D. E F (ए बी डी. इ एफ मां नथी.) Omit २ A (ए.) ठिइं, E. (इ.) ठिइ, F. (एफ.) ठिइ. ३. E. (इ.) सिज्झिहिंति. F. (एफ.) सिज्झहिंति. ४. A. B. (ए. बी. मा नथी.) Omit; F. (एफ.) ४. + १४४ पाठ जुओ

भावार्थः—॥ १५४ ॥ चुलणीपीतानी पेरे सुरादेवे पण सर्व प्रायश्चित लइने इग्यार श्रावकनी प्रतिज्ञा वही अने मरणने अंते अणसण करी सौधर्म देवलोके अरुणकांत विमानने विषे उपन्यो. त्यां चार पल्योपम आयुष्यनी स्थिति छे ते पूर्ण करी महाविदेह क्षेत्रमां अवतरी सिझशे यावत सर्व दुःखनो अंत करी मोक्ष जाशे ॥ १५४ ॥

अर्थः—॥ नि० समाप्त ॥ स० सातमा । अ० अंग । उ० उपासंग दसाङ्गनुं । च० चोथुं । अ० अध्ययन । स० पुरु थयुं ॥ ७ ॥ ४ ॥

मूळपाठः—॥ निक्खेवो[1] [2]सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं[3] चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥ ४ ॥

भावार्थः—॥ समाप्त ॥ सातमुं अंग उपासक दशानुं चोथुं अध्ययन पुरुं थयुं ॥ ७ ॥ ४ ॥

---

१. D. E. (डी. इ.) निक्खेवओ २ A. B. D. E F (ए. बी. डी. इ. एफ. मां नथी.) Omit.
३. F. (एफ मां नथी.) Omit.

पञ्चमं अज्झयणं ॥



॥ पांचमुं अध्ययन ॥

अर्थ—॥ उ० शरुआत । प० पांचमानी ॥

मूळपाठः—[1]उक्खेवो पञ्चमस्स ॥

भावार्थः—॥ पांचमां अध्ययननी शरुआत ॥

अर्थः—॥ १५५ ॥ ए० एम । ख० निश्चे । जं० हे जम्बू । ते० तेणे । का० काळे । ते० तेणे । स० समयने विषे । आ० आलंभिया । ना० नामे । न० नगरी । सं० संखवण नामे । उ० उद्यान । जि० जिनशत्रु । रा० राजा । चु० चुल्लसतक । गा० गाथापति । अ० महाऋद्धिवंत । जा० यावत । छ० छ । हि० सुवर्णनी । को० कोडी । जा० यावत । छ० छ । व० वर्ग । द० दस । गो० गाय । सा० हजार । दस हजार गायनुं एक गोकुळ एवा छ । व० वर्ग । व० बहुला । भा० भार्या । सा० स्वामी । स० पधार्या । ज० जेम । आ० आणन्द । त० तेम । गि० गृहस्थ । ध० धर्म । प० पडिवज्जे । से० सेस बाकी । ज० जेम । का० कामदेव । जा० यावत । ध० तीर्थंकरनो धर्म । प० परुपेल । उ० पाळतो थको । वि० विचरे ॥ १५५ ॥

१. G. (जी.) उक्खेवओ.

मूळपाठः—॥ १५५ ॥ एवं खलु, जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं [1]आलभिया [2]नामं [3]नयरी । सङ्खवणे उज्जाणे । जियसत्तू राया । [4]चुल्लसयए [5]गाहावई अड्ढे जाव* छ हिरण्ण-कोडिओ जाव+ छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । [6]बहुला भारिया । सामी [7]समोसढे । जहा× [8]आणन्दो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सेसं जहा कामदेवो[9] जाव धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ १५५ ॥

भावार्थः—॥ १५५ ॥ एम निश्चे, हे जंबू ! ते काळ ते समयने विषे आलंभीया नामे नगरी हती, त्यां शंखवन नामे उद्यान हतुं, ते नगरीमां जीत शत्रु नामे राजा हतो, त्यां चुलशतक नामे गाथापति वसतो हतो, तेने कोइ पराभव करी शके नहि तेवो रुद्धिवंत ने दीपतो हतो. छ क्रोडी सोनैया धरती मांहे दाटेला हता, छ क्रोडी सोनैया व्यापारमां वृद्धिए हता अने छ क्रोडी सोनैयानो घरवखरो हतो, दस हजारगाये एक गोकुळ थाय तेवां

१. D E (डी इ.) आलहिया F. (एफ.) आलभिया. २ A. B D E. G. (ए. बी. डी. इ. जी मां नथी.) Omit ३. F. (एफमां वधारे) adds होत्था ४ B (बी.) °सयगे, F (एफ) सयगो. ५. F (एफ. मां वधारे) adds परिवसइ * उववाइ ११ ने १०२. + ४ ने ९२ पाठ जुओ. ६. G. (जी. मां पाठ वधारे) prefixes तस्स णं तस्स. ७ A F. (ए. एफ) °सड्ढे, D (डी.) °सढो, E. (इ.) °सढ्ढे. × १०. ६५ पाठ जुओ. ८. A. (ए) आणंदे. ९ A B D E. F. (ए बी. डी. इ. एफ.) °देवे. § ६६-६९ पाठ जुओ.

छ गोकुळ हतां तेने बहुला नामे स्त्री हती. त्यां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव समोसर्या. आणंदनी पेरे प्रभुने वांदी तेमज गृहस्थनो धर्म अंगिकार कर्यो. बीजुं सर्व कामदेवनी पेरे. श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनो पासे ग्रहण करेलो धर्म अंगिकार करीने चुलसतक विचरतो हवो. ॥ १५५ ॥

अर्थः—॥ १५६ ॥ त० ते वारें। णं० वळी। त० ते। चु० चुलसतक। स० श्रावकने। पु० मध्य। र० रात्रिने विषे। स० समे। ए० एक। दे० देवता। अं० पासे। जा० यावत। अ० खड्ग। ग० लइने। ए० एम। व० कहे। हं० हे। भो० अरे। चु० चुलसतक। म० श्रावक। जा० यावत। न० नहि। भं० भांगे तो। तो० तो। ते० तारा। अ० आज। जे० जेष्ट। पु० पुत्रने। सा० तारा। गि० घरथी। नी० आणीश। ए० एम। ज० जेम। चु० चुलणीपिता। न० एटलो विशेष। ए० एकेकना। स० सात। सात। मं० मांसना। सो० कटका। जा० यावत। क० लघु पुत्र। जा० यावत। आ० छांटीश ॥ १५६ ॥

मूळपाठः—॥ १५६ ॥ तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकाल-[1]समयंसि एगे देवे अन्तियं [2]जाव* असिं गहाय एवं [3]वयासी। "हं भो, चुल्लसयगा [4]समणोवासया", जाव+ न भञ्जसि, तो ते अज्ज [5]जेट्ठं पुत्तं [6]साओ गिहाओ नीणेमि," [7]एवं

१. D. E G (डी. इ जी.) ° काले। २ F. (एफ.) पा उब्भूए * १२८, १२९, ९७ मांथी पाठ लववो ३. A, (ए) वदासी ४. A. B, (मा नथी.) Omit. + ९७, पाठ जुओ ५. A. B D. E. F. (ए बी. डी, इ. एफ.) जेट्ठपुत्तं. ६ A, B, D. E, (ए बी. डी. इ मा नथी,) Omit. ७. D. (डी. मा वधारे) adds वयासी.

इरामि[1], जहा णं तुमं [2]अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव[3] जीवियाउ [4]ववरोविज्जसि" ॥ १५८ ॥

भावार्थः—॥ १५८ ॥ ते वारे ते देव चुलशतक श्रावकने चोथीवार एम कहेतो हवो, अरे चुल शतक श्रावक ! जो तुं व्रत नहिं भांगे तो हुं आज तारा घरमांहि छ क्रोड सोनैया धरती मांहि दाटेला छे, छ क्रोड सोनैया व्यापारमां वृद्धिए छे, छ क्रोड सोनैयानो घर वाखरो छे ते सर्व तारा घरमांहिथी लइने आलंभीया नगरीमां सींघोडाने आकारे त्रण रस्ता भेगा थाय यावत म्होटा राज रस्ताने विषे (जेम तारा हाथमां आवे नहि तेवी रीते) विखेरी नाखीश ! जेथी तुं आर्त्तरौद्र ध्याने करी अकाळे जीवतरथी रहित थइश ॥ १५८ ॥

अर्थः—॥ १५९ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । चु० चुलसतक । स० श्रावक । ते० ते । दे० देवे । ए० एम । वु० कह्ये । स० थके । अ० अणवीहतो । जा० यावत । वि० विचरे ॥ १५९ ॥

मूळपाठः—॥ १५९ ॥ [5]तए णं से [6]चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव" विहरइ ॥ १५९ ॥

भावार्थः—॥ १५९ ॥ ते वारे ते चुलशतक श्रावकने ते देवताए एम कह्ये थके अणवीहतो एटले निर्भयपले यावत विचरे ॥ १५९ ॥

---

१ A B (ए बी) विप्पयिरामि २. A. B. (ए.बी. अट्टदुहट्टे) D E, (डी इ. अट्टदुहट्ट) ३. D. E G. (डी. इ जी मा नथी.) Omit. ४. E G (इ जी.) विवरो ५ F (एफ. मा छे.) reads. तए णं से चुल्ल० समणो० अभीए जाव पासित्ता दोच्चं पि &c. ६ A D. E. F.) चल्लसए + ९६ पाठ जुओ

फ्रोडनी । प० माल्मिल्कत व्यापारमां । प० मुकेल छे । ता० ते । मा० तारा । गि० घरथी । नी० आणीश । नी० आणीने । आ० आलंभीया । न० नगरीमां । सि० त्रणवाट (रस्ता) मळे ते । जा० यावत । प० पंथने विषे । स० सघळो । स० चोफेर । वि० विखेरी नाखीश । ज० जेथी । णं० वळी । तु० तुजने । अ० आर्त्तध्यान । दु० रौद्र ध्याने । व० वर्ततो । अ० अकाळे । ने० वळी । जी० जीवितव्यथी । व० अलगो पडश ॥ १५८ ॥

मूळपाठः—॥ १५७ ॥ तए णं से देवे [1]चुल्लसयगं [2]समणोवासयं चउत्थं पि एवं वयासी । "हं भो चुल्लसयगा [3]समणोवासया, जाव[4] न [5]भञ्जसि, तो[6] ते अज्ज जाओ[7] इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ[8] छ[9] वड्ढिपउत्ताओ[10] छ[11] पवित्थरपउत्ताओ, ताओ[10] साओ[11] गिहाओ नीणेमि, २ त्ता आलभियाए[12] नयरीए सिङ्घाडग जाव[×] पहेसु सव्वओ समन्ता विप्प-

१. F. (एफ.) ° सयगं ° सए. २ A. B. D. E. (ए. बी. डी. इ. मां नथी.) Omit. ÷ १५ पाठ जुओ. ३. D. E. (डी इ) भञ्जेसि. ४ F. G. (एफ. जी.) तउ ते. ५. A. B. D. E. F. G. (ए बी. डी. इ. एफ. जी. मा नथी.) Omit. ६. E. (इ.) ° पत्ताओ. ७. B. D. F. (बी. डी. एफ मां नथी.) Omit. ८. A. B. F. (ए. बी. एफ मा नथी.) Omit. ९. A. B. D F. (ए. बी. डी. एफ.) Omit. १०. A. B. F. (ए. बी. एफ) तउ ते. ११. F (एफ) सयाओ. १२. D. E. (डी इ.) आलहियाए. F. G. (एफ. जी) आलंभियाए. × उत्थान. ३८, माता ६५ पाठ जुओ.

रामि[1], जहा णं तुमं [2]अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव[3] जीवियाउ [4]ववरोविज्जसि" ॥ १५८ ॥

भावार्थः—॥ १५८ ॥ ते वारे ते देव चुलशतक श्रावकने चोथीवार एम कहेतो हवो, अरे चुल शतक श्रावक ! जो तुं व्रत नहिं भांगे तो हुं आज तारा घरमांहि छ क्रोड सोनैया धरती मांहि दाटेला छे, छ क्रोड सोनैया व्यापारमां वृद्धिए छे, छ क्रोड सोनैयानो घर वाखरो छे ते सर्व तारा घरमांहिथी लइने आलंभीया नगरीमां सींघोडाने आकारे त्रण रस्ता भेगा थाय यावत म्होटा राज रस्ताने विषे (जेम तारा हाथमां आवे नहि तेवी रीते) विखेरी नाखीश ! जेथी तुं आर्त्तरौद्र ध्याने करी अकाळे जीवतरथी रहित थइश ॥ १५८ ॥

अर्थः—॥ १५९ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । चु० चुलसतक । स० श्रावक । ते० ते । दे० देवे । ए० एम । वु० कह्ये । स० थके । अ० अणवीहतो । जा० यावत । वि० विचरे ॥ १५९ ॥

मूळपाठः—॥ १५९ ॥ [5]तए णं से [6]चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[7] विहरइ ॥ १५९ ॥

भावार्थः—॥ १५९ ॥ ते वारे ते चुलशतक श्रावकने ते देवताए एम कह्ये थके अणवीहतो एटले निर्भयपले यावत विचरे ॥ १५९ ॥

---

१ A B. (ए. बी) विप्पयिरामि २. A. B (ए बी अट्टदुहट्टे) D. E. (डी इ. अट्टदुहट्ट) ३. D. E. G. (डी इ. जी मा नथी.) Omit. ४ E G. (इ जी) विवरो. ५ F (एफ मा छे) reads. तए णं से चुल्ल ० समणो ० अभीए जाव पासित्ता दोच्चं पि &c. ६. A D. E. F.) चल्लमए * ९६ पाठ जुओ.

अर्थः—॥ १६० ॥ त० ते वारे । पं० वळी । से० ते । दे० देवताए । चु० चुल्लसतक । स० श्रावकने । अ० निर्भय । जा० यावत । पा० देखीने । दो० बे वार । पि० वळी । त० त्रणवार । पि० वळी । त० तेने । भ० कहे । जा० यावत । व० जीवतव्यथी । मुकाइश ॥ १६० ॥

मूळपाठः—॥ १६० ॥ तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव* पासित्ता दोच्चंपि तच्चंपि तहेव भणइ जाव+ "ववरोविज्जसि" ॥ १६० ॥

भावार्थः—॥ १६० ॥ ते वारे चुल्लशतक श्रावकने ते देवताए यावत निर्भयपणे विचरतां देखीने बे त्रणवार तेमज कहे यावत अकाळे जीवतरथी रहित थइश ॥ १६० ॥

अर्थः—॥ १६१ ॥ त० ते वारे । पं० वळी । त० ते । चु० चुल्लसतक । स० श्रावक । तं० ते । दे० देवे । दो० बे वार । पि० वळी । त० त्रण वार । पि० वळी । ए० एम । वु० कहे । स० थके । अ० एहवा । रू० रूपे । अ० अध्यवसाय उपनो अथवा एवो विचार करवा लाग्यो ४ । अ० अहो । पं० वळी । इ० आ । पु० पुरुष । अ० अनार्य । ज० जेम । चु० चुल्लणीपिता । त० तेम । चि० चिन्तवे । जा० जेम । रू० लए । जा० जेम । आ० छांटयो । जा० जे । वि० य० पं० वळी । इ० ए । म० मारा । छ० छ । हि० सोनानी । को० कोडी । नि० भूमिमां । प० दाटी छे । छ० छ । व० वेपारमां । प० नाखी छे । छ० छ । प० माल मीलकतमां । प० नाखी छे । ता० ते । गि० य० पं० वळी । इ० इच्छे छे । म० मारा । सा० पोताना । गि० घर थकी । नी० आणीने । आ०

* ९६ पाठ जुओ. + १५८ पाठ जुओ. १. १६. (कृ.) चिवरो.

आलंभीका । न० नगरीमां । सि० बे त्रणवार । जा० यावत । वि० विखरी नाखवा । तं० तो । से० श्रेय । ख० निश्चे । म० मुजने । ए० ए । पु० पुरुषने । गि० झालवो । त्ति० एम । क० चिंतवीने । उ० उठीने धायो । ज० जेम । सु० सुरादेव । त० तेमज । भा० भार्याए । पु० पुछ्युं । त० तेमज । क० कहे ॥ १६१ ॥

मूळपाठः—॥ १६१ ॥ तए णं [1]तस्स चुल्लसयगस्स[2] समणोवासयस्स[3] तेणं देवेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं [4]वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४* । "अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चिन्तेइ जाव+ कणीयसं जाव+ [5]आयञ्चइ, जाओ वि य णं इमाओ [6]ममं छ हिरणकोडीओ निहाणपउत्ताओ[7] छ[8] वड्ढिपउत्ताओ[9] छ[10] पवित्थरपउत्ताओ, [11]ताओ वि य णं इच्छइ[12] ममं [13]साओ गिहाओ नीणेत्ता,[14] आलभियाए[15] [16]नय-

१ B G (बी. जी. मां प्रथम छे.) pefixes से २. B (बी.) °चुल्लसए, F. (एफ.) °सए. ३. A B D. E. (ए. बी. डी. इ मा नथी) Omit. F. (एफ) °वासए. ४ F. (एफ.) वुत्ते समाणे. * पाठ ६६ जुओ + पाठ १३८ जुओ. ५ A. B D E G (ए बी डी इ. जी.) आइंचइ. ६. A B. (ए बी.) मम ७ E. (इ.) पत्ताओ. ८ A B D E. F. (ए बी. डी. इ, एफ. मां नथी.) Omit. ९. D. E G (डी. इ. जी.) वुड्ढि°. १० A B. D. E (ए. बी. डी इ. मा नथी.) Omit ११ F. (एफ.) तो. १२ D E (डी. इ.) इच्छेइ १३ F. (एफ.) सयाओ. १४. D. E (डी इ.) नीणित्ता. १५. A. B. D. E. (ए. बी. डी. इ.) आलहियाए, F. (एफ.) आलंभियाए. १६. B (बी.) नगरीए

रीए 'सिङ्घाडग जाव[1] विप्पइरित्तए, तं सेयं खलु 'ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए'[2] " त्ति[3] कट्टु उद्धाइए जहा[4] सुरादेवो[5] । तहेव[6] भारिया[7] पुच्छइ, तहेव कहेइ ॥ १६१ ॥

भावार्थः—॥ १६१ ॥ ते वारे ते चुल्लशतक श्रावकने देवताए बे त्रण वार एम कहेवाथी एवो अध्यवसाय उपन्यो के अहो हो, ए अनार्य पुरुष जेम चुलणीपीताए चिन्तव्युं तेज प्रमाणे चुल्लशतक चिन्ते यावत मोटा, व-चला अने नाना पुत्रने मारी, तलीने मारागात्रने सिंच्युं अने वली आ मारा छ क्रोड सोनैया जमीमांहि दाटे-ला छे, छ क्रोड सोनैया व्यापारमां वृद्धि पामे छे अने छ क्रोड सोनैया घर वापरो छे. सर्वने मारा घरथी ल-इने आलंभीया नगरीमां शींगोडाने आकारे, त्रण रस्ताने ठेकाणे यावत रस्ते, सर्व दिशामां विखेरी नाखवा इच्छे छे तो श्रेय छे निश्चे मारे ए पुरुषने झालवो. एम चिन्तवीने उठयो ते वारे देवता आकाशे पाछो चाल्यो गयो, अने चु-ल्लशतकना हाथमां थांभलो आववाथी कोलाहल कर्यो अने जेम सुरादेवनी स्त्रीए आवीने कह्युं तेमज आ चुल्ल शतकनी बहुला स्त्रीए आवीने कह्युं ॥ १६१ ॥

१. A. B. (प. मो.) सिङ्घाडग. * उत्पाइ ३८ पाठ जुओ. आगल ८५ पाठ जुओ २. D. E. (डी. इ.) मम ३. A. (ए.) गिण्हित्तए; B (बी) गेण्हेत्तए, E. F (इ. एफ.) गिण्हत्तए, ४. F. (एफ.) त्ति. + १५१ जुओ. ५. D. E. F. G (डी इ. एफ जी.) देवे. ६ १४७, १४८ जुओ. ६. F (एफ. मां प्रथम छे) prefixes बहुला. ७. A. B. F. G (ए. बी एफ. जी मां प्रथम) prefixes से

अर्थः—॥ १६२ ॥ से० बाकी । ज० जेम । चु० चुलणीपिता । जा० यावत । सो० सौधर्म । क० देव-लोके । अ० अरुण । सि० सिद्ध । वि० विमाने । उ० उपनो । च० चार । प० पल्योपमनी । ठि० स्थिति । से० बाकी अधिकार । त० तेमज । जा० यावत । म० महाविदेह । वा० क्षेत्रे । सि० मोक्ष जाशे ॥ १६२ ॥

मूळपाठः—॥ १६२ ॥ सेसं जहा चुलणीपियस्स जाव* सोहम्मे कप्पे [1]अरुणसिद्धे विमाणे उववन्ने । [2]चत्तारि पलिउवमाइं ठिई[3] । सेसं तहेव[4] जाव+ महाविदेहे [5]वासे सिज्झिहिइ ॥ १६२ ॥

भावार्थः—॥ १६२ ॥ बाकी सर्व चुलणीपीतानी पेरे जाणवुं, यावत मरणने अवसरे अणसण करी सौधर्म देवलोकमां अरुण विशिष्ट नामे विमानने विषे चार पल्योपम आयुष्यनी स्थितिए उपन्यो त्यांथी मरी महाविदेह क्षेत्रमांहि अवतरी सिझशे यावत सर्व दुःखनो अंत करी मोक्षमां जाशे ॥ १६२ ॥

अर्थः—॥ नि० समाप्त । स० सातमा । अ० अंग । उ० उपासक दशांगनुं । प० पांचमुं । अ० अध्ययन । स० पुरुं थयु ॥ ७ ॥ ५ ॥

---

* १४२-१४४ पाठ जुओ. १. B (बी) ° विसिद्धे, F (एफ) ° सेद्धे, G (जी.) ° विसळे. २. B. D E F. (बी. डी इ. एफ मां नथी.) Omit. च ° पलि ° . ३ A. (ए) ठ्ठिई, E. (इ) ठिइ, F. (एफ.) ठ्ठिइ. ४. D. E. (डी इ.) तावं. + १२५ पाठ जुओ. ५ A B. F. (ए बी. एफ. मां नथी.) Omit.

मूळपाठः–[१]निक्खेवो ॥ [२]सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पञ्चमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ७ ॥ ५ ॥

भावार्थः–॥ समाप्त । उपासक दशांग सातमुं अंग तेनुं पांचमुं अध्ययन समाप्त ॥ ७ ॥ ५ ॥

॥ छट्ठं अज्झयणं. ॥

॥ छट्ठुं अध्ययन ॥

अर्थः–॥ छ० छट्ठानी । उ० शरुआत ॥

मूळपाठः–छट्ठस्स उक्खेवओ ॥

भावार्थः–॥ छट्ठा अध्ययननी शरुआत ॥

अर्थः–॥ १६३ ॥ ए० एम । ख० निश्चे । ज० हे जंबू ! । तें० ते । का० काळे । तें० ते । स० समए । क० कम्पिलपुर । न० नगरमां । स० सहस्त्रम्र (हजारो) । अं० आंबाना । व० वनरुपी । उ० उद्यान । जि० जीत सत्तु । रा० राजा । कु० कुण्डकोलिय । गा० गाथापति । पू० पूसा । भा० भार्या । छ० छ । हि० सोनानी ।

१. D. E. G. (डी. इ. जी मां नथी.) Omit. २ A. B D E F. G. (ए. बी. डी. इ. एफ. जी. मां नथी.) Omit.

क्रो० कोडी । छ क्रोड सोनैया । नि० भूमिमां । प० दाटेला । छ० छ कोड । व० व्याजे । प० मुकेल । छ० छ क्रोड । प० व्यापारमां । प० नाखेल । छ० छ । व० वर्ग । द० दस । गो० गाय । सो० सहस्त्र दस हजार गायनुं । व० एक वर्ग एहवा छ वर्ग (गोकुळ) । सा० स्वामी । स० पधार्या । ज० जेम । का० कामदेव । त० तेम । सा० श्रावक । ध० धर्म । प० अंगिकार करे । स० सर्वे । व० व्रत । जा० जेम । प० प्रतिलाभतो थको । वि० विचरे ॥ १६३ ॥

मूळपाठः—॥ १६३ ॥ [1]एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं [2]कम्पिल्लपुरे [3]नयरे। [4]सहस्सम्बवणे उज्जाणे । जियसत्तू राया । कुण्डकोलिए [5]गाहावई । पूसा भारिया[6] । छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ[7] छ[8] वड्ढिपउत्ताओ[9] छ पवित्थरपउत्ताओ छ वया[10] दसगो-

१ D. E. G. (डी इ जी. मां नथी) Omit. एवं खलु जंबू. २ F. (एफ) किंपिल्ल °, G. (जी.) किंपुल ° ३. A. B. (ए बी.) नगरे, F. (एफ. मा वधारे) adds हात्था. A. B. F G (ए. बी एफ. जी. मा वधारे) add पुढविसिल्लापट्टए चेइए ४. D. E. (डी. इ) सहस्संव °, B. (बी.) ° वयणे. ५. E. F (इ. एफ.) गाहावइ. F. (एफ. मां वधारे) adds परिवसइ. ६. G. (जी मां " वण्णं " पछी आ पाठ छे.) places this Clause after वण्णं ७. F. (इ) ° पत्ता ८ A B D (ए. बी. डी. मां नथी) Omit. ९ D E G (डी. इ. जी) वुड्ढि °. १०. A. B. D E. G. (ए. बी. डी इ. जी.) व्वया.

साहस्सियाणं वयाणं । सामी समोसढे । जहा कामदेवो तहा सावयधम्मं पडिवज्जइ । सच्चेव वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ॥ १६३ ॥

भावार्थः—॥ १६३ ॥ एम निश्चे हे जंबू ! ते काळ ने समयने विषे कंपील पुर नामे नगर हतुं. त्यां पृथ्वीसीला नामे पट हतो. सहस्राम्र नामे उद्यान हतुं. ते नगरनो जितशत्रु नामे राजा हतो. त्यां कुंडकोलीयो नामे गाथापति वसतो हतो. तेने पुसा नामे भार्या हती. तेने छ कोडी सोनैया भंडारमां दाटेला हता, छ कोडी सोनैया व्यापारमां वृद्धिए हता, छ कोडी सोनैयानो घरवखरो हतो. दस हजार गायनुं एक गोकुल एवां छ गोकुल हतां. त्यां श्रमण भगवंत श्री महावीर समोसर्या. जेम कामदेवे धर्म अंगिकार कर्यो तेम कुंडकोलीए श्रावकनो धर्म अंगिकार कर्यो. (बाकीनो अधिकार कामदेवनी माफक जाणवो.) साधु साध्वीने निर्दोष चौद प्रकारनुं दान देतो विचरतो हतो ॥ १६३ ॥

अर्थः—॥ १६४ ॥ त० ते पछी । से० ते । कु० कुंडकोलिक । स० श्रावक । अ० एकदा । म० मध्याह्ने । पु० शिलापना पीठा पटोए । का० काळ । स० समयने विषे । जे० ज्यां । अ० अशोक । व० वन (वा-

१. D. G (डी. जी.) ०समोसढे, L. (ए) [illegible] and place (अने पधार्या) [illegible] ([illegible]) (" [illegible] कामदेवो ") [illegible] [illegible] ३. B. D. (बी. डी.) [illegible] L. (ए) [illegible]

सो पालवनी वाडी)। जे० ज्यां। पु० पृथ्वी। सि० सिला। प० पट। ते० त्यां। उ० आवे। उ० आवीने। ना० नामाक्षर सहित। मु० मुद्रिका। च० अने। उ० उत्तराण करवानुं फाळीयुं। च० वळी। पु० पृथ्वी। सि० सिला। प० पट। ठ० थापे। मुके। ठ० मुकीने। स० श्रमण। भ० भगवंत। म० महावीर स्वामि। अं० समीपे। ध० धर्म। प० पन्नति धर्म परूप्यो सांभळ्यो ते पाळीने। उ० ते धर्म अंगिकार करे ने। वि० विचरे ॥ १६४ ॥

मूळपाठः—॥ १६४ ॥ तए णं से कुण्डकोलिए [1]समणोवासए अन्नया [2]कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि[3] जेणेव[4] असोगवणिया, जेणेव पुढविसिलापट्टए[5], तेणेव उवागच्छइ, २त्ता नाममुद्दगं[6] च उत्तरिज्जगं[7] च पुढविसिलापट्टए[5] ठवेइ, २त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स [8]अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ १६४ ॥

भावार्थः—॥ १६४ ॥ ते वारे ते कुंड कोलीयो श्रावक एकदा समये बे पोहोर ते मध्यान्ह समयने विषे ज्यां असोक (आसोपालवनी) वाडी हती, ज्यां पृथ्वीसीला नामे पट्ट हतो त्यां आवीने नामांकित मुद्रिका अने उतरीय वस्त्र ए बे पृथ्वी शीलापट्ट उपर मुकीने श्रमण भगवंत श्री महावीरनी पासे जे धर्म अंगिकार कर्यो छे ते आराधतो थको विचरतो हवो. ॥ १६४ ॥

---

१ D E (डी इ मा नथी) Omit. २ D E (डी इ) कयावि ३ E. (इ) पुव्वावरण्ण.° ४ E (इ. मां नथी.) Omit जे° असो° । ५ F (एफ) पुढवी, G (जी) °वट्टए ६ E (इ.) नाममु°, F. (एफ.) °मुद्दय. ७. E (इ.) उत्तरिज्जगं. ८. E. (इ) अंतिये

अर्थः—॥ १६५ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । न० ते । कु० कुड । को० कोलिय । स० श्रावकनी पासे । ए० एक । दे० देव । अ० नजीक । पा० आवी प्रगट थयो ॥ १६५ ॥

मूळपाठः—॥ १६५ ॥ तए णं तस्स कुण्डकोलियस्स [1]समणोवासयस्स एगे देवे अन्तियं पाउब्भविज्ञा ॥ १६५ ॥

भावार्थः—॥ १६५ ॥ ते वारे ते कुंडकोलीया श्रावकनी पासे एक देवता प्रगट थयो ॥ १६५ ॥

अर्थः—॥ १६६ ॥ त० तेवारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवता । ना० नाम । मु० मुद्रिका । च० वळी । उ० उत्तरासन करवानी पछेडी । च० वळी । पु० पृथ्वीसिला । प० पट उपरथी । गे० लीए । गे० लइने । स० घुघरीना शब्द थकी । अ० आकाशे । प० उद्योत सहित । कु० कुंडकोलिय । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । कुं० कुंडकोलिक । स० श्रावक । सु० सुंदर धर्म । णं० वळी । दे० हे देवाणुप्रिया । गो० गोसाळो । म० मंखलि । पु० पुत्र तेहनो । ध० धर्म । प० परूप्यो तेना धर्म मांहे । न० नथी । उ० उद्यम करवो । इ० वा. अथवा । क० कर्म क्रिया । इ० वा. अथवा । ब० बल । इ. वा. अथवा । वी० वीर्य । इ. वा. अथवा । पु० पुरुषाकार । प० पराक्रम । इ. वा. अथवा । नि० नित्य शाश्वता । स० सर्वे । भा० भाव । मं० असुंदर । माटी । ण० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । स्वामीनो । ध० धर्म । प० परूपणा तेमां । अ० छे । उ० उद्यम । इ. वा. अथवा । जा० यावत । प० पराक्रम । इ. वा. अथवा । अ० अनित्य । स० सर्व । भा० भाव ॥१६६॥

१. A. B. (प. श्री. मां नथी.) Omit.

मूळपाठः—॥ १६६ ॥ तए णं से देवे [1]नाममुद्दं च उत्तरिज्जं च [2]पुढविसिलापट्टयाउ [3]गेण्हइ, २ त्ता [4]सखिङ्खिणिं अन्तलिक्खपडिवन्ने कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी । "हं भो कुण्डकोलिया समणोवासया, सुन्दरीणं, देवाणुप्पिया, गोसालस्स [5]मङ्खलिपुत्तस्स [6]धम्मपण्णत्ती, नत्थि उट्ठाणे इ[7] वा कम्मे इ[7] वा बले इ[7] वा वीरिए इ वा पुरिसक्कारपरक्कमे[8] इ वा, नियया[9] सव्वभावा; मङ्खली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स [10]धम्मपण्णत्ती, [11]अत्थि उट्ठाणे [7]इ वा [12]जाव परक्कमे[13] इ वा, अणियया सव्वभावा[14]" १६६ ॥

भावार्थः—॥ १६६ ॥ ते वारे ते कुंडकोलीया श्रावकनी पासे एक देवता प्रगट थयो. ते देवताए नामांकित

---

१ E. (इ.) नामामुद्दं २. F. (एफ) पुढवी,° G (जी) °वट्टए ३ D E. F. G. (डी इ. एफ. जी) गिण्हइ ४. B. D. E. (बी डी इ) °णि, D F. (डी एफ) सखिख.° ५ A. (ए.) मग्गलि°, F. (एफ) मक्खिलि ° ६ D. (डी.) °पण्णत्ति°, E. G (इ जी) °पण्णत्ति ७. D. E. (डी. इ.) ति. ८. F. (एफ) पुरिसाकार°. ९ A B. (ए बी.) नितया अणितया, D. E. F. नितिया अणितिया, G (जी) नियतया अणियतया. १०. E (इ.) °पण्णत्ति, G. (जी) °पण्णत्ति°. ११. E (इ. मा नथी) Omit १२ F (एफ. मां पुरु.) in full कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसाकार°. * उपला वाक्यमांथी वाकीनो पाठ लेवो १३ A. B. G (ए. बी. जी.) परिक्कमे १४ B. (बी.) सव्वाभावा.

मुद्रिका अने उत्तरीय वस्त्रने पृथ्वी सीला पट्ट उपरथी लइने घुघरीना भणकारा करतो, आकाशे अंतरीक्ष रही, कुंडकोलीया श्रावकने एम कहेतो हवो. अरे ! कुंड कोलीया श्रावक ! देवने वल्लभकारी ! गौशाला मंखली पुत्रनो परुपेलो धर्म भलो छे के जे धर्म मांहि १. उठाण (काम करवा तैयार थवुं ते), २. कर्म. (ते काम करवा जवु ते), ३. बळ (शरीरनी समर्थाइ), ४. वीर्य (हींमत), ५. पुरुषाकार (ते काम करवानुं अभिमान), पराक्रम (पुरुषार्थ फोरवी कार्य सिद्ध करवुं ते), ए पांचे करवा पडता नथी अने कार्यनी सिद्धि थाय छे एटले उद्यम कर्या सिवाय कार्यनी सिद्धि थाय छे, कारण के सर्व पदार्थ नियत भावे (जेम थवानुं होय तेमज थाय) छे तेथी ए गौशाळा मंखली पुत्रनो परुपेलो धर्म भलो छे अने श्रमण भागवंत श्री महावीर देवनो परुपेलो धर्म भलो नथी कारण के ते धर्मने विषे उठाण, कर्म, बळ, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम, ए पांच बोलथीज सर्व कार्यनी सिद्धि थाय छे. नियत भावथी थतुं नथी (एटले उद्यमथीज सर्व कार्यनी सिद्धि थाय छे). पूर्वोक्त पांच मांहियी एक पण ओछुं होय तो कार्यनी सिद्धि थती नथी एवुं माने छे तेथी ए कष्टरुप होवाथी श्रमण भगवंत श्री महावीरनो परुपेलो धर्म भलो नथी. ॥ १६६ ॥

अर्थः—॥ १६७ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । कु० कुंड । को० कोलिक । स० श्रावक । तं० ते । दे० देवने । ए० एम । व० कहे । ज० जो । णं० वळी । दे० हे देव । सु० रुडो । गो० गोसाळा । म० मंखलि पुत्रनो । ध० धर्म । प० परुपणा जेमां । न० नथी । उ० उद्यम । इ. वा. अथवा । जा० यावत । नि० नित्य । स० सर्व । भा० भाव । म० असुदर । माठो । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । ध० धर्म ।

प० परुपणा । अ० छे । उ० उद्यम । इ. वा. वळी । जा० यावत । अ० अनित्य । स० सर्व । भा० भाव । तु० तमे । णं० वळी । दे० हे देव । इ० आ । ए० एहवुं । रु० रुप । दि० देवतानी जे । दे० देव । इ० रुद्धि । दि० देवतानी । दे० देव । ज्जु० द्युती । कांती । दि० दिव्य । दे० देव संबंधी । भा० भाव । कि० केम । ल० लाध्यो । कि० केम । प० पाम्यो । कि० केम । अ० पामी । स० आवी । कि० केम । उ० उद्यमे करी । जा० यावत । पु० पुरुषाकार । प० पराक्रमे । उ० एहेवुं । कहेतो वळी । अ० अण । उ० उद्यमे । अ० अणकर्मे । जा० यावत । अ० अपुरिसकारे । प० पराक्रमे ॥ १६७ ॥

मूळपाठः—॥१६८॥ तए णं से कुण्डकोलिए [1]समणोवासए तं देवं एवं वयासी । "जइ णं, [2]देवा, [3]सुन्दरी गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स [4]धम्मपण्णत्ती, नत्थि[5] उट्ठाणे इ वा [6]जाव[*] नियया[7] सव्वभावा; मङ्गुली[8] णं समणस्स [9]भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती, अत्थि उट्ठाणे[10] इ वा जाव[+]

१. A. B. D. E (ए. बी. डी इ मां नथी.) Omit २. A B. D E (ए बी डी इ) देवाणु, F. (एफ.) देवाणुप्पिया. ३ F (एफ मां वधारे) adds णं ४ A B. (ए. बी) ° पण्णत्ति. ५ D E (डी इ मां वधारे) जाव. ६ A. B. (ए बी मां नथी.) Omit. * १६६ पाठ जुओ ७ A. B. (ए बी.) नितया, अणितया, D E F. (डी इ एफ.) नितिया, अणितिया, G. (जी) नियतया, अणियतया. ८. G. (जी) मुंगुली, मृगली. ९ A F (ए बी मां नथी) Omit भग ° महा ° १० A. B D E F (ए. बी. डी इ. एफ) ति. + १६६ पाठ जुओ

अणियया[1] सव्वभावा । तुमे[2] णं, देवा[3], "इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वा देवज्जुई[4], दिव्वे[5] देवाणुभावे किणा[6] लद्धे किणा[7] पत्ते किणा[8] अभिसमन्नागए[9][10], किं उट्ठाणेणं जाव* पुरिसक्कारपरक्कमेणं, उदाहु अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं "? ॥ १६७ ॥

भावार्थः—॥ १६७ ॥ ते वारे ते कुंडकोलीयो श्रावक ते देवताने एम कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! जो उठाण, कर्म, बळ, वीर्य, पुरुषाकार पराक्रम विना नियत भावथीज सर्व कार्यनी सिद्धि थाय छे एवो जे गोशाला मंखली पुत्रनो धर्म तमे भलो कहो छो, अने जे उठाण, कर्म, बळ, वीर्य, पुरुषाकार पराक्रमथीज नियतभाव विना सर्व कार्यनी सिद्धि थाय छे एवो श्रमण भगवन्त श्री महावीर देवनो परुपेलो धर्म भलो नथी एम जे तमे कहोछो, तो हे देवने वल्लभकारी ! एवी देवतानी ऋद्धि, देवतानी कान्ति, देवतानी ज्योति, देवतानो अनुभाव, देवतानी पदवी, तमने शी रीते लाधी, शी रीते मळी अने शी रीते सन्मुख थइ ? उठाण, कर्म, बळ, वीर्य, पुरुषाकार पराक्रमथी ज मळी के उठाण, कर्म, बळ, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम विना मळी ? ॥ १६७ ॥

---

१ A. B. G (ए. बी. जी) अणितया, D. E. F (डी इ. एफ.) अणितिया. २. A. (ए.) तुमं. ३. F. (एफ) देवाणुप्पिया, G. (जी.) देवाणं ४. D E. (डी इ) इमे, F. (एफ.) इमेयारूया ५. A. B F. (ए बी एफ.) ० जुई ६. A. F. (ए एफ.) देवे. ७. A. (ए.) किणा, E. (इ) किण्णा F. (एफ.) किंवा. ८ A. (ए. मा नथी.) Omit; F. (एफ) किंवा. ९ A. (ए.) किणा, F. (एफ.) किंवा. १०. A. B. D. E G. (ए. बी. डी. इ. जी.) अभिसमण्णा ०

अर्थः—॥ १६८ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवे । कु० कुण्ड । को० कोलिक । स० श्रावकने । ए० एम । व० कह्युं । ए० एम । ख० निश्चे । दे० हे देवाणुंप्रिय । म० मने । इ० एहवुं । रु० रुप । दि० दिव्य । दे० देवतानी । इ० रुद्धि ३ । अ० अण । उ० उद्यमे । जा० यावत । अ० अपुरिसकार । प० पराक्रमे । ल० लाधी । प० में पामी । अ० सामी । ग० आवी ॥ १६८ ॥

मूळपाठः—॥ १६७ ॥ तए णं से देवे कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी । " एवं खलु, देवाणुप्पिया, [1]मए [2]इमेयारूवा दिव्वा देविड्ढी[3] [4]३* अणुट्ठाणेणं जाव+ अपुरिसक्कार-परक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया[5] " ॥ १६७ ॥

भावार्थः—॥ १६८ ॥ ते वारे ते देव कुंड कोलीया श्रावकनें एम कहेतो हवो एम निश्चे हे देवने वल्लभकारी ! दिव्य देवतानी ऋद्धि, देवतानो ज्योति, देवतानो अनुभाव, देवतानी पदवी ते उठाण, कर्म, वळ, वीर्य, पुरुषाकार पराक्रम विनाज मने लाधी छे, मळी छे अने सन्मुख थइ भोग्य आवी छे ॥ १६८ ॥

अर्थः—॥ १६९ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । कु० कुण्ड । को० कोलिक । स० श्रावके । तं० ते । दे० देवने । ए० एम । व० कह्युं । ज० जो । णं० वळी । दे० हे देव । तु० तमने । इ० आ । ए० एहवुं । रु० रुप ।

---

१ G. (जी) मई २ F (एफ)° रुव्वा ३. F G. (एफ. जी.) देव्वड्ढि ४. D. E. (डी इ. मां नथी), F (एफ मां पुरु) देव्वा देवजुइ, देव्वे देवाणुभावे * १६७ जुओ + १६६ जूओ. ५ A. B. D. E. G. (ए. बी. डी इ. जी) अभिसमण्णा.°

दि० दिव्य । दे० देवतानी । इ० रुद्धि ३ । अ० अण । उ० उद्यम । जा० यावत । अ० अपुरिसकार । प० पराक्रमे । ल० लाधी । प० पामी । अ० साहमी । स० आवी तो । जे० जे । णं० वळी । जी० जीवने । न० नथी । उ० उद्यम । इ. वा. अथवा । जा० यावत । प० पराक्रम । इ. वा. वळी । तें० ते । किं० केम । न० नथी थता । दे० देव । अ० माटे । णं० वळी । दे० हे देव । तु० तमने । इ० आ । ए० एहवुं । रु० रुप । दि० दिव्य । दे० देवनी । इ० रुद्धि ३ । उ० उद्यमे करी । जा० यावत । प० पराक्रमे करी । ल० लाधी । प० पामी । अ० सामी । स० आवी । तो० तो । जं० जे । व० तुं कहे छे जे । सु० रुडा । णं० वळी । गो० गोसाळा । म० मखली । पु० पुत्रे । ध० धर्म । प० परुप्यो जेमां । न० नथी । उ० उद्यम । इ. वा. अथवा । जा० जाव । नि० नित्य । स० सर्व साश्वता । भा० भाव । म० नथी । भलो । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरे । ध० धर्म । प० परुप्यो । ते जेम । अ० छे । उ० उद्यम । इ. वा. अथवा । जा० यावत । अ० अनित्य । स० सर्व । भा० भाव । तं० ते । ते० तारुं । मि० खोटुं कहेवुं छे ॥ १६९ ॥

मूळपाठः—॥ १६९ ॥ तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी[1] । "जइ णं, देवा[2], तुमे इमा[3] एया रूवा दिव्वा देविड्ढी "३* अणुट्ठाणेणं जाव[+] अपुरिसक्का-

१. A. (ए.) वदासी. २ A. B D. (ए. बी. डी.) देवाणु; E. F. (इ. एफ.) देवाणुपिया; G. (जी.) देवाणं ३. A B F. G. (ए बी. एफ. जी. मां नथी.) Omit. ४ D. E. G. (डी. इ. जी. मां नथी.) Omit. * १६७ पाठ जुओ. + १६६ पाठ जुओ.

रपरक्कमेणं लद्धा पत्ता [1]अभिसमन्नागया, जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे [2]इ वा जाव+ परक्कमे[3] [4]इ वा, ते किं न [5]देवा ? अह णं, [6]देवा, तुमे इमा[7] एया रूवा दिव्वा देविड्ढी ३× उट्ठाणेणं जाव+ परक्कमेणं [8]लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । तो जं वदसि सुन्दरी णं गोसालस्स [9]मङ्खलिपुतस्स धम्मपण्णत्ती, नत्थि उट्ठाणे इ[8] वा जाव+ नियया[10] सव्वभावा, मङ्खलीणं समणस्स भगवओ [11]महावीरस्स धम्मपण्णत्ती, अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव+ अणियया[12] सव्व भावा तं[13] ते मिच्छा " ॥ १६ए ॥

१. G. (जी.) अभिसमागया. २. A B D E. F. (ए. बी. डी. इ. एफ) ति. + १६६ पाठ जुओ. ३. F. (एफ.) पुरिसक्कारपरक्कमे. ४. A. D. E G. (ए डी इ. जी.) ति. ५. E. F. (इ. एफ) देवाणुप्पिया. ६ A. B. D E. F (ए. बी डी इ. एफ.) देवाणुप्पिया, G (जी.) देवाणं. ७. D. E. (डी. इ.) इमे. × १६७ पाठ जुओ. + १६६ पाठ जुओ. ८. A. reads (ए. मां छे.) लद्धा पत्ता तो ३ भंते एव न भवति, B. (बी. मां नथी.) Omit अभिसमन्नागया. D. E. (डी. इ. मां छे) वा ताओ for ल प. अभि० तो. ९. A. (ए.) मखलि०. F. (एफ) मखली०. १०. A D. E. F. (ए. डी. इ. एफ.) निनिया; B. (बी.) नितया, G. (जी.) नियता ११. B. (बी मां नथी.) Omit. १२. A. (ए.) अनितया, D E. (डी. इ.) अणितिया, F. (एफ.) अनितिया; G. (जी.) अणियतया. १३ A. reads (ए. मां छे) तन्न मिच्छी.

भावार्थः—॥ १६९ ॥ ते वारे ते कुंडकोलीयो श्रावक ते देवताने एम कहेतो हवो हे देवने वल्लभकारी ! जो तमने उठाण, कर्म, बळ, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम विनाज देवतानी पदवी प्रमुख सर्व मळ्युं होय तो जे जीव उठाणादिक करता नथी ते सर्व जीवने देवतानी पदवी प्रमुख केम मळतुं नथी अने जो उठाणादिकथी ज देवतानी पदवी प्रमुख सर्व मळतुं होय तो जेमां उठाणादिक विना नियत भावथीज सर्व कार्य सिद्ध थयो एवो जे गोशाळा मंखली पुत्रनो परुपेलो धर्म तुं भलो कहे छे, अने जेमां उठाणादिकथी नियत भाव विना ज सर्व कार्य सिद्ध थाय छे एवो जे महावीरनो परुपेलो धर्म भलो नथी एवुं जे तुं कहे छे ते एकांत असत्य बोले छे ॥ १६९ ॥

अर्थः—॥ १७० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देव । कु० कुण्डकोलिक । स० श्रावके । ए० एम । वु० कहे । स० थके । सं० संका पाम्यो । जा० यावत । क० संदेह । स० उपनो । नो० न । सं० बोलवा समर्थ । कु० कुण्डकोलीक । स० श्रावकने । किं० कांइ । पा० वळतो । आ० उत्तर आपवा न पामे । ना० नाम । मु० मुद्रिका (वीटी) । च० वळी । उ० उतरासण वस्त्र । च० वळी । पु० पृथ्वी । सि० सिला । प० पटे । ठ० मुके । ठ० मुकीने । आ० जे । ए० वळी । दि० दिसायी । पा० प्रगट थयो (आव्यो) । ता० ते । ए० वळी । दि० दिसाए । प० पाछो गयो ॥ १७० ॥

मूळपाठः—॥ १७० ॥ तए णं से देवे कुण्डकोलिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए[१] जाव* कलुससमावन्ने नो संचाएइ कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स किंचि[२]

१. G. (जी.) संकिए, Omit (नथी) जाव. * ८६ पाठ जुओ. २. D. E. (डी ई.) किंचि.

पामोक्कमाइक्खित्तए[1], नाममुद्दयं[2] च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए[3] ठवेइ[4], २ त्ता जामेव दिसं पाउब्भूए, तामेव दिसं[5] पडिगए ॥ १७० ॥

भावार्थः—॥ १७० ॥ कुंडकोलीया श्रावके एम कहेवाथी ते देवना मनमां शंका थइ यावत कलुष भाव (गोशालानो धर्म साचो हशे के महावीरनो परुपेलो धर्म साचो हशे ?) पाम्यो अने बोलकूल उत्तर दइ शक्यो नहि. पछी कुंडकोलीया श्रावकने कांइ पण उत्तर दिधा विना नामांकित मुंद्रिका अने उत्तरीय वस्त्र ए बेने पृथ्वी शीलापट्ट उपर मुकीने जे दिशाएथी आव्यो हतो ते दिशाए पाछो गयो ॥ १७० ॥

अर्थः—॥ १७१ ॥ तें० तेणे । का० काळे । तें० तेणे । स० समये । सा० महावीर स्वामि । स० पधार्या ॥

मूळपाठः—॥ १७१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे[6] ॥ १७१ ॥

भावार्थः—॥ १७१ ॥ ते काळ ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव त्यां पधार्या ॥ १७१ ॥

अर्थः—॥ १७२ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । कु० कुण्ड कोलीक । स० श्रावक । इ० एहवी । क० कथा । ल० लाध्ये थके । ह० हर्ष संतोष पाम्यो । ज० जेम । का० कामदेव । त० तेम । नि० वांदवा नीकळ्यो । जा० यावत । प० भक्ति करे । ध० धर्म । क० कथा कही ॥ १७२ ॥

१. G (जी) पामुक्ख°. २. D. E (डी. इ.) °मुद्दं च. ३. B. G (बी. जी) °वट्टए. F (एफ.) °पढए. ४. F. (एफ.) ट्ठवेइ ५. D. E. (डी. इ.) दिसिं. ६. A. °सड्ढे; D. E. G. (डी. इ. जी.) °सढो.

मूळपाठः—॥ १७२ ॥ तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए इमोसे कहाए लद्धट्ठे हट्ठ[1] जहा कामदेवो[2] तहा निग्गछइ जाव[*] पज्जुवासइ ॥ धम्म कहा[1] ॥ १७२ ॥

भावार्थः—॥ १७२ ॥ ते वारे कुंडकोलीयो श्रावक महावीर स्वामी पधार्यानी वात सांभलीने हर्ष संतोष पाम्यो अने कामदेवनी पेरे नीकळी प्रभुने वांदी सेवाभक्ति करतो हवो. प्रभुए धर्म कथा कही ॥ १७२ ॥

अर्थः—॥ १७३ ॥ कु० कुंडकोलिक । इ० मत्ये । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । कु० कुण्ड कोलिक । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । से० ते । नू० निश्चे । कु० हे कुण्डकोलिक । क० काले । तु० तारी पासे । पु० पाछला पहोर । का० दिवसने । स० समये । अ० असोक । व० वन मांहे । ए० एक । दे० देव । अं० (तारी) समीपे । पा० प्रगट थयो । त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देव । ना० नाम । मु० मुद्रिका । च० वळी । त० तेमज । जा० यावत । प० पाछो । ग० गयो । से० ते । नू० निश्चे । कु० हे कुण्ड कोलीक । अ० ए अर्थ । स० साचो । हं० हा स्वामि । अ० ए अर्थ साचा । तं० तने । ध० धन्य । मि० छे । णं० वळी । तु० तुजने । कु० हे कुण्ड कोलीक । ज० जेम । का० कामदेव ॥ १७३ ॥

मूळपाठः—॥ १७३ ॥ "[1]कुण्डकोलिया" इ समणे भगवं महावीरे[2] कुण्डकोलियं

१. A. (ए मां नथी.) Omit. F. (वक) हट्ठतुट्ठ २. G. (जी.) " देव. * ११६ पाठ जुओ. । ११७ नी टीका जुओ ३. E. (इ.) कुंड कोलिय ति. ४. A. B. D. E. (ए. बी. डी इ. मां नथी.) Omit.

समणोवासयं एवं वयासी । "से नूणं, कुण्डकोलिया, कल्लं तुब्भ[1] पुव्वावरण्हकालसमयंसि[2] असोगवणियाए एगे देवे अन्तियं पाउब्भविडा । तए णं से देवे नाममुद्दं च[3] तहेव[4] जाव* पडिगए । से नूणं, कुण्डकोलिया, अट्ठे समट्ठे[5] "?। "हन्ता, अत्थि"। "तं धन्ने[6] सि णं तुमं, कुण्डकोलिया[7]," जहा+ कामदेवो[8] ॥ १७३ ॥

भावार्थः—॥ १७३ ॥ त्यार पछी हे कुंड कोलीया ! एम संबोधन वचने श्रमण भगवंत श्री महावीर देव कुंडकोळीया श्रावकने एम कहेता हवा. ते निश्चे हे कुंडकोळीया ! काले मध्यान समयने विषे अशोकवाडीमांहि एक देवता तारी पासे प्रगट थयो हतो ? ते देव तारी नामांयित मुद्रिका अने उत्तरीय वस्त्र मुकीने यावत उत्तर दीधा विना पाछो गयो. ते निश्चे हे कुंडकोळीया ! ए अर्थ (वात) सत्य छे. ते वारे कुंड कोळीयो कहे, हा प्रभु ! ए सर्व सत्य छे. ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव कहेता हवा, हे कुंडकोळीया ! तमने धन्य छे. (जेम कामदेवने कह्युं तेमज कुंडकोळीयाने पण कह्युं) ॥ १७३ ॥

---

१. A. B. F (ए. बी. एफ) तुब्भं, D. E. (डी. इ.) तुब्भे २. A. (ए.) पुव्वावरण्हे. का°, F. (एफ.) पुव्वावरण्ह का°. ३. F (एफ. मां वधारे) adds उत्तरिज्जगं च ४ D. E. (डी. इ) तं चेव. * १६६ थी १७० पाठ जुओ ५. A. B. F. (ए. बी. एफ.) अत्थे समत्थे. ६. A. B. D. E (ए. बी डी. इ.) धण्णे. ७ A B. D. E. (ए. बी. डी. इ. मां नथी.) Omit. + ११३ पाठ जुओ. ८ A. D. E. (ए. डी. इ.) कामदेवे.

अर्थः—॥ १७४ ॥ अ० आर्य साधु । इ० प्रत्ये । म० श्रमण । भ० भगवंत । प० महावीर स्वामि । स० श्रमण । निं० निग्रंथ (साधु) । य० वळी । नि० साध्वी । य० वळी । आ० आमंत्रि । ए० एम । व० कहे । ज० जो । ता० खरेखर । अ० हे आर्य । गि० गृहस्थ । गि० गृहस्थी मध्ये । व० रहेता । णं० वळी । अ० अन्यतीर्थीने । अ० अर्थे करी । य० वळी । हे० हेतु (दलीले) ए करी । य० वळी । प० प्रश्ने करी । य० वळी । का० कारणे करी । (पुरावा आपी) । य० वळी । वा० खुलासा करी । य० वळी । नि० निष्फळ । प० उत्तर । वा० बोलवानुं । क० करे । एटले सामो माणस उत्तर आपवा निष्फळ थाय तेम करे तो । स० समर्थ छो । पु० वळी । अ० तमो हे आर्यो । स० श्रमण । नि० निग्रन्थ । दु० द्वा दशांगि । ग० गणधरे । पि० रचेल । अ० भणीने । अ० अन्यतीर्थिने । अ० अर्थे करी । य० वळी । जा० वळी । नि० निष्फळ । प० उत्तर । क० करवाने । सामा माणसने उत्तर आपतो बंध करवाने ॥ १७४ ॥

मूळपाठः—॥१७४॥ "अज्जो" इ[1] समणे भगवं महावीरे[2] समणे[3] निग्गन्थे[4] य निग्गन्थीओ[5] य आमन्तित्ता[6] एवं वयासी । "जइ ताव, अज्जो, गिहिणो [7]गिहिमज्झा[8] वसन्ता णं "अन्न-

[1]. A. B. D. E. F. (ए. बी. डी. इ. एफ.) ति. [2]. A. B. E. (ए. बी. इ मां नथी.) Omit. [3]. B D. E. F. (बी. डी. इ. एफ.) समणा. [4]. A B. D. E. F. (ए. बी. डी. इ. एफ.) निग्गन्था. [5]. A. B. (ए. बी.) आमंतेत्ता [6]. A. B. F. G. (ए. बी. एफ. जी.) ° मज्झे. [7] D. E. (डी. इ) ° वसंतो. B. D. E. F. (बी. डी. इ. एफ. मां नथी.) Omit णं. [8]. D. E. (डी. इ.) अणुत्थिय.

त्थिए अट्ठेहि य [1]हेऊहि य [2]पसिणेहि य कारणेहि य [3]वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणे [4]करेन्ति, सक्का [5]पुणाइं, अज्जो, समणेहिं निग्गन्थेहिं डुवालसङ्गं गणिपिडगं[6] अहिज्जमाणेहिं अन्नउत्थिया अट्ठेहि[7] य[8] जाव* निप्पट्ठपसिणा[9] करित्तए[10] ॥ १७४ ॥

भावार्थः—॥ १७४ ॥ हे आर्यो ! एम संबोधन वचने श्रमण भगवंत श्री महावीर देव साधु साध्वीने तेडावीने एम कहेता हवा हे आर्यो ! जुओ आ गृहस्थ गृहस्थावासमांहि वसता थकां अन्य तीर्थिने अर्थे करी, हेतुए करी, प्रश्ने करी, कारणे करी, खुलासा करी, अन्य तीर्थिना प्रश्ननुं निराकरण करी शके छे अने तेना प्रश्न खोटा ठरावी सत्य उत्तर दइ शके छे तो हे आर्यो ! श्रमण निर्ग्रंथो ! तमे तो द्वादशांगीना भणनारा छो तेथी अन्यतीर्थिने अर्थे करी यावत खुलासे करी तमे पण जीतजो ॥ १७४ ॥

---

१. A. (ए.) हिउहि, D (डी.) हित्तूहि; E F. (इ. एफ.) हेउहि २. B. F. G. (बी. एफ. जी) पसणेहि. ३. F. G. (एफ. जी. मां नथी.) Omit. ४. A. B. F. (ए. बी एफ) करेति, D. E (डी. इ.) करेइ ५. D. E. G. (डी. इ. जी.) पुणाइ. ६. D. E. (डी. इ.) ° पिडयं. ७. D. (डी.) अत्येहि. ८. B F (बी. एफ. मां नथी.) Omit * पाछला पेरेग्राफमां बाकीनुं लेवुं. ९. A. D. E. (ए. डी. इ.) ° पसिणं B. (बी.) ° पसिणिं; F. (एफ.) ° पसिण, G. (जी) ° पसणे १०. B. D. E. G. (बी. डी. इ. जी.) करेत्तए.

अर्थः—॥ १७५ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । स० श्रमण । नि० निग्रन्थ साधुओ । य० वळी । नि० साध्वीओ । य० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर स्वामिने । त० तेहज । त्ति० एम साचो । ए० ए। अ० अर्थ । त्रि० विनये करी । प० सांभळे ॥ १७५ ॥

मूळपाठः—॥ १७५ ॥ तए णं समणा निग्गन्था य[1] निग्गथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स[2] "तहृ" त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेन्ति[3] ॥ १७५ ॥

भावार्थः—॥ १७५ ॥ एवुं श्रमण भगवंत श्री महावीरनुं वचन सांभळीने साधु-साध्वी तेहत प्रमाण करे अने ए अर्थ विनये करीने सांभळे ॥ १७५ ॥

अर्थः—॥ १७६ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । कु० कुण्डकोलिक । स० श्रावक । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर स्वामिने । वं० वांदी । न० नमी । न० नमीने । प० प्रश्न । पु० पुछे । पु० पुछीने । अ० अर्थ । आ० ग्रहे । आ० ग्रहीने । जा० जे । ए० वळी । दि० दिसाथी । पा० आवेल । ता० ते । ए० एज । दि० दिसाए । प० पाछो । ग० गयो ॥ १७६ ॥

१. A. B. D. E. G. (ए. बी. डी. इ. जी. मां नथी.) Omit; य निग्गन्थीओय. २. A. B. D. E. (ए. बी. डी. इ. मां नथी.) Omit. ३. A. B. D. (ए. बी. डी.) ०सुणेति. E. F. (इ. एफ.) ०सुणेइ; G. (जी.) ०सुणति.

मूळपाठः—॥ १७६ ॥ तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए[1] समणं भगवं [1]महावीरं वन्दइ नमंसइ, २ त्ता पसिणाइं पुच्छइ, २ त्ता अट्ठमादियइ, २ त्ता[2] जामेव दिसं[3] पाउब्भूए, तामेव दिसं[3] पडिगए[4] ॥ १७६ ॥

भावार्थः—॥ १७६ ॥ ते वारे ते कुंडकोलीयो श्रावक श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदी नमस्कार करी प्रश्न पुछी अर्थ धारीने जे दिशाएथी आव्यो हतो ते दिशाए पाछो गयो ॥ १७६ ॥

अर्थः—॥ १७७ ॥ सा० स्वामी (महावीर देव)। ब० बाहार। ज० जनपद देशमां। वि० विहार। वि० करे ॥ १७७ ॥

मूळपाठः—॥ १७७ ॥ सामी[1] बहिया जणवय विहारं विहरइ ॥ १७७ ॥

भावार्थः—॥१७७॥ श्रमण भगवंत श्री महावीर देव त्यांथी विहार करी बाहिर जनपद देशने विषे विचरे ॥१७७॥

अर्थः—॥ १७८ ॥ त० ते वारे। णं० वळी। त० ते। कु० कुण्डकोलिक। स० श्रावक। ब० घणा। सी० सीयळव्रत। जा० यावत। भा० भावतायका। चो० चौद। सं० वरस। व० अतिक्रमे। प० पनरमुं। सं० वरसने। अं० आंतरे। व० वर्तता। अ० एकदा। क० प्रस्तावे। ज० जेम। का० कामदेव। त० तेम। जे० वडा पु० पुत्रने। ठ० (वडेरा ठामे) स्थापीने। त० तेमज। पो० पोसहसालाए। जा० यावत। ध० धर्म। प० पन्नति।

---

१. A. B. D. E. G. (ए. बी. डी. इ. जी मां नथी.) Omit. २. A. B. D. E. F. (ए. बी डी इ. एफ. मां नथी.) Omit २त्ता ३. F. (एफ.) दिसिं. ४. B. (बी.) only गए; D. E. (डी. इ.) पडिगया.

उ० अंगिकार करतो । वि० विचरे । ए० एम । ए० अगीयार । उ० श्रावक । प० पडिमाओ ॥ १७८ ॥

मूळपाठः—॥ १७८ ॥ [1]तए णं तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स[2] [3]बहूहिं सील जाव[+] भावेमाणस्स [4]चोद्दस संवच्छराइं[5], वइक्कन्ताइं[6] । पण्णरसमस्स[7] संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स अन्नया कयाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं[8] ठवेत्ता[9] तहा पोसहसालाए जाव[+] धम्मपण्णत्तिं[10] उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ । एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ[×] ॥ १७८ ॥

भावार्थः—॥ १७८ ॥ ते वारे ते कुंडकोलीयो श्रावक घणा शीलव्रतादिके करी पोताना आत्माने भावतो थको चौद वर्ष गया पछी पंदरमां वर्षने मध्य भागे वर्तता जेम कामदेवे कर्युं तेमज पोताना म्होटा पुत्रने कुटुंबने विषे स्थापीने पौषधशाळाए यावत महावीर देवनो परुपेलो धर्म अंगिकार करी विचरतो हवो. एमज इग्यार श्रावकनी प्रतिज्ञा वही ॥ १७८ ॥

---

१. B (बी) तं for तए णं, D E. G. (डी. इ. जी. मां नथी.) Omit तए णं. २ A. B. D. E. G. (ए बी. डी. इ जी. मां नथी) Omit. ३. A. D. E. F (ए. डी. इ एफ.) बहुहिं. * ६६ पाठ जुओ. ४. F. G. (एफ. जी.) चउद्दस. ५ A. B. C. D. G. (ए. बी. सी. डी. जी.) संवच्छरा ० न्ता. ६ A. B. (ए बी.) वीइक्क०, D. E. (डी. इ.) विइक्क० ७. A. B. (ए बी. मां वधारे) add य ८. A. (ए) जेट्ठं पुत्तं. ९. A. G. (ए. जी.) कुडुंबे ठवित्था, D. (डी.) ठवेत्ता; E (इ.) ठवेइ २ त्ता; F. (एफ.) ठवित्ता. + ९२, ६६, ६९ पाठ जुओ. १०. D. E. (डी. इ.) ० पण्णत्ती. × ७०, ७१ पाठ जुओ.

अर्थः—॥ १७९ ॥ त० तेमज । जा० यावत । सो० सौधर्म । क० कल्पे । अ० अरुणजझ । वि० विमाने । जा० यावत । अ० अन्त । का० करशे ॥ १७९ ॥

मूळपाठः—॥ १७९ ॥ तहेव [1]जाव* सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव+ अन्तं काहिइ[2] ॥ १७९ ॥

भावार्थः—॥ १७९ ॥ तेमज मरणने अंते अणसण करी, काळने अवसरे काळ करी सौधर्म देवलोके अरुण ध्वज नामे विमानने विषे उपन्यो; त्यां चार पल्योपम आयुष्यनी स्थिति पूर्ण करी मरीने महाविदेह क्षेत्रमां अवतरी सीझशे, यावत सर्व दुःखनो अंत करी मोक्षमां जाशे ॥ १७९ ॥

अर्थः—॥ नि० समाप्त ॥ स० सातमा । अं० अंग । उ० उपासग । द० दशांगनुं । छ० छठुं । अ० अध्ययन स० । समाप्त ॥ ७ ॥ ६ ॥

मूळपाठः—॥ निक्खेवो[3] सत्तमस्स[4] [5]अङ्गस्स उवासगदसाणं छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥७॥६॥

भावार्थः—समाप्त ॥ इति श्री सातमा अंग उपासग दशांगनुं छठुं अध्ययन पुरु थयुं ॥ ७ ॥ ६ ॥

---

१. A B (ए. बी. मा नथी) Omit * ८९-९०, १२४, १२५ पाठ जुओ + भगवती पानुं ३०३-३०४, पाठ १८८ जुओ. २ E. (इ) काहिति, G (जी) सिज्झिहिइ. for अ० का०. ३. D E. G. (डी. इ. जी. मां नथी) Omit. ४ A. B. D E F. (ए. बी डी इ' एफ. मा नथी.) Omit

सत्तमं अज्झयणं ॥

॥ सातमुं अध्ययन ॥

अर्थः—॥ स० सातमानी । उ० शरुआत ॥

मूळपाठः—॥ सत्तमस्स उक्खेवो[1] ॥

भावार्थः—॥ सातमानी शरुआत ॥

अर्थः—॥ १८० ॥ पो० पोलासपुर । ना० नामे । न० नगरे । स० सहस्र । अं० अंब । व० वन । उ० उद्याने । जि० जित । स० सत्तु । रा० राजा ॥ १८० ॥

मूळपाठः—॥ १८० ॥ पोलासपुरे[2] नामं [3]नयरे । [1]सहस्सम्बवणे उज्जाणे[1] । जियसत्तू राया ॥ १८० ॥

१. D. E. G. (डी. इ. जी.) उक्खेवओ. २. G. profixes (जी. मां प्रथम छे) तेणं समएणं तेणं कालेणं. G (जी) पुलासपुरे; A. B. D. E. F. (ए. बी. डी. इ. एफ.) °पुरं. ३ A. B. D. E. F. (ए. बी डी. इ. एफ) °रं °णं.

भावार्थः—॥ १८० ॥ ते काळ ते समयने विषे पोलासपुर नामे नगर हतुं, सहश्राण नामे उद्यान हतुं, जीतशत्रु नामे राजा हतो ॥ १८० ॥

अर्थः—॥ १८१ ॥ त० ते । णं० वळी । पो० पोलासपुर । न० नगरे । स० सदालपुत्र । ना० नामे । कु० कुम्भकार । आ० गोसाळानो । उ० श्रावक । प० वसे छे । आ० आजीवीक (गोसाळानो)। स० सिद्धांत । ल० लाध्यो छे । अ० अर्थ । ग० ग्रह्यो छे । अ० अर्थ । पु० पुछीने । अ० अर्थ निर्वार्यो छे । वि० ए अर्थ साचो ते निश्चे कर्यो छे । अ० ग्रह्यो । अ० अर्थ । सूत्रथी । अर्थथी । गुरु परंपराथी । अ० अस्थी । मिं० हाडमांहि मिजारुप । पे० प्रेमने । रा० रागथी । र० रंगाएल एटले धर्मना रागे करी रंगाएल । य० वळी । अ० हे यतीओ । आ० आउखावंत (हे आउखावंत यतिओ)। आ० आजीवीय । स० समय सिद्धांत गोसाळानो । अ० अर्थ । अ० ए । प० परमार्थ मुक्तिदायक । से० बीजा । अ० अनर्थ । त्ति० एम । आ० आजीविका । स० समय सिद्धांत ते साथे अ० पोतानो आतमा । भा० भावतो । वि० विचरे ॥ १८१ ॥

मूळपाठः—॥ १८१ ॥ तत्थ णं [1]पोलासपुरे नयरे सद्दालपुत्ते नामं [2]कुम्भकारे आजीविउवासए[3] परिवसइ । आजीवियसमयंसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पुछियट्ठे विणिछियट्ठे अभि-

१. F. (एफ.) पुलास० २. E. add (इ. मां वधारे) इड्ढे, F. (एफ.) होत्था. ३ A. D. E. G. (ए. डी.-इ. जी.) आजीविउवासए; F. (एफ.) आजीविए उवासए.

गयट्ठे[1] अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते[2] य[3] "अयमाउसो आजीवियसमए[4] अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे[5] अणट्ठे" [6]त्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ १८१ ॥

भावार्थः—॥ १८१ ॥ ते पोलासपुर नगरने विषे आजीवीकामती (सुख, २ दुःख, ३ जीवतर, ४ मरण, ५ लाभ, ६ अलाभ, ए छ वस्तुनो परुपनार गोसालो मंखली पुत्र ते), नो श्रावक सदालपुत्र नामे कुंभार वसतो हतो. तेणे गोशालाना सिद्धांतना अर्थ लाधेला हता, अर्थ ग्रहेला हता, अर्थ पुछेला हता, अर्थ जाणेला हता, विशेषे अर्थ जाणेला हता अने गोशालाना धर्मने विषे जेना हाड (आठ रुचक प्रदेश), हाडनी मींजा (बीजा असंख्यात प्रदेश) रंगाणी हती अने आजीवीका मतनो अर्थ सत्य छे एम परम (उत्कृष्टो) अर्थ छे अने ए विना बीजा तमाम अर्थ (धर्म), अनर्थ (खोटा) जाण्या छे. गोशालाना धर्मने विषे अने तेनां सिद्धांतने विषे पोताना आत्माने भावतो थको विचरतो हवो ॥ १८१ ॥

अर्थः—॥ १८२ ॥ त० ते । णं० वली । स० सदाल । पु० पुत्रने । आ० आजीविक एटले गोसाळाना । उ० श्रावकने । ए० एक । हि० सुवर्णनी । को० कोडी । नि० भूमिमां । प० दाटेल । ए० एक । व० व्याजे व्यापारे । प० मुकेल । ए० एक । प० घरवखरामां । प० मुकेल । ए० एक । व० वर्ग । द० दश । गो० गाय ।

---

१. G. (जी) Omit from अभिगयट्ठे Down to त्ति (जी मा "अभिगयट्ठे" थी "त्ति" सुधीनो पाठ नथी.) २. A. (ए.) अट्ठिमिंज°; B. (बी.) अट्ठिमेज° ३. A F. (ए. एफ. मां नथी) Omit. ४ B. (बी.) °समट्ठे. ५. D. E. F. G. (डी. इ. एफ. जी.) अणिट्ठे. ६. A. (ए. मां वधारे) adds पत्र.

सा० हजार । दस हजार गायनुं एक गोकुळ एहवुं । व० एक गोकुळ ॥ १८२ ॥

मूळपाठः—॥ १७२ ॥ तस्स णं[1] सद्दालपुत्तस्स आजीवउवासगस्स[1] एक्का[2] हिरस-कोडी निहाणपउत्ता[3] एक्का[4] वड्ढिपउत्ता एक्का पवित्थरपउत्ता एक्के[5] [6]वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं ॥ १७२ ॥

भावार्थः—॥ १८२ ॥ ते सदाल पुत्र गोशाळाना श्रावकने एक क्रोडी सोनैया धरती मांहि दाटेला हता, एक क्रोडी सोनैया व्यापारमां वृद्धिए हता अने एक क्रोडी सोनैयानो घर वाखरो हतो. दश हजार गाए एक गोकुळ थाय तेवुं एक गोकुळ हतुं ॥ १८२ ॥

अर्थः—॥ १८३ ॥ त० ते । णं० वळी । स० सदाल पुत्रने । आ० गोसाळाना । उ० श्रावकने । अ० अग्निमित्रा । ना० नामे । भा० भार्या । हो० हती ॥ १८३ ॥

मूळपाठः—॥ १७३ ॥ तस्स [7]णं सद्दालपुत्तस्स आजीविउवासगस्स[8] अग्गिमित्ता[9]

१. F (एफ.) आजीविउवा°. २ B. G. (बी जी) एका. ३. F G. (एफ. जी.) °पउत्ताउ. ४ A. B. D (ए बी. डी. मां फक्त) Only वड्ढिपवित्थरपउत्ता, E (इ.) वुड्ढिपवित्थरपउत्ता, G. (जी) वुड्ढिपउत्ताउ पवित्थरपउत्ताउ. ५. A B. F. G. (ए. बी. एफ. जी) एगे ६. B. D. (बी. डी.) व्वए; B. (बी. मां पछी) afterwards व्वएणं ७ B. (बी. मां नथी.) Omit. ८ A. B D. E. F G. (ए. बी डी. इ. एफ. जी. मां नथी.) Omit. ९. G. (जी.) अग्गमित्ता.

नामं भारिया होत्था ॥ १८३ ॥

भावार्थः—॥ १८३ ॥ ते सद्दाल पुत्रने अग्निमित्रा नामे भार्या हती ॥ १८३ ॥

अर्थः—॥ १८४ ॥ त० ते । णं० वळी । स० सद्दालपुत्र । आ० गोशाळाना । उ० श्रावकने । पो० पोलास । पु० पुर । न० नगरनो । ब० बाहेर । प० पांचसे । कु० कुंभकारनी । आ० दुकानो । हो० हती । त० त्यां । णं० वळी । ब० घणा । पु० पुरुषो । दि० गरीब । भ० खोराकनो । तंगीवाळा एटले पेट भराणीया । क० नित्य । क० नित्य—दररोज । ब० घणा । क० करवडा (चरवडा) । य० वळी । वा० मोटा चरवडा । य० वळी । पि० गाडवा कुंडा । य० वळी । घ० घडा । य० वळी । अ० अर्ध । घ० घडा । य० वळी । क० कळश । य० वळी । अ० मोटो माण (गोळा) । य० वळी । जं० पाणीना ठाम ढांकवाना ढुमारा—ढांकणोयुं । य० वळी । उ० कोठी तेल नाखवाना भाजन । य० वळी । क० करे । अ० बीजा । य० वळी । से० ते । ब० घणा । पु० पुरुषो । दि० गरिब । भ० खोराकनी तंगीवाळा एटले पेट भराणीया । क० नित्य । क० नित्य । ते० ते । ब० घणा । क० करवडा । य० वळी । जा० यावत । उ० कोठी । य० वळी । रा० राज । म० मार्ग मांहे । वि० पेट भरवानी विधि । क० करता । वि० विचरे ॥ १८४ ॥

मूळपाठः—॥ १८४ ॥ तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविउवासगस्स[1] पोलासपुरस्स

१. B. D. E. F. G. (बी. डी. इ. एफ. जी. मां नथी.) Omit. २. D. E. (डी. इ. मां फक्त) आजीवियस्स F. (एफ.) आजीवियउवासगस्स.

नगरस्स बहिया पञ्च[1] कुम्भकारावणसया होत्था। तत्थ[2] णं बहवे पुरिसा दिण्णभइभत्तवेयणा[3] कल्लाकल्लिं[4] बहवे करए य वारए य पिहडए[5] य घडए य अद्धघडए[6] य कलसए य अलिञ्जरए[7] य जम्बूलए[8] य उट्टियाओ य करेन्ति,[9] अन्ने य से[10] बहवे पुरिसा दिण्णभइभत्तवेयणा[11] कल्लाकल्लिं तेहिं बहूहिं करएहि[12] य जाव* उट्टियाहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा[13] विहरन्ति[14] ॥ १८४ ॥

भावार्थः—॥ १८४ ॥ ते सदाल पुत्र गोशाळाना श्रावकने पोलासपुर नगरनो बाहिर पांचसे कुंभारना हाट

---

१ G. (जी मां) Reads पंचसय कुंभकारावणस्स २ B. (बी.) तस (?), D E. F. G. (डी. इ. एफ. जी.) तस्स. ३. A B. (ए बी) दिण्णभयिभत्तवेयणा, D. (डी.) दिण्णभविभत्तावेदणा, E. (इ.) दिण्णभत्तिभत्तावेदणा, F (एफ.) दिन्नभइए भत्तवेयणा, G. (जी.) दिण्णभतवेइणा. ४. D. E. G. (डी. इ. जी)° कल्लं ५. A. (ए.) पिउएए, B. F. (बी एफ.) पिउए ६ G. (जी. मां नथी.) Omit, अद्ध° य ७. D. (डी.) अलिजयए, E. (इ.) अल्जिए ८ F (एफ) जंबुलए. ९. A. (ए.) करेति, B. (बी.) करित्ति, F (एफ.) करिंति १० D E. (डी. इ. मां नथी.) Omit से. ११. A. B. F. (ए. बी एफ.) दिन्न°, D E (डी. इ.) दिण्णभत्तदिण्णवेयणा, G (जी) दिणभविभत्त १२. D. E. (डी. इ.) करएहिं, Omit. य (य नथी) * पाछला वाक्यमां बाकीनो पाठ जुओ १३. B (बी.) कप्पेमाणे, १४. A. E. G. (ए इ जी.) विहरइ.

हतां, त्यां सदाल पुत्रे केटलाएक पुरुषने मूल्य (नाणुं) आपवानुं करी एटले पगारथी राखेला हता. केटलाएक पुरुषने जेटली मजुरी थाय ते प्रमाणे मूल्य आपवानुं करीने राखेला हता. केटलाएकने खावा मा‌टे राखेला हता, केटलाकने कण (कोरु अनाज) आपवानुं करो राखेला हता, एम घणा सेवकोने (नोकरोने) राखेला हता. (आ सर्व नोकरो वासण घडनाराज हता) ते पाणीना घडा, गाडवा, थाळी, सानका, हांडलो, घी तेलना घडा, पाणी भरवाना म्होटा गोळा, माण्य, कोठी, दोणी, वाढी, ढांकणो, सकोरा (रामपातर) प्रमुख घणा माटीना वासण दीन दीन प्रत्ये बनावता हता. वासण करनारा सिवाय बीजा घणा पुरुषने मूल्य तथा भोजन आपीने दिन दिन प्रत्ये राज्यमार्गने विषे ते वासणने वेची आजीविका करतो थको विचरतो हवो ॥ १८४ ॥

अर्थः—॥ १८५ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० से । स० सदालपुत्र । आ० गोसाळानो । उ० श्रावक । अ० एकदा । क० प्रस्तावे । पु० पाछला पहोर । का० काळ । स० समये । जे० ज्यां । अ० अशोक । व० वन । ते० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । गो० गोसाळा । म० मंखली पुत्रनी । अ० पासे । ध० धर्म । प० पन्नती । उ० सांभळी । अंगिकार करी । वि० विचरे ॥ १८५ ॥

मूळपाठः—॥ १७५ ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविउवासए अन्नया[1] कयाइ[2] पुव्वावरण्हकालसमयंसि[3] जेणेव असोगवणिया[4] तेणेव उवागच्छइ, २त्ता[5] गोसालस्स

१ A. (ए) अण्णदा. २. A. (ए.) कदाइ; B. G. (बी. जी.) कयाइं ३ E. (इ.) पुव्वावरण्ण ० ४. F. (एफ.) ० वणियाए. ५ D. E. F. G. (डी. इ एफ जी. मा नथी.) Omit २ त्ता

मङ्खलिपुत्तस्स [1]अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ[2] ॥ १८५ ॥

भावार्थः—॥ १८५ ॥ ते गोशाळानो श्रावक एकदा प्रस्तावे मध्यान्ह समयने विषे ज्यां अशोक वाडी हती त्यां आवीने गोशाळा मंखली पुत्रना समीपनो धर्म परुपेलो ते अंगिकार करीने विचरतो हवो ॥ १८५ ॥

अर्थः—॥ १८६ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । त० तें । स० सदालपुत्र । आ० गोसाळाना । उ० श्रावक पासे । ए० एक । दे० देव । अ० पासे । पा० प्रगट थयो ॥ १८६ ॥

मूळपाठः—॥ १८६ ॥ [3]तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स [4]एगे देवे अन्तियं पाउब्भविह्मा ॥ १८६ ॥

भावार्थः—॥ १८६ ॥ ते वारे ते सदालपुत्र गोशाळाना श्रावकनी पासे एक देवता प्रगट थयो ॥ १८६ ॥

अर्थः—॥ १८७ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देवता । अ० आकाशे । प० रहीने । स० घुघरी आदि आभरणे करी । जा० यावत । प० वस्त्र पेहेरे । स० सदाल पुत्र । आ० गोसाळाना । उ० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । ए० इयां । णं० वळी । दे० हे देवाणुप्रिय । क० काले । इ० इहां । म० मोटो । मा० माहानुभाव । उ० उपनुं छे जेने । णा० ज्ञान । दं० दर्शन (चारित्रनो) । ध० धरनार । ती० अतीत काळ । प० वर्तमान काळ । अ० अनागत काळनो । जा० जाण । अ० अरिहंत । जि० जीन । के० केवळी । स० सर्वज्ञ ।

---

१ E (इ.) अंतिय २ A (ए) विहरंति ३. A. Reads Ouly (ए. मां फक्त छे.) तस्स णं.
४. B. G. (बी. जी.) एके; D. E. (डी. इ) एके.

स० सर्व । द० दर्शनी । तै० त्रिलोके । व० दीठो । म० महिमा जेनो । पू० पूजनीक । स० सहित । दे० देवता । म० मनुष्य । अ० असुर कुमार सहित । लो० लोकने । अ० अर्चनीक । पूजनीक । व० वंदनीक । स० सत्कारवा योग्य । स० सन्मान करवा योग्य । क० कल्याणकारी । म० मंगळकारी । दे० देवसमान । चे० ज्ञानवंत (पवित्र) । जा० यावत । प० सेवा करवा योग्य । त० रुडा । क० कर्मरूप । सं०:सपदा । स० संयुक्त । तं० तेने । णं० वळी । तु० तमे । वं० वांदजो । जा० यावत । प० सेवा करजो । पा० पाढीहारुं । पी० बाजोठ । फ० पाटीयुं । सि० सेजा । सं० संथारो त्रणां माटे । उ० आमंत्रण करजो । दो० बे वार । पि० वळी । त० त्रणवार । पि० वळी । ए० एम । व० कहे । व० कहीने । जा० जे । ए० वळी । दि० दिशाथी । पा० प्रगट थयो हतो । ता० तेज । दि० दिशाए । प० पाछो गयो ॥ १८७ ॥

मूळपाठः—॥ १८७ ॥ तए णं से देवे अन्तलिक्ख पडिवन्ने सखिङ्खिणियाइं जाव* परिहिए[1] सद्दालपुत्तं आजीविउवासयं एवं वयासी । "एहिइ[2] णं, देवाणुप्पिया, कल्लं इहं महामाहणे [3]उप्पन्नणाणदंसणधरे तीयपडुप्पन्नमणागयजाणए[4] अरहा जिणे केवली सव्वन्नू

* ११३ पाठ जुओ १ A (ए.) pref. पवर, F (एफ.) reads. परिहिए. २ A (ए.) पहीते, B (बी) पहिते, F. (एफ) पहिति, D E. (डी. इ) पहिति, G (जी.) पह. ३ A. B (ए बी) ० णाण ०: ४. D. (डी) तीयपडुपण्णाणागयजाणए, E (इ.) तीयपडुपण्णाणागए जाणए, G. (जी.) ईयपडुपण्णाणागयजाणए; B. (बी.) तीययडिपडपन्नाणागयजाणए, F. (एफ.) तीयपच्चुपन्नमणागए जाणए.

सवदरिसी[1] तेल्लोक्कवहियमहियपूइए[2] सदेवमणुयासुरस्स[3] लोगस्स अच्चणिज्जे वन्दणिज्जे सक्कारणिज्जे[4] सम्माणणिज्जे कल्लाणं मङ्गलं देवयं चेइयं जाव+ पज्जुवासणिज्जे तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते[5]। तं[6] णं तुमं वन्देज्जाहि[7] जाव× पज्जुवासेज्जाहि,[8] पाडिहारिएणं[9] पीढफलगसिज्जासंथारएणं[10] उवनिमन्तेज्जाहि[11]"॥ दोच्चं पि तच्चं पि[12] एवं वयइ,[13] इत्ता जामेव दिसं[14] पाउब्भूए तामेव[15] दिसं[14] पडिगए[16] ॥ १८७ ॥

---

१. A. (प.) ०दरिस्सी, E F. (इ. एफ.) ०दरसी. २. D G. (डी. जी.) तिलोक्क०; F. (एफ.) तिलोक्क०, F. (इ.) तिलोय०, E. (इ.) Omit वहिय. ३. G. (जी.) सदेव०, A. (प.) ०माणुया०, D E. (डी. इ.)० सुरलोगस्स. ४. D. E G. (डी इ. जी. मां नथी) Omit from सक्कारणिज्जे Down to चेइयं) A. B F. (प. बी एफ.) pref. पूयणिज्जे. + विणएणं (उववाइ पाठ २ मांथी) उम्मेरयो. ५. A. G. A. (प. जी. प.) तव्वकम्म०. B. (बी. मां नथी) Omit. सम्पया. G. (जी.) संपवोत्ते. ६. A. G. (प. जी.) त, B. D. E F (बी. डी इ. एफ.) ते. ७. F. (एफ.) वदिज्जाहि. × जुओ पाठ ९- ८. D. E. F. (डी. इ. एफ.) पज्जुवासिज्जाहि. ९. A. (प.) पडिहारिएणं. १०. G. (जी.) ०सथारेणं. ११. A. (प) उवनिसंतेज्जाहि, D. E (डी. इ.) उवणिमंतिज्जासि, F. (एफ.) उवनिमंतिज्जाहि. १२. B. (बी. मां नथी) Omit तच्च पि १३. D. (डी.) वदइ, B. (बी) वयंति; F G. (एफ. जी.) वयसी. १४ F (एफ.) दिसिं. १५. A. B. reads जाव for तामेव दिसं (प. बी. मा) "तामेव दिसं" ने बदले "जाव" छे. G. (जी. मां मात्र) only तामेव (नथी.) Omit दिसं. १६. G. (जी.) गए

भावार्थः—॥ १८७ ॥ ते देव आकाशने विषे अंतरिक्ष (अधर) रहीने, घुघरीना झणकारा करतो यावत भला वस्त्र पेहेरीने सद्दालपुत्र गोशालाना श्रावकने एम कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! जे सुक्ष्म । वादर सर्व जीवने " महणो " " महणो " शब्दना कहेनारा छे, जेने संपूर्ण ज्ञान, दर्शन, उत्पन्न थएलुं छे, अतित (गयो काळ), अनागत (आवतो काळ), वर्तमान ए त्रणे काळनी सर्व वातने जाणनारा छे, जे रागद्वेषने जीतनारा छे, जे अरिहंत, तीर्थंकर केवळी छे, जे सर्व जाणनारने सर्व देखनार छे, जे त्रण लोकने विषे आश्चर्यरुपे वंदनिक, पूजनिक छे, जे सदाय सर्व देव, मनुष्य, असुरकुमाररुप लोकने अर्चवा योग्य छे, वांदवा योग्य छे, नमस्कार करवा योग्य छे, पुजवा योग्य छे, सत्कार करवा योग्य छे, सन्मान देवा योग्य छे, कल्याण (संपत्तिनी वृद्धि करनारा) कारो छे, मंगळ (विघ्नने विनाश करनार) कारी छे एवा अरिहंत देव, चित्तने प्रसन्नकारी यावत सेवा करवा योग्य छे, सत्य, क्रियानी संपदाए करी सहित छे, एवा प्रभु काले प्रभाते अहिं आवशे तेने तमे वांदजो यावत तेनी सेवा भक्ति करजो, तेने पाढीयारा, तमारा घरना पाट–पाटला, बाजोठ, ओठींगण देवाना पाटीया, उपाश्रय, डाभ प्रमुखनी पथारो आपजो. एम वे, त्रणवार कहीने जे दीशाएथी ते देव आव्यो हतो ते दिशाए पाछो गयो॥ १८७ ॥

अर्थः—॥ १८८ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । त० ते । स० सद्दाल पुत्रने । आ० गोसाळाना । उ० श्रावकने । ते० ते । दे० देवे । ए० एम । वु० कह्ये । स० थके । इ० एहवा । रु० प्रकारनो । अ० मनमां विचार ४ । स० उपनो । ए० एम । ख० निश्चे । म० माहारा । ध० धर्म । आ० आचार्य । ध० धर्मना । उ० उपदेशना दातार । गो० गोसाळो । म० मखलिपुत्र । से० तेज । णं० वळी । म० मोटो । मा० महानुंभाव । उ० उपनुं । णा०

ज्ञान । दं० दर्शननो । ध० धरणहार । जा० यावत । त० रुडा । क० कर्तव्य । सं० संपदा । सं० सहित । से० ते । णं० वळी । क० काले । इ० इहां । ह० उतावळो । आ० आवशे । त० ते वारे । णं० वळी । तं० तेने । अ० हुं । वं० वांदीश । जा० यावत । प० भक्ति सहित सेवा करीश । पा० पाढीयारुं । जा० यावत । उ० आमंत्रीश ॥ १८८ ॥

मूळपाठः—॥ १७७ ॥ तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेणं[1] देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४* समुप्पन्ने । " एवं खलु ममं धम्मायरिए[2] धम्मोवएसए गोसाले मङ्खलिपुत्ते, से णं महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे[3] जाव+ तच्चकम्म-सम्पयासम्पउत्ते,[4] से णं कल्लं इहं हव्वमागच्छिस्सइ । तए णं तं[5] अहं वन्दिस्सामि जाव× पज्जुवासिस्सामि पाडिहारिएणं[6] जाव[7]+ उवनिमन्तिस्सामि " ॥ १७७ ॥

भावार्थः—॥ १८८ ॥ ते वारे ते सद्दालपुत्र गोशाळाना श्रावकने ते देवे एम कह्याथी तेना मनमां एवो अध्यवसाय उपन्यो के एम निश्चे मारो धर्माचार्य, धर्मोपदेशक गोशाळो मंखलीपुत्र तेज महामाहन छे, तेने ज संपूण ज्ञान दर्शन उत्पन्न थयुं छे अने तेज यावत सत्य क्रियानी संपदाए करी सहित छे, ते काल प्रभाते इहां

---

१ E F. (इ एफ मां नथी) from तेण to समाणस्स. * ६६–७३ पाठ जुओ. २. B (बी. मां नथी) Omit. ३. A B (ए बी.) °ण्णाण°, F (एफ.) °नाण° + आगलो पेरा जुओ ४. F. (एफ.) तच्चं कम्मं, G. (जी.) तवकंम, E. G. (इ जी मां नथी.) Omit सम्पया. ५ D. E (डी. इ मां नथी.) Omit. तं. × ९ पाठ जुओ ६. A. (ए) पडिहारिएणं. ७. D. E. (डी. इ. मां नथी.) Omit.

आवशे ते वारे तेने हुं वांदीश यावत तेनी सेवा भक्ति करीश अने पाढोहारा मारा घरना पाट–पाटलादिक सर्व तेमने आमंत्रीश ॥ १८८ ॥

अर्थः—॥ १८९ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । क० काले । जा० यावत । ज० सूर्य उगे । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । जा० यावत । स० समोसर्या (पधार्या) । प० परिखदा । नि० वांदवा निकळी । जा० यावत । प० भगवंतने आवी वांद्या ॥ १८९ ॥

मूळपाठः—॥ १८९ ॥ तए णं कल्लं[1] जाव* जलन्ते समणे भगवं महावीरे जाव+ समोसरिए । परिसा निग्गया जाव× पज्जुवासइ[2] ॥ १८९ ॥

भावार्थः—॥ १८९ ॥ ते वारे बीजे दिवसे प्रभाते सूर्य उग्ये श्रमण भगवंत श्री महावीर देव त्यां समोसर्या, परखदा नीकळी, प्रभुने वांदी यावत सेवा भक्ति करवा लागी ॥ १८९ ॥

अर्थः—॥ १९० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । स० सद्दालपुत्र । आ० गोसाळानो । उ० श्रावक । इ० एहवी । क० कथा । ल० सांभळे । स० थके । ए० एम । ख० निश्चे । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । जा० यावत । वि० विचरे छे । तं० त्यां । ग० जाउ हुं । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । वं० वांदु । जा० यावत । प० सेवा करुं । ए० एम । सं० विचारे । सं० विचारीने । ण्हा० न्हायो ।

१ A (अ.) कल्लि.० * ६६ पाठनी फुटनोट जुओ + ९ मा पाठनी फुटनोट जुओ. × ९ मो पाठ जुओ.
२. F. (फ.) पज्जुपासति

जा० यावत । पा० प्रायश्चित लइ । सु० शुद्ध । प्पा० प्रवेश करवा योग्य । वस्त्र । जा० यावत । अ० अलपभार । म० मूल्य घणां । आ० आभरणथी । अ० शणगार कर्यो । स० शरीरे । म० मनुष्य । व० वर्ग । प० परवर्या । सा० पोताना । गि० घेरथी । प० नीकळे । प० नीकळीने । पो० पोलासपुर । न० नगर । म० मध्यो । म० मध्य । नि० नीकळे । नि० नीकळीने । जे० ज्यां । स० सहस्र । अ० अम्ब । व० वन । उ० उद्यान । जे० ज्यां । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर स्वामि । ते० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । ति० त्रणवार । आ० आत्माने नमाडी । प० प्रदक्षीणा । क० करे । क० करीने । वं० वांदे । न० नमस्कार करे । न० नमस्कार करीने । जा० यावत । प० सेवा करे ॥ १९० ॥

मूळपाठः—॥ १९० ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविउवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे, "एवं खलु समणे भगवं महावीरे[1] जाव[*] विहरइ,[2] तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वन्दामि जाव[+] पज्जुवासामि," एवं सम्पेहेइ[3], रत्ता[4] एहाए जाव[×] पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं[5] [6]जाव[×] अप्पमहग्घाभरणालङ्किय सरीरे[6], मणुस्सवग्गुरापरिगए साओ[7]

१. D. (डी. मां नथी.) Omit.-* २ पाठ जुओ २ D. (डी.) विहरंति + ९ पाठ जुओ. ३. F. (एफ) संपेहिइ, G. (जी.) संपेहइ. ४. D. E (डी. इ. मां नथी) Omit. रत्ता × ११ पाठ जुओ. ५. A B. D. E (ए. बी. डी इ. मां फक्त) Only सुद्धप्पा अप्प. ६. A. B D. E. F G. (ए. बी डी. इ. एफ. जी. मां नथी.) Omit. ७. F. (एफ.) सयाओ.

गिहाओ पडिणिक्खमइ,[1] रत्ता पोलासपुरं नयरं[2] मज्झं मज्झेणं निग्गछइ, रत्ता[3] जेणेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागछइ, रत्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, रत्ता वन्दइ नमंसइ,[4] रत्ता जाव[5] पज्जुवासइ ॥ १९० ॥

भावार्थः—॥ १९० ॥ ते वारे ते सद्दालपुत्र आजीविकामती श्रावके एवी वात सांभळी के एम निश्चे अहिं श्रमण भगवत श्री महावीर देव समोसर्या छे तो हुं जाउं अने श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदु यावत तेनी सेवा भक्ति करुं. एम चिंतवीने स्नान करी यावत पाछली मलीन अवस्था दूर करी तीलक (चांडलो) प्रमुख करी, शुद्ध पवित्र वस्त्र पहेरीने पोताना माणसोना परिवारे परिवर्या थको पोताना घेरथी नीकळी पोलासपुर नगरनी मध्योमध्य थइ नीकळीने ज्यां सहश्रांववन उद्यान हतुं ज्यां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव छे त्यां आवीने त्रणवार आवर्तन दइ प्रदक्षणा करीने वांदी नमस्कार करी यावत सेवा भक्ति करे ॥ १९० ॥

अर्थः—॥ १९१ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । स० सद्दाल पुत्र । आ० गोसाळाना । उ० श्रावकने । तो० ते । य० वळी । म० मोटी परसदामाहे । जा० यावत । ध० धर्म । क० कथा । स० संपूर्ण करे ॥ १९१ ॥

१ A B. D G. (ए. बी. डी जी) पडिणिग्गच्छइ. २ A B. F. (ए. बी एफ.) नगरं. ३. A. B. D. E (ए. बी. डी. इ. मां नथी) Omit रत्ता. ४ A. B. (ए. बी. मां नथी) Omit. नमंसइ रत्ता; F. (एफ. मां नथी.) Omit only रत्ता

मूळपाठः—॥ १९१ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य [1]महइ जाव* धम्मकहा समत्ता ॥ १९१ ॥

भावार्थः—॥ १९१ ॥ ते वारे श्रमण भगवत श्री महावीर देव सदालपुत्र गोशालाना श्रावकने विस्तार सहित म्होटी धम कथा कही यावत धर्मकथा संपूर्ण थइ ॥ १९१ ॥

अर्थः—॥ १९२ ॥ स० सदालपुत्र । इ० एम आमंत्री । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । स० सदालपुत्र । आ० गोशाळाना । उ० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । से० तें । नू० निश्चे । स० हे सदालपुत्र । क० काले । तु० तमने । पु० पाछला पहोरना । का० काळ । स० समयने विषे । जे० ज्यां । अ० असोक । व० वन । जा० यावत । वि० विचरे । त० ते वारे । णं० वळो । तु० तारीपासे । ए० एक । दे० देव । अं० समोपे । पा० प्रगट थयो । त० तेवारे । णं० वळी । से० ते । दे० देव । अ० आकाशे । प० रही । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । स० सदालपुत्र । तं० ते । चे० वळी । स० सर्व । जा० यावत । प० सेवा करे । से० से । नू० निश्चे । स० सदालपुत्र । अ० ए अर्थ । स० समर्थ छे । खरो छे ? । हं० हा स्वामि । अ० छे । नो० नहि । ख० निश्चे । स० सदालपुत्र । ते० ते । दे० देवे । गो० गोसाळा । मं० मखलीपुत्रनुं । प० नाम आश्री । ए० एम । वु० कह्युं ॥ १९२ ॥

मूळपाठः—॥ १९२ ॥ " सद्दालपुत्ता " [2]इ समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजी-

---

१ F add (एफ मा वधारे) माहलियाए. * ११७ पाठ जुओ. २. A. B. G (ए. बी. जी.) दि; F. (एफ.) इति.

विउवासयं एवं वयासी । "से नूणं, सद्दालपुत्ता, कल्लं तुमं पुव्वावरण्हकालसमयंसि[1] जेणेव असोगवणिया [2]जाव* विहरसि[3] । तए णं तुब्भं[4] एगे देवे [5]अन्तियं पाउब्भविड्ढा । तए णं से [6]देवे अन्तलिक्खपडिवन्ने[7] एवं वयासी । ""हं भो सद्दालपुत्ता,"" तं चेव [8]सव्वं जाव+"""पज्जुवासिस्सामि[9]"""। से नूणं, सद्दालपुत्ता, [10]अट्ठे समट्ठे?"॥ "हंता, अत्थि[11]"॥ "नो[12] खलु, सद्दालपुत्ता, तेणं देवेणं गोसालं मङ्खलिपुत्तं पणिहाय[13] एवं वुत्ते" ॥१९४॥

भावार्थः—॥ १९२ ॥ ते वारे हे सदालपुत्र ! एम संबोधन वचने श्रमण भगवंत श्री महावीर देव सदालपुत्रने गोशाळाना श्रावकने एम कहेता हवा, एम निश्चे हे सदालपुत्र ! काले मध्यान समये तमे अशोकवाडीमां यावत धर्मध्यान ध्याता विचरता हवा. ते वारे तमारी पासे एक देवता प्रगट थयो हतो ? ते देवता आकाशे रहीने बोल्यो, अरे सदालपुत्र ! एम जे कह्युं हतुं ते सर्व कह्युं यावत तेनी सेवा करजे, तेनी उपाशना करजे, ते निश्चे

१. F (एफ) Only पुव्वावरण्हकाले. २ D E. (डी इ.) Prot. तं. * १८५ पाठ जुओ. ३ A (ए.) विहरसंति, B (बी) विरसि, D. E G. (डी इ. जी.) विहरइ, F (एफ.) विहरिसे. ४. A. (ए) तुमं. F. (एफ) तुब्भे, ५. E. (इ) अंतिए ६ B D. E. G. (बी. डी. इ जी. मा नथी) Omit ७. B F. (बी एफ) Only अंतलिक्खे ८ D E. (डी इ.) जाव सव्वं + १८७–१८८ पाठ जुओ ९. A. G. (ए जी.) reads पज्जुवासामि. १०. A F. (ए. एफ) अत्थे समत्थे. B. (बी) अत्थे समट्ठे ११. B. (बी.) अत्थि. १२. B. D E. F. G. (बी. डी. इ. एफ. जी.) prot. तं १३ D E. (डी. इ.) पणिधाय.

हे सद्दालपुत्र ए अर्थ सत्य छे ! ते वारे सदालपुत्र कहे, हा, सत्य छे. ते वारे प्रभु कहे ते निश्चे हे सदालपुत्र ! ते देवे गोशाळा मंखलीपुत्र आश्री कह्युं नथी ॥ १९२ ॥

अर्थः—॥ १९३ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । त० ते ।-स० सद्दालपुत्र । आ० गोसाळानो । उ० श्रावक । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरे । ए० एम । वु० कह्ये । स० छते । इ० एहवो । रु० रुप । अ० चिनवे ४। ए० आ । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० मोटा । मा० महान । उ० उपन्या । णा० ज्ञान । दं० दर्शनना । ध० धरणहार । जा० यावत । त० रुडा । क० कर्म । सं० संपदा । सं० सहित । तं० तो । से० श्रेय । ख० निश्चे । म० मारे । स० श्रमण । भं० भगवंत । म० महावीरने । व० वांदोने । न० नमस्कार करीने । पा० पाढीयारु । पी० पीठ । फ० पाटीयुं । जा० यावत । उ० आमंत्रु । ए० एम । सं० विचारे । सं० विचारीने । उ० उठे । उ० उठीने । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । वं० वांदे । न० नमस्कार करे । न० नमस्कार करीने । ए० एम । व० कहे । ए० एम । ख० निश्चे । भं० हे पूज्य । म० मारा । पो० पोलासपुर । न० नगरनी । व० बाहर । प० पांचसे । कु० कुंभारना । आ० हाट । त० त्यां । णं० वळी । तु० तमे । पा० पाढो-यारु । पी० पीठ । जा० यावत । सं० संथारो । ओ० ग्रहीने । वि० विचरो ॥ १९३ ॥

मूळपाठः—॥ १९३ ॥ तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविउवासयस्स[1] समणेणं

---

१. A B D E. F G. (ए बी डी इ. एफ जी मां नथी) Omit

नगवया[1] महावीरेणं[1] एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे[2] अज्झत्थिए ४[3]*। “ एस णं समणे नगवं महावीरे महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे[4] जाव+ तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते[5]। तं सेयं खलु ममं[6] समणं नगवं महावीरं वन्दित्ता नमंसित्ता[7] पाडिहारिएणं[8] पीढ फलग[9] जाव+ उवनिमन्तित्तए ” एवं सम्पेहेइ,[10] इत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, इत्ता समणं नगवं महावीरं वन्दइ *नमंसइ, इत्ता एवं वयासी। “ एवं खलु, नन्ते, ममं[11] पोलासपुरस्स नयरस्स[12] वहिया पञ्च कुम्नकारावणसया। तत्थ णं तुब्ने पाडिहारियं पीढ जाव+ संथारयं[13] उगिण्हित्ताणं[14] विहरइ[15] ”॥ १९३ ॥

---

१ A B. G (ए बी जी. मां नथी) Omit, D E (डी इ) only ३ २ D E (डी. इ.) इमे ण्यारूवे. ३. A F. (ए. एफ) हू=४, B (बी मा फक्त) only ४, D. (डी. मा फक्त) ५, E G. (इ जी. मा नथी.) Omit. * ६६ पाठ जुओ ने ७३ पाठ ४ D E (डी. इ) Only उप्पण्णणाणे. ५, A B. D. F G (ए. बी. डी. इ एफ. जी. मां नथी.) omit तच्च, E (इ) °सपत्ते. ६ B D. E. (बी. डी. इ) मम. ७ G (जी) नमुंस ° ८ D E. (डी इ.) पडिहारिएण. ९ A. B G. (ए बी. जी.) °फलह + १८७ पाठ जुओ. १०. G. (जी) सपेहइ. ११ D E. G. (डी इ जी) मम. १२ A. B. F. (ए बी. एफ) नगरस्स. १३ E. (इ.) सथारियसि १४ A. B D F (ए बी डी. एफ) उगिण्हित्ताणं. १५. A. (ए.) विहरिह, B D. E. F G. (बी. डी इ. एफ. जी.) विहरइ.

भावार्थः—॥ १९३ ॥ ते वारे ते सदालपुत्रने श्रमण भगवंत श्री महावीरदेवे एम कह्ये थके एवो आत्माने विषे भाव उपज्यो के एज श्रमण भगवंत श्री महावीर महामाहन संपूर्ण उत्पन्न थएला ज्ञान दर्शनना धणी यावत शुभ कर्मनी संपदाए करीने सहित छतो श्रेय निश्चे मुजने के श्रमण भगवत श्री महावीरने वांदी नमस्कार करीने पाढीहारा पाट पाटला प्रमुख निमंत्रु ? एम चिंतवी उठीने श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदी नमस्कार करी एम कहेतो हवो, एम निश्चे, हे प्रभु ! पोलासपुर नगरनी बाहिर मारा पांचसे हाट छे, त्यां तमे पाढीहारा, पाट, पाटला प्रमुख जे जोइए ते सुखेथी ग्रहण करीने विचरजो ॥ १९३ ॥

अर्थः—॥ १९४ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । स० सदाल । पु० पुत्र । आ० गोसालानो । उ० श्रावकनो । ए० ए । अ० अर्थ । प० सांभळे । प० सांभळीने । स० सदालपुत्र । आ० गोसालाना । उ० श्रावकना । पं० पांच । कु० कुम्भकारना । आ० हाट । स० सोमांथी । फा० फासुक । ए० एषणीक । पा० पाढीहारा । पी० पीढ । फ० पाटीया । जा० यावत । सं० संथारो । ओ० ग्रहीने । वि० विचरे ॥१९४॥

मूळपाठः—॥ १९४ ॥ तए णं समणे भगवं [1]महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविउ-वासगस्स[2] एयमट्ठं पडिसुणेइ, २त्ता सद्दालपुत्तस्स आजीविउवासगस्स[3] पञ्चकुम्भकारावणस-

१ A. B (ए बी मा नथी) Omit. २ A. B D E G (ए बी. डी. इ जी) Only आजी-वियस्स. ३. D E (डी. इ. मां नथी.) Omit. A. B. F G. (ए. बी. एफ. जी.) only आजीवियस्स

एसु फासुएसणिज्जं[1] पाडिहारियं पीढफलग[2] जाव[*] संथारयं उगिण्हित्ताणं[3] विहरइ[4] ॥१९४॥

भावार्थ—॥ १९४ ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव सद्दालपुत्र गोशाळाना श्रावकनुं ए वचन सांभळीने, सद्दालपुत्र गोशाळाना श्रावकना पांचसे कुंभारना हाट हता, त्यां जीवरहित निर्दोष पाट-पाटला यावत संथारादिक याचीने त्यां कुंभारनी शाळामां विचरवा लाग्या ॥ १९४ ॥

अर्थः—॥ १९५ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । स० सद्दालपुत्र । आ० गोशाळानो । उ० श्रावक । अ० एकदा । क० प्रस्तावे । वा० वायरो । ह० लगाडवाने । को० माटीना । भ० भाजन । अं० अंदरथी । सा० साळामांहेथी । व० बाहर । नी० मुके । नी० मुकीने । आ० तडको । द० खवरावे ॥ १९५ ॥

मूळपाठः—॥ १९५ ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते आजीवियोवासए अन्नया कयाइ[5] वायाहययं[6] कोलालभण्डं अन्तो[7] सालाहिंतो [8]बहिया नीणेइ, रत्ता[9] आयवंसि[10] दलयइ ॥१९५॥

१ B, F (बी. एफ) फासुए एसणिज्जं. २ G. (जी. मां नथी.) Omit फलग. * १८७ मो पाठ जुओ. ३. A (ए) उगिण्हित्ताण, B F. (बी. एफ) उगिण्हित्ताणं, D E. G. (डी. इ. जी.) उगिण्हित्ताणं ४ B. (बी.) विहरंति. ५. A F. (ए. एफ) कयाइ. ६ A. B. (ए बी.) वायाहयं; A. F. (एफ. मां "या" वधारे) add "या" after it. ७ B. (बी.) अणंतो. ८. D E (डी. इ) बहितो. ९ B D. E. F. (बी. डी इ. एफ. मां नथी) Omit रत्ता. १०. D. E. (डी. इ) आतपंसि, G. (जी. मा) reads एवं से दलयति.

भावार्थः—॥१९५॥ तेवारे ते सदालपुत्र गोसाळाना श्रावक एकदा प्रस्तावे (समे) कुंभारना काची माटीनां वासणो शाळामांहिथी वाहिर लावी तडके सुकावा मुके ॥ १९५ ॥

अर्थः—॥ १९६ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । स० सदालपुत्र । आ० गोसाळाना । उ० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । स० हे सदालपुत्र । ए० ए । णं० वळी । को० कुंभारना भ० भाजन । क० केम नीपज्यां ॥ १९६ ॥

मूळपाठः—॥ १९६ ॥ तए णं समणे[1] भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं[2] एवं वयासी । " सद्दालपुत्ता, एस णं कोलालभण्डे कओ " ? ॥ १९६ ॥

भावार्थः—॥ १९६ ॥ ते वारे ते सद्दालपुत्र गोशाळाना श्रावकने श्रमण भगवंत श्री महावीर देव एम कहेता हवा, हे सदालपुत्र ! ए माटीना वासणो शी रीते बने छे ? ॥ १९६ ॥

अर्थः—॥ १९७ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । स० सद्दालपुत्र । आ० गोसाळानो । उ० श्रावक । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । ए० एम । व० कहे । ए० ए । णं० वळी । भं० हे पूज्य । पु० पहेलां । म० माटी । आ० हती । त० ते वार । प० पछी । उ० पाणीए । नि० भींजवे । नि० भींजवीने । छा० राख । य० वळी । क० छाणनो भुको । य० वळी । ए० एकठो । मी० मसळी । मी० मसळीने । च० चाक उपर । आ० चढावे । त० ते वारे । व० घणा । क० करवडा । य० वळी । जा० यावत । उ० कोठी प्रमुख । य० वळी । क० नीपजे ॥१९७॥

१ B (वी.) prof. से. २. E. G. (इ. जी मां नथी) Omit.

मूळपाठः—॥ १०७ ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविउवासए 'समणं भगवं महावीरं एवं वयासी। "एस णं, भन्ते, [1]पुव्विं मट्टिया आसी, तओ पच्छा उदएणं निमिज्जइ[3], एत्ता[4] छारेण य करिसेण[5] य एगयओ[6] मीसिज्जइ,[7] एत्ता चक्के आरोहिज्जइ;[8] तओ बहवे करगा य जाव[*] उट्टियाओ[9] य कज्जन्ति" ॥ १०७ ॥

भावार्थः—॥ १०७ ॥ ते वारे ते सद्दालपुत्र, श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने एम कहेतो हवो। हे भगवंत! ए प्रथम माटी हती, त्यार पछी तेने पाणीथी पलाळी, राखने घोडानी तथा गधेडानी लादथी एक पुरुषे गुंदी एक रस करी पछी चक्र (चाकडा) उपर चडावीए त्यारे घणी कोठी (घडा) प्रमुख निपजे छे ॥ १०७ ॥

अर्थः—॥ १०८ ॥ त० ते वारे। णं० वळी। स० श्रमण। भ० भगवंत। म० महावीर। स० सद्दालपुत्र। आ० गोसाळाना। उ० श्रावकने। ए० एम। व० कहे। स० हे सद्दालपुत्र। ए० ए। णं० वळी। को० कुंभकार। भं० भाजन। किं० केम। उ० उद्यमे। जा० यावत। पु० पुरुषकार। प० पराक्रमे करी। क० नीपना। उ० कहो तमे। अ० अण। उ० उद्यमे। जा० यावत। अ० अपुरुषकार। अ० अपराक्रमे। क० नीपना ॥ १०८ ॥

१ A. B. D. E F. G. (ए. बी डी. इ. एफ. जी. मां नथी) Omit. २. E. (इ) पुव्वं. ३. B. (बी.) निमिज्जंति; D E. (डी. इ.) नमिज्जइ; A. (ए.) नमिज्जंति ४. B. D. E G. (बी. डी. इ. जी. मां नथी.) Omit रत्ता. ५. G. (जी) करिसेण. ६ D E. (डी. इ.) एगओ. ७. A. G. (ए. जी.) मागिज्जइ; B. (बी) मीसज्जंति; D E. (डी. इ) मिमिज्जइ, A. B. (ए बी. मा "ण" वधारे.) add ण after it ८ A. (ए.) आरोभिज्जंति; B. G. (बी. जी.) अरुभिज्जइ, D. E. F. (डी. इ. एफ.) आरुहिज्जइ. * १८४ पाठ जुओ. ९. F. (एफ) उट्टयाओ.

मूळपाठः—॥ १९८ ॥ तए णं [१]समणे भगवं[२] महावीरे [३]सद्दालपुत्तं आजीविउवासयं एवं वयासी । " सद्दालपुत्ता, एस णं कोलालभंडे किं उट्ठाणेणं जाव* पुरिसक्कारपरक्कमेणं[४] कज्जन्ति,[५] उदाहु अणुट्ठाणेणं जाव* अपुरिसक्कारपरक्कमेणं[५] कज्जन्ति " ? ॥ १९८ ॥

भावार्थः—॥ १९८ ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव, ते सदालपुत्र गोशाळाना श्रावकने एम कहेता हवा, हे सदाल पुत्र ! ए कुंभारना वासणो शु उठाण यावत पुरुपाकार पराक्रम करी थयां के उठाण यावत पुरुपाकार पराक्रम विना थया ? ॥ १९८ ॥

अर्थः—॥ १९९ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । स० सदालपुत्र । आ० गोसाळानो । उ० श्रावक । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । ए० एम । व० कहे । भं० हे पूज्य ! । अ० अण । उ० उद्यमे । जा० यावत । अ० अपुरुपकार । अ० अपराक्रमे । न० नही । उ० उद्यमे । इ० वा० वळी । जा० जावत । प० पराक्रमे । इ० वा० वळी । नि० नित्य । स० सर्व । भा० भाव ॥ १९९ ॥

मूळपाठः—॥ १९९ ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविउवासए समणं[६] भगवं महावीरं

१. B. (बी) prof से २ D. (डी मां नथी) Omit ३ A B. F. (ए बी एफ) read ° पुतस्स ° वासयस्स. * १६८ पाठ जुओ ४ F (एफ.) पुरिसका ° ५ G (जी मां नथी.) Omit ६. F. (एफ) समणे भगव महावीरे एवं वयासी, D. E. (डी. इ.) समणेण भगवया म ° एव वयासी, समणेणं भगवया म ° एवं वुत्ते समाणे समणं ३ एवं वयासी.

एवं वयासी । "जन्ने, अणुट्ठाणेणं जाव* अपुरिसक्कारपरक्कमेणं,' नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव* परक्कमे इ वा, नियया* सव्वभावा" ॥ १९९ ॥

भावार्थः—॥ १९९ ॥ ते वारे ते सद्दाल पुत्र गोशालानो श्रावक श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने एम कहेतो हवो । हे भगवंत ! ए उठाण यावत पुरुषाकार, पराक्रम विनाज थयां. अहिं उठाण यावत पुरुषाकार पराक्रमनुं कांइपण प्रयोजन नथी. ए सर्व वस्तु पोतानी मेळे नियत (जेम थवानुं होय तेम थाय) प्रमाणेज बने छे. उद्यम करवाथी कांइ बनतुं नथी ॥ १९९ ॥

अर्थः—॥ २०० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देव । स० सद्दाल पुत्र । गा० गोसाळाना । उ० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । स० हे सद्दाल पुत्र । ज० जो । णं० वळी । तु० तारा । के० कोइ । पु० पुरुष । वा० तायरो खारोल । वा० अथवा । प० पाकेलने । वा० वळी । को० माटीना । भ० भाजन । अ० अपहरे चोरी जाय । वा० अथवा । वि० विखेरि नाखे । वा० अथवा । भि० भेदे । भांगी नाखे । गा० अथवा । अ० छेद पाडी कटका करे । गा० अथवा । प० बहार नाखे । वा० अथवा । अ० अग्नि मित्रा । वा० अथवा । भा० भार्या । स० साथे । वि० विपुल । भो० भोग । भो० भोगवे । भु० भोगवतो । वि० विचरे । त० तेहने । णं० वळी । तु० तमे । पु० ते पुरुषने । किं० शुं । दं० दण्ड । व० दीओ ॥ २०० ॥

* जुओ १६३ पाठ. १ F. (एफ) अपुरिसक्का० २ D E. (डी. इ.) णितिया, F. (एफ.) नितिया A. B. G. (ए. बी. जी.) नितया.

मूळपाठः—॥ २०० ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे[1] सद्दालपुत्तं आजीविउवासयं एवं वयासी । " सद्दालपुत्ता, जइ णं तुब्भं[2] केइ पुरिसे वायाहयं वा पक्केलयं[3] वा कोलालभण्डं [4]अवहरेज्जा वा विक्खिरेज्जा[5] वा भिन्देज्जा[6] वा अच्छिन्देज्जा[7] वा परिट्ठवेज्जा[8] वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं [9]भोगभोगाइं भुञ्जमाणे विहरेज्जा, तस्स[10] ण तुमं पुरिसस्स [11]किं दण्डं[12] वत्तेज्जासि[13] ?" ॥ २०० ॥

भावार्थः—॥ २०० ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव ते सद्दाल पुत्र गोशाळाना श्रावकने एम कहेता हवा । हे सदालपुत्र ! उठाणादिकथी कांइ थतुं नथी अने सर्व वस्तु नियत (भावी) प्रमाणे ज थाय छे. जो तमारी एवी श्रद्धा छे तो ए तमारा कुंभारना काचा वासणो तथा पाकां वासणो कोइ चोर लइ जाय, आघा पाछां

१. D E. (डी इ मां नथी.) Omit. २ A (ए.) तुमं ३ D E G (डी. इ जी) पक्केलय ° ४ D E (डी. इ.) अवहरिज्जा, G. (जी.) अवहरेज्ज. ५ D E F G. (डी. इ. एफ जी) विक्खरिज्जा ६ D. E (डी इ) भिंदिज्जा ७ D E (डी इ) अच्छिंदिज्जा; G. (जी.) छिंदिज्जा. ८ A B E G (ए बी इ. जी.) परिट्ठविज्जा, F (एफ) परिट्ठवेज्ज, G. (जी. मां नथी) Omit from परिट्ठवेज्जा down to विहरेज्जा. ९ A. (ए मां फक्त) Only भोगाइं १०. G. (जी.) तयाणं. ११ D E (डी इ.) कं, G. (जी. मा नथी.) किं दण्डं १२ D E. F. (डी इ. एफ.) डंडं. १३. D F. (डी. एफ.) वत्तिज्जासि; E (इ.) वयंसासि, G. (जी.) ण व्वतेआहि.

जुदा विखेरी नाखे, भांगी नाखे, कांणा करी नाखी दे तथा त्हारी अग्निमित्रा भार्या साथे कोइ पुरुप घणा भोग भोगवतो विचरे तो तमे ते पुरुपने शुं दंड दीओ ? ॥ २०० ॥

अर्थः—॥ २०० ॥ भं० हे भगवंत । अ० हुं । णं० वळी । तं० ते । पु० पुरुपने । आ० आक्रोस दंड । वा० वळी । ह० हणुं । वा० वळी । बं० बांधुं । वा० वळी । म० रगदोळुं । वा० वळी । त० तीव्र ताडुं । वा० वळी । ता० तरछोडुं । वा० वळी । नि० दंडुं । वा० वळी । नि० निर्भ्रंछुं । वा० वळी । अ० अकाळे । चे० वळी । जी० जीवतव्यनो । व० नाश करुं ॥ २०० ॥

मूळपाठः—॥ २०० ॥ " [1]भन्ते, अहं णं तं[1] पुरिसं आउसेज्जा[2] वा हणेज्जा वा बन्धेज्जा वा महेज्जा[3] वा तज्जेज्जा[4] वा तालेज्जा[5] वा निछोभेज्जा[6] वा निब्भच्छेज्जा वा अकाले चेव जीवियाउ ववरोवेज्जा[7] " ॥ २०० ॥

भावार्थः—॥ २०० ॥ ते वारे ते सदालपुत्र ! कहेतो हवो, हे भगवंत ! ते पुरुपने हुं आक्रोश करुं (रे मुवा !

१ D E G. (डी. इ जी.) pref तं णं and Omit तं before पुरिसं. २. A. B D E (ए. बी डी इ) आउसेज्जा, F (एफ) आउसेज्जे, G (जी) आउसिज्ज ३. A (ए) मथेज्जा, B (बी) मथेज्जा ४ D E (डी इ) तत्तेज्जा. ५ A B (ए बी) तालिज्जा. ६ D E F. (डी इ एफ.) निच्छोडिज्जा. ७. A. B D. E. G. (ए बी डी. इ जी.) ववरोविज्जा, A B F (ए बी. एफ वधारे) add वा.

इत्यादिक कहेवुं ते), लाकडीए करी हणुं, दोरडी प्रमुखे करी बांधुं, शस्त्रादिके छेदुं, आंगुली, तर्जनाए करी अरे ! दुष्ट, पापी इत्यादिक कहुं, चपेटा दउं, तेनुं धन आदिक सर्व वस्तु छीनवी लउं, तेने दुष्ट वचने गाळ प्रमुख दउं, तेने निर्भ्रंछुं, अकाळे जीवतरथी रहित करुं ॥ २०० ॥

अर्थः—॥ २०० ॥ स० हे सदालपुत्र । नो० नहीं । ख० निश्चे । तु० तारो । के० कोई । पु० पुरुष । वा० सुकाएल नींभाडो । वा० अथवा । प० पाको । नीभाडो । वा० अथवा । को० माटीना । भं० भाजन । अ० चोरे । वा० अथवा । जा० यावत । प० परठवे । बहार फेंकी दीए । वा० अथवा । अ० अग्निमित्ता । वा० वळी । भा० भार्या । स० साथे । वि० विस्तीर्ण । भो० भोग । भो० भोगवे । भु० भोगवतो । वि० विचरे । नो० नहि । वा० वळी । तु० तु । तं० ते । पु० पुरुषने । आ० आक्रोसे नहिं । वा० वळी । ह० हणे नहि । वा० वळी । जा० यावत । अ० अकाळे । चे० वळी । जी० जीवतव्यथी । व० चुकवे । ज० जो । न० नथी । उ० उद्यम । इ. वा. अथवा । जा० यावत । प० पराक्रम । इ. वा० वळी । नि० नित्य । स० सर्व । भा० भाव । अ० हुं एम धारुं छुं के । णं० वळी । तु० तारो । के० कोई । पु० पुरुष । वा० सुकाएल । जा० यावत । प० फेंकी दीए । वा० अथवा । अ० अग्निमित्रा । वा० अथवा । जा० यावत । वि० विचरे । तु० तमे । वा० वळी । तं० ते । पु० पुरुषने । आ० आक्रोसे । वा० अथवा । जा० यावत । व० जीवतव्यथी चुकवे । तो० तो । जं० जे । व० तमे । कहो छो । न० नथी । उ० उद्यम । इ. वा. अथवा । जा० यावत । नि० नित्य । स० सर्व । भा० भाव । तं० तो । ते० ते । मि० खोटुं ॥ २०० ॥

मूळपाठः— ॥ २०० ॥ "सद्दालपुत्ता, नो खलु तुब्भ[1] केइ पुरिसे वायाहयं[2] वा पक्केल्लयं[3] वा कोलालभण्डं अवहरइ वा जाव* परिट्ठवेइ वा अग्गिमित्ताए वा[4] भारियाए सद्धिं[5] विउलाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणे विहरइ । नो वा तुमं तं पुरिसं आओसेज्जसि[6] वा हणेज्जसि[7] वा[8] जाव* अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जसि[9] । जइ नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव+ परक्कमे इ वा, नियया[10] सव्वभावा । अहं[11] णं, तुब्भ[12] केइ पुरिसे वायाहयं[13] जाव* परिट्ठवेइ वा अग्गिमित्ताए वा[14] जाव* विहरइ, तुमं[15] वा तं पुरिसं आओसेसि[16]

१. A. B D. E G (ए. बी. डी. इ जी) तुब्भं. २. D. E. (डी इ) वाताहतयं ३ G. (जी) पक्केल्लय * उपला पाठमांथी पुरु करो. ४ A E. G (ए इ जी मां नथी.) Omit ५. A. G. (ए. जी.) सिद्धि ६ A. E (ए. इ) आओसेसि, B (बी) आओसिमि, D. E. G (डी इ जी) आउसेसि, F (एफ) आउसेज्ज ७ A B (ए बी) हण; D E. (डी इ) हणे, F G (एफ जी.) हणेज्ज. ८ A B D. E (ए. बी डी इ मा नथी) Omit ९ D E. F G (डी इ. एफ जी.) ववरोविज्जसि + १६६ मा जुओ. १० A B D E F. (ए बी. डी इ एफ.) नितिया. ११ A. B. G. (ए. बी जी) अह णं, D. E (डी. इ) अहण्ण; F (एफ) अहन्न. १२. D E F. (डी इ. एफ.) तुब्भं. G (जी) तुम १३. D E (डी. इ) वाताहतयं, A B F G (ए. बी एफ जी) add या. D. E (डी इ.) add पक्केलयं या १४. E. G (इ जी मां नथी) Omit. १५ G (जी. मा नथी) Omit. तुम वा त पुरिम. १६. A (ए.) आओसिमि, D. E G. (डी इ जी) आउसेसि, F. (एफ.) आउसिज्ज

वा जाव[1] ववरोवेसि[2]। तो जं वदसि नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव[+] नियया[3] सव्वभावा, तं ते मिच्छा " ॥ २०० ॥

भावार्थः—॥ २०० ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव ते सदालपुत्रने एम कहेता हवा. हे सदालपुत्र ! ए तमारा कुंभारना काचा तथा पाका माटीना वासणो कोई चोरी जाय, कांकरा नांखी कांणा करे, हाथमांथी छीनवी ले, यावत वहार काढी नाखे तेने तथा त्हारि अग्निमित्रा भार्या संघाते घणा भोग भोगवतो विचरे. ते पुरुषने तमारी श्रद्धा प्रमाणे तमारे निश्चे कांई पण आक्रोश करवो जोईए नहिं, लाकडी आदि के हणवो जोइए नहि यावत अकाळे जीवतरथी रहित करवो जोईए नहिं कारण के तमे कहो छो के उठाण यावत पुरुषाकार, पराक्रमथी कांइ थतुं नथी अने सर्व वस्तु जेम वनवानी होय तेम ज बन्या करे छे तो आ पण थवानुं हतुं तेमज थयु, तेमां तमारे शा माटे आक्रोशादिक करवो जोईए ? अने जो ते माटीना काचा पाका वासणो यावत नाखी दे तथा तारी अग्निमित्रा भार्या साथे घणा भोग भोगवता विचरे ते पुरुषने तमे आक्रोश करो यावत अकाळे जीवतरथी रहित करो तो तमे जे कहोछो के उठाणादिक नथी अने सर्व वस्तु नियत भावे छे एम जे तमे मानोछो ते तमारो मत प्रत्यक्ष जुठो जणाय छे ॥ २०० ॥

---

१ A B (ए बी) ववरोविसि, F. (एफ) ववरोविज्जसि, G (जी.) विवरोवज्जसि. २. D E (डी. इ.) वयसि ३ A. B. D E F (ए बी. डी इ. एफ) निनिया

अर्थः—॥ २०१ ॥ ए० इहां । णं० वली । से० ते । स० सदालपुत्र । आ० गोशाळानो । उ० श्रावक । स० प्रतिबोध पाम्यो ॥ २०१ ॥

मूळपाठः—॥ २०१ ॥ एत्थ[1] णं से सद्दालपुत्ते आजीविउवासए संबुद्धे ॥ २०१ ॥

भावार्थः—॥ २०१ ॥ एवु श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनुं वचन सांभळीने अहिं ते सदालपुत्र गोशाळानो श्रावक प्रतिबोधाणो (समज्यो) ॥ २०१ ॥

अर्थः—॥ २०२ ॥ त० ते वारे । णं० वली । से० ते । सदाल पुत्र । आ० गोशाळानो । उ० श्रावक । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । वं० वांदी । न० नमस्कार करे । न० करीने । ए० एम । व० कहे । इ० इच्छु छुं । णं० वली । भं० हे भगवान । तु० तमारी । अ० पासे । ध० धर्म । नि० सांभळवाने ॥ २०२ ॥

मूळपाठः—॥ २०२ ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविउवासए[2] समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वन्दित्ता[3] एवं वयासी । "इच्छामि णं, [4]भन्ते, तुब्भं [5]अन्तिए धम्मं [6]निसामेत्तए" ॥ २०२ ॥

१ F (एफ) एत्थं २ A. B D. E F G (ए बी डी इ. एफ. जी मा नथी.) Omit ३. A. B F. (ए. बी एफ. मा नथी) Omit वन्दित्ता ४ A B D E (ए बी. डी इ मां नथी.) Omit. ५. G. (जी.) अंतिय. ६ A B F. G (ए बी. एफ जी.) निसामित्तए.

भावार्थः—॥ २०२ ॥ ते वारे ते सदालपुत्र श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदी नमस्कार करी एम कहेतो हवो, हे भगवंत ! तमारी पासे धर्म सांभळवानी मारी इच्छा छे ॥ २०२ ॥

अर्थः—॥ २०३ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । स०.श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । स० सदालपुत्र । आ० गोसाळाना । उ० श्रावक । ती० तेने । य० वळी । जा० यावत । ध० धर्म । प० कुही संभळावे ॥ २०३ ॥

मूळपाठः—॥ २०३ ॥ तए णं समणं भगवं[1] महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविउवासगस्स तीसे य[2] जाव* धम्मं परिकहेइ ॥ २०३ ॥

भावार्थः—॥ २०३ ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव ते सदालपुत्र गोशालाना श्रावकने यावत मोटी धर्मकथा कहे ॥ २०३ ॥

अर्थः—॥ २०४ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । स० सदालपुत्र । आ० गोसाळाना । उ० श्रावक । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । अ० समीपे । ध० धर्म । सो० सांभळीने । नि० हैये धारी । ह० हर्ष । तु० संतोष पाम्या । जा० यावत । हि० हृदयमांहे आणंद पाम्या । ज० जेम । आ० आणंद श्रावक । त० तेम । गि० गृहस्थ । ध० धर्म । प० अंगिकार करे । न० एटलो विशेष । ए० एक । हि० सोनानी । को० कोडी । नि० भूमिमां । प० रहे । ए० एक । हि० हिरण । को० कोडी । व० व्याजे । प० वधे (व्यापारे) । ए० एक । हि० हीर-

१ A. B (ए वी. मां नथी) Omit २ F. G (एफ. जी मां वधारे) महइ माहालियाए. * ११ मो पाठ जुओ

ण । को० कोडी । प० घर वखरामां । ए० एक । व० गोकुळ । द० दस । गो० गाय । सा० सहस्र । दस हजार गायनुं एक । व० वर्ग (गोकुळ)। जा० यावत । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । वं० वांदे । न० नमस्कार करे। न० नमस्कार करीने । जे० ज्यां । पो० पोलासपुर । न० नगर । तें० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । पो० पोलासपुर । न० नगर । म० मध्यो । म० मध्य । जे० ज्यां । स० पोतानुं । गि० घर । जे० ज्यां । अ० अग्निमित्रा । भा० भार्या । ते ० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । अ० अग्निमित्रा । भा० भार्याने । ए० एम । व० कहे । ए० एम । ख० निश्चे । दे० हे देवाणुप्रिया । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । जा० यावत । स० समोसर्या । तं० ते माटे । ग० जाओ । णं० वळी । तु० तमे । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । वं० वांदो । जा० यावत । प० सेवा करो । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । अं० समीपे । पं० पांच । अ० अणुव्रत । स० सात । सि० शिक्षाव्रत । दु० बार । वि० प्रकारनो । गि० गृहस्थधर्म (बार श्रावकना व्रत) । प० आदरो ॥२०४॥

मूळपाठः—॥ २०४ ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविउवासए[1] समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए[2] धम्मं सोच्चानिसम्म हट्ठतुट्ठ[3] जाव* [4]हियए जहा आणन्दो[5] तहा[6] गिहिधम्मं पडिवज्जइ । नवरं एगा हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा[7] हिरण्णकोडी[8] वड्ढि-

१. A. B D E F. G (ए बी. डी इ एफ जी मां नथी.) Omit. २. D. E. (डी इ) अंतिय. ३ A B (ए बी) °तुट्ठे. D (डी मां नथी) Omit तुट्ठ. * पाठ ९ जुओ. ४. A. (ए) हिययए; B (बी) हियये, G. (जी) हिययहियए. ५ A. B. D. E. F. (ए बी डी इ एफ) आणदे ६. F. (एफ) जाव. ७ D. E (डी. इ. मा मात्र छे.) have only वुड्ढि पवित्थर. ८. F. G. (एफ. जी. मा नथी.) Omit.

पउत्ता[1] एगा हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ता एगे वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं[2] जाव+ समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, २त्ता[3] जेणेव पोलासपुरे [4]नयरे तेणेव उवागच्छइ, २त्ता[2] पोलासपुरं नयरं[5] मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे[6] जेणेव अग्गिमित्ता भारिया तेणेव उवागच्छइ, २त्ता अग्गिमित्तं[7] भारियं एवं वयासी। "एवं खलु, [8]देवाणुप्पिए, समणे भगवं[9] महावीरे जाव+ समोसढे,[10] [11]तं गच्छाहि णं [12]तुमं, समणं भगवं महावीरं वन्दाहि जाव+ पज्जुवासाहि, [13]"समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुवइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि" ॥ २०४ ॥

भावार्थः—॥ २०४ ॥ ते वारे ते सदालपुत्र श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी पासे धर्म सांभळी, हृदयमां धारी हर्ष-संतोष पाम्यो, यावत हर्ष करी हैयुं उभराणुं. जेम आणंदे धर्म अंगिकार कर्यो तेमज सदालपुत्रे पण

---

१. D. E. G (डी. इ जी) वुड्ढि २ A B G (ए बी. जी मां नथी) Omit. + पाठ ९ जुओ ३ D E G (डी. इ. जी मां नथी) Omit २त्ता ४. A B. F. G. (ए बी. एफ. जी.) नगरे. ५ A. B. F. (ए. बी. एफ.): नगरं. ६. D (डी) गेहे. ७. B. (बी.) अग्गिमेत्तं. ८. G (जी.) देवाणुप्पिया ९ G. (जी. मा नथी) Omit भ॰ महा॰. A. B (ए बी. मा फक्त नथी) omit only महावीरे. १०. D. E. (डी. इ) समोसढो, G (जी) समोसरणे ११. G. (जी मां नथी.) Omit. १२ D. E. (डी. इ मां नथी.) Omit १३ G (जी. मां नथी.) Omit from समणस्स down to पडिवज्जाहि

यावत ग्रहस्थ धर्म अंगिकार कर्यो पण तेमां एटलो फेर छे के, एक क्रोडी सोनैया धरती मांहे दाटेला, एक क्रोडी सोनैया व्यापारमां वृद्धि माटे, एक क्रोडी सोनैयानो घर वाखरो अने दस हजार गाए एक गोकुळ थाय तेवुं एक गोकुळ सदालपुत्रे मोकळुं राख्युं, बाकी आणंदनी पेरे बार व्रत अंगिकार कर्या. त्यार पछी सदालपुत्र श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदो नमस्कार करो ज्यां पोलासपुर नगर छे त्यां आवी पोलासपुर नगरनी मध्योमध्य थइने ज्यां पोतानु घर त्यां आवीने अग्निमित्रा नामनी पोतानी भार्याने एम कहेतो हवो.

एम निश्चे हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देव यावत समोसर्या (पधार्या) छे तेथी तमे जाओ, श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदो, नमस्कार करो यावत सेवा भक्ति करो अने श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी पासे पांच अणुव्रत, सात शिक्षाव्रत, ए बार व्रतरुप गृहस्थनो धर्म अंगिकार करो ॥ २०४ ॥

अर्थः—॥ २०५ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । सा० ते । अ० अग्निमित्रा । भा० भार्या । स० सदालपुत्र । स० श्रावकने । त० प्रमाण । त्ति० कही । ए० ए । अ० अर्थ । वि० विनये करी । प० सांभळे ॥ २०५ ॥

मूळपाठः—॥ २०५ ॥ तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्तस्स समणोवासगस्स "तह" त्ति एयमट्ठं विणएण पडिसुणेइ ॥ २०५ ॥

भावार्थः—॥ २०५ ॥ ते वारे ते अग्निमित्रा भार्या ते सदालपुत्र श्रावकनुं एवुं वचन सांभळीने रहेत (प्रमाण) करे, ए अर्थ विनये करीने सांभळे. ॥ २०५ ॥

अर्थः—॥ २०६ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावक । को० सेवक । पु० पुरुष । स० तेडावे । स० तेडावीने । ए० एम । व० कहे । खि० शिघ्र । भो० भो । दे० हे देवाणुंप्रिय । ल० नाहना । क० कर्णना वृषभ । जु० जुते (रथे)। जो० जोतरी । स० समी । ख० खुरी । जेहनी । वा० पुछडुं । स० समी रोमराजी । हि० वरस सरखा । सि० सरखा सिंगडा जेहना । ज० सोनानी । क० सांकळो तेणे करी संयुक्त । जो० जोतर्या । प० श्वेत वर्ण निर्मळ । र० रुपा सोनाना । घं० घंट । सु० सुतरनी । र० रासडी । व० प्रधान । क० सोनानी । ख० खेची । न० नाथ । प० ग्रही । उ० उपग्रहीक । नी० लीला रतन जडीत । एहवी । क० मेखला सहित छे । प० प्रधान । गो० वृषभ । जु० नाहना यौवनावस्था प्राप्त । ना० नाना विध घणी जातना । म० मणी । क० सोनानी । घं० घंटा तेहनो । जा० जाळ समोह । प० सहित । सु० रुडी । जा० गायना उपना जोग लक्षण सहित सुजात । जु० छे । जु० जोत्र । उ० सरल । प० भला वखाणवा योग्य । सु० सुष्टभला शोभायमान । नि० निपजाव्यो । प० प्रधान । ल० लक्षण तेणे करी । उ० सहित । जु० जोडीने । ध० धार्मिक । जा० वाहन मांहे । प० प्रधान । उ० जोतरे । उ० जोतरीने । म० माहरी । ए० ए । आ० आज्ञा । प० प्रमाण करी पाछी सोंपो ॥ २०६ ॥

मूळपाठः—॥ २०६ ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए[1] कोडुम्बियपुरिसे[2] सद्दा-

---

१. A. B D. E. G. (ए बी डी. इ. जी. मां नथी) Omit. २ A D. F. (ए. डी. एफ) कोडंबिय ° G. (जी) ° पुरिसं.

वेइ, त्ता[1] एवं वयासी । " खिप्पामेव, भो देवाणुप्पिया,[2] लहुकरणजुत्तजोइयं[3] समखुरवालिहाणसमलिहियसिङ्गएहिं[4] जम्बूणयामयकलावजोत्तपइविसिट्ठएहिं[5] रययामयघण्टसुत्तरज्जुगवरकञ्चणखइयनत्थापग्गहोग्गहियएहिं[6] नीलुप्पलकयामेलएहिं[7] पवरगोणजुवाणएहिं[8] नाणामणिकणगघण्टियाजालपरिगयं[9] सुजायजुगजुत्तउज्जुगपसत्थसुविरइयनिम्मियं[10] पव-

१ G (जी. मां नथी) Omit त्ता. २. F. (एफ.) देवाणुप्पिए ३. G. (जी मां वधारे) prof. चाउग्घंट, A. (ए.) लहुकरणं जु°, D. E. (डी इ.) °करणज्जु°, A. F. (ए. एफ) °जोइयसम°. ४. A (ए.) °वालिहाणि. ५ D. (डी.) जयुणजा°, A. (ए) °कलावा°, D E (डी. इ) °जुत्त°, F (एफ) °जोत्ता°, G. (जी) °पय°, D E. (डी. इ) °विसट्ठपहिं. ६ D (डी) रजया°, A (ए) °मया°, B (बी.) °घंटा°, F G. (एफ जी) °घट्ट°, A B. F. (ए बी एफ.) °खंचिय°; D. E. (डी इ) °खचिय°; G. (जी. मा नथी.) Omit, D. (डी.) °तत्ता°; (for नत्था). F. G. (एफ जी) °ग्गहियपहिं. ७ B F (बी एफ) °कयामेलएहिं, D. E. (डी. इ.) °कयामलएहिं, G. (जी.) कयमालएहिं. ८. A. (ए) °जुत्ताणएहिं ९ F (एफ.) °कणय°, A. (ए.) °जालि°. १०. E. (इ मां नथी) Omit. जुग, A G. (ए. जी.) °जोत्त° F. (एफ.) °जोत्तं G. (जी. मां नथी) Omit सु before विरइय ("विरइय" नी पहेला "सु" नथी. A. B. (ए बी) °निम्मयं, D E F. (डी. इ. एफ.) read निम्मियपवर°

रलक्खणोववेयं[1] जुत्तामेव[2] धम्मियं जाणप्पवरं[3] उवट्ठवेह, रत्ता[4] मम एयमाणत्तियं पच्च-प्पिणह[5] ॥ २०६ ॥

भावार्थः—॥ २०६ ॥ ते वारे ते सद्दालपुत्र श्रावक सेवक पुरुषने बोलावीने एम कहेतो हवो, अहो ! देवने वल्लभकारी ! जे चालवामां उतावळा होय, जेना कान नाना होय, जेनुं पुंछडुं अने खरी सरखा होय, ते पुंछडे अने खरीए खोट न होय, गांठा रहित बन्ने शींगडा होय, एवा उत्तम, तरुण, जुवान बळद होय तेने जंबू (जांबुनारंग जेवुं), सोनानुं गळे आभरण, (घुघरमाळ.), रुपानी घंटा, उत्तम सुतरनी रास, उत्तम सोनानी नाथ, तेणे करी मजबुत बांधेल होय, उत्तम निलोत्पल कमळे करी जेना मस्तकनुं शिखर शणगारेलुं होय (पगने विषे झांझरीयां होय) एवी रीते बळदने शणगारीने त्यार पछी जेने विचित्र प्रकारना मणी रत्न कंचननी घंटीका होय, उत्तम जाळीए करी सहित होय, सारा काष्टनुं करेलुं घोसरुं होय, बे जोतर सारा होय जेनो प्रविण शिल्प शास्त्रीए अति सरस घाट घड्यो होय अने जे धर्म कार्य करवा जवानुं होय त्यारे ज तेना उपर बेसाय छे, एवो धर्म रथने विषे पूर्वोक्त प्रमाणे बळदने शणगारी तैयार करीने उतावळा मारी पासे लावो, ए मारी आज्ञा छे ते प्रमाणे जलदी करी ते आज्ञा मने जलदी पाछी सोंपो ॥ २०६ ॥

---

१. G. (जी.) ° ववेहिं. २ D. E. (डी. इ) read सजुत्तमेव ३. E. F. (इ. एफ.) ° पवरं ४ D. E. G. (डी. इ. जी. मां नथी) Omit रत्ता. ५ E. (इ.) ° पच्चपिणह; F. (एफ.) पच्चुप्पिण°.

अर्थः—॥ २०७ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । ते० ते । को० कुटुंबीक आज्ञाकारी । पु० पुरुषो (नोकरो)। जा० यावत । प० आज्ञा पाछी सोंपे ॥ २०७ ॥

मूळपाठः—॥ २०७ ॥ तए णं ते कोडुम्बियपुरिसा जाव* ¹पच्चप्पिणन्ति ॥ २०७ ॥

भावार्थः—॥२०७॥ ते वारे ते सेवक पुरुषे सदाल पुत्रना कह्या प्रमाणे यावत सर्व करी तेनी आज्ञा पाछी सोंपे ॥ २०७ ॥

अर्थः—॥ २०८ ॥ ते० ते वारे । णं० वळी । सा० ते । अ० अग्निमित्रा । भा० भार्या । ण्हा० स्नान करे । जा० यावत । पा० प्रायश्चित लीए । सु० शुद्ध निर्मळ उजळा । वे० वस्त्र पेहेरे । जा० यावत । अ० अल्प भार । म० मूल घणो एहवा । आ० घरेणां । अ० शणगारो । स० शरीरने । चे० दाशीना । च० समूह । प० परिवारे । परीवरी । घ० धार्मिक । जा० वाहन मांहे । प० प्रधान रथे । दु० बेसे । दु० बेसोने । पो० पोलासपुर । न० नगरने । म० मध्यो । म० मध्ये । नि० नीकळे । नि० नीकळीने । जे० ज्यां । स० हजार । अ० आंबानुं । व० वननुं । उ० उद्यान । ते० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । ध० धार्मिक । जा० रथथी । प० हेठे उतरे । प० उतरीने । चे० दासीने । च० परिवारे । प० परिवरी । जे० ज्यां । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । ते० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । ति० त्रणवार । जा० यावत । वं० वांदे । न० नमस्कार करे । न० नमस्कार करीने । न० नहि अति । आ० पासे । न० नहि । अ० अति वेगळो । जा० यावत । प० हाथ जोडी । ठि० उभी । चे० वळी । प० सेवा करे ॥ २०८ ॥

---

* आगळा पेरेग्राफमां जुओ १. E. (इ.) ० पच्चप्पिणह, F. (एफ.) पच्चप्पिण ०

मूळपाठः—॥ २०८ ॥ तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया एहाया जाव[1] पायछित्ता[1] सुद्धप्पावेसाइं[2] [3]जाव* अप्पमहग्घाभरणालङ्कियसरीरा[4] चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा[5] धम्मियं जाणप्पवरं[6] दुरुहइ[7], २त्ता पोलासपुरं नगरं मज्झं मज्झेणं निग्गछइ, २त्ता[8] जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव[9] उवागछइ, २त्ता धम्मियाओ[10] जाणाओ पच्चोरुहइ २त्ता[11] चेडिया-

* पाठ १० मो जुओ १ F. (एफ.) पाइच्छित्ता. २ G. (जी. मां नथी) Omit from सुद्ध down to उज्जाणे, A. B. D E (ए. बी. डी इ मा) Only सुद्ध, F (एफ.) सुद्धपवेसाइं. ३ A. B. D. E F. G. (ए. बी. डी. इ. एफ मां नथी.) Omit. ४ mss (सर्वे) सुद्धअप्पम. ५. D. (डी.) ° परिकिण्टा, E. (इ.) ° परिकिखत्ता ६. A B (ए बी.) पवरं ७. D E (डी इ.) दुरूहइ ८. D E. (डी. इ. मां नथी.) रत्ता. ९. D E F. (डी इ एफ मां नथी) Omit तेणेव उवा ° रत्ता. १०. Before धम्मियाओ ("धम्मियाओ" पहेला) A D. E. F. (ए डी इ एफ. मां नीचेना शब्दो छे) जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ रत्ता B. G insert Only (बी. जी मां मात्र) जेणेव स ° भ ° महावीरे, F. (एफ.) Omits from (नीचेना नथी) धम्मियाओ. down to उवागच्छइ रत्ता ११. D E. G. (डी. इ. जी मां नथी.) Omit रत्ता.

चक्कवालपरिवुडा[1] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २त्ता तिक्खुत्तो जाव* वन्दइ नमंसइ[2]; २त्ता[3] नच्चासन्ने[4] नाइदूरे[5] जाव[6] पञ्जलिउडा[7] ठिइया[8] चेव पज्जुवासइ ॥ २०८ ॥

भावार्थः—॥ २०८ ॥ ते वारे ते अग्निमित्रा भार्याए स्नान करी यावत पाछली मलीन अवस्था दूर करी रुडां शुद्ध (पवित्र) वस्त्र पहेरी जेमां भार थोडो ने मूल्य घणुं एवा आभरण पहेर्यां अने सोले शृंगार सहित घणी दासीना परिवारे परीवरीथकी धर्म रथ उपर चडीने पोलासपुर नगरनी मध्योमध्य थइने ज्यां सहश्रांब वनमां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव हता त्यां आवीने त्रणवार पदक्षिणा करी, वांदी, नमस्कार करी अति वेगळी नहि, अति ढुकडी नहि एवी रीते बे हाथ जोडी उभी रही सेवा भक्ति करवा लागी ॥ २०८ ॥

अर्थः—॥ २०९ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । अ० अग्नि मित्राने । ती० बीजा साथे आवेलने । य० वळी । जा० यावत । ध० धर्म उपदेश । क० कहे ॥ २०९ ॥

---

१ A B Only (ए. बी मां फक्त) °परि; (नथी) वुडा: D. E. (डी. इ.) °परिवुडे. * पाठ १० मो जुओ २ D. E. (डी. इ. मां नथी.) Omit. ३. A. G. (ए. जी. मां नथी.) Omit २त्ता ४ F. (एफ.) निच्चासन्ने. ५ A. B. F. (ए बी. एफ. मां नथी) Omit. ६ उववाई ३३, ३८, ज्ञाता ७ पाठ ६. A B. (ए बी.) पंजलियडा, ७. A. B. (ए बी.) ठिइयाओ, F G. (एफ जी.) ठिया. ८. G. (जी.) जाव.

मूळपाठः—॥ २०९ ॥ तए णं समणे [1]भगवं महावीरे अग्गिमित्ताए तीसे य[2] जाव* धम्मं कहेइ[3] ॥ २०९ ॥

भावार्थः—॥२०९॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देवे अग्निमित्रा वगेरे आगळ मोटी धर्म कथा कही ॥२०९॥

अर्थः—॥ २१० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । सा० ते । अ० अग्निमित्रा । भा० भार्या । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । अं० समीपे । ध० धर्म । सो० सांभळीने । नि० हैये धारीने । ह० हर्ष । तु० संतोष पामे । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । वं० वांदे । न० नमस्कार करे । नं० नमस्कार करीने । ए० एम । व० कहे । स० मे सदह्यो । णं० वणी । भं० हे पूज्य । नि० निग्रंथ । पा० प्रवचन । सिद्धांत । जा० यावत । से० तेमज । ज० जेम । तु० तमे । व० कह्यु ते । ज० जेम । णं० वळी । दे० हे देवताने वल्लभ । अं० (तमारी) समीपे । व० घणा । उ० उग्र । भो० भोग (क्षत्रीय छांडी) । जा० यावत । प० प्रवर्ज्या ले । नो० नहि । ख० निश्चे । अ० हुं । त० तेम । सं० समर्थ नहि । दे० हे देवाणुप्रिय । अं० (तमारी) पासे । मु० दिक्षा । ल० लेवा । जा० यावत । अ० हुं । णं० वळी । दे० हे देवानुंप्रिय । अ० तमारी पासे । पं० पांच । अ० अणुंव्रत । स० सात । सि० शिक्षाव्रत । दु० वार । वि० प्रकारे । गि० गृहस्थ । ध० धर्म । प० आदरीश पाळीश । अ० जेम । सु० सुख होय तेम करो । दे० हे देवाणुंप्रिय । मा० न । प० विलम्ब । क० करो ॥ २१० ॥

---

१ A. B. D. E G (ए. बी. डी. इ जी मां नथी.) Omit. २. A. (ए मां नथी) Omit. य

* ११ पाठ जुओ. ३. G. (जी.) परिकहेइ

मूळपाठः—॥ २१० ॥ तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया[1] समणस्स भगवओ, महावीरस्स[2] अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठा समणं भगवं[3] महावीरं[4] वन्दइ नमंसइ[5], वन्ता एवं वयासी। "सद्दहामि णं, भन्ते, निग्गन्थं[6] पावयणं[7] जाव* से जहेयं तुब्भे वयह[8]। जहा णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे उग्गा भोगा +जाव[9] पव्वइया, नो खलु अहं तहा [10]संचाएमि देवाणुप्पियाणं[11] अन्तिए मुण्डा[12] भवित्ता [13]जाव+। अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि[14]। अहासुहं, [15]देवाणुप्पिया, मा[16] पडिबन्धं [17]करेह" ॥ २१० ॥

१. D E G. (डी इ जी. मा नथी.) Omit. २ A. B. D E G (ए बी डी इ. जी मा नथी) Omit ३. B. G (बी जी. मा नथी) Omit ४ A B G (ए बी. जी मां नथी) Omit. ५ A B D (ए. बी डी मा नथी.) Omit ६ A. (ए) निग्गंथे, F. (एफ) निग्गंथपावयणं. ७ A. (ए.) पावयणे. १२ पाठ जुओ. ८ A. B (ए बी.) वदह + १२ पाठ जुओ. उववाइ २३, ३८ ९ D E. (डी. इ. मां नथी) Omit. १० G (जी.) संचाएमि ११ A. B D. E G (ए. बी. डी. इ जी मा फक्त) have Only देवामुंडा. १२ F. (एफ) मुंडे. १३ A. B D. E. F. G (ए बी. डी इ. एफ. जी मां नथी.) Omit + १२ पाठ जुओ. १४. A B. D E F. (ए बी डी इ. एफ.) पडियज्जामि. १५ A B D (ए बी डी. मा नथी) Omit १६. A. B D. E. G. (ए बी. डी. इ. जी. मां नथी.) Omit मा पडि०क० १७. F. (एफ.) करेहि.

भावार्थः—॥ २१० ॥ ते वारे अग्निमित्राए श्रमण भगवंत श्री महावीरदेवनी समीपे धर्म सांभळीने हृदयमां धारी, हर्ष संतोष पामी, श्रमण भगवंत महावीर देवने वांदी नमस्कार करीने एम कहेती हवीः—

हे भगवंत ! ए निग्रंथ प्रवचन मार्ग हुं श्रद्धुं तेमज यथार्थ छे. पण हे देवने वल्लभकारी प्रभु ! आपनी पासे घणा भाग्यवंत, मोटा उग्र कूळना, भोग कूळना यावत दिक्षा ले छे तेने धन्य छे, पण हे देवने वल्लभकारी ! तेम हुं निश्चे संसार त्यागी आपनी पासे दिक्षा लेवाने शक्तिवान नथी, तेथी हे देवने वल्लभकारी ! हुं आपनी पासे पांच अणुव्रत, सात शिक्षाव्रत, ए बार व्रतरुप गृहस्थनो धर्म अंगिकार करीश. ते वारे प्रभु कहेता हवा, हे देवने वल्लभकारी ! जेम तमने सुख उपजे तेम करो, पण ए कार्यनो प्रमाद करशो नहिं. ॥ २१० ॥

अर्थः—॥ २११ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । सा० ते । अ० अग्निमित्रा । भा० भार्या । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । अं० समीपे । प० पांच । अ० अणुव्रत । स० सात । सि० शिक्षाव्रत । दु० बार । त्रि० प्रकारे । सा० श्रावक । ध० धर्म । प० आदरे । प० आदरीने । स० श्रमण । भ० भगवत । म० महावीरने । वं० वांदे । न० नमस्कार करे । न० नमस्कार करीने । ता० तेज । ध० धार्मिक । जा० रथमां । दु० बेसे । दु० बेसीने । जा० जे । ए० वळी । दि० दिसाथी । पा० आवी हती । ता० तेज । ए० वळी । दि० दिसाए । प० पाछी गइ ॥ २११ ॥

मूळपाठः—॥ २११ ॥ तए णं सा अग्गिमित्ता [1]भारिया समणस्स भगवओ महावीर-

1 A. B. D. E. G. (ए बी डी. इ. जी. मां नथी) Omit.

स्स [1]अन्तिए [2]पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडित्ता समणं भगवं महावीरं[2] वन्दइ नमंसइ, वन्दित्ता तामेव धम्मियं जाणप्पवरं[3] दुरुहइ[4], दुरुहित्ता जामेव दिसं[5] पाउब्भूया[6] तामेव दिसं[5] पडिगया[7] ॥ २११ ॥

भावार्थः—॥ २११ ॥ ते वारे अग्निमित्रा भार्या श्रमण भगवंत श्री महावीरनी पासे पांच अणुव्रत, सात शिक्षाव्रत ए बार व्रतरुप श्रावकनो धर्म अंगिकार करी श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदी नमस्कार करी ते धर्मरथे बेसीने जे दिशाएथी आवी हती ते दिशाए पाछी गइ ॥ २११ ॥

अर्थः—॥ २१२ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । अ० एकदा । क० प्रस्तावे । पो० पोलास । पु० पुरथी । स० सहश्र । व० वन । उद्यानथी । प० नीकळे । प० नीकळीने । व० बहार । ज० जन । व० पद । वि० देशमांहि । वि० विचरे । विहार करे ॥ २१२ ॥

---

१. D E. (डी इ.) अंतिय. २ A B D. E (ए बी डी. इ.) havo only पंचा जाव omitting the rest downto पडिवज्जइ G. (जी) has Only गिहिधम्मं पडिवज्जइ ३ A. B. (ए बी) ° पवरं ४ B. D G (बी डी जी) दुरुहइ E (इ) दूरुहइ ५. D E. (डी. इ. मां नथी) Omit ६ A. B. F. (ए. बी. एफ) पाउब्भूए, D E (डी. इ) Only पा. ७. A B. F. (ए बी एफ.) पडिगते.

मूळपाठः—॥ २१२ ॥ तए णं समणे भगवं [1]महावीरे अन्नया [2]कयाइ पोलासपुराउ सहस्सम्बवणाउ [3]पडिनिग्गछइ, २त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ २१२ ॥

भावार्थः—॥ २१२ ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव एकदा प्रस्तावे पोलासपुर नगरथी सहश्रांबवन उद्यानथी नीकळी बाहिर जनपद देशने विषे विहार करे ॥ २१२ ॥

अर्थः—॥ २१३ ॥ त० तेवारे । णं० वळी । से० ते । स० सदालपुत्र । स० श्रमण । उ० उपासक । जा० हुओ । अ० जाणतो थको । जी० जीव । अ० अजीव नव पदार्थसूत्र अर्थनो जाण थयो । जा० यावत । वि० विचरे ॥२१३॥

मूळपाठः—॥ २१३ ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जाए अभिगय जीवाजीवे जाव* विहरइ ॥ २१३ ॥

भावार्थः—॥ २१३ ॥ ते वारे ते सदालपुत्र श्रावक थयो, समकित सहित जीव अजीव जाणतो यावत विचरतो हवो ॥ २१३ ॥

अर्थः—॥ २१४ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । गो० गोसाळो । म० मपली पुत्रे । इ० एहवी । क० वान । ल० लाध्ये थके । स० वीमासे । ए० एम । ख० निश्चे । स० सदालपुत्रे । आ० गोसाळानुं । स० श्रावकपणुं । व० वम्यु मूक्युं । स० श्रमण । नि० निग्रंथनी । दि० द्रष्टि । प० प्रवर्जे । तं० तो । ग० जाउं । णं० वळी ।

---

१. A. B G. (ए बी जी मां नथी) Omit २. A B G (ए बी जी.) कयाइ ३. F (एफ) पडिनिक्खमइ * जुओ आ सूत्रना पाठ ४४ ने ५८. जुओ उववाइ सूत्र पाठ १२४ जुओ भगवती सूत्र पाठ १८९.

स० सद्दालपुत्र । आ० गोशाळाना । उ० श्रावकने । स० श्रमण । नि० निग्रन्थनी । दि० धर्मनी द्रष्टि । वा० व-मावी छंडावी । पु० फरीने । आ० गोसाळाना धर्मनी । दि० द्रष्टिमां । गे० अदरावुं एटले मारा परुपेळ धर्ममां पाछो स्थिर करुं । त्ति० एम । क० कही । ए० एम । सं० विमासे । सं० विमासीने । आ० गोसाळाना । सं० संघ यतोना परिवारे । स० परवर्यो । जे० ज्यां । पो० पोलासपुर । न० नगर । जे० ज्यां । आ० गोसाळानो । स० सभा । ते० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । आ० गोसाळानी । स० सभामां । भं० पात्रादिक उपकरण । नि० मुकवानुं । क० करे । क० मुकीने । क० केटलाएक । आ० गोसाळाना धर्मना अनुयायीना परिवार । स० साथे । जे० ज्यां । स० सदालपुत्र । स० श्रावक । ते० त्यां । उ० आवे ॥ २१४ ॥

मूळपाठः—॥ २१४ ॥ तए णं[1] से [2]गोसाले मङ्खलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे, "एवं खलु सद्दालपुत्ते आजीवियसमयं वमित्ता[3] समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं पडिवन्ने, तं गच्छामि णं सद्दालपुत्तं आजीविउवासयं[4] समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं [5]वामेत्ता पुणरवि आजीवियदिट्ठिं[6] [7]गेण्हावित्तए" त्ति कट्टु एवं [8]सम्पेहेइ, २त्ता आजीवियसङ्घसम्परिवुडे

१. A. B G (ए. बी. जी मां नथी.) Omit. २. G (जी.) गोसालिए. ३ F. (एफ) वामित्ता, G. (जी) चइत्ता. ४. A B (ए बी मां फक्त) Only आजीवी, D. E (डी इ) आजीवि G (जी) आजीव but (पण) F (एफ.) आजीविउवास. ५. D. E F. (डी. इ. एफ) वामित्ता ६. A. (ए) ० दिट्ठं. ७. D. (डी.) गेण्हावेत्तए; E. (इ.) गिण्हवेत्तए, F. (एफ.) गिण्हवित्तए. ८. F. G. (एफ. जी.) संपेहइ.

जेणेव पोलासपुरे [1]नयरे जेणेव आजीवियसभा[2] तेणेव उवागच्छइ, २त्ता आजीवियसभाए[3] भण्डनिक्खेवं[4] करेइ[5], २त्ता कइवएहिं[6] आजीविएहिं[7] सद्धिं जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छइ[8] ॥ २१४ ॥

भावार्थः——॥ २१४ ॥ तेवारे ते गोशाळा मंखलीपुत्रे एवी वात सांभळी के एम निश्चे सदालपुत्रे आजीवीकामत सिद्धांत धर्म सर्व छांडीने श्रमण निग्रंथनी दृष्टि एटले तीर्थंकरनो धर्म अंगिकार कर्यो छे, ते माटे हुं त्यां जाउ अने सदालपुत्र आजीवीकामती श्रावकने श्रमण निग्रंथनो धर्म छोडावीने फरी वळी आजीवीकामत अंगिकार कराबुं. एम चिंतवीने गोशाळो पोताना शिष्यने परिवारे परिवर्यो थको ज्यां पोलासपुर नगरमां आजीवीकानी सभा (एटले तेनो उपाश्रय) छे त्यां आवीने उपधी (वस्त्र–पात्रादिक) मुकीने केटला एक शिष्यने साथे लइ ज्यां सदालपुत्र श्रावक हतो त्यां आवे ॥ २१४ ॥

अर्थः——॥ २१५ ॥ त० तेवारे। णं० वळी । से० ते । स० सदालपुत्र । स० श्रावक । गो० गोसाळा ।

---

१. A. B F (प वी एफ.) नगरे. २ D. E (डी. इ) °सहा. ३. A B D. E. F (ए. वी. डी. इ. एफ. मां नथी.) Omit. ४ D E. (डी. इ) भंडनिक्खेव; F. (एफ.), भंड नि °. ५. A. (ए) करेंति ६. G. (जी.) कतिविएहि, A B. (ए. वी.) केवतिएहिं, F. (एफ.) केवित्तीएहिं ७ G. (जी. मां नथी.) Omit. ८ A. B. F. (ए. वी एफ. मां वधारे) add २; D. E. (डी. इ.) २त्ता.

२८

मं० मखलि पुत्रने । ए० आवतो । पा० देखे । पा० देखीने । नो० न । आ० बोलावे । नो० न । प० मनमां मलु जाणे । अ० अणबोलावतो । अ० अणबोल्यो अनादार देतो । तु० अणबोल्यो । सं० बेसी रहे ॥ २१५ ॥

मूळपाठः—॥ २१५ ॥ तए णं [1]से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं [2]एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ[3] नो परिजाणइ[4], अणाढामाणे[5] अपरिजाणमाणे[6] तुसिणीए[7] संचिट्ठइ ॥ २१५ ॥

भावार्थः—॥ २१५ ॥ तेवारे ते सद्दालपुत्र श्रावके गोशाला मंखली पुत्रने आवतो देखीने तेने आदर (आवकार) दीधो नहि, जाणे तद्दन अपरिचित अजाण्यो होय तेनी पेरे आव्यो जाण्यो पण नहि एम आदर अणदेतो, अजाणतो थको विनय अणकरतो मौनपणे रह्यो ॥ २१५ ॥

अर्थः—॥ २१६ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । गो० गोसाळो । मं० मंखलीपुत्र । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावकने । अ० अणबोलतो । अ० अनादार करतो । पी० बाजोठ । फ० पाटीयुं । सि० सेजा । सं० संथारादिक मागवाने । अ० अर्थे । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरना । गु० छता गुणनुं । कि० वर्णन । क०

१. A. B. D. E F (ए बी डी. इ एफ. मां नथी.) omit. २ D. E (डी इ.) पगमाणं ३. A. (ए) आढइ ४ D E (डी इ.) परियाणाइ. ५ A F (ए. एफ.) अणाढायमाणे, G. (जी.) अणाढाइज्जमाणे ६ D F, (डी. इ) अपरियाणमाणे. ७. E. (इ.) तुमणिए; F. (एफ.) तुसिणिए; G. (जी) तुसणीए.

करे ने । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावकने । ए० एम । ग० गोसाळो कहे । आ० आव्या हता । णं० वळी । दे० हे देवाणुप्रिय । इ० इहां । म० मोटो । मा० महानुभाव ॥ २१६ ॥

मूळपाठः—॥ २१६ ॥ तए णं [1]से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं अणाढाइज्जमाणे[2] अपरिजाणिज्जमाणे[3] पीढफलगसिज्जासंथारट्ठाए[4] समणस्स भगवओ महावीरस्स[5] गुणकित्तणं करेमाणे[6] सद्दालपुत्तं[7] समणोवासयं[8] एवं वयासी । "आगए णं, देवाणुप्पिया, इहं महामाहणे[9]" २१६ ॥

भावार्थः—॥ २१६ ॥ एवी रीते सदालपुत्र श्रावकने अणआदर करतो, अणजाणतो, जाणीने गोशाळो मखलीपुत्र, पाट–पाटला, स्थानक, संथाराने अर्थे सदालपुत्र श्रावकनी आगळ श्रमण भगवंत श्री महावीरना गुण किर्तन करवा लाग्यो. हे देवने वल्लभकारी ! अहि श्रमण भगवंत मोटा महानुभाव आव्या हता ? ॥ २१६ ॥

---

१ A. (ए. मां नथी.) Omit. २. A. (ए) आणइढिज्जमाणे, B. D E. (बी. डी. इ.) अणाढिज्जमाणे, F. (एफ.) अणाड्ढिज्जमाणे ३. D. F. G. (डी. एफ. जी.) अपरिजाणमाणे, E (इ.) अपरियाणमाणे. ४. A. B. D. E. (ए बी डी. इ.) °सेज्जा° A. B. D. E. F. (ए. बी. डी. इ एफ.) °ट्ठयाए. ५. A. B E. (ए. बी. इ. मां नथी.) Omit. ६. A. B. G. (ए. बी जी.) करेइ, F. (एफ.) करइ. ७. B. F. G. (बी. एफ. जी. मां नथी) Omit from सद्दा° down to वयासी ("सद्दा°" थी "वयासी" सुधी पाठ नथी.) ८. E. (इ. मां नथी.) Omit ९. महामाहणे अथवा माहामाहणे.

अर्थः—॥ २१७ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावक । गो० गोसाळा । मं० मंखली पुत्रने । ए० एम । व० कहे । के० कोण । णं० वळी । दे० हे देवाणुंप्रिय । म० मोटा । मा० महानुभाव ? ॥२१७॥

मूळपाठः—॥ २१७ ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए[1] गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी । "के[2] णं, देवाणुप्पिया, महामाहणे ?" ॥ २१७ ॥

भावार्थः—॥ २१७ ॥ तेवारे ते सद्दालपुत्र श्रावक गोशाळा मंखली पुत्र प्रत्ये एम कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! महामाहण कोण ? ॥ २१७ ॥

अर्थः—॥ २१८ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । गो० गोसालो । मं० मंखलिपुत्र । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० मोटा । मा० महानुभाव ॥

मूळपाठः—॥ २१८ ॥ [3]तए णं से गोसाले [4]मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवसयं एवं वयासी । "समणे भगवं [5]महावीरे महामाहणे" ॥

१. A. B D. E. G (ए. बी. डी. इ जी. मां नथी.) Omit. २. F. (एफ मां छे) reads से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया आगए ण माहामाहणे. ३. G. (जी मा नथी.) Omit the two first Clauses of this paragraph from तए णं down to एवं खलु ॥ ("तए णं" थी "एव खलु" सुधीनो पाठ नथी.) ४. D. E. F. G. (डी. इ. एफ. जी. मां नथी.) Omit. ५. A. B (ए बी. मा नथी.) Omit

भावार्थः—॥ २१८ ॥ तेवारे गोशाळो मंखलीपुत्र सदालपुत्र श्रावकने एम कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारो !
श्रमण भगवंत महावीर देव ते महामाहण कहोए ॥

अर्थः—॥ से० ते । के० कोण । अ० अर्थ । दे० हे देवाणुप्रिय । ए० एम । वु० कहो । स० श्रमण । भ० भग-
वंत । म० महावीर । म० मोटा । मा० महानुभाव ॥

मूळपाठः—॥ "से[1] केणट्ठेणं,[2] देवाणुप्पिया, एवं वुच्चइ समणे भगवं महावीरे[3]
महामाहणे ?" ॥

भावार्थः—॥ ते वारे सदालपुत्र श्रावक गोशाळाने पुछतो हवो । हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री
महावीरदेवने महामाहण शायी कहीए ॥

अर्थः—॥ ए० एम । ख० निश्चे । स० हे सदालपुत्र । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० मोटो । मा०
माहानुभाव । उ० उत्पन्न थयुं छे । णा० ज्ञान । दं० दर्शनना । ध० धरणहार । जा० यावत । म० चोसठ । इंन्द्रने ।
पू० पूजनीक । जा० यावत । त० साचा । क० कर्मनी । सं० संपदा । सं० सहित छे । से० ते । ते० तेणे । अ०
अर्थ । दे० हे देवाणुप्रिय । ए० एम । वु० कहे । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० महा । मा० महानुभाव ।
आ० आव्या हता । णं० वळी । दे० देवाणुप्रिय । इ० इहां । म० मोटा । गो० (चतुर्विध संघनो) गोवाळ ॥

---

१ D. (डी. मां नथी.) Omit से. २. A. (ए.) केणं ठ्ठेण. ३ A. B. D E. G. (ए. बी. डी.
इ. जी. मा नथी) Omit.

मूळपाठः—॥ " एवं खलु, सद्दालपुत्ता[1], समणे भगवं [2]महावीरे महामाहणे उप्पन्न[3]णाणदंसणधरे[3] जाव[4] महियपूइए[5] जाव[6] तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते । से[7] तेणट्ठेणं[8], देवाणुप्पिया, एवं वुच्चइ समणे भगवं महावीरे[9] महामाहणे । आगए णं, देवाणुप्पिया, इहं[10] महागोवे " ॥

भावार्थ—॥ तेवारे गोशाळो कहेतो हवो, हे सद्दालपुत्र श्रावक ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने महामाहण कहेवानुं कारण एहवुं छे के, जेने संपूर्ण ज्ञान–दर्शन उत्पन्न थयुं छे यावत जे चोसठ इंद्रना पुजनीक छे, अने सत्य क्रियानी संपदाए करी सहित छे. जगतना सर्व प्राणीनुं रक्षण करनार छे तेथी हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने महामाहण कहीए. हे देवने वल्लभकारी सद्दालपुत्र ! अहीं महा गोवाळ आव्या हता ? ॥

१. B. (बी.) सद्दालपुत्ते, D. E. (डी इ.) °पुत्त २ B D. E. (बी डी. इ मा नथी) Omit. ३. A. B. (ए, बी) °णाण°, F. G (एफ. जी) °नाण°, D. E (डी इ. मा नथी) Omit अने * १८७ पाठ जुओ. ४. A B. F. (ए बी. एफ) °पुजिए. ५. G (जी. मां के.) read, से केणट्ठेणं देवा° एव खलु देवाणु समणे भ° महा° महामाहणे ६. A (ए.) तेणं ट्ठेण ७. A D. E G (ए. डी. इ. जी. मा नथी.) Omit. ८ F adds here २ ('एफ' मां २ छे) ९. A. B. D. E. F (ए.बी. डी. इ. एफ) सद्दालपुत्ता while D E. (डी. इ. मा नथी) then Omit देवानुप्पिया. १०. B (बी. मां) इम. G. (जी. मा नथी.) Omit.

अर्थः—॥ के० ते कोण । णं० वळी । दे० हे देवाणुप्रिय । म० मोटो । गो० गोवाळ ? ॥

मूळपाठः—॥ "[1]के णं, देवाणुप्पिया, महागोवे ?" ॥

भावार्थः—॥ ते वारे सदालपुत्र गोशाळाने पुछतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! महा गोवाळ ते कोण ? ॥

अर्थः—॥ स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० मोटो । गो० गोवाळ ॥

मूळपाठः—॥ "समणे भगवं महावीरे[2] महागोवे[3] " ॥

भावार्थः—॥ तेवारे गोशाळो कहेतो हवो हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने महा म्होटा गोवाळ कहीए ॥

अर्थः—॥ से० ते । के० कोण । अ० अर्थ । दे० हे देवाणुप्रिय । जा० यावत । म० मोटा । गो० गोवाळ ? ॥

मूळपाठः—॥ "से[4] केणट्ठेणं, देवाणुप्पिया[5], जाव[6] महागोवे ?" ॥

भावार्थः—॥ ते वारे सदालपुत्र गोशाळाने पुछतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने महा गोवाळ शायी कहीए ? ॥

---

१. F. G. (एफ. जी. मां) read से केणट्ठेणं देवा॰ महागोवे. २. A. B. D. E. (ए बी डी. इ मां नथी.) Omit ३ G. (जी. मां नथी) Omit. ४. G (जी मां नथी आखु वाक्य) Omit this passage ५. D E. (डी इ मां नथी) Omit. ६ पाछला पेरेग्राफमा जुओ

अर्थः—॥ ए० एम । ख० निश्चे । दे० हे देवाणुप्रिय । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । सं० संसाररूप । अ० अटवीए । ब० घणा । जी० जीव । न० नास पामता । वि० विणसता । ख० खवाता । छि० छेदाता । भि० भेदाता । लु० लुपाता । वि० दुखीया ते । ध० धर्म । दं० दंडे करी । सा० राखतां । स० सम्यक् प्रकारे गोपवतां । नि० मोक्षनी । म० मोटी । वा० वाडी । सा० हाथोहाथे करी । सं० पोचाडे । से० तेने । ते० तेणे । अ० अर्थे । स० हे सदालपुत्र । ए० एम । वु० कहे । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० महा गोवा । गो० गोवाळ । आ० आव्या हता । णं० वळी । दे० हे देवाणुप्रिय । इ० आंहि । म० मोटा । स० सार्थवाह ॥

मूळपाठः—॥ "एवं खलु, देवाणुप्पिया[1], समणे भगवं [2]महावीरे संसाराडवीए[3] [4]बहवे [5]जीवे [6]नस्समाणे [7]विणस्समाणे [8]खज्जमाणे छिज्जमाणे [9]भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे [10]धम्मएणं दण्डेणं [11]सारक्खमाणे [12]संगोवेमाणे, [13]निव्वाणमहावाडं [14]साहत्थिं संपावेइ ।

१ G (जी. मा नथी) देवा ० स ० भगव. २ A B D. E. (ए बी. डी. इ. मां नथी) Omit ३ A. (ए.) संसाराडवीए. ४. G. (जी मा नथी) Omit बहवे जीवे. ५. F (एफ.) जीवा ६ G. (जी. मा छे) reads ० माणा. ७. D. (डी मा नथी.) Omit ८. A. B. D. E G. Only (ए बी. डी. इ. जी. मा फक्त) खज्जछिज्जभिज्जलुप्पविलुप्पमाणे ९. D. E. (डी इ मां छे) place भिज्ज ० छिज्ज ० १० G. (जी.) धम्मपणं ११ G. (जी) संरक्खमाणे १२ G. (जी. मा नथी.) Omit. १३. G. (जी.) ० महावाडग १४. B. (बी.) सहत्थि, G. (जी.) साहत्थि

से [1]तेणट्ठेणं, सद्दालपुत्ता, एवं वुच्चइ समणे भगवं [2]महावीरे [3]महागोवे। आगए णं, देवाणुप्पिया[4], इहं महासत्थवाहे " ॥

भावार्थः—॥ तेवारे गोशालो कहेतो हवो हे देवने वल्लभकारी! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने महा गोवाळ कहेवानुं कारण एवुं छे के जेम गोवाळीयो गायोने आघी पाछी जवा न दे तेम आ संसारीरुपी अटवीमांहि घणा जीवोने सन्मार्गथी नासता, विनाश पामता, सिंहादिकथी खवाता, खड्गादिके छेदाता, भालादिके भेदाता, कानादिकथी कपाता, दमाता, चोरीए जतां ने धर्मरुपी लाकडीए करी पाछा वाळी निर्वाण रुप म्होटा वाडाने विषे पोताने हाथे पुरे छे तेथी हे सद्दालपुत्र! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने महा गोवाळ कहीए ॥ हे देवने वल्लभकारी! इहां म्होटा सार्थवाह आव्या हता? ॥

अर्थः—॥ के० कोण। णं० वळी। दे० हे देवाणुप्रिया। म० मोटा। स० सार्थवाह ॥

मूळपाठः—॥ " [5]के णं, [6]देवाणुप्पिया, महासत्थवाहे ? " ॥

---

१ A B D, G Only (ए. बी. डी. जी. मा फक्त) तेण २. A B D E (ए. बी. डी इ. मां नथी.) Omit. ३. F. (एफ.) माहागोवे, महागोवे. F. (एफ. मां २) adds here the numeral 2 ४ D. E. (डी. इ. मां नथी.) Omit. ५. E F G (इ. एफ जी.) से केणट्ठेण. ६. F. (एफ. मां नथी.) देवा° महा°.

भावार्थः—॥ तेवारे सदालपुत्र गोशालाने कहेतो हतो, हे देवने वल्लभकारी ! महा सार्थवाह कोण ? ॥

अर्थः—॥ स० हे सदालपुत्र । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० मोटा । स० सार्थवाह ॥

मूळपाठः—॥ " सद्दालपुत्ता, समणे भगवं [1]महावीरे [2]महासत्थवाहे " ॥

भावार्थः—॥ तेवारे गोशालो कहेतो हवो, हे सदालपुत्र ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने महासार्थवाह कहीए ॥

अर्थः—॥ से० ते । के० कया । अ० अर्थे शा माटे ? ॥

मूळपाठः—॥ " से केणट्ठेणं ? " ॥

भावार्थः—॥ तेवारे सदालपुत्र कहेतो हवो हे देवने वल्लभकारी ! महा सार्थवाह शाथी कहीए ? ॥

अर्थः—॥ ए० एम । ख० निश्चे । दे० हे देवाणुप्रिया । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । स० संसाररुप । अ० अटवीने विषे । बं० घणा । जी० जीव । न० त्रास पामता । वि० विनाश पामता । जा० यावत । वि० दुखी थाता । ध० धर्म । प० पंथे । सा० राखता थका । नि० मोक्षना । म० मोटा । प० पाटणने विषे । सा० हाथोहाथे करी । स० पहोचाडे । से० तेने । ते० ते । अ० माटे । स० हे सदालपुत्र । ए० एम । वु० कहीए । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । म० महा । स० सार्थवाह । आ० आख्या छे । णं० वळी । दे० हे देवाणुप्रिय । इ० इहां । म० मोटा । ध० धर्म । क० कथाना करणहार ॥

१ A. B. D. E. G. (ए. बी. डी. इ. जी. मा नथी.) Omit. २. A. B. D. F. G. (ए. बी. डी. एफ. जी.) read जाव मन्थयाहे.

मूळपाठः—॥ " एवं खलु, देवाणुप्पिया[1], समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे [2]विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे[3] [4]धम्ममएणं [5]पन्थेणं सारक्खमाणे निव्वाण,महापट्टणाभिमुहे[6] [7]साहत्थिं [8]सम्पावेइ । से तेणट्ठेणं, सद्दालपुत्ता, एवं वुच्चइ [9]समणे भगवं [10]महावीरे महा सत्थवाहे[11] । आगए णं, देवाणुप्पिया, इहं महाधम्मकही " ॥

भावार्थः—॥ त्यारे गोशाळो कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीरने महा सार्थवाह कहेवानुं कारण एवुं छे के संसाररुपी अटवीमांहि घणा जीवोने नासता, विनाश पामता यावत चोरीए लुंटाताने मिथ्यात्वरुप अवळे मार्गे जताने धर्मरुप सिद्धे रस्ते रक्षण करी मोक्षरुप म्होटा पाटणने विषे पोताने हाथे पहोचाडे तेथी हे सद्दालपुत्र ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने म्होटा सार्थवाह कहीए ? हे देवने वल्लभकारी ! इहां म्होटा धर्मना कहेनारा आव्या हता ? ॥

१ G. (जी. मां नथी.) Omit २ A. B. G (ए बी जी. मां नथी) Omit. ३. A. B. F. G. (ए बी एफ जी.) add उम्मग्गपडिवन्ने. ४. G. (जी.) धम्मएणं. ५. F. G. (एफ. जी) पथेण. ६ B. (बी)° पटण °, G. (जी)° पट्टणंसि Omit (नथी.) अभिमुहे ७ A. B D E. (ए. बी डी इ) साहत्थि ८ E. (इ) संपावइ; D. (डी) सपाविइ ९. A. B G (ए. बी जी. मां नथी) Omits from समणे down to ° सत्थवाहे. १० D. E. (डी. इ. मां नथी). Omit. ११ F. add here the numeral 3.

अर्थः—॥ के० कोण । णं० वळी ते । दे० हे देवाणुप्रिय । म० मोटो । ध० धर्म । क० कथाना करणहार ? ॥

मूळपाठः—॥ " [1]के णं, देवाणुप्पिया, महाधम्मकही ? " ॥

भावार्थः—॥ ते वारे सदालपुत्र गोशालाने पुछतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! म्होटा धर्मना कहेनार कोण ? ॥

अर्थः—॥ स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० मोटो । ध० धर्म । क० कथाना करणहार ॥

मूळपाठः—॥ " समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही " ॥

भावार्थः—॥ ते वारे गोशालो कहेतो हवो हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने मोटा धर्मना कहेनार कहीए ॥

अर्थः—॥ से० ते । के० शा । अ० अर्थ । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । म० मोटा । ध० धर्म । क० कथाना करणहार कहा ? ॥

मूळपाठः—॥ " से केणट्ठेणं[2] समणे भगवं [3]महावीरे [4]महाधम्मकही ? " ॥

भावार्थः—॥ ते वारे सदालपुत्र कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने म्होटा धर्मना कहेनारा शायी कहीए ? ॥

अर्थः—॥ ए० एम । ख० निश्चे । दे० हे देवाणुप्रिय । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० महान ।

१. E. F. G (इ. च्छ. जो) read से केणट्ठेणं २. G (जो. मा मात्र ; केण ३. D, E, G. (प्रो. ४. जो. मां नथी.) Omit. ४. G. (जो. मां नथी.) Omit महा ० and add (अने यथार्थ इ.) सद्दालपुत्ता.

म० मोटो छे। सं० संसारने विषे। व० घणा। जी० जीव। न० नासता (त्रास पामता)। वि० विनाश पामता। उ० उन्मार्गे। प० पडता। स० रुडो पंथ। वि० छांडता। मि० मिथ्यात्वने। व० बले करी। अ० हणाणा। अ० आठ। क० कर्म। त० तेहना। प० पडलना। प० उतारनार। व० घणा। अ० अर्थे करी। य० वळी! जा० यावत। वा० खुलासा करी। य० वळी। चा० चार गति। सं० संसाररूप। क० अटवीने। सा० पोताने हाथे करी सहाज दइने। नि० निस्तारे। से० तेने। ते० ते। अ० अर्थे करी। दे० हे देवाणुप्रिय। ए० एम। वु० कहे। स० श्रमण। भ० भगवंत। म० महावीर। म० मोटो। ध० धर्म। क० कथा। कहेनार। आ० आव्या छे। पं० वळी। दे० हे देवाणुप्रिय। इ० इहां। म० मोटा। नि० निर्जरामक॥

मूळपाठः—॥ "एवं खलु, देवाणुप्पिया, समणे भगवं महावीरे महइमहालयंसि [1]संसारंसि बहवे जीवे नस्समाणे [2]विणस्समाणे उम्मग्गपडिवन्ने सप्पहविप्पणट्ठे[3] मिछत्त-बलाभिभूए[4] अट्ठविहकम्मतमपडलपडोछन्ने[5] बहूहिं अट्ठेहि य जाव* वागरणेहि य

१. A. (ए) सांसारसि. २ A. B. D. E. G. (ए बी. डी. इ. जी. मा) read विणखज्जछिज्जभिज्ज-लुप्पविलुप्पमाणे; F. (एफ. मां पुरुं) in full. विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे. ३. D. E. (डी. इ.) ° विणट्ठे ४ F (एफ.) ° भिभुयाए. ५. A B. (ए. बी.) ° पटलं प °, B. G. (बी. जी.) ° पडिच्छण्णे, E. (इ.) ° पडाच्छण्णे. * १७४ पाठ जुओ.

चाउरन्ताउ[1] संसारकन्ताराउ [2]साहत्थिं निच्छारेइ[3] । से तेणट्ठेणं[4], देवाणुप्पिया, एवं वुच्चइ "समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही"[6] । आगए णं, देवाणुप्पिया, "इहं महानिज्जामए" ॥

भावार्थः—॥ ते वारे गोशाळो कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने म्होटा धर्मना कहेनारनुं कारण एवुं छे के संसाररुपी मोटी अटवीने विषे घणा जीवोने नासता, विनाश पामता, छेदाता, भेदाता, कपाता, दमाता, अवळे मार्गे पडता, सारामार्गथी नासता, मिथ्यात्वरुप वळवंत प्राणीथी पकडाता, आठ कर्मरुप अंधकारना समुहे करी ढंकाया, मुंझाताने घणे अर्थे करी, खुलासा करी, चार गतिरुप संसार अटवीथी पोताने हाथे निस्तार करे जेथी हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने म्होटा धर्मना कहेनारा कहीए. हे देवने वल्लभकारी ! इहां मोटा निर्यामक (नावडिया) आव्या हता ? ॥

अर्थः—॥ के० कोण । णं० वळी । दे० हे देवाणुप्रिय । म० महा । नि० निर्जरामक ? ॥

मूळपाठः—॥ " 'के णं, देवाणुप्पिया, महानिज्जामए' ? " ॥

---

१. G (जी.) चाउरंत ससार °; २. B. D. E. F. G. (बी डी इ एफ जी.) साहत्थि. ३ A. (ए.) नित्थारेंति. ४. D (डी. मा मात्र) Only तेणं. ५. A B F G (ए. बी. एफ जी मा नथी) Omit from समणे down to ° धम्मकही. ६. F. (एफ मां छे.) adds here the numeral ४. ७ G (जी. मां नथी) Omit. ८. D. E. F (डी. इ. एफ.) read से केणट्ठेण, ९. G (जी मां नथी.) Omit.

भावार्थः—॥ ते वारे सदालपुत्र गोशाळाने पूछतो हवो, हे देवने वल्लभकारी । महा निर्यामक कोण ? ॥

अर्थः—॥ स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० मोटा । नि० निर्जरामक ॥

मूळपाठः—॥ " समणे भगवं [1]महावीरे महानिज्जामए " ॥

भावार्थः—॥ ते वारे गोशाळो कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत महावीर देवने म्होटा निर्यामिक कहीए ॥

अर्थः—॥ से० ते । के० शा । अ० अर्थे ॥

मूळपाठः—॥ " से केणट्ठेणं ? " ॥

भावार्थः—॥ तेवारे सदाल पुत्र कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने म्होटा निर्यामिक शाथी कहीए ? ॥

अर्थः—॥ ए० एम । ख० निश्चे । दे० हे देवाणुप्रिय । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । सं० संसारुपी । म० मोटा । स० समुद्रमांहे । ब० घणा । जी० जीवो । न० त्रास पामता । वि० विनाश पामता । बु० बुडता । नि० विशेपथी बुडता । उ० पीडाता । ध० धर्मनामरुप । ना० वहाण । नि० मुक्तिरुप । ती० कांठाने । अ० विषे । सा० स्वहस्ते करी । सं० पहोंचाडे । से० ते । तं० ते । अ० अर्थे । दे० हे देवाणुप्रिय । ए० एम । बु० कहीए । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० मोटा । नि० निर्जरामक (तारक) ॥ २१८ ॥

---

१. A. B. D. E. G (ए. बी. डी. इ. जी. मा नथी.) Omit.

मूळपाठः—॥ " एवं खलु, देवाणुप्पिया, समणे जगवं महावीरे[1] संसारमहासमुद्दे[2] बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे[3] वुड्डमाणे निवुड्डमाणे उप्पियमाणे[4] धम्ममईए[5] नावाए निव्वाणतीराभिमुहे [6]साहत्थिं सम्पावेइ । से तेणट्ठेणं, देवाणुप्पिया, एवं वुच्चइ समणे जगवं [7]महावीरे महानिज्जामए[8] " ॥ २१७ ॥

भावार्थः—॥ ते वारे गोशाळो कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने निर्यामक कहेवानुं कारण ए छे के, संसाररुपी मोटा समुद्रने विषे घणा जीवोने नासता, विनाश पामता, दमाता यावत डुबता, विशेषे डुबाता, पीडाता, जन्म मरण रुपी वेल (भरती) मां तणाताने धर्मरुपी नावा (वाहाण) ए करी मोक्षरुपी कीनारे पोताने हाथे पहोंचाडे तेथी हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने मोटा निर्यामक कहीए ॥ २१८ ॥

१. A. B D. E. G. (ए. बी. डी इ जी. मां नथी) Omit. २. A B (ए. बी.) संसारे समुद्दे. ३. A B F (ए बी एफ. मा वधारे) add जाव विलुप्पमाणे. D E. (डी इ) read विण जाव विलुप्पमाणे, G. (जी मां फक्त) only जाव विलुप्पमाणे (नथी.) Omit विण°. ४. G. (जी) उप्पयमाणे. ५. D. E. (डी. इ.) °मइए, F (एफ.) °मए, ६ G. (जी.) साहत्थि. ७. A B. D. E G. (ए. बी. डी. इ. जी. मां नथी.) Omit. ८ F. (एफ मां वधारे ५) adds here the numeral ५.

अर्थः—॥ २१९ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । स० सदालपुत्र । स० श्रावक । गो० गोसाळा । म० मंखलीपुत्रने । ए० एम । व० कहे । तु० तमे । णं० वळी । दे० देवाणुप्रिय । इ० अतिशय अवसरना जाण । जा० यावत । इ० अति । नि० निपुण । इ० अति । न० नयवादी । इ० एहवा । उ० उपदेश । ल० लाध्या । इ० एहवा । वि० ज्ञान । प० पाम्या । प० समर्थ । णं० वळी । तु० तमे । म० मारा । ध० धर्म । आ० आचार्य । ध० धर्म । उ० उपदेशक । भ० भगवंत । म० महावीरनी । स० साथे । वि० विवाद । क० करवा ? ॥

मूळपाठः—॥ २१९ ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी । " तुब्भे णं, देवाणुप्पिया, [1]इयछेया जाव* इयनिउणा[2] इयनयवादी इयउवए-सलद्धा[3] इयविण्णाणपत्ता[4], [5]पभू णं तुब्भे मम[6] धम्मायरिएणं[7] धम्मोवएसएणं[8] भगवया महावीरेणं सद्धिं[9] विवादं[10] करेत्तए[11] ? " ॥

भावार्थः—॥ २१९ ॥ ते वारे ते सदालपुत्र श्रावक, गोशाळा मंखली पुत्रने एम कहेतो हवो, हे देवने वल्ल-

---

१. D. E. (डी. इ.) इयच्छेयाओ. * उववाय ४८ ने ज्ञाता ३४ पाठ जुओ. २. G (जी. मां नथी.) Omit, D E. (डी. इ.) इयनिउणाओ ३ D. E. (डी इ) इयउवदेस °. ४ F G (एफ. जी.) इयविन्नाण °. ५. F. (एफ.) पहू ६. D E (डी. इ.) ममं. ७. E. G. (इ जी.) धम्मारिएणं. ८. A. F G. (ए एफ. जी) धम्मोवएसेणं. ९. G. (जी) सिद्धिं. १०. D. E. (डी. इ.) विवायं. ११. F. (एफ.) करित्तए, G. (जी) करत्तए.

भकारी ! तमे एवा अवसरना जाण छो, एवा कळावंत छो, एवा नीपुण (डाह्या) छो, एवुं न्यायथी बोलनारा छो, एवा उपदेशना करनार छो, तमने एवुं रुडुं विज्ञान मळ्युं छे, अपूर्व श्रुत, ग्रहण शक्तिवंत छो, समर्थ छो, तो तमे मारा धर्माचार्य, धर्म उपदेशनादेनार, श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनी साथे विवाद करशो ? ॥

अर्थः—॥ नो० नहि । ति० ते । अ० अर्थ । स० समर्थ ॥

मूळपाठः—॥ " नो तिणट्ठे[१] समट्ठे " ॥

भावार्थः—॥ ते वारे गोशालो कहेवा लाग्यो, हुं प्रभुनी साथे विवाद करवाने शक्तिवंत नथी ॥

अर्थः—॥ से० ते । के० शा । अ० माटे । दे० हे देवाणुप्रिया । ए० एम । वु० कहो । नो० नहि । ख० निश्चे । प० समर्थ । तु० तमे । म० मारा । ध० धर्म । आ० आचार्य । जा० यावत । म० महावीर स्वामीनी । स० साथे । वि० विवाद । क० करवाने ॥

मूळपाठः—॥ " से [२]केणट्ठेणं, देवाणुप्पिया, एवं वुच्चइ नो खलु पभू[३] तुब्भे मम[४] धम्मायरिएणं[५] जाव* महावीरेणं [६]सद्धिं [७]विवादं [८]करेत्तए ? " ॥

१ E. G (एफ. जी.) इणट्ठे F. (एफ) इणमट्ठे. २ A. (ए) केणं ट्ठेणं. ३. F. (एफ.) पहू. ४. B. D. E. (बी. डी. इ) ममं. ५ E. G. (इ. जी.) धम्मायिरिएण. * जुओ पाठ ७४. ६ G. (जी.) सिद्धिं. ७. D. E. (डी. इ.) विवाय ८. F. (एफ) करित्तए, G (जी.) करत्तए.

भावार्थः—ते वारे सदालपुत्र कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! तमे मारा धर्माचार्य, धर्म उपदेशना देनार, श्रमण भगवंत महावीर देवनी साथे विवाद करवाने शामाटे शक्तिवान नथी ? तेनुं कारण शुं ॥

अर्थः—॥ स० हे सदाल पुत्र सांभळ । से० ते । ज० जेम । के० कोइ । पु० पुरुष । त० तरुण । जु० जु-
वान । जा० यावत । नि० निपुण । सि० कळावंत । ए० एक । म० मोटो । अ० बोकडो । वा० अथवा । ए०
गाडर । वा० अथवा । सू० सूअर । वा० अथवा । कु० कुकडो । वा० अथवा । ति० तितर । वा० अथवा । व०
वटेर (शाहुडी) । वा० अथवा । ला० लावरी । वा० अथवा । क० होलां । वा० अथवा ! क० तितरनी जात ।
वा० अथवा । वा० कागडो । वा० अथवा । से० सीकरी । वा० वळी । ह० हाथे करी । वा० अथवा । पा० पगे
करी । वा० अथवा । खु० खुरीए करी । वा० अथवा । पु० पुंछडे करी । वा० अथवा । पि० पिंछे करी । वा०
अथवा । सि० सिंगडे करी । वा० अथवा । वि० नाने सींगडे करी । वा० अथवा । रो० रोमे करी । वा० वळी ।
ज० ज्यां । ज० ज्यां । गि० ग्रहे । त० त्यां । त० त्यां । नि० निश्चळपणे । नि० फंदरहित । ध० धरे । ए० एम । ए०
वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । म० मने । व० घणे प्रकारे । अ० अर्थ करी । य० वळी । हे० हेतुए
करो । य० वळी । जा० यावत । वा० उत्तर–खुलासा करो । य० वळी । ज० ज्यां । ज० ज्यां । गि० ग्रहे ।
त० त्यां । त० त्यां । नि० निष्फळ । प० प्रश्न । वा० उत्तर । क० करे । से० ते । ते० ते । अ० अर्थ । स० हे
सदालपुत्र । ए० एम । वु० कह्युं । नो० नहि । ख० निश्चे । प० समर्थ । अ० हुं । त० तारा । ध० धर्माचार्य । जा०
यावत । म० महावीर । स० साथे । वि० विवाद । क० करवा ॥ २१९ ॥

मूळपाठः—॥ " सद्दालपुत्ता, से जहानामए केइ पुरिसे [1] तरुणे जुगवं जाव [1] निउण-सिप्पोवगए [2] एगं महं अयं वा एलयं वा सूयरं [3] वा कुक्कुडं वा तित्तिरं [4] वा वट्टयं वा लावयं [5] वा कवोयं [6] वा कविञ्जलं [7] वा वायसं वा सेणयं [8] वा हत्थंसि वा पायंसि वा खुरंसि वा पुच्छंसि वा पिच्छंसि वा सिङ्गंसि वा विसाणंसि वा रोमंसि वा जहिं जहिं गिण्हइ, तहिं तहिं निच्चलं निप्फन्दं [9] धरेइ [10] । एवामेव [11] समणे भगवं महावीरे [12] ममं बहूहिं अट्ठेहि य [13] हेऊहि य जाव [x] वागरणेहि [14] य [15] जहिं जहिं [16] गिण्हइ, [17] तहिं तहिं निप्पट्ठपसिणवागरणं [18] करेइ । से तेणट्ठेणं, [19] सद्दालपुत्ता, एवं वुच्चइ नो खलु [20] पभू अहं तव धम्मायरिएणं [20] ...

१ F (एफ.) तरुणं * बाकीनो भाग टीकामां. २ D. E. (डी इ मां नथी.) Omit निउण ३. G. (जी) सूइर ४. D E. (डी. इ.) तित्तरं. ५ D. E. (डी. इ.) लावगं. ६. D. E. (डी. इ.) कवोतयं. ७ D E. (डी. इ) कविंजलयं. F. (एफ.) कविंजलिं. ८. D (डी) सेण्णयं, A B. F. G (ए बी एफ जी) सेणहं ९ D E (डी. इ.) निप्पंदं. १०. D. E (डी. इ) धारइ. ११ D. E (डी. इ.) एवमेव. १२. A. G. (ए जी) मम १३. D. E. (डी इ) अट्ठेहिं हेऊहिं वागरणेहिं (नथी.) Omit य. × १७४ पाठ जुओ १४. B F (बी. एफ.) जेहिं जेहिं. १५. A. (ए) गिण्हेंति. १६. G (जी.) तिहिं तिहिं १७ A. B. (ए. बी. मां नथी.) Omit पसिण, D. E (डी. इ.) ० वागरणे १८. A (ए) तेण ट्ठेणं. १९ F. (एफ.) पहू. २० D. G. (डी. जी.) धम्मारिएणं.

जाव* महावीरेणं [1]सद्धिं [2]विवादं [3]करेत्तए " ॥ २१९ ॥

भावार्थः—॥ २१९ ॥ ते वारे गोशाळो कहेनो हवो, हे सद्दालपुत्र ! तमने हुं एक द्रष्टांत कहुं ते सांभळ. जेम कोइ पुरुष तरुण (चडती वयनो), अवस्थावाळो, यौवनवंत, शिल्प कळावंत होय ते एक म्होटा बकरा तथा घेटाने, सुवरने, कुकडाने, तेतरने, वटेराने, लावाने, कपोत पक्षी, होला–पारेवाने, जळ कूकडीने, कागडाने, सींचाण ए सर्वने ते पुरुष पोताना हाथे करी तेना पग पकडे, खुरी पकडे, पींछे पकडे, पुंछडे पकडे, शींगडे पकडे, दांतीए करी पकडे, रुंवाडेथी पकडे, ज्यां ज्यां ते पुरुष ते जीवोने पकडे त्यां त्यां ते जीवो बळ रहित थइ निश्चलपणे रहे, बिलकूल हाली–चाली शके नहिं. ए द्रष्टांते करी श्रमण भगवंत श्री महावीर देव मुजने घणे अर्थे करी, हेतुए करी, प्रश्ने करी यावत खुलासा करी ज्यां ज्यां मने पुछे त्यां त्यां म्हाराथी उत्तर देवाय नहिं अने उत्तर नहिं आवडवाथी जूठो पाडी खिष्ट करे तेथी हे सदाल पुत्र ! हुं तारा धर्माचार्य, धर्म उपदेशना देनार, श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देवनी साथे विवाद करवाने शक्तिवान नथी ॥ २१९ ॥

अर्थः—॥ २२० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । स० सदालपुत्र । स० श्रावक । गो० गोसाळा । म० मखलीपुत्रने । ए० एम । व० कहे । ज० जो । णं० वळी । दे० हे देवाणुप्रिय । तु० तमे । म० मारा । ध० धर्माचार्य । जा० यावत । म० महावीर । सं० छतागुण । त० एहवा छता भवनागुण । त० आव्या पाछा जाय

* ७३ पाठ जुओ. १. G. (जी. सिद्धिं.) २. D. E. (डी. इ.) विग्गहं. ३. A. B. F. (ए बी. एफ.) करित्तए, G. (जी.) करत्तए.

नहिं । स० जेहवा कानेथी सांभळ्या होय तेहवा । भा० भाव । गु० गुणनुं कीर्तन गुणनुं बोलवुं । क० करे छे तो । त० तमने । णं० ते कारण भणी । अ० हुं । तु० तमने । पा० पाडीयारु । पी० बाजोठ । जा० यावत । सं० संथारो । उ० आमंत्रु छुं-आपुछुं । नो० नहि । ने० पण । णं० वली । ध० तमारा धर्म अर्थे । त्ति० वळी । वा० अथवा । न० तपने अर्थे । त्ति० वळी । वा० अथवा । तं० ते माटे । ग० जाओ । णं० वळी । तु० तमे । म० मारा । कुं० कुंभारना । आ० हाटने विषे । पा० पाडीयारा । पी० पीठ । फ० फलीयुं । जा० यावत । ओ० अंगिकार करीने । वि० विचरो ॥ २२० ॥

मूळपाठः—॥ २२० ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी[1] । " जम्हा[2] णं, देवाणुप्पिया, तुब्भे मम[3] धम्मायरियस्स[4] "जाव[5] महावीरस्स सन्तेहिं[6] तच्चेहिं[7] तहिएहिं सब्भूएहिं भावेहिं गुणकित्तणं[8] करेह[9], तम्हा णं अहं तुब्भे[10] पाडिहारिएणं[11] पीढ[11] जाव[8] संथारएणं[12] उवनिमन्तेमि[13] । नो चेव णं धम्मो त्ति[14]

१ A. (ए) नडागी. २. B. (बी) जहा नहा. ३. A D. E (ए डी.इ) मम. ४ D. E. (डी. जी) धम्मारियस्स ५ G (जी मा नथी) Omit * जुओ पाठ ३३. ६. B (बी. मा नथी.) Omit ७ D. E. (डी इ) गुणकित्तण. (गुणाकित्तणं). ८. D. F F (डी. इ. एफ) करेमि, D. (डी) करिमि, G. (जी.) करेह ९. G. (जी) तुब्भ. १० A. (ए) पडिहारि० ११ F. (एफ) पीडफलग. १. जुओ पाठ ५८ १२ F. G. (एफ. जी.) संथारेणं. १३ D. E. G. (डी इ. जी.) उवनिमतेइ १४ A. F G. (ए. एफ जी.) ति.

वा तवो त्ति वा । तं "गच्छह णं तुब्भे मम कुम्भारावणेसु पाडिहारियं पीढफलग[2] जाव[1] उगिण्हित्ताणं[3] विहरह" ॥ २२० ॥

भावार्थः—॥ २२० ॥ ते वारे सदालपुत्र श्रावक गोशाळा मंखलीपुत्रने एम कहेतो हवो, हे देवने वल्लभकारी ! जो तमे मारा धर्माचार्य, धर्म उपदेशना देनार श्रमण भगवंत महावीर देवना छता, सत्य यथार्थ–जेवा छे तेवा भावे करी, गुण किर्तन करो छो तेथी हुं तमने पाढीयारा, पाट, पाटला, मकान, संथारो निमंत्रुछं, आपुं छुं, पण तमने धर्म हेतुए तथा तमारा तपने माटे आपतो नथी ते माटे तमे जाओ मारा कुंभारना हाटने विषे पाढीहारा, पाट–पाटला, बाजोठ, पाटीया–यावत संथारो लइने विचरो ॥ २२० ॥

अर्थः—॥ २२१ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । गो० गोसाळो । मं० मखलिपुत्र । स० सदालपुत्र । स० श्रावकनो । ए० ए । अ० अर्थ । प० सांभळे । प० सांभळीने । कु० कुंभारना । आ० हाटने विषे । पा० पाढीयारा । पी० पीढ । जा० यावत । ओ० अंगिकार करीने । वि० विचरे ॥ २२१ ॥

मूळपाठः—॥ २२१ ॥ तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स[4]

---

१ F (एफ.) गच्छ. २ A. B. (ए. बी) ° फलयं, D. E. (डी इ.) ° फलपणं, F G. (एफ. जी.) फलग. ३. A. B E. F. G (ए. बी इ एफ जी) उगि. A. B D. E. F. G. (ए. बी. डी इ एफ. जी) ओगिण्हित्ता, उवसपज्जित्ताण विहरइ ४. G. (जी. मां नथी.) Omit, F. (एफ) ° वासगस्स.

एयमट्ठं पडिसुणेइ, २त्ता कुम्भारावणेसु पाडिहारियं पीढ[1] [2]जाव* उगिण्हित्ताणं[3] विहरइ ॥ २२१ ॥

भावार्थः—॥ २२१ ॥ ते वारे गोशाळो मंखलीपुत्र–सदालपुत्र श्रावकनी ए वात सांभळीने कुंभारना हाटे पाटीहारा, पाट, पाटला प्रमुख ग्रहीने विचरतो हवो ॥ २२१ ॥

अर्थः—॥ २२२ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । गो० गोसाळो । मं० मंखलीपुत्र । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावकने । जा० ज्यारे । नो० न । सं० समर्थ । ब० घणा । आ० कही देखाडया । य० वळी । प० विशेषे कही देखाडया । य० वळी । स० परुपी देखाडया । य० वळी । वि० विनवी देखाडया । य० वळी । नि० निर्ग्रंथ । पा० प्रवचन सिद्धांत थकी । चा० चळाववा । वा० वळी । खो० क्षोभाववा । वा० वळी । वि० मननां परिणाम (फेरवी शक्यो नहिं) । वा० वळी । ता० ते वारे । सं० थाक्यो । तं० विशेषे थाक्यो । प० बीजो जवाब न उपनो तेथी । पो० पोलास । पु० पुर । न० नगरथी । प० पाछो नीकळे । प० नीकळीने । ब० बाहर । ज० अनेरे देशे । वि० विहार । वि० करे ॥ २२२ ॥

मूळपाठः—॥ २२२ ॥ तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तं[4] समणोवासयं[5] जाहे[6]

---

१. F. (एफ. मा वधारो.) Add फलगं २. A B. D. E. (ए. बी. डी. इ. मा नथी.) * जुओ पाठ ५८ ३. A. B. D. E. F. G. (ए. बी डी. इ. एफ जी.) उगिण्हित्ताणं. ४. A. (ए) °पुत्तस्स. ५. G. (जी. मां नथी.) Omit. F. (एफ.) °वासगस्स. ६. A. B. (ए. बी.) जाधे.

नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि[1] य पन्नवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए[2] वा खोभित्तए[3] वा विपरिणामित्तए[4] वा, ताहे[5] सन्ते तन्ते परितन्ते[6] पोलासपुराओ नगराओ[7] पडिणिक्खमइ,[8] त्ता बहिया[9] जणवयविहारं विहरइ ॥ २२२ ॥

भावार्थः—॥ २२२ ॥ ते वारे ते गोशाळा मंखली पुत्र सद्दालपुत्र श्रावकने ते निर्ग्रंथ प्रवचन मार्गथी चळाववा माटे घणी युक्तिए करी, घणा हेतुए करी, घणी परुपणाए करी, घणा विज्ञाने करी कहेवा लाग्यो पण सद्दालपुत्र श्रावकने निर्ग्रंथ प्रवचन मार्गथी चळाववा, क्षोभाववा, विपरित परिणाम कराववा शक्तिवान न थयो ते वारे गोशाळो थाक्यो, विशेष थाक्यो ते वारे पोलासपुर नगरथी नीकळी गोशाळो बहार जन पदने विषे विहार करे. (अहिं गोशाळो सद्दालपुत्रने समजाववा शक्तिवान न थयो अने तेनो म्होटो श्रावक फरी जवाथी तेने अत्यन्त क्रोध उपज्यो तेथी सावथी नगरीमां आणंद स्थिवरने चार व्यवहारिया द्रव्यना अर्थिनुं दृष्टांत कह्यो महावीरदेवने

१ A. (ए) आघवणेहि A. B D. E. F (ए बी. डी. इ. एफ मां "आघवणाहि य" पछी "४" छे) have only the numeral ४ after आघवणाहि य २. D E (डी इ.) चालेत्तए, A. B. (ए. बी.) संचालत्तए, F. G. (एफ जी) संचालेत्तए. ३ B. D. E G. (बी डी. इ जी.) खोमेत्तए ४. A. B. F. (ए बी. एफ.) विप्परिणामित्तए ५ B (बी) ताधे. ६. B. (बी.) परिसन्ते ७. D. E. (डी. इ.) णयराओ. ८. A. B. F. (ए. बी. एफ) पडिनि° ९. G. Omit. (जी. मां नथी.) बहिया जण° विहरइ.

कहेवराव्युं. पछी समोसरणमां आवी सुमक्षेत्र मुनि उपर तेजुलेश्या मुकवाथी ते मुनि मरण पामी आठमे देवलोके गया. पछी सर्वानुंभूति मुनि उपर तेजुलेश्या मुकी. ते मुनि साधुसाध्वीने खमावी काळ करी बारमे देवलोके गया. पछी महावीर देव उपर तेजुलेश्या मुकी. ते लेश्या महावीर देवने त्रण आंटा मारी गोशाळाना शरीरमां प्रवेश करवाथी गोशाळो सातमे दिवसे पोताना दुष्ट कृत्यनो पश्चाताप करी मरण पामी बारमे देवलोके गयो. त्यांथी मरी शतद्वार नगरमां विमळ वाहन राजा थशे. पछी विमळनाथना शिष्य सुमंगळा मुनिना उपर त्रण वखत रथ चलाववाथी सुमंगळा मुनिए विमळवाहन उपर तेजुलेश्या मुकवाथी मराने सातमी नरके जशे त्यांथी नीकळी घणो संसार परिभ्रमण करी मोक्षमां जशे. आ अधिकार भगवती सूत्रना १५ मां शतकमां छे.) ॥ २२२ ॥

अर्थः—॥ २२३ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । त० ते । स० सद्दाल पुत्र । स० श्रावक । ब० घणा । सी० शीयळ व्रत । जा० यावत । भा० पाळता थका । चो० चौद । सं० वर्ष । व० पुरा थया । प० पन्नरमां । सं० वर्षने । अं० आंतरे । व० वर्तते थके । पु० मध्य । र० रात्रिने । का० समये । जा० यावत । पो० पोषधशाळाए । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरनी । अं० समीपे । ध० धर्म । प० पन्नति । उ० पडिवर्जिने । वि० विचरे ॥२२३॥

मूळपाठः—॥ २२३ ॥ तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स [1]समणोवासयस्स बहूहिं [2]सील जाव[*] भावेमाणस्स चोद्दस[3] संवच्छरा वइक्कन्ता[4] । पण्णरसमस्स[5] संवच्छरस्स अन्तरा वट्ट-

१. G (जी मा नथी.) Omit. २ F. G. (एफ. जी) सीलव्वय. * ६६ पाठ जुओ. ३. F. G. (एफ. जी.) चउद्दस. ४ A. B. (ए. बी.) वीतिक्कंता D. E. (डी. इ.) वितिक्कंता. ५. B. D. F. (बी. डी. एफ.) पन्नर०

माणस्स [1]पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव[2] पोसहसालाए[3] समणस्स भगवओ महावीरस्स[3] अन्तियं [4]धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ २२३ ॥

भावार्थः—॥ २२३ ॥ ते वारे ते सद्दालपुत्र श्रावक, घणां शीलव्रत यावत पोताना आत्माने भावतो थको चौद वर्ष गयां अने पंदरमुं वर्ष वचे वर्ततां मध्य रात्रिना समयने विषे पोषधशाळाए श्रमण भगवंत महावीर-नो परुपेलो धर्म अंगिकार करीने विचरतो हवो. ॥ २२३ ॥

अर्थः—॥ २२४ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । त० ते । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावकने । पु० मध्य । र० रात्रिने । का० समये । ए० एक । दे० देव । अ० समीपे । पासे । पा० प्रगट थयो ॥ २२४ ॥

मूळपाठः—॥ २२४ ॥ तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स[5] पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अन्तियं [6]पाउब्भविथा ॥ २२४ ॥

भावार्थः—॥ २२४ ॥ ते वारे ते सद्दालपुत्र श्रावकनी पासे मध्यरात्रिना समयने विषे एक देवता प्रकट थयो. ॥ २२४ ॥

अर्थः—॥ २२५ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देव । ए० एम । म० मोटी । नी० पीळा कमळ-

१. F. G. (एफ. जी.) ° कालसमयंसि. +६६ थी ६९ पाठ जुओ. २. A. (ए.) पोसहस्सालाए. ३. A. B. D. E. G. (ए. बी. डी. इ. जी. मां नथी.) Omit. ४. A. B. (ए. बी) धम्मं, D. E. (डी. इ.) धम्म. ५. A. B. D. E. G. (ए. बी. डी. इ. जी. मां नथी.) Omit. ६ D. E. (डी. इ.) पाउब्भवित्ता.

ना वर्ण जेहवी । जा० यावत । अ० खडग । ग० ग्रहीने । स० सदाल पुत्र । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । ज० जेम । चु० चुलणीपिता । त० तेमज । दे० देव । उ० उपसर्ग । क० करे । न० एटलो विशेष । ए० एकेक । पु० पुत्रना । न० नव । मं० मांसना । सो० कटका । क० करे । जा० यावत । क० लघु । पुत्रनी । घा० घात करे । घा० करीने । जा० यावत । आ० छांटे ॥ २२५ ॥

मूळपाठः—॥ २२५ ॥ तए णं से देवे एगं [1]महं नीलुप्पल[2] जाव[*] असिं गहाय सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी । जहा चुलणीपियस्स तहेव[3] देवो[4] उवसग्गं करेइ । नवरं एक्केके[5] पुत्ते नव मंस सोल्लए करेइ । जाव[+] कणीयसं घाएइ, [6]त्ता जाव[+] [7]आयञ्चइ ॥ २२५ ॥

भावार्थः—॥ २२५ ॥ ते वारे ते देवताए एक मोटुं निलोत्पल कमळ जेवुं खडग लइने यावत जेम चुलणी पीताने उपसर्ग कर्यो तेम सद्दालपुत्रने उपसर्ग करवा लाग्यो, पण तेमां एटलो ज फेर छे के, म्होटो, मध्यम अने

१. B (बी) महा. २. G (जी. मां छे.) read नीलुप्पल असि गहाय एवं वयासी जहा; A B D. E. F. (ए. बी. डी इ एफ) read Only नीलुप्पल एवं जहा. जुओ पाठ १२९ *९८ पाठ जुओ. ३ B (बी.) तधेव ४. A. B D. E. (ए. बी. डी. इ.) देवे; G. (जी. मां नथी.) Omit. ५ G (जी.) एकेकस्स पुत्तस्स. + १२९-१३४ पाठ जुओ. ६. F. (एफ मां नथी.) Omit. २त्ता. ७. A B. D. E. G (ए. बी. डी. इ. जी.) अइंचइ.

नानो ए त्रणे पुत्रना नव नव ककडा करी लोढानी कडाइमां तेलनी अंदर तळी तेनुं लोही मांस सद्दालपुत्रना
शरीरे सींचवा लाग्यो. ॥ २२५ ॥
अर्थः—॥ २२६ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावक । अ० अणवीहतो ।
जा० यावत । वि० विचरे ॥ २२६ ॥

मूळपाठः—॥२२६॥ तए णं से[1] सद्दालपुत्ते समणोवासए अभीए जाव[2] विहरइ॥२२६॥

भावार्थः—॥ २२६ ॥ ते वारे ते सद्दाल पुत्र निर्भयपणे विचरतो हवो. ॥ २२६ ॥

अर्थः—॥ २२७ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देव । स० सद्दाल पुत्र । स० श्रावकने । अ०
अणवीहतो । जा० यावत । पा० देखे त्यारे । च० चोथोवार । पि० वळी । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावकने ।
ए० एम । व० कहे । हं०हे । भो० अरे । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावक । अ० नहि इच्छवा जोग एटले मरणने ।
प० वांछे छे। मार्थे छे । जा० यावत । न० नहि । भ० भांगे तो । त० तारी । ते० ते । जा० जे । इ० ए । अ०
अग्निमित्रा । भा० भार्या । ध० धर्मनी । स० सखी । ध० धर्मवंत । वि० तत्वनो जाण । ध० धर्मना भेदनो ।
रा० राग तेने विषे । र० राती । स० संघाते । सु० सुख । दु० दुःखमां । स० विभागनी लेनारी । तं० तेने । ते०
तारा । सा० पोताना । गि० घरथी । नी० लइ आवीश । नी० लइ आवीने । त० तारो । अ० आगळ । घा०

१ G (जी. मां नथी.) Omit २ A. B D. E F. (ए. बी. डी. इ. एफ. मां नथी.) Omit.
* ९८ पाठ जुओ.

हणीश । घा० हणीने । न० नर । मं० मांसना । सो० कटका । क० करीश । क० करीने । आ० तेल । भ० भरीने । क० कडाहमांहि । अ० तळीश । अ० तळीने । त० तारू । गा० शरीर । म० मांसे करी । य० वळी । सो० लोहीए करी । य० वळी । आ० छांटीश । ज० जेम । णं० वळी । तु० तने । अ० आर्त्त । दु० रौद्र ध्याने । जा० यावत । व० जीवतव्यथी चुकीश एटले मरीश ॥ २२७ ॥

मूळपाठः—॥ २२७ ॥ तए[1] णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव[*] पासित्ता चउत्थं पि[2] सद्दालपुत्तं समणोवासयं[3] एवं वयासी । "हं भो सद्दालपुत्ता, समणोवासया[4], अपत्थियपत्थिया जाव[+] न [6]भञ्जसि, तओ ते[7] जा[8] इमा अग्गिमित्ता भारिया [9]धम्मसहाइया [10]°धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया[11], तं ते साओ[12] गिहाओ नीणेमि, २त्ता[13] तव अग्गओ घाएमि, २त्ता[14] नव मंससोल्लए करेमि, २त्ता[15]

१. A B, D. G. (ए. बी. डी. जी.) Only तं for तए णं. * जुओ ९६ पाठ. २. G. (जी. मा नथी) Omit पि ३ G. (जी मां नथी) Omit ४ A. B. D. E. F G. (ए बी डी. इ एफ. जी. मां नथी) Omit ५ G. (जी. मां वधारे) add ४. + जुओ ९५ पाठ ६. E. (इ.) भंजेसि. ७ D. E. (डी इ.) से ८ G. (जी. मा नथी.) Omit जा. ९. F (एफ.) °माहाइया. १०. D E. (डी. इ) धम्मचिंतिज्जा. ११ F. (एफ) सम्म० १२. F. (एफ) सयाओ. १३. F G. (एफ. जी. मां नथी) Omit २त्ता. १४ F. G. (एफ. जी. मा नथी.) Omit २त्ता. १५. D. E. F. G. (डी. इ. एफ. जी. मा नथी) Omit २त्ता.

आदाणभरियंसि[1] कडाहयंसि[2] अद्दहेमि[3], श्त्ता[4] तव गायं[5] मंसेण य सोणिएण य
[6]आयश्चामि, जहा णं तुमं [7]अट्टदुहट्ट जाव[x] ववरोविज्जसि " ॥ २२७ ॥

भावार्थः—॥ २२७ ॥ ते वारे ते देव सद्दाल पुत्र श्रावकने निर्भयपणे विचरतो देखीने चोथीवार सद्दालपुत्र श्रावकने एम कहेतो हवो. अरे सद्दाल पुत्र ? मरणना इच्छनारा ! यावत जो तुं आ तारां व्रत नहिं भांगे तो तारो जे अग्निमित्रा भार्या धर्मनो सखाइणी (साहाजनो देनारी), धर्मनी वेली, धर्ममां प्रीति राखनारी, धर्मने विषे अनुरक्त, सुख दुःख वखते सरखी सहाजनो देनारी छे तेने तारा घरथी लावी तारो आगळ तेनी घात करीश ! अने तेना नव ककडा करी लोढानो कडाइमां तेलनी अंदर तळीश ! तेना लोही मांसे करी तारा गात्रने सींचीश ! जेथी तुं आर्त्तध्यान, रौद्र ध्याने करी अकाळे जीवतरथी रहित थइश. ॥ २२७ ॥

अर्थः—॥ २२८ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावक । ते० ते । दे० देवे । ए० एम । वु० कह्ये । स० थके ! अ० अणवीहतो । जा० यावत । वि० विचरे ॥ २२८ ॥

---

१ A. B D. E F G (ए बी. डी. इ. एफ जी.) आयाग० २. A. B. (ए. बी.) कडाहियंसि. ३ B. (बी) अहहिमि, D. E. (डी. इ.) अद्दाहमि. ४. B. F. G (बी एफ. जी मां नथी.) Omit श्त्ता. ५. D. E (डी. इ.) गातं. ६. A. B. D. E. G. (ए. बी. डी. इ. जी.) आइचामि. ७. D. E. (डी. इ मां नथी.) Omit. A, B. (ए. बी. मां फक्त) only अट्ट; G. (जी.) अट्टज्झाणावगयं. × जुओ ९५ पाठ.

मूळपाठः—॥ २२८ ॥ तए[1] णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए[2] तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव[*] विहरइ ॥ २२८ ॥

भावार्थः—॥ २२८ ॥ ते वारे ते सद्दलपुत्रने देवताए एम कह्युं तो पण निर्भयपणे विचरवा लाग्यो. ॥२२८॥

अर्थः—॥ २२९ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । दे० देव । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावकने । दो० बीजीवार । पि० वळी । त० त्रीजीवार । पि० वळी । ए० एम । व० कह्युं । ह० हे । भो० अरे । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावक । तं० ते सद्दालपुत्रने । चे० वळी । भ० एमज कहे ॥ २२९ ॥

मूळपाठः—॥ २२९ ॥ [3]तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं[4] दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी । "हं भो सद्दालपुत्ता समणोवासया[5]," तं चेव भणइ[+] ॥ २२९ ॥

भावार्थः—॥२२९॥ ते वारे ते देव ते सद्दालपुत्र श्रावकने बे-त्रणवार यावत पूर्वोक्तनी पेरे कहेतो हवो॥२२९॥

अर्थः— ॥ २३० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । त० ते । स० सद्दालपुत्र । स० श्रावक । ते० ते । दे० देवने ।

---

१ A. B. (ए. बी मां मात्र) Only तं for तए णं २ A B. D. E F. G. (ए बी. डी इ. एफ. जी. मा नथी.) Omit. * ९६ पाठ जुओ. ३. B D. G (बी डी. जी मां फक्त) Only त for तए णं. ४ A B. D E. G (ए. बी डी इ. जी मा नथी) Omit ५ A B D F G. (ए बी डी. एफ जी. मा नथी.) Omit + २२७ पाठ जुओ

अ० एहवो। दो० त्रीजीवार। पि० वळी। त० त्रीजीवार। पि० वळी। ए० एम। वु० बोलतो। स० थको। अ० एहवो। अ० अध्यवसाय ४। स० उपनो। ए० एम। ज० जेम। चु० चुलणीपिता। त० तेम। चि० चिंतवे। जे० जेणे। म० मारो। जे० वडो। पु० पुत्र। जे० जेणे। म० मारो। म० वचलो। पु० पुत्र। जे० जेणे। म० मारो। क० कनिष्ट। पु० पुत्र। जा० यावत। आ० छांटे। जा० जे। वि० य०। णं० वळी। म० मारी। इ० ए। अ० अग्नि मित्रा। भा० भार्या। स० संघाते। सु० सुख। दु० दुःख। स० सहेनारी। तं० तेने। पि० य. पण। इ० इच्छे। सा० मारा। गि० घरथी। नी० आणी। म० मारी। अ० आगळ। घा० घात करवा। तं० ते माटे। से० श्रेय। ख० निश्चे। म० मने। ए० ए। पु० पुरुषने। गि० झालवो। त्ति० एहवुं। क० विमासीने। उ० उठे। ज० जेम। चु० चुलणीपिता। त० तेमज। स० सर्व। भा० जाणवुं। न० एटलुं विशेष। अ० अग्निमित्रा। भा० भार्या। को० कोलाहल शब्द। सु० सांभळीने। भ० क०। से० वाकी। ज० जेम। चु० चुलणी पितानो पेरे। व० कहेवुं। न० एटलो विशेष। अ० अरुणभुए। वि० विमाने। उ० उपना। जा० यावत। म० महाविदेहे। वा० वासे। अवतरी। सि० सिजशे। मुक्ति जाशे ॥ २३० ॥

मूळपाठः—॥ २३० ॥ [1]तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स[2] तेणं देवेणं दोच्चं

---

१. A. B. D. F. ('ए.' बी. डी. एफ. मां नथी.) Omit तए णं. G (जी.) मां नथी. Omit तए णं तस्स सद्दाल° मम° २. A B. D, E. F. G. (ए. बी. डी. ई एफ. जी. मां नथी.) Omit.

पि [1]तच्चं पि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयं[2] अज्झत्थिए ४[3] समुपन्ने[4]। एवं जहा+ चुलणीपिया [5]तहेव चिन्तेइ। "जेणं ममं [6]जेट्ठं पुत्तं, जेणं ममं मज्झिमयं[7] पुत्तं, जेणं ममं कणीयसं पुत्तं जाव+ [8]आयञ्चइ, जा वि य णं [9]ममं इमा अग्गिमित्ता भारिया समसुहदुक्खसहाइया[10], तं पि [11]य इच्छइ [12]साओ गिहाओ नीणेत्ता [13]ममं अग्गओ घाएत्तए[14]। तं सेयं[15] खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए[16]" त्ति कट्टु उट्ठाइए [17]जहा× चुलणीपिया

१. A. B. (ए. बी मां नथी.) तच्चं पि. २ F. (एफ) इमेयारुवे, G. (जी. मां नथी.) Omit. + ७३ पाठ जुओ ३. A. B. D. E (ए. बी. डी इ मां नथी.) Omit ४. A B D. F. G. H. (ए बी डी एफ. जी. एच. मां नथी.) Omit. १३८ पाठ जुओ. ५ B. H (बी. एच) तथेव, D. (डी.) तचेव. ६. B D. E F H. (बी. डी. इ. एफ एच) जेट्ठपुत्तं. ७ G. (जी मां फक्त) reads only मज्झिमकणीयस पुत्त. ८. A. B. D. E. G. H. (ए बी. डी इ एच.) आइचइ. ९. A. D. E. H. (ए डी. इ एच.) मम. १०. B. D. E. (बी. डी. इ.) have मम. for सम ("सम" ने बदले "मम.") E. (इ.) °दुह°. ११. D. E. (डी इ मां. नथी) Omit य. १२. F. (एफ.) सयाओ. १३. D. E. G. (डी. इ जी.) मम. १४. A. B. D E. H (ए बी डी. इ. एच.) घाइत्तए. १५. F. (एफ.) सियं. १६. D E. F. G. H. (डी. इ. एफ. जी एच.) गिण्हित्तए १७. G. (जी) जाव × १३८ थी १४३ जुओ.

तहेव सव्वं जाणियव्वं[१] । नवरं अग्गिमित्ता [२]भारिया कोलाहलं सुणित्ता[३] भणइ । सेसं जहा चुलणीपिया वत्तव्वया[४] । नवरं अरुणभूए[६] विमाणे उववन्ने[७] जाव[८] महाविदेहे [९]वासे सिज्झिहिइ ५+[१] ॥ २३० ॥

भावार्थः—॥ २३० ॥ ते वारे ते देवे बे त्रणवार सद्दालपुत्रने एम कहेवाथी आत्माने विषे चुलणीपीतानी पेरे एवो संकल्प उपन्यो अने तेनी पेरेज चिंतवे के जेणे मारा मोटा, मध्यम अने नाना पुत्रने मारी यावत मने सींच्यो अने हजु वळी मारी अग्निमित्रा भार्या जे सुख दुःख वखते सरखी साहाय्यनी देनारी छे तेने पण मारा घरथी लावी, मारी पासे घात करवा इच्छे छे ? तो श्रेय निश्चे हुं ए पुरुषने पकडुं एम करीने उठयो ते वारे जेम चुलणी

G. (जी. मां नथी.) Omit २. A. B. D. E. G. (ए. बी डी. इ. जी. मां नथी.) Omit. ३.
१ G. (जी. मां नथी.) Omit २. A. B. D. E. G. (ए. बी डी. इ. जी. मां नथी.) Omit. ३. A. B. G. H. (ए बी जी. एच.) सुणेत्ता ४ D E F. G H. (डी. इ. एफ जी. एच. मां नथी.) Omit. ५. D. E. G. (डी इ. जी.) add सव्वा H. (एच. मां) also pref. चेव. ६. A. (ए.) अरुण-चूति; F. (एफ.) अरुणच्चुए; B. (बी.) अरुणभे, H. (एच.) अरुणब्भए, E (अरुणव्वए); D. (डी) अरुणच्चए. ७. A. B. D. E. H. (ए. बी डी. इ. एच.) उववाओ. F. (एफ.) उववाए, G (जी. मां नथी.) Omit. ∽ उववाइ ११६ भगवती ३०३, ३०४ ८. A. B. G H. (ए. बी. जी. एच. मां नथी.) Omit. +८९–९०, १४४ जुओ. ९. F. (एफ. मां पुरु) in full as in foot note ×l on page 83 (८३ मे पाने ११ मी फुटनोट जुओ), H. (एच. मां नथी) Omit.

पिताने थयुं तेम समजवुं पण तेमां एटलोज फेर छे के अग्निमित्रा भार्या कोलाहल सांभळीने आवी, वळी मरणने अंते अणसण करी अरुणभूति विमानने विषे उपन्यो अने त्यांथी मरी महाविदेह क्षेत्रने विषे सीझशे यावत सर्व दुःखनो अंत करी मोक्षमां जशे ॥ २३० ॥

अर्थ—॥ नि० समाप्त. ॥ स० सातमा । अं० अंग । उ० उपासक दशांगनुं । स० सातमुं । अ० अध्ययन । स० समाप्त ॥ ७ ॥ ७ ॥

मूळपाठः—॥ निक्खेवो॥सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥७॥७॥

भावार्थः—॥ समाप्त ॥ इति श्री सातमां अंग उपासक दशानुं सातमुं अध्ययन पुरुं थयुं. ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ अट्ठमं अज्झयणं. ॥

आठमुं अध्ययन.

अर्थः—॥ अ० आठमानी । उ० शरुआत ॥

मूळपाठः— ॥ अट्ठमस्स उक्खेवो[1] ॥

भावार्थः—॥ आठमानी शरुआत. ॥

[1] G. (जी.) उक्खेवओ

अर्थः—॥ २३१ ॥ ए० एम । ख० निश्चे । जं० हे जंबु । ते० ते । का० काळे । ते० ते । स० समये । रा० रा
जग्रही । न० नगरे । गु० गुणसिल । चे० उद्यान । से० श्रेणीक । रा० राजा ॥ २३१ ॥

मूळपाठः— ॥ २३१ ॥ एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे [1]नयरे।
गुणसिले[2] चेइए । सेणिए[3] राया ॥ २३१ ॥

भावार्थः—॥ २३१ ॥ एम निश्चे हे जंबू ! ते काळ ते समयने विषे राजग्रह नामे नगर हतुं. गुण सीला नामे
वन हतुं. श्रेणीक नामे राजा हतो. ॥ २३१ ॥

अर्थः—॥ २३२ ॥ त० त्यां । णं० वळी । रा० राजग्रही नगरीमां । म० महासतक । ना० नामे । गा० गा-
थापति । प० वसे छे । अ० ऋद्धिवंत । ज० जेम । आ० आणन्द । न० एटलो विशेष । अ० आठ । हि० सोनानी ।
को० क्रोड । स० सहित । कं० कांसा । (कांसाना वासणो भरी) । नि० भूमि मांहे । प० दाटी छे । अ० आठ ।
हि० सोनानी । को० क्रोड । स० सहित । कं० कांसा । कांसा । सहित । व० व्याजे । प० मुकी छे । अ० आठ ।
हि० सोनानी । को० क्रोड । स० सहित । कं० कांसा । कांसा सहित । प० व्यापारे । प० प्रवर्ते (तथा घर व-
खरो) । अ० आठ । व० वर्ग गोकुळ । द० दस । गो० गाय । सा० हजार । व० वर्ग । दस हजार गायनुं एक
गोकुळ एवा आठ गोकुळ ॥ २३२ ॥

१. A. B. (ए. बी.) नगरे. २. B. (बी) गुणसिले F. (एफ) ० सिलए. ३ D. E. F (डी इ. एफ.) सेणीए.

मूळपाठः—॥ २३२ ॥ तत्थ णं रायगिहे [1]महासयए नामं [2]गाहावई परिवसइ अड्ढे [3]जहा[4] [4]आणन्दो । नवरं अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ[5], निहाणपउत्ताओ अट्ठ[6] हिरण्ण-कोडीओ[7] सकंसाओ[8] वड्ढिपउत्ताओ[9] अट्ठ हिरण्णकोडीओ [10]सकंसाओ पवित्थरपउत्ताओ[11] अट्ठ वया[12] दसगोसाहस्सिएणं [13]वएणं ॥ २३२ ॥

भावार्थः—॥ २३२ ॥ ते राजग्रह नगरने विषे महाशतक नामे गाथापति वसतो हतो. ते ऋद्धिवंत यावत आणंदना जेवो हतो, पण तेमां एटलो फेर छे के, तेने आठ क्रोडी सोनैया कांसा सहित धरती मांहि दाटेला हता,

१. M. S. S महासयए. or (अथवा) महासए २ E F. (इ एफ.)गाहावइ * ३, ४ पाठ जुओ. ३. G. (जी मां छे.) reads जाव परिभूए for जहा आणन्दो. ४ A. B. D. E. F. (ए. बी. डी. इ एफ.) आणंदे. ५. D. E. G. (डी. इ. जी. मां नथी) Omit. ६. A. B. D (ए बी. डी. मां नथी) Omit. ७. A. B. D. E. (ए बी. डी. इ. मां नथी) Omit. G. (जी मां फक्त) Only हिरण्ण ८. A. B. D. E G (ए बी डी इ. जी मां नथी.) Omit ९. E. G. (इ. जी) वुड्ढि०, D E. (डी. इ. मां नथी.) Omit पउत्ताओ. १० G (जी मां नथी) Omit सकसाओ throughout, this word is occasionally spelt (आ शब्दनो उच्चार नीचे मुजब छे.) संकंसाओ, and संकासाओ. ११. E. (इ) ०पत्ताओ १२. D. E. G (डी. इ जी) व्वया. १३. A. B. (ए बी.) वदेण.

आठ क्रोडी सोनैया व्यापारमां वृद्धिए हता, आठ क्रोडी सोनैयानो घर वखरो हतो, दश हजार गाए एक गोकुळ थाय एवा आठ गोकुळ हता. ॥ २३२ ॥

अर्थः—॥ २३३ ॥ त० ते । णं० वळी । म० महासतकने । रे० रेवती । पा० प्रमुख । ते० तेर । भा० स्त्रो । हो० हती । अ० पांच । इन्द्रिए संपूर्ण । जा० यावत । सु० सुरुपवंत ॥ २३३ ॥

मूळपाठः—॥ २३३ ॥ तस्स णं[1] महासयगस्स रेवई पामोक्खाउ[2] तेरस भारियाउ होत्था, अहीण जाव[*] सुरूवाउ[3] ॥ २३३ ॥

भावार्थः—॥ २३३ ॥ ते महाशतकने पांचे इन्द्रिआए करी पूर्ण यावत स्वरुपवंत एवी रेवती प्रमुख तेर स्त्रीओ हती. ॥ २३३ ॥

अर्थः—॥ २३४ ॥ त० ते । णं० वळी । म० महासतकनी । रे० रेवती । भा० भार्या । को० पोताना । घ० घरथी । आण्या । अ० आठ । हि० सोनानी । को० क्रोडी । अ० आठ । व० वर्ग । द० दस । गो० गाय । सा० हजारनो । व० वर्ग । हो० हतो । अ० बाकीनी । दु० बार । भा० स्त्रीओ । को० पोताना । घ० घरथी आणो । ए० एक ॥ हि० सुवर्ण । को० क्रोडी । ए० एकेक । य० वळी । व० वर्ग । द० दस । गो० गाय । सा० सहस्त्र हजार गायनो । व० वर्ग । गोकुल एक । हो० हतो ॥ २३४ ॥

---

१. B. F. G. (बी एफ. जी. मां नथी) Omit. २. A. D. E. F. (ए डी. इ. एफ.) रेवइ०.
* जुओ उववाइ पाठ १२. ३. A. B. G. (ए. बी. जी.) सरूयाओ.

भावार्थः—॥ २३५ ॥ ते काळ ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव त्यां पधार्या. प्रखदा वांदवा नीकळी. आणंदनी पेरे महाशतक गयो अने तेमज श्रावकनो धर्म अंगिकार करे. तेमां एटलो फेर के आठ आठ क्रोडी सोनेया कांसाना वासणथी भरेल एम चोवीस क्रोडी झाझेरा सोनैया मोकळा राखे, आठ गोकुळ मोकळा राखे, अने रेवती प्रमुख तेर भार्या मोकळी ते सिवाय चोथुं मैथुन विधिनुं पच्चखाण करे, बाकी तमाम व्रत आणंदनी पेरे धारे (तेमज तेर स्त्रीओना धननो वहिवट पोते करे. ते धनना व्याज पेटे दीन दीन प्रत्ये वे द्रोण प्रमाणे (कांसानां वासणमां) सोनैया भरीने स्त्रीओने आपवा म्हारे कल्पे एवो अभिग्रह ग्रहण करे.) ए सिवाय एवो अभिग्रह लीए के, मारे दररोज वे कांसाना पात्र सोनैयाना भराय तेटलो वेपार करवो कल्पे. ॥ २३५ ॥

अर्थः—॥ २३६ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । म० महासतक । स० श्रावक । जा० थयो । अ० जाण्यो छे । जी० जीव । अ० अजीव । जा० यावत । वि० विचरे ॥ २३६ ॥

मूळपाठः—॥ ॥ २३६ ॥ तए णं से महासयए[1] समणोवासए जाए अभिगय जीवाजीवे[2] जाव* विहरइ ॥ २३६ ॥

भावार्थः—॥ २३६ ॥ ते वारे ते महाशतक श्रावक थयो अने जीवाजीव प्रमुख नवे तत्वने जाणतो यावत विचरतो हवो. ॥ २३६ ॥

१. D. E. (डी इ) °सयगे २. A B. D, E F (ए. बी. डी इ. एफ. मा नथी.) Omit जीवाजीवे * ६४ पाठ जुओ.

अर्थः—॥ २३७ ॥ त० ते वार। णं० पछी। स० श्रमण। भ० भगवंत। म० महावीर। व० वहार। ज०
बीजा देशमां। वि० विहार करी। वि० विचरे ॥ २३७ ॥

मूळपाठः—॥ २३७ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे बहिया जणवयविहारं[1]
विहरइ ॥ २३७ ॥

भावार्थः—॥ २३७ ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव बाहर जनपद देश मांहि विहार करे. ॥२३७॥

अर्थः—॥ २३८ ॥ त० ते वारे। णं० वळी। तो० ते। रे० रेवती। गा० गाथापतोणी। अ० एकदा। क० प्रस्तावे। पु० मध्य। र० रात्रिना। का० काळे। स० समये। कु० कुटुंब। जा० यावत। इ० एहवा। रु० प्रकार-नो। अ० अध्यवसाय उपनो ४। ए० एम। ख० निश्चे। अ० हुं। इ० ए। दु० वार। स० सोकों। वि० व्याघात (अंतराइए)। नो० न। सं० भोगवी शकुं। म० महासतक। स० श्रावक। स० संघाते। उ० विस्तीर्ण उदार मनोहर। मा० मनुष्य संबंधी। भो० भोगववा योग्य। भो० भोग। भु० भोगवती थकी। वि० विचरी (शकुं नहिं)। तं० ते। से० श्रेय। ख० निश्चे। म० मारे। ए० ए। दु० वारे। वि० वळी। स० सोकोने। अ० अग्निने। प्प० प्रयोगे। वा० अथवा। स० हथीयारने। प्प० प्रयोगे। वा० अथवा। वि० विष। प्प० प्र-योगे। वा० वळी। जी० जीवतर थकी। व० अलगी करुं। ए० एहनो। ए० एकेक। हि० हिरण। को० को-डी। ए० एकेक। व० गोकुळ। स० हुं पोते। उ० लइने। म० महासतक। स० श्रावक। स० साथे। उ० उ-

1 A. B. E. F. (ए त्री. इ एफ मां नथी) Omit विहारं.

दार मनोहर । जा० यावत । वि० विचरुं। ए० एम । सं० विचार । सं० विचारीने। ता० ते । दु० वार। स० सो-क्योने । अ० जे वेळा (जे अवसरे) । य० वळी । छि० मनुष्य थोडा होय ते संध्या समय । य० वळी । वि० ज्यारे । बीजो कोइ पासे न होय । य० वळी । प० एहवुं जोती थकी । वि० विचरं ॥ २३८ ॥

मूळपाठः—॥ २३० ॥ तए णं तीसे रेवईए गाहावइणीए [1]अन्नया कयाइ पुव्वरत्ता-वरत्तकालसमयंसि[2] कुडुम्ब[3] जाव[4] इमेयारूवे अज्झत्थिए ४[5]। " एवं खलु [6]अहं इमासिं दुवालसएहं [7]सवत्तीणं [8]विघाएणं नो संचाएमि[9] महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं[10] उरालाइं [11]माणुस्सयाइं [12]भोगभोगाइं [13]भुञ्जमाणी [14]विहरित्तए । तं सेयं खलु ममं

---

१. D. (डी) अन्नदा; कदाचि. २. D. E (डी इ.) ° काले. ३. B E (बी इ) कुडुंब; D F. (डी एफ.) कुडय, G (जी) कुटंब. ४ Supply (उमेरो) जागरियं जागरमाणीए from the Bhagavati Saya 3, uddosha 1 (p. 227 Calc. print); also Bhag. p. 292. (भगवती सतक ३ उद्देसो १ पानु २२७ कलकत्तावाळी तथा पानु २९२ मांथी) + ६६ पाठ जुओ ५. B. (बी. मां नथी) Omit. A has both 4 & ह (ए. मा ४ अने ह छे) ५ A. F. (ए. एफ.) इदं. ६. A. B F. (ए बी. एफ) सवतीण. G. (जी.) सवित्तीणं. ७ F. (एफ.) विघाइणं, G. (जी.) विग्घाएणं ८ D. (डी) सयादेमि. ९ G. (जी मा नथी.) Omit. १० G. (जी) सिद्धिं ११. E. (इ.) माणुस्सियाइं. १२. E. F. G. (इ. एफ जी) only (फक्त) भोगाइ. १३. D. E. (डी. इ.) भुजमाणा. १४. A. E. (ए इ.) विहरत्तए. D. (डी.) विहरेत्तए.

एयाउ डुवालस [1]त्ति [2]सवत्तियाउ अग्गिप्पओगेणं[3] वा सत्थप्पओगेणं वा विसप्पओगेणं वा जीवियाउ ववरोवित्ता[4], एयासिं[5] एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव उवसम्पज्जित्ताणं महासयएणं समणोवासएणं[6] सद्धिं उरालाइं[7] जाव[*] विहरित्तए[8] "। एवं सम्पेहेइ, २ त्ता [9]तासिं डुवालसण्हं सवत्तीणं[10] अन्तराणि[11] य छिद्दाणि[12] य विरहाणि[13] य पडिजागरमाणी[14] विहरइ ॥ २३७ ॥

भावार्थः—॥ २३८ ॥ ते वारे ते रेवती गाथापतिणी एकदा प्रस्तावे मध्य रात्रिना समयने विषे कुटुंब जाग्रीकाए जागतां यावत एवो अध्यवसाय (अभिप्राय) उपन्यो के निश्चे मारी वार शोकनी व्याघाते (आडजोले) करी महाशतक श्रावकनी साथे (हुं मारी मरजी मुजब) भला मनुष्य संबंधी भोग भोगवी शकती नथी, तो श्रेय छे निश्चे म्हारी ए वार शोक्यने अग्नि प्रयोगे करी अथवा शस्त्रने प्रयोगे करी अथवा विषने प्रयोगे करी जी-

१ D E. (डी. इ. मां नथी.) Omit त्ति. २ A B. (ए. बी.) सवत्तीओ, G. (जी) सवित्तीओ ३. D. E. (डी. इ.) °प्पओगेणं. ४ A. E (ए. इ) ववरोविया. ५ F. adds (एफ मां वधारे) ण ६. G. (जी मां नथी) Omit. ७ G. (जी. मां वधारे) add भोगभोगाइं. *उपलो पाठ जुओ. ८ A E. (ए. इ.) विहरत्तए, D (डी.) विहरेत्तए. ९ G (जी) एतासिं. १०. G. (जी.) सवित्तीणं. ११. B (बी.) अणंतराणि. १२. G (जी. मां नथी.) Omit. १३ A (ए.) विहरीणि. D. E. (डी इ) विवराणि. १४. A. B. D. E. F. (ए. बी. डी. इ. एफ) add २ after पडि° (" पडि° " पछी " २" छे.)

वतरयी रहित करी तेना एकेक कोडी सोनैया अने एकेक गोकुळ हुं पोतेज अंगिकार करीने महासतक श्रावकनी साथे भला मनुष्यना भोग भोगवती विचरुं. एम विचारीने ते वार शोक्यने मारवानो अवसर, आंतरुं, छीद्र (परिवार रहित होय ते वखते) विवर (एकांतमां होय ते वखत) जोती थकी विचरती हवी. ॥ २३८ ॥

अर्थः—॥ २३९ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । सा० ते । रे० रेवती । गा० गाथापतिणी । अ० एकदा । क० प्रस्तावे । ता० ते । दु० बारे । स० सोकोने । अ० अवसर । जा० जाणीने । छ० छ । स० सोक्योने । स० शस्त्र । प्प० प्रयोगे । उ० मारे । उ० मारीने । छ० छ । स० सोक्योने । वि० विश । प्प० प्रयोगे । उ० मारे । उ० मारीने । ता० तेहने । एम । दु० बारे । स० सोक्योने । को० कुल (बापना) । घ० घरनो । ए० एकेक । हि० सोनानी । को० कोडी । ए० एकेक । व० गोकुळ । स० पोते । प० लीए । प० लइने । म० महासतक । म० श्रावक । स० साथे । उ० मनोहर । भो० भोग । भु० भोगवती । वि० विचरे ॥ २३९ ॥

मूळपाठः—॥ २३९ ॥ तए णं [1]सा रेवई[2] गाहावइणी अन्नया कयाइ[3] तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अन्तरं जाणित्ता छ सवत्तीओ[4] सत्थप्पओगेणं[5] उद्दवेइ[6], दत्ता छ [7]सवत्तीओ

१. B. (बी. मां नथी.) Omit. २. B. E F. (बी. इ. एफ.) रेवइ. ३ D. (डी.) कयावि. ४. A. D E. G. (ए. डी. इ. जी.) छस्सवत्तीओ ५ D. E. G. (डी. इ. जी) °प्पओएणं. ६. E. (इ.) उद्दावइ; F. (एफ.) उद्दवंति. ७. A. D. E. F. G. (ए. डी. इ. एफ जी.) छस्सवत्तीओ

[1]विसप्पओगेणं उद्दवेइ, २त्ता [2]तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं कोलघरियं[3] एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जइ, २त्ता महासयएणं समणोवासएणं [4]सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणी विहरइ ॥ २३९ ॥

भावार्थः—॥ २३९ ॥ ते वारे ते रेवती गाथापतीए एकदा प्रस्तावे ते बार शोक्यने मारवानो अवसर (कोइ काम प्रसंग आणी तेवा वखतमां) जाणीने छ शोक्यने शस्त्रथी मारी अने छ शोक्यने विष प्रयोगथी मारी ते बार शोक्यना पियरना एकेक क्रोडी सोनैया अने एकेक गोकुळ पोतेज लइने महाशतक साथे भला मनुष्य संबंधी भोग भोगवतो विचरती हवी. ॥ २३९. ॥

अर्थः—॥ २४० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । सा० ते । रे० रेवती । गा० गाथापतिणी । मं० मांस खावाने । लो० लोलपी । मं० मांस खावाने । मु० मुर्च्छावंत । जा० यावत । अ० आसक्त । ब० घणा । वि० प्रकारना । मं० मांसे नीपजावी । य० वळी । सो० सोला करी । य० वळी । त० तळीने । य० वळी । भ० सेकीने । य० वळी । सु० मदीरा । च० वळी । म० मधु । च० वळी । मे० ताडी । च० वळी । म० गोळनो मधु । च० वळी । सी० द्राक्षनो मधु । च० वळी । प० मन प्रसन्न थाय । च० वळी । आ० आस्वादती थकी ४ । वि० विचरे ॥ २४० ॥

---

१ A. B. F. (प. बी एफ) °प्पओपणं. २ A. B G. (प. बी. जी.)-पत्तासिं ३. A. (प) कुल्ल°; A. G. (प. जी.) °घरयं°. ४. G. (जी.) मिद्धिं.

मूळपाठः—॥ २४२ ॥ तए णं सा रेवई[1] गाहावइणी मंसलोलुया मंसेसु[2] मुछिया ४* कोलघरिए[3] पुरिसे सद्दावेइ, २त्ता एवं वयासी । "तुब्भे, देवाणुप्पिया, [4]मम कोलघरिएहिंतो [5]वएहिंतो [6]कल्लाकल्लिं दुवे दुवे गोणपोयए [7]उद्दवेह, २त्ता ममं उवणेह[8]" ॥२४३॥

भावार्थः—॥ २४२ ॥ ते वारे रेवती मांसने विषे लोलपी थकी मांसने विषे अत्यंत मुछित थकी पोताना पीयरना पुरुषने तेडावीने एम कहेती हवी, हे देवने वल्लभकारी ! मारा पीयरना गोकुल मांहिथी हमेश प्रभाते प्रभाते गायना (तरतना जन्मेला) बबे वाछडाने मारीने (कोइ न जाणे तेवी रीते) मने आपी जजो ॥ २४२ ॥

अर्थः—॥ २४३ ॥ त० तेवारे । णं० वली । ते० ते । को० वापना । व० वरना । पु० पुरुषो । रे० रेवती । गा० गाथापतिणीनुं । त० वचन । तहेत प्रमाण करे । ए० ए । अ० अर्थ । वि० विनये करी । प० सांभळे । प० सांभळीने । रे० रेवती । गा० गाथापतिणीने । को० वापना । घ० घरथी । व० गोकुळमांथी । क० दररोज । दु० बे । दु० बे । गो० गायना । पो० वाछडानो । व० वध करे । व० वध करीने । रे० रेवती । गा० गाथापतिणीने । उ० आपे ॥ २४३ ॥

१. E. F (इ एफ.) रेवइ; A. B D. E F G. (ए बी डी. इ एफ. जी. मां नथी.) Omit. गाहा॰. २. G (जी. मा फक्त) Only मंसे ३ D. E. (डी. इ) कोलघरए. ४ F. H (एफ एच.) ममं ५. D. E (डी इ. मां नथी.) Omit. ६. D. E. (डी इ) कल्लाकल्लं॰. ७. D. G. (डी. जी) उवद्दवेह E उयद्दावेह. ८. B. (बी.) उवनेह, G (जी) उवनेहि.

मूळपाठः—॥ २४३ ॥ तए णं ते कोलघरिया पुरिसा रेवईए गाहावइणीए[1] "तह" त्ति एयमट्ठं विणएणं [2]पडिसुणन्ति, २त्ता रेवईए गाहावइणीए कोलघरिएहिंतो [3]वएहिंतो कल्लाकल्लिं[4] दुवे दुवे गोणपोयए [5]वहेन्ति, २त्ता रेवईए गाहावइणीए [6]उवणेन्ति॥ २४३॥

भावार्थः—॥ २४३ ॥ तेवारे ते पीयरना पुरुषो रेवति गाथापतिणीनुं ए वचन सांभळीने त्हेत्त करे अने ए अर्थ (वात) विनये करी सांभळीने रेवती गाथापतणीना पियरना गोकुळ मांहिथी हमेश प्रभाते प्रभाते गायना बबे वाछडा मारीने लावी रेवती गाथापतिणीने आपे ॥ २४३ ॥

अर्थः—॥ २४४ ॥ त० तेवारे । णं० वळी । सा० ते । रे० रेवती । गा० गाथापतिणी । ते० ते । गो० गायना । मं० मांसना । सो० सोला (कटका) करी । य० वळी ४ । सु० सुरादिके करी । च० वळा । ६ । आ० आस्वादती ४ । वि० विचरे ॥ २४४ ॥

मूळपाठः—॥ २४४ ॥ तए णं सा रेवई [7]गाहावइणी तेहिं गोणमंसेहिं[8] सोल्लेहि[9] य

१ E. (इ.) गाहावइए. (गाहावईए) २. D E (डी इ) पडिसुणेइ. ३ B D. E. G H. (बी. डी. इ. जी. एच मां नथी) Omit ४. D. E. (डी. इ) कल्लेकल्ले. ५. D E. (डी. इ.) उवहंति. F. (एफ) वहिंति. ६. E. (इ.) उवणेइ ७ A B. D E. F. G H (ए बी. डी. इ. एफ. जी. एच. मां नथी.) Omit. ८. A B. F. G H. (ए. बी एफ जी. एच.) गोमंसेहि. ९. G (जी.) सोलएहिं.

४[1] सुरं च [2]६ आसाएमाणी[3] ४[4] विहरइ ॥ २४४ ॥

[1]भावार्थः—॥ २४४ ॥ तेवारे ते रेवती ते गायना मांसने तळीने छ प्रकारना मधुपान साथे थोडो स्वाद लेती, घणो स्वाद लेती पोताना एक खानगी माणसनी साथे भोगवती पोताना घणा माणसोनी साथे भोगवती विचरती हवी ॥ २४४ ॥

अर्थः—॥ २४५ ॥ त० तेवारे । णं० वळी । त० ते । म० महासतक । स० श्रावक । ब० घणा । सी० शीयळवंत । जा० यावत । भा० भावतो थको । चो० चौद । सं० वरस । व० अतिक्रम्यां । ए० एम । त० तेमज पूर्वे कह्युं तेम । जे० ज्येष्ट । पु० पुत्रने । ठ० कुटुंबनो भार थापीने । जा० यावत । पो० पोषधशाळाए । ध० धर्म । प० वीतरागे प्रणीत (परुपेल) धर्म । उ० अंगिकार करीने । वि० विचरे ॥ २४५ ॥

मूळपाठः—॥ २४५ ॥ तए णं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स[4] बहूहिं सील[5] जाव[*] भावेमाणस्स [6]चोद्दस [7]संवच्छरा [8]वइक्कन्ता । एवं तहेव [9]जेट्ठं पुत्तं ठवेइ[10] जाव[+]

१. D E. (डी. इ. मा छे.) have 2 for 4 (चारने बदले बे छे.) * २४० पाठ जुओ. २. D. E. (डी इ मां नथी.) Omit ६. ३. D (डी) आसादेमाणी. G. (जी) add विसाएमाणी. ४. A B. D E. F G. H. (ए. बी. डी. इ एफ. जी एच. मा नथी.) Omit. ५. G. (जी.) सीलव्वय. * ६६ पाठ जुओ. ६. G. (जी) चउद्दस. ७. B. (बी.) संवच्छराइं ८. A B. D. E. F. (ए. बी. डी. इ एफ.) वीइक्कंता. H (एच.) विथिक्कंता. ९. B. D. E F H. (बी. डी. इ. एफ. एच.) जेट्ठपुत्तं. १०. D. E. (डी. इ. मां वधारे) add २त्ता. + ६६ थी ६९ पाठ जुओ.

पोसहसालाए धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ २४५ ॥
पोसहसालाए धम्मपत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ २४५ ॥ करी आत्माने भावता थकां चौद वर्ष

भावार्थः—॥ २४५ ॥ तेवारे ते महाशतक श्रावक घणा शीळव्रतादिके करी आत्माने भावता थकां चौद वर्ष गया पछी पंदरमां वर्षने मध्य भागे वर्तता तेमज आणंदनी पेरे मोटा पुत्रने कुटुंबने विषे स्थापीने यावत पौषध-शाळाए श्रमण भगवंत श्री महावीर देवनो परुपेलो धर्म पाळतो विचरतो हवो ॥ २४५ ॥

अर्थः—॥ २४६ ॥ त० तेवारे । णं० वळी । सा० ते । रे० रेवती । गा० गाथापतिणी । म० उन्मत्त । लु० लोलुपी । वि० उघाडे मस्तके (विखर्या केश) । उ० उत्तरासण (वस्त्र) । वि० हैया आगळथी अलगु करीने २ । जे० ज्यां । पो० पोसधशाळा । जे० ज्यां । म० महासतक । स० श्रावक । ते० त्यां । उ० आवे । उ० आवीने । मो० मोह सहित वचन । उ० उन्माद । ज० उपजे तेवा वचन । सि० शृंगारना वचन । इ० स्त्रीना । भा० भाव मन वचन कायाना । उ० देखाडे २ । म० महासतक । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । म० महासतक । स० श्रावक । ध० धर्मना । का० वांछणहार । पु० पुन्य करवाना । का० वांछणहार । स० स्व-र्गना । का० वांछणहार । मो० मोक्षना । का० वांछणहार । ध० धर्मनी । कं० वांछाना करणहार ४ । ध० धर्म-नी । पि० तुषावंत ४ । किं० शा कारणे । तु० तमे । दे० हे देवानुप्रिय । ध० धर्म । वा० अथवा । पु० पुण्ये । वा० अथवा । स० स्वमार्ग (देवलोके) । वा० अथवा । मो० मो क्षे । वा० वळी (शुं करशो) । ज० जे । तु० तमे । म० मारी । स० साथे । उ० मनोहर (मनुष्य संबंधी कामभो ग) । जा० यावत । भु० भोगवता । नो० न । वि० विचरो ? (तो मनुष्य भवनुं शुं फळ) ॥ २४६ ॥

मूळपाठः—॥ २४६ ॥ तए णं सा रेवई गाहावइणी [1]मत्ता [2]लुलिया विइण्णकेसी[3] उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी[4] २[5] जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, २त्ता मोहुम्मायजणणाइं[6] सिङ्गारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसेमाणी २ महासययं समणोवासयं एवं वयासी। "हं भो महासयया समणोवासया, धम्मकामया पुण्णकामया[7] सग्गकामया मोक्खकामया धम्मकङ्खिया ४* धम्मपिवासिया ४, किण्णं [8]तुब्भं, देवाणुप्पिया, धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा, जण्णं [9]तुमं मए [10]सद्धिं उरालाइं जाव[11]+ [12]भुञ्जमाणे नो [13]विहरसि"? ॥ २४६ ॥

भावार्थः—॥ २४६ ॥ ते वारे ते रेवती गाथापतिणी मधुपान करवाथी केफने लोधे मदोन्मत्त थइ, डोलती डोलती, वेणी मोकळी मुको, अंग देखाय तेवुं एक झीणुं वस्त्र पहेरी, श्रृंगार कही, माथानुं ओढणुं

१ G (जी) मुत्ता २ G (जी.) लोलुया. ३ D E (डी. इ) विवण्णकेमी, F. (एफ.) विइण्णकेसा ४. B H (बी एच) विकड्ढ°, A. E F (ए इ एफ) विकड्ढ°. ५ G (जी. मां नथी) Omit. ६ G (जी.) °जनगाइं. ७ F (एफ) पुन्न° - ९५ पाठ जुओ ८ B D E. (बी. डी. इ.) तुब्भे ९. E (इ) तुमे १०. G (जी) सिद्धिं ११ G. (जी) adds भोगभोगाइं. + २३८ पाठ जुओ. १२. E. (इ.) भुजमाणो, G. (जी)° माणी. १३ D. E, G (डी. इ जी.) विहरइ

ताणती ताणती उघाडे माथे विह्वळ शरीरे, ज्यां पोपधशाळामां महाशतक श्रावक हता त्यां आवीने मोह उन्माद उपजावती, अढार वर्षनी स्त्री अने पचवीस वर्षना पुरुपने घणी प्रीति उपजे इत्यादिक काम प्रदिप्त थाय तेवा वचन बोलती, शृंगार समरे स्त्री संबंधी हाव भाव कटाक्ष नजरे देखाडती महासतक श्रावकने एम कहेती हवी, अरे ! महाशतक श्रावक ! धर्मना कामी ! पुन्यना कामी ! स्वर्गना कामी ! मोक्षना कामी ! धर्मना वच्छक ? स्वर्गना वन्छक ? मोक्षना वच्छक ? धर्मना तरस्या ? पुन्यना तरस्या ! स्वर्गना तरस्या ! मोक्षना तरस्या ! हे देवने वल्लभकारी ! तने आ नारा धर्म करोने, पुन्ये करीने, स्वर्गे करीने, मोक्षे करीने, शुं वधारे लाभ थवानो के जेथी तुं म्हारी साथे भला मनुष्य संबंधी काम भोग भोगवतो नथी ! (अर्थात काम भोग भोगववाने माटे धर्म, पुन्य करवामां आवे छे ते धर्म, पुन्य, स्वर्ग अने मोक्ष ए सर्व मारा शरीरमांज छे अने ए मारु शरीर छे तेज धर्म, तेज पुन्य, तेज स्वर्ग अने तेज मोक्ष छे माटे मारी साथे काम भोग भोगववाथी तने धर्म, पुन्य, स्वर्गने मोक्ष मळी जशे. तारुं धर्म, पुन्य, स्वर्ग, मोक्ष, म्हारा शरीरथी वधारे शुं छे के जेथी तुं धर्म, पुन्य, स्वर्ग ने मोक्षरूप आ मारा शरीर साथे काम भोग भोगवतो नथी ॥ २४६ ॥

अर्थः—॥ २४७ ॥ त० ते वारे । पं० वळी । से० ते । म० महासतक । स० श्रावक । रे० रेवती । गा० गाथापतिणीना । ए० ए । अ० वातनो । नो० न । आ० आदर दीधो । नो० न । प० वलतो जवाव दीधो । अ० अणआदर देतो । अ० अणसांभळतो थको । तु० मौन करी रह्यो । ध० धर्म । ज्झा० ध्यान । उ० करतो । वि० विचरे ॥ २४७ ॥

भावार्थः—॥ २४९ ॥ ते वारे ते रेवती गाथापतिणी महासतक श्रावकनो आदर अणपामती अणबोल्यो थइ रहेलो होय तेनी पेरे जाणीने जे दिशाएथी आवी हती ते दिशाए पाछी गइ ॥ २४९ ॥

अर्थः—॥ २५० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । म० महासतक । स० श्रावक । प० प्रथम । उ० श्रावक । प० पडिमा । उ० आदरतो । वि० विचरे । प० प्रथम । श्रावक पडिमा । अ० जेहवी । सु० सुत्रे कही तेहवी । जा० यावत । ए० अगियारे । वि० वळी ॥ २५० ॥

मूळपाठः—॥ २५० ॥ तए णं से महासयए समणोवासए पढमं उवासग पडिमं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ । पढमं अहासुत्तं जाव एक्कारस वि ॥ २५० ॥

भावार्थः—॥ २५० ॥ ते वारे ते महाशतक श्रावक पहेली श्रावकनी प्रतिज्ञा आदरी विचरतो हवो. जेम शास्त्रमां कही छे ते प्रमाणे अनुक्रमे अग्यारे प्रतिज्ञा वहे ॥ २५० ॥

अर्थः—॥ २५१ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । म० महासतक । स० श्रावक । ते० ते । उ० (आकरा तपे) उदारिक शरीर । जा० यावत । कि० मांस लोही रहित । ध० धमण समान । हाड चामडा रह्यां । जा० एहवो थयो ॥ २५१ ॥

· ७०-७१ पाठ जुओ

मूळपाठः—॥ २५१ ॥ तए णं से महासयए समणोवासए[1] तेणं उरालेणं जाव किसे धमणिसन्तए[2] जाए[3] ॥ २५१ ॥

भावार्थः—॥ २५१ ॥ ते वारे ते महाशतक श्रावक ते इग्यार प्रतिज्ञा वहे. ते उदार (भली) तपश्चर्या करवाथी शरीर दुर्बळ थयुं, नशाजाळ नीकळी यावत धमणनी पेरे श्वासोश्वास चालवा लाग्यो ॥ २५१ ॥

अर्थः—॥ २५२ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । त० ते । म० महाशतक । स० श्रावक । अ० एकदा । क० प्रस्तावे । पु० मध्य । र० रात्रि । आ० समय । का० काळने विषे । ध० धर्म । जा० जागरिका । जा० जागतो थको । अ० एहवो । अ० अध्यवसाय उपनो ४ । ए० एम । ख० निश्चे । अ० हुं । इ० ए । उ० उदारिक । शरीर । ज० जेम । आ० आणन्द । त० तेमज । अ०आउखाने छेडे । मा० मरणने । अ० छेडे । सं० संलेखणा । झु० वोसरावी । स० शरारने । भ० भात । पा० पाणी । प० पच्चखाण करीने । का० काल । अ० अणवांछतो थको । वि० विचरे ॥ २५२ ॥

मूळपाठः—॥ २५२ ॥ तए णं तस्स महासययस्स समणोवासयस्स[4] अन्नया [5]कयाइ

१. B D. E. F G. (बी. डी. इ एफ. जी. मां नथी) Omit. * ७२ पाठ जुओ. २. G. (जी.) धमणसंतिए. ३. B. F. (बी. एफ. मां नथी.) Omit ४. B. E. F. G. (बी इ. एफ. जी. मा नथी) Omit, ५. D. (डी.) कदायि.

पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स [1]अयं अज्झत्थिए ४*। "एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं" जहा+ [2]आणन्दो तहेव अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाए[3] झूसियसरीरे भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ ॥ २५२ ॥

भावार्थः—॥ २५२ ॥ ते वारे ते महासतक एकदा प्रस्तावे मध्य रात्रीए धर्म जाग्रिकाए जागतां एहवो मनमां अध्यवसाय उपन्यो, एम निश्चे ए उदार तपश्चर्याए करीने माहरुं शरीर दूर्बळ थयुं यावत आणंदनी पेरे चिंतवी मरणने अंते अणसण लइ, मरणने अणवांछतो थको विचरतो हवो ॥ २५२ ॥

अर्थः—॥ २५३ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । त० ते । म० महासतक । स० श्रावक । सु० सुभ । अ० अध्यवसाय । जा० यावत । ख० क्षयोपशम ध्याने । ओ० अवधिज्ञान । स० उपनो । पु० पुर्वे । ल० लवण समुद्रमांहे । जो० जोजन । सा० हजार । खे० क्षेत्र लगे । जा० जाणे । पा० देखे । ए० एम । द० दक्षिण दिशाए । प० एम पश्चिम दिशाए । उ० एम उत्तर दिशाए । जा० यावत । चु० चुल । हि० हिंमतवंत । वा० वर्ष धर । प० पर्वत लगे । जा० जाणे । पा० देखे । अ० हेठे । इ० ए । र० रत्न । प्प० प्रभा । पु० पृथ्वीए । लो० लोलुचय । न० नरकावासो । च० चोरासी । वा० वरस । स० हजार (चोरासी हजार वर्षनी)। ठि० स्थिति । जा० जाणे । पा० देखे ॥ २५३ ॥

१. G. (जी.) अयमेयारूवे. * ६६ पाठ जुओ. + ७३ पाठ जुओ. २. F (एफ.) अणदे. ३ D. E. H. (डी. इ. एच.) ° संलेहणाझूसिय °.

मूळपाठः—॥ २५३ ॥ तए णं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स[1] सुभेणं[2] अज्झवसाणेणं जाव[4] खओवसमेणं ओहिणाणे[3] समुप्पन्ने । पुरच्छिमेणं[4] लवणसमुद्दे जोयण साहस्सियं खेत्तं[5] जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं[6], उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवन्तं वासहर[7] पव्वयं जाणइ पासइ, अहे इमीसे रयणप्पभाए [8]पुढवीए [9]लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं[10] जाणइ पासइ ॥ २५३ ॥

भावार्थः—॥ २५३ ॥ ते वारे ते महाशतक श्रावकने शुभ अध्यवसाए करी अवधि ज्ञानावर्णि कर्मना क्षयोपशमे करी अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं तेथी पूर्व दिशाए लवण समुद्रमां हजार जोजन सुधी क्षेत्र जाणे देखे, एमज दक्षीण, पश्चीमने विषे पण जाणवुं अने उत्तर दिशाए चुलहीमवंत वर्षधर पर्वत सुधी जाणे देखे. उंचु सुधर्मा देवलोक सुधी जाणे देखे, नीचे पहेली रत्न प्रभा नरकनो लोलुचय नरकावासो के ज्यां चौराशी हजार वर्षनुं आ-

१. B D E. G H (बी डी इ जी. एच मां नथी) Omit. २. B. F. H. (बी. एफ. एच.) सुहेणं - ७४ पाठ जुओ ३ B. F (बी एफ.) उहिण्णाणे ४ D (डी) पुरच्छिमेणं, F. (एफ.) पुरिन्थिमेणं, G. (जी) पुरुच्छमेणं. ५. F G (एफ. जी.) खित्तं ६. D E G (डी. इ जी) पच्छिमेणं ७ G (जी मां नथी) Omit ८ B D E F H (बी. डी. इ. एफ एच मा नथी.) Omit ९. B (बी.) लोलुच्चुयं. E. (इ) लोलुयच्चय; F. (एफ) लोलुच्चयं, G. (जी.) लोलुच्चय तं. १० B D. E. F. H (बी. डी इ एफ एच) चउरासीवास °. D. E. (डी. इ) ° ठियं, G (जी.) ° ठिइं

युष्य छे, त्यां सुधी देखे ॥ २५३ ॥

अर्थः—॥ २५४ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । सा० ते । रे० रेवती । गा० गाथापतिणी । अ० एकदा । क० प्रस्तावे । म० मद्य करी । जा० यावत । उ० उत्तरासन (वस्त्र) । वि० हृदय आगळथी काढी नाखी (२) नाखीने । जे० ज्यां । ए० वळी । म० महासतक । स० श्रावक । जे० ज्यां । ए० वळी । पो० पौषधशाळा । तं० त्यां । ए० वळी । उ० आवे । उ० आवीने । म० महासतकने । त० तेमज । ए० वळी । भ० कहे । जा० यावत । दो० बे वार । पि० वळी । त० त्रणवार । पि० वळी । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । त० तेमज ॥ २५४ ॥

मूळपाठः—॥ २५४ ॥ तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्नया कयाइ[1] मत्ता जाव[*] उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी[2] २ जेणेव महासयए समणोसए[3] जेणेव पोसहसाला[4] तेणेव उवागच्छइ, २त्ता महासययं तहेव भणइ जाव[+] दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी । "हं भो" तहेव[5] ॥२५४॥

भावार्थः—॥ २५४ ॥ ते वारे ते रेवती एकदा प्रस्तावे मद्यपाने करी मस्त थइ प्रथमनी पेरे यावत ओढवानुं

१. D. (डी.) कदायि. * २४६ पाठ जुओ. २ B. E (बी इ.) विकट्टमाणी. F (एफ.) विकड्ढ °; B. D. E. G. (बी. डी इ. जी मां नथी.) Omit २. जुओ पाठ २४६ फूटनोट. ३. B. D. E F. H. (बी. डी. इ. एफ. एच. मां नथी.) Omit. ४ D. E. (डी. इ.) पोसहसालाए. + २४६ थी २४८ पाठ जुओ ५. D. (डी. मां नथी.) Omit. E. (इ मां वधारे) adds_भणइ

वस्त्र ताणती ताणती उघाडे माथे नेत्र कटाक्ष मारती ज्यां पौषधशाळामां महाशतक श्रावक हतो त्यां आवीने महासतकने प्रथमनो पेरे कहे, यावत एम वीजीवार, त्रीजीवार कहुं ॥ २५४ ॥

अर्थः—॥ २५५ ॥ त० ते वार । णं० वळी । से० ते । म० महासतक । स० श्रावक । रे० रेवती । गा० गाथापतिणी । दो० वे वार । पि० वळी । त० त्रणवार । पि० वळी । ए० एम । वु० कहे । स० थके । आ० क्रोधे करो ४ । ओ० अवधिज्ञान । प० प्रजुंजे । प० प्रजुंजीने । ओ० अवधिज्ञाने । आ० जुए । आ० जोइने । रे० रेवती । गा० गाथापतिणीने । ए० एम । व० कहे । हं० हे । भो० अरे । रें० रेवती । अ० अप्रार्थना । प० प्रार्थनारी ४ । ए० एम । ख० निश्चे । तु० तुं । अ० मांहे । स० सात । र० रात्रि (सात रात्रिनी अंदर) । अ० सूळरुप । वा० व्याधिए करी । अ० व्याप्त । स० थकी । अ० आर्द्र । दु० रौद्र ध्यानने । व० वशे करी । अ० असमाधि पामी । का० काळने । आ० अवसरे । का० काळ । कि० करी । अ० हेठे । इ० ए । र० रत्न । प्प० प्रभा । पु० पृथ्वीए । लो० लोलुचनामा । न० नरकावासे । च० चोराशी । वा० वरस । स० हजारनी । ट्ठि० स्थिति (चोराशी हजार वरसनी आउखानी स्थिति) एवा । ने० नरके । ने० नारकीपणे । उ० उपजीश ॥२५५॥

मूळपाठः—॥ २५५ ॥ तए णं से महासयए [1]समणोवासए रेवईए [2]गाहावणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते[3]४ उहिं[4] पउञ्जइ, २त्ता उहिणा[5] आभोएइ,

---

१. B D. E. F G. H. (बी डी. इ एफ. जी एच मा नथी.) Omit. २ B. D E F (बी. डी. इ. एफ मां नथी.) Omit. ३. B. G. H (बी जी एच) आसुरुत्ते. D. has 2 after it instead of 4 (डी. मा "४" ने वदले "२" छे) ४. F. G. (एफ. जी.) उहि ५ F. (एफ.) उहिणा.

इत्ता रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी । " हं भो रेवई[1], अपत्थियपत्थिए[2] ४", एवं खलु तुमं अन्तो सत्तरत्तस्स अलसएणं[3] वाहिणा अभिभूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा असमाहिपत्ता [4]कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए[5] नरए चउरासी-इवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु[6] नेरइयत्ताए[7] उववज्जिहिसि" ॥ २५५ ॥

भावार्थः—॥ २५५ ॥ ते वारे महाशतकने रेवती गाथापतिणीए एम बे वार त्रणवार कहेवाथी महाशतक उतावळो कोप्यो यावत क्रोधे धमधम्यो थको अवधिज्ञान प्रयुंजे (जोवे), ते अवधिज्ञाने करी तेनां सर्व दुष्ट कृत्य जाणी देखीने ते रेवती गाथापतिणीने एम कहेतो हवो अरे रेवती ! मरणनी इच्छनारी ! यावत हीणपुन्यनी धणीयाणी ! एम निश्चे तने सात रात्रि मांहि अलस नामे (मूळ) व्याधिए (रोगे) पीडाती आर्त्त रौद्र ध्यानने वशे असमाधि पामी थकी काळने अवसरे (मरणने समे) काळ करी, (मरी) हेठे पेहेली रत्न प्रभा पृथ्वीमां लोलुचुय नामे नरकावासने विषे चोराशी हजार वर्षना आउखे नारकीपणे उपजीश ॥ २५५ ॥

अर्थः—॥ २५६ ॥ त० ते वारे । पं० वळी । सा० ते । रे० रेवती । गा० गाथापतिणी । म० महासतक ।

१. F (एफ.) रेवइ २ G. (जी) ° पत्थिया. ३. D (डी.) अलस्सएणं ४. A. (ए) कालमासे. F (एफ.) काले मासे ५. A B. D E. F G. (ए बी डी. इ एफ. जी.) लोलुच्चए. ६. A. G. (ए जी.) नरएसु, B F. (बी एफ) नरइएसु D E. H (डी. इ. एच मां नथी) Omit. ७ A F. (ए. एफ.) नेरयत्ताए, B. (बी.) नेरइत्ताए.

स० श्रावके। ए० एम। बु० कह्ये। स० थके। ए० एम। व० बोली! रु० रुठया कोप्या। णं० वळी। म० मने म० महा सतक स० श्रावक। ही० मने हीणी। णं० वळी। म० मुजने। म० महासतक। स० श्रावके। अ० रुठयां। णं० वळी। अ० मने। म० महासतक। स० श्रावक। न० न। न० जाणुं। णं० वळी। अ० हुं। के० केवा। वि० वळी। कु० कुमरणे। मा० मारशे। त्ति० एम। क० कही। भी० बीहनी। त० त्राठी। त० ध्रुजवा लागी। उ० उद्वेग पामी। स० उपन्यो। भ० भय। जेहने। स० हळवे। स० हळवे। प० पाछी वळे। प० पाछी वळीने। जे० ज्यां। स० पोतानुं। गि० घर। तै० त्यां। उ० आवे। उ० आवीने। ओ० ओहाय। संकल्प विकल्प चिंतवे। जा० यावत। झि० आर्त्त रोद्र ध्यान ध्यावे॥ २५६॥

मूळपाठः—॥ २५६॥ तए णं सा रेवई गाहावइणी[1] महासयएणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी[2] एवं[3] वयासी। " रुट्ठे णं ममं महासयए[4] समणोवासए, [5]हीणे णं ममं महासयए [6]समणोवासए, अवज्झाया[7] णं [8]अहं महासयएणं समणोवासएणं, न नज्जइ णं,

1. D E. (डी. इ.) गाहावई. २. F. (एफ) समाणा. ३. G (जी. मां छे.) reads भीया for (बदले) एवं वयासी (" एवं वयासी " ने बदले " भीया " छे.) ४. A. G. (ए. जी. मां नथी.) Omit. ५. G. (जी. मां नथी) Omit the clause हीणे to महासयए (" हीणे " थी " महासयए " सुधी पाठ नथी. ६. A. B. D. E. F. G. (ए. बी. डी. इ. एफ. जी. मां नथी.) Omit. ७. E. (इ.) अवज्झाणे. ८. A. B. F. (ए बी. एफ.) ममं.

अहं केण[1] वि कुंमारेणं[2] मारिज्जिस्सामि[3] " त्ति कट्टु भीया तत्था तसिया[4] उव्विग्गा[5] स-ञ्जायभया सणियं २ [6]पच्चोसक्कइ, २त्ता जेणेव सए [7]गिहे तेणेव उवागच्छइ, २त्ता ओहय[8] जाव* झियाइ ॥ २५६ ॥

भावार्थः-॥ २५६ ॥ ते वारे ते रेवती गाथापतिणी महासतक श्रावकनुं एवु वचन सांभळीने एम कहेती हवी, अरेरे ! महासतक श्रावक आज मारा उपर रुठयो (कोप्यो), महासतके आज म[illegible] तजी, मारा उपर हीणुं मन कर्युं, महासतके आज मारा उपर भुंडो अध्यवसाय कर्यो, न जाणीए महा सतक मने केवे मरणे मारशे! एम जाणीने व्हीनी, त्राठी, उद्वेग पामी, सर्वथा भय उपनो, तेवारे ते हळवे हळवे पाछी वळी ने ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आवीने आर्त्त ध्यान ध्यावा लागी, तेमज मरवानो उपाय पण चिंतववा लागी ॥ २५६ ॥

अर्थः—॥ २५७ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । सा० ते । रे० रेवती । गा० गाथापतिणी । अ० अंतरे । स० सात । र० रातनो । अ० शूळनी । वा० व्याधिए । अ० पराभवे थके । अ० आर्द्र । दु० रौद्रध्याने । व० वर्तता । का० काळने । आ० अवसरे । का० काळ । कि० करीने । इ० ए । र० रत्न ।

१. D E. (डी. इ) केणावि F. (एफ.) केणं वि २ D (डी.) कुमारएणः; E. (इ) कुमरणेणं, G. (जी.) कुमरिणिज्जेण. ३ B (बी) मरिज्जिस्सामि ४ A F (ए एफ.) तिसिया. D. (डी.) वधिता. ५. A. B D. E. F. G. (ए बी डी इ. एफ. जी) उविग्गा ६. D E. (डी इ.) पच्चोसक्केइ. ७. G. (जी.) गेहे. ८ A. B. E. F. (ए बी इ. एफ.) उहय. जुओ ९२ मो पाठ कलपनो

प्प० प्रभा । पु० पृथ्वीने विषे । लो० लोलुचुय नामे । न० नरकावासे । च० चोरासी । वा० वर्ष । स० हजार । ट्ठि० स्थिति । आउखानी एवा । ने० नरके । ने० नारकीपणे । उ० उपनी ॥ २५७ ॥

मूळपाठः–॥ २५७ ॥ तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्तो सत्तरत्तस्स अलसएणं[1] वाहिणा अभिभूया अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे[2] कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[3] लोलुयच्चुए[4] नरए चउरासीइवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु[3] नेरइयत्ताए उववन्ना ॥ २५७ ॥

भावार्थः—॥ २५७ ॥ ते वारे ते रेवती गाथापतिणीने सात रात्रिमांहि अळस (शूळ) नामे व्याधि उत्पन्न थइ, ते व्याधिए पीडाती आर्त्तरौद्र ध्यानने वशे काळने अवसरे काळ करीने रत्नप्रभा पृथ्वीमां लोलुयचुय नामे नरकावाळने विषे चौराशी हजार वर्षने आउखे नारकीपणे उपनी ॥ २५७ ॥

अर्थः—॥ २५८ ॥ ते० ते । का० काळ । ते० ते । स० समए । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । स० समोसर्या । जा० यावत । प० परिखदा । प० पाछी गइ ॥ २५८ ॥

मूळपाठः–॥ २५८ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरणं [5]जाव* परिसा पडिगया[6] ॥ २५८ ॥

---

१. A B. D. F H. (ए बी. डी. एफ एच.) अलस्सएणं. २ A (ए) कालं मासे, B (बी काले मासे. ३ H. (एच. मां नथी.) Omit ४. G (जी) लोलच्चए F. (एफ.) लोलुयच्चुयं नरयं. ५. A. B. F. H. (ए. बी. एफ एच मां 'परिसा' पछी 'जाव' छे) place 'जाव " after "परिसा" (जुओ भगवती पानुं २४२–२९१. G. (जी. मां नथी) Omit जाव. * उववाइ २२–३८ पाठ जुओ. ६. G. (जी.) निग्गया.

अणवकङ्खमाणे विहरइ । तए णं तस्स महासयगस्स[१] रेवई गाहावइणी[२] मत्ता [३]जाव* विकड्डमाणी[४] २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए तेणेव उवागच्छइ, २त्ता मोहुम्माय[५] जाव* एवं वयासी[६] तहेव* जाव दोच्चं पि तच्चं[७] पि एवं वयासी[८]। तए णं [९]°से महासयए[१०] समणोवासए रेवईए गाहावइणीए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरत्ते[१२] ४+ ओहिं पउञ्जइ[१३], २त्ता ओहिणा[१४] आभोएइ, २त्ता रेवइं [१५]गाहावइणिं एवं वयासी[१६] जाव× "" उववज्जिहिसि ""। नो खलु कप्पइ, गोयमा, समणोवासगस्स अपच्छिम जाव§

१ D E. (डी इ.) °सययन्स. २. A. (ए.) गाहावत्ती. ३. G. (जी. मां वधारे) add उत्तरीय. * २८६, २८७, २४८ पाठ जुओ. ४. A. E. (ए. इ.) विकट्टमाणो. B (बी.) त्रिकट°, F. (एफ.) विकट्ठ°. ५ D. E (डी. इ) मोहम्मादा; G. (जी.) °म्मारं ६. G. (जी. मा नथी.) Omit. ७. A. (ए. मा नथी) Omit. ८. B. F (बी. एफ मां नथी.) Omit तच्चं पि. ९ A. (ए.) वदासी. १०. F. G. (एफ. जी. मां नथी) Omit. ११ H. (एच) महासयगे. १२. A. F. G. (ए. एफ जी.) आसुरत्ते. + ९७. पाठ जुओ. १३. D E. (डी. इ.) read कुविए for ४ ओहिं प° २त्ता (" ४ ओहिं प° २त्ता " ने बदले "कुविए" छे. G. (जी. मां नथी.) Omit ओहिं प° २त्ता. १४. A. B F. (ए. बी. ए. एफ.) उहिणा १५. H. (एच) गाहावइं. १६. B. D. E G H. (बी. डी. इ. जी. पच मा नथी.) Omit. एव व°. × २५७ पाठ जुओ. § ७३. २५२ पाठ जुओ.

कूसियसरीरस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स[1] [2]परो सन्तेहिं [3]तच्चेहिं तहिएहिं [4]सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकन्तेहिं अप्पिएहिं अमणुन्नेहिं [5]अमणामेहिं वागरणेहिं [6]वागरित्तए। तं गच्छ [7]णं, देवाणुप्पिया[8]; तुमं महासययं समणोवासयं एवं [9]वयाहि। "“नो खलु, देवाणुप्पिया, कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम जाव* [10]भत्तपाणपडियाइक्खियस्स परो सन्तेहिं जाव+ [11]वागरित्तए। तुमे[12] य णं, देवाणुप्पिया, रेवई गाहावइणी[13] सन्तेहिं४+ अणिट्ठेहिं[14] ५+ वागरणेहिं वागरिया[15] तं णं तुमं एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव× [16]जहारिहं च पायच्छित्तं पडिवज्जाहि"" ॥ २५९ ॥

१. G (जी.) भत्तपाणं पडि० २. G (जी मां नथी.) Omit. ३ F. G. H. (एफ. जी. एच मां नथी) Omit. ४. G. H. (जी एच. मां नथी) Omit. ५. D E (डी इ. मां नथी.) Omit. ६. D. E. G. (डी. इ. जी.) वागरेत्तए. ७. E. G. (इ. जी.) गच्छह. ८. G. Omit from देवा० down to वागरित्तए. (जी. मां "देवा"थी "वागरित्तए" सुधी नथी.) ९. D. E. (डी. इ) वयासी. * ७३, २५२ पाठ जुओ १०. A. B. D E F H. (ए. बी. डी इ. एफ. एच. मां नथी.) Omit. + आगलो पेरेग्राफ जुओ. ११. B. D. E. H. (बी. डी इ. एच.) वागरेत्तए. १२. G. (जी) तुब्भे and Omit य (अने "य" नथी.) १३. H. (एच.) गाहावई १४. G (जी) अणट्ठेहिं. १५. B. D. E) वागरित्ता. × ८४ पाठ जुओ. १६. A. B. F. (ए. बी. एफ.) जहारिहिं.

भावार्थः—॥ २५९ ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव गौतमने संबोधन वचने एम कहेता हवा, एम निश्चे हे गौतम ! आ राजग्रह नगरने विषे मारो अंते वासी शिष्य महासतक नामे श्रावक पोषधशाळाए छेल्ली मरणने अंते संलेखणाए शरीरने सुसी (पवित्र करी) ने अन्नपाणीनुं पचखाण (नियम) करीने मरणने अणवांछतो थको विचरे छे. ते वारे रेवती गाथापतिणी मधुपानथी माती थकी यावत वेणी मोकळी मुकी, उघाडे माथे, वस्त्र ताणती ताणती ज्यां पोषधशाळामां महासतक छे त्यां आवीने मोह उन्माद उपजे, काम मदित थाय तेवा वचने करी यावत एम कहेती हती, एम बे वार, त्रण वार कह्युं ते वारे रेवती गाथापतिणीए बे वार, त्रण वार एम कहेवाथी महासतक श्रावकने रीस चडी यावत क्रोधे धमधमी अवधिज्ञाने जोइने रेवती गाथापतिणीने एम कह्यु, यावत नरकने विषे तुं उत्पन्न थइश !

हे गौतम ! एम निश्चे श्रावकने छेल्ली मरणने अंते संलेखणाए शरीर भूमि यावत अन्नपाणीना पचखाण करी मरण अणवांछता विचरताने अनेराना छता दोष साचा होय, ओछा अधिका न होय, यथार्थ होय तोपण दोषीत जीवने अणगमतुं, अनिष्ट, एकांत, अप्रियकारी, अमनोज्ञ, मनने अणगमतु वचन बोलवुं कल्पे नहिं,

ते माटे हे देवने वल्लभकारी ! तमे त्यां जाओ अने महासतक श्रावकने एम कहो के, हे देवने वल्लभकारी ! श्रावकने छेल्ली मरणनी संलेखणाए अन्न पाणी पचखे थके कोइ जीवना छता सत्य दोष होय तोपण ते जीवने अनिष्टकारी होय तेवुं वचन कहेवु कल्पे नहिं अने हे देवने वल्लभकारी ! रेवती गाथापतिणीना छता दोष हता पण तेने अनिष्टकारी यावत वचन जे तमे कह्युं ते माटे ते स्थानकने तमे आलोवो यावत प्रायश्चित अंगिकार करो॥२५९॥

अर्थः—॥ २६० ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । भ० पूज्य । गो० गौतम । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर देवना वचन । त० ते । त्ति० तहत्ति । ए० ए । अ० अर्थ । वि० विनये । प० सांभळे । प० सांभळीने । त० त्यांथी । प० नीकळे । प० नीकळीने । रा० राजग्रह । न० नगर । म० मध्यो । म० मध्य । अ० पेसे । अ० पेसीने । जे० ज्यां । ए० वळी । म० महासतक । स० श्रावकनुं । गि० घर । जे० ज्यां । ए० वळी । म० महासतक । स० श्रावक । ते० त्यां । ए० वळी । उ० आवे ॥ २६० ॥

मूळपाठः—॥ २६० ॥ तए[1] णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स "तह" त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, २त्ता[2] तओ पडिणिक्खमइ[3], २त्ता रायगिहं नयरं[4] मज्झं मज्झेणं [5]अणुप्पविसइ, २त्ता जेणेव महासयगस्स समणोवासयस्स गिहे जेणेव[6] महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ ॥ २६० ॥

भावार्थः—॥ २६० ॥ ते पूज्य गौतम श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देवनुं वचन तहेत्त करे अने ए वात विनये करी सांभळीने त्यांथी नीकळी, राजग्रह नगरनी मध्योमध्य थइने ज्यां महाशतक श्रावकनुं घर के ज्यां महाशतक श्रावक हता त्यां आव्या ॥ २६० ॥

१ F H (एफ एच.) तं for (बदले) तए ण २. A. B. F. G. (ए. बी. एफ. जी. मां नथी) Omit २त्ता ३ A. B F G. H (ए. बी एफ जी. एच) परिनि°. ४. A. B D. H. (ए. बी. डी. एच.) नगरं. ५. G. (जी) अणुप्पविहइ. ६. G (जी मां नथी.) Omit जे° महा° सम°.

अर्थः—॥ २६१ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । म० महासतक । स० श्रावक । भ० पूज्य । गो० गौतमने । ए० आवता । पा० देखे । पा० देखीने । ह० हर्षे संतोष पामे । जा० यावत । हि० हृदयमां । भ० पूज्य । गो० गौतमने । व० वांदे । न० नमस्कार करे ॥ २६१ ॥

मूळपाठः—॥ २६१ ॥ तए णं से महासयए समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, २त्ता[1] हट्ठ[2] जाव* हियए भगवं गोयमं वन्दइ नमंसइ ॥ २६१ ॥

भावार्थः—॥ २६१ ॥ ते वारे महासतक श्रावके पूज्य गौतमने आवता जोइ हर्ष संतोष पाम्यो पछी पूज्य गौतमने वांदी नमस्कार करे ॥ २६१ ॥

अर्थः—॥ २६२ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । भ० पूज्य । गो० गौतम । म० महासतक । स० श्रावकने । ए० एम । व० कहे । ए० एम । ख० निश्चे । दे० हे देवाणुप्रिय । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरे । ए० एम । आ० कह्युं । भा० एहवुं भाखे । प० एम प्रगट करे । प० एम परुपे । नो० न । ख० निश्चे । क० कल्पे । दे० हे देवाणुंप्रिय । स० श्रावकने । अ० अन्त समिपे । जा० यावत । वा० एहवा । वचन कहेवा (योग्य नहिं) । तु० तमे । णं० वळी । दे० हे देवाणुंप्रिय । रे० रेवती । गा० गाथापतिणीने । सं० छता वचन । जा० यावत । या० कह्या । तं० ते माटे । णं० वळी । तु० तमे । दे० हे देवाणुंप्रिय । ए० ए । ठा० ठाम पापनुं । आ० आलोओ । जा० यावत । प० प्रायाश्चत लीओ ॥ २६२ ॥

---

१. A B. D E. F. G H. (ए. बी. डी. इ. एफ. जी. एच. मां नथी.) Omit २त्ता. २. A. adds (ए. मां वधारे) तुट्ठ. * जुओ ज्ञाता २३, उववाइ १७, भगवती पानु २६०.

मूळपाठः—॥ २६२ ॥ तए णं से[1] भगवं गोयमे महासययं समणोवासयं एवं[2] वयासी। " एवं खलु, देवाणुप्पिया, समणे[3] भगवं महावीरे एवमाइक्खइ भासइ पन्नवेइ परूवेइ। " " नो खलु कप्पइ, देवाणुप्पिया, समणोवासगस्स अपच्छिम जाव[4] [5]वागरित्तए " "। [6]तुमे णं, देवाणुप्पिया, रेवई गाहावइणी सन्तेहिं जाव[7] वागरिया। तं णं तुमं[8], देवाणुप्पिया, एयस्स ठाणस्स [7]आलोएहि जाव× पडिवज्जाहि[8] " ॥ २६२ ॥

भावार्थः—॥ २६२ ॥ ते वारे पूज्य गौतम महाशतक श्रावकने एम कहेता हवा, एम निश्चे हे देवने वल्लभकारी ! श्रमण भगवंत श्री महावीर देवे एम भाष्युं (कह्युं) छे, परुप्युं छे, विशेषे परुप्युं छे के, हे देवने वल्लभकारी ! श्रावकने छेल्ली मरणने अंते संलेखणा यावत पारका छता दोष कहेवा कल्पे नहि अने हे देवने वल्लभकारी ! तमे रेवती गाथापतिणीना छता दोष यावत तमे कह्या तेथी तमे ए स्थानकने आलोवो यावत तेनुं प्रायश्चित अंगिकार करो ॥ २६२ ॥

१. D. E. (डी. इ. मां नथी) Omit. २ G. (जी मां " एवं " थी " महावीरे " सुधी नथी) Omit from एवं down to महावीरे. ३. D. E. read (डी. इ मां पाठ छे) रेवई गाहावइणिं for स° भ° महा° (आ पाठने वदले) * ७३ पाठ जुओ. ४ D. E H. (डी इ एच.) वागरेत्तए. ५. A B F G. (ए. बी एफ. जी. मां वधारे) add य. + २५९ मो पाठ जुओ. ६. F (एफ.) तुमे. ७. D. (डी.) आलोएह. × ८४ पाठ जुओ ८. A. B. F. G. (ए. बी. एफ. जी. मां छे.) pref. पायच्छित्तं.

अर्थः—॥ २६३ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । म० महासतक । स० श्रावक । भ० पूज्य । गो० गौतमने । त० तह । त्ति० साचो । ए० एहवो । अ० अर्थ । वि० विनए करी । प० सांभळे । प० सांभळीने । त० ते । ठा० पापना स्थानकने । आ० आलोवे । जा० यावत । अ० यथायोग्य । च० वळी । पा० प्रायश्चित । प० लीए ॥ २६३ ॥

मूळपाठः—॥ २६३ ॥ तए णं से महासयए 'समणोवासए भगवओ गोयमस्स "तह" त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, २त्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव* [2]अहारिहं च[3] पायछित्तं पडिवज्जइ ॥ २६३ ॥

भावार्थः—॥ २६३ ॥ ते वारे महाशतक श्रावक पूज्य गौतमनुं एवुं वचन तत्त करे अने ए वात विनए करीने सांभळे अने ए स्थानकने आलोवे यावत यथायोग्य प्रायश्चित अंगिकार करे ॥ २६३ ॥

अर्थः—॥ २६४ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । भ० पूज्य । गो० गौतम । म० महासतक । स० श्रावकनी । अ० पासेथी । प० पाछा वळे । प० पाछा वळीने । रा० राजग्रह । न० नगर । म० मध्ये । म० मध्य । नि० नीकळे । नि० नीकळीने । जे० ज्यां । ए० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । ते० त्यां । ए० वळी । उ० आवे । उ० आवीने । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरने । वं० वांदे । न० नमस्कार करे ।

१ A. B. D. E. F. G. H. (ए. बी. डी. इ. एफ. जी. एच मा नथी.) Omit. * जुओ ८४ पाठ.
२. D. E. (डी. इ.) जहारिहं ३. B. E. G. (बी. इ. जी मा नथी) Omit

न० नमस्कार करीने । सं० संजम । त० तपे । अ० आत्माने । भा० भावता थका । वि० विचरे ॥ २६४ ॥

मूळपाठः—॥२६४॥ तए णं से भगवं गोयमे महासयगस्स समणोवासयस्स[1] अन्तियाउ पडिणिक्खमइ[2], २त्ता रायगिहं नगरं मज्झं मज्झेणं निग्गहइ, २त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरं तेणेव उवागछइ, २त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, २त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ २६४ ॥

भावार्थः—॥ २६४॥ ते वारे ते पूज्य गौतम महाशतक श्रावकनी पासेथी नीकळी राजग्रह नगरनी मध्योमध्य थइ ज्यां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव हता त्यां आवी श्रमण भगवंत श्री महावीर देवने वांदी नमस्कार करी संयम तपे करी पोताना आत्माने भावता थका विचरे ॥ २६४ ॥

अर्थः—॥ २६५ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीर । अ० एकदा । क० प्रस्तावे । रा० राजग्रही । न० नगरथी । प० नीकळे । प० नीकळीने । व० वहार । ज० जनपद । वि० देशे । वि० विचरे ॥ २६५ ॥

मूळपाठः—॥ २६५ ॥ तए णं [3]समणे भगवं महावीरे अन्नया [4]कयाइ रायगिहाउ

---

१. A. B. D. E. F. G. H (ए बी. डी. डी. इ. एफ जी. एच. मा नथी.) Omit. २. A. B F. G (ए बी. एफ. जी.) पडिनि ० ३. D E (डी इ.) से for समणे ("समणे" ने बदले "से") ४. A. G. (ए. जी.) कयाइं, D. (डी.) कयावि.

[1]नयराओ पडिणिक्खमइ[2], इत्ता बहिया जणवय विहारं[3] विहरइ ॥ २६५ ॥

भावार्थः—॥ २६५ ॥ ते वारे श्रमण भगवंत श्री महावीर देव एकदा प्रस्तावे राजग्रह नगरथी नीकळीने वा-
हिर जनपद देशने विषे विहार करे ॥ २६५ ॥

अर्थः—॥ २६६ ॥ त० ते वारे । णं० वळी । से० ते । म० महासतक । स० श्रावक । व० घणा । सी० शी-
यळवंत । जा० यावत । भा० भावता । वी० वीस । वा० वर्ष । स० श्रावकनी । प० पर्याय । पा० पालीने । ए०
अगियार । उ० श्रावकनी । प० पडिमाओ । स० साचे प्रकारे । का० कायाए । फा० फरसीने । मा० मासनी ।
सं० संलेखणा । अ० आत्माने । झू० गाळीने । स० साठ । भ० भक्त । अ० अणसणे । छे० छेदीने । आ० आ-
पणा अतिचार आलोइ । प० पडिकमीने । स० समाधी पामी । का० काळ । आ० समये । का० काळ । कि०
करीने । सो० सौधर्म । क० देवलोके । अ० अरुण । व० वसंतक । वि० विमाने । दे० देवताए । उ० उप-
नो । च० चार । प० पल्योपम । ठि० आउखानो स्थिति । म० महाविदेह । वा० वासे अवतरी । सि० मुक्ति
जाशे ॥ २६६ ॥

मूळपाठः—॥॥ २६६ ॥ तए णं से महासयए समणोवासए बहूहिं *सील जाव* जा-
वेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियायं[5] पाउणित्ता एक्कारस उवासगपडिमाओ सम्मं

१. A. B. F (ए. बी. एफ.) नगराओ २ A B. F. G. (ए. बी. एफ. जी.) परिनि० ३. A. (ए) जणवयं० . ४. G. (जी.) add व्यया. * पाठ ६६ जुओ. ५. D. G. (डी जी.) परियाग०

काएण फासित्ता[1] मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता[2] सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदे-त्ता[3] आलोइय पडिक्कन्ते[4] समाहिपत्ते कालमासे[5] कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुण वडिं-सए विमाणे देवत्ताए[6] उववन्ने । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई । महाविदेहे वासे[7] सिज्झिहिइ[8] ॥ २६६ ॥

भावार्थः—॥ २६६ ॥ ते वारे ते महाशतक श्रावक वणां शीलव्रतादिके पोताना आत्माने भावतां वीस वर्ष श्रावकनी पर्याय पाळीने श्रावकनी इग्यार प्रतिज्ञा सम्यक् प्रकारे फरसीने एक मासनी संलेखणाए आपणा आत्माने झुंसीने साठ भक्त अणसण छेदोने आलोवी, पडिकमी, शुद्ध थइ, समाधी पामी, मरणने अवसरे काळ करीने पहेला सौधर्म देवलोके अरुणवतंसक विमाने चार पल्योपमनी आयुष्यनी स्थितिए उपज्यो, अने त्यांथी मरी महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य थइ, दिक्षा लइ सीझशे, यावत सर्व दुःखनो अंत करी मोक्षमां जशे ॥ २६६ ॥

अर्थः—॥ नि० समाप्त ॥ स० सातमा । अ० अंग । उ० उपासक । द० दशांगनुं । अ० आठमुं । अ० अध्ययन । स० पुरुं थयुं ॥ ७ ॥ ८ ॥

---

१. A. B. F. (ए. बी एफ.) फासेत्ता. २. G. (जी.) झूसेत्ता. ३. A B. (ए. बी.) छेएत्ता; F. (एफ.) छिंदित्ता, G (जी) छेदइत्ता ४ D. E (डी. इ.) आलेए पडिक्कमित्ता. ५ A. (ए.) कालं मासे, B. (बी.) काले मासे. ६ A. B. D. E. F (ए बी. डी इ. एफ. मां नथी.) Omit. ७. G. (जी. मां नथी.) Omit. ८. D E. (डी. इ. मां वधारे) add बुज्झिहिइ.

मूळपाठः—॥ निखेवो[1] ॥ सत्तमस्स[2] अङ्गस्स[2] उवासगदसाणं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥ ८ ॥

भावार्थः—॥ अध्ययन समाप्त । सातमा उपाशक दशांगनुं आठमुं अध्ययन पुरुं थयुं ॥ ७ ॥ ८ ॥

नवमं अज्झयणं.



नवमुं अध्ययन.

अर्थः—॥ न० नवमा अध्ययननी । उ० शरुआत ॥

मूळपाठः—॥ नवमस्स उक्खेवो[3] ॥

भावार्थः—॥ नवमा अध्ययननी । शरुआत ॥

अर्थः—॥ २६७ ॥ ए० एम । ख० निश्चे । ज० जम्बू । ते० ते । का० काळे । ते० ते । स० समए । सा० सावत्थी । न० नगरी । को० कोट्ठग । चे० चैत्य (वन) । जि० जीत । श० शत्रु । रा० राजा ॥ २६७ ॥

---

१. G. (जी.) निक्खेवओ. २. A. B. D. E. F. G. (ए. बी. ई. एफ. जी. मा नथी.) Omit. ३. G. (जी.) उक्खेवओ.

मूळपाठः—॥ २६७ ॥ एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी[1] नगरी[1] । कोट्ठए[2] चेइए । जियसत्तू राया ॥ २६७ ॥

भावार्थः—॥ २६७ ॥ एम निश्चे हे जंबू ! ते काळ ते समयने विषे सावथि नामे नगरी, कोष्ठक नामे वन, जीतशत्रु नामे राजा हतो ॥ २६७ ॥

अर्थः—॥ २६८ ॥ त० ते । णं० वळी । सा० सावत्थी । न० नगरीए । न० नन्दिणीपिया । ना० नामे । गा० गाथापति । प० वसे छे । अ० ऋद्धिवंत । च० चार । हि० सोनानी । को० कोडी । नि० भूमिमां । प० भंडारी छे । च० चार । हि० सोनानी । को० कोडी । व० व्याजे । प० चाले । च० चार । हि० सोनानो । को० कोडी । प० घर वखरो । च० चार । व० वर्ग गोकुल । द० दस । गो० गाय । सा० सहस्त्र । व० एक वर्ग (दस हजार गायनो एक वर्ग) । अ० अश्वनी नामे । भा० भार्या ॥ २६८ ॥

मूळपाठः—॥ २६८ ॥ तत्थ णं सावत्थीए [3]नयरीए नन्दिणीपिया[4] नामं गाहावई[5] परिवसइ [6]अड्ढे । चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ चत्तारि[7] हिरण्णकोडीओ वड्ढिप-

१. A B. F (ए. बी एफ) सावत्थीए नयरीए २ F. (एफ) कोट्ठचेइए. ३. A B. D. E F. (ए बी. डी. इ. एफ. मां नथी) Omit. ४ E. (इ) नद्दणपिया. ५ A. F G. (ए. एफ. जी.) गाहावइ ६. G (जी मा वधारे) add दित्ते. ७ B. D E. (बी डी. इ. मा मात्र) Only वड्ढि पविन्थर पउत्ताओ. E. (इ.) ° वुड्ढि °.

उत्ताउ चत्तारि हिरसकोमीउ पविन्नरपउत्ताउ चत्तारि वया[1] दसगोसाहस्सिएणं वएणं । अस्सिणीत्तारिया ॥ २६७ ॥

भावार्थः—॥ २६८ ॥ ते सावर्थी नगरीमां नदणी पीता नामे गाथापति वसतो हतो. जे वहुज ऋद्धिवंत हतो । चार क्रोडी सोनैया धरती मांहि दाटेला हता. चार क्रोडी सोनैया व्यापारमां वृद्धिए हता, अने चार क्रोडी सोनैयानो घरवाखरो हतो. दस हजार गाए एक गोकुळ तेवा चार गोकुळ हतां. तेने अश्वनी नामे भार्या हती ॥२६८॥

अर्थः—॥ २६९ ॥ सा० स्वामि । स० पधार्या । ज० जेम । आ० आणंद । त० तेम । ए० ज । गि० गृहस्थ । ध० धर्म । प० अंगिकार करे । सा० स्वामि । व० वाहर । वि० विचरे ॥ २६९ ॥

मूळपाठः—॥॥ २६९ ॥ सामी समोसढे[2] । जहा[*] आणन्दो [3]तहेव गिहि धम्मं पमिवज्जइ । सामी वहिया[4] विहरइ ॥ २६९ ॥

भावार्थः—॥ २६९ ॥ त्यां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव पधार्या. जेम आणन्द श्रावके गृहस्थ धर्म अंगिकर्यो तेमज नंदणीपीनाए पण गृहस्थनो धर्म अंगिकार कर्यो. त्यार पछी श्रमण भगवंत महावीर देव बीजा जनपद देशने विषे विहार करे ॥ २६९ ॥

१ D. E. (डी. इ.) व्वया २ E. D. G. (इ डी जी.) समोसढो. * १०, ५८ पाठ जुओ. ३. G (जी.) तहा. ४. G. (जी मां वधारे) adds. जिणवइविहारं°.

अर्थः—॥ २७० ॥ त० ते वारे। णं० वळी। से० ते। न० नन्दणी प्रिया। स० श्रावक। जा० श्रावकना व्रत अंगिकार करतां। जा० यावत। वि० विचरे ॥ २७० ॥

मूळपाठः—॥२७०॥ तए णं से नन्दिणीपिया[1] समणोवासए[2] जाए [3]जाव+ विहरइ॥२७०॥

भावार्थः—॥ २७० ॥ ते वारे ते नंदणीपिता श्रावक थयो यावत श्रावकना व्रत पाळतो विचरतो हवो ॥२७०॥

अर्थः—॥ २७१ ॥ त० ते वारे। णं० वळी। त० ते। न० नंदणीपिया। म० श्रावक। व० घणा। सी० शीयळ व्रतादिक अणुव्रत। जा० यावत। भा० भावतो थको। चो० चौद। सं० वर्ष। व० अतिक्रम्या। न० तेमज। जे० मोटा। पु० पुत्रने। ठ० स्थापे। ध० धर्म। प० पाळे। वी० वीस। वा० वर्ष। प० पर्याय। ना० एटलो फेर। अ० अरुणग। वि० विमाने। उ० उपनो। म० महाविदेहे। वा० वासे। सि० सिझशे ॥ २७१ ॥

मूळपाठः—॥ २७१ ॥ तए णं तस्स नन्दिणीपियस्स[4] समणोवासयस्स[5] बहूहिं[6] सीलव्वयगुण जाव[7] भावेमाणस्स चोद्दस[8] संवछराइं[9] वइक्कन्ताइं[10]। [10]तहेव+ जेट्ठं[11] पुत्तं

१. B. F (बी. एफ) नंदिणिपिया. २. Ms. A breaks off here ('ए' मां आटलो पाठ छे.) ३. B. F. (बी. एफ. मा नथी.) Omit जाए but D. E. (डी इ मां नथी) Omit जाव & G. (जी मां नथी.) Omit जाव विहरइ. * ६४ पाठ जुओ ४. B. F. (बी. एफ) नंदिणिपिया. ५. A B. D. E F. G. (ए. बी डी. इ. एफ. जी. मां नथी.) Omit ६. F. (एफ.) वह. *६६-६७ पाठ जुओ ७. G. (जी.) चउद्दस. ८. D. E. G. (डी इ. जी) संवच्छरा. ९. B. F. (बी. एफ) विइकताइं, D. E. (डी इ.) विइकंता, G. (जी.) वइकंता १० G. (जी. मां छे.) has जहा कामदेवो for तहेव (तहेवने बदले) +६८-७४ पाठ जुओ. ११. B.D.E. (बी.डी इ.)जेट्ठपुत्तं.

ठवेइ[1] । धम्मपणत्तिं । वीसं वासाइं परियागं[2] । [3]नाणत्तं* अरुणगवे विमाणे उववाउ । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ २७१ ॥

भावार्थः—॥ २७१ ॥ ते वारे नंदणीपीना नणा शीळव्रतादिक गुणने विषे यावत आत्माने भावतो थको चौद वर्ष गया पछी म्होटा पुत्रने कुटुंबने विषे स्थापीने श्रमण भगवंत महावीर देवनो परुपेलो धर्म अंगिकार करी विचरतो हवो तेमज श्रावकनी इग्यार प्रतिमा वही, वीस वर्ष सुधी श्रावकनी पर्याय पाळीने मरणने अंते अणसण करी अरुणग विमानने विषे चार पल्योपमनी स्थितिए देवतापणे उपन्यो त्यांथी मरीने महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य थइ दिक्षा लइ सीझशे यावत सर्व दुःखनो अंत करी मोक्षमां जशे ॥ २७१ ॥

अर्थः—॥ नि० समास ॥ उ० उपासग । द० दशाल्गनुं । न० नवमुं । अ० अध्ययन । स० समाप्त ॥ ९ ॥

मूळपाठः—॥ निक्खेवो ॥ उवासगदसाणं नवमं अज्झयणं समत्तं ॥ ए ॥

भावार्थः—॥ अध्ययन समाप्त ॥ उपासक दशा सूत्रनुं नवमुं अध्ययन पुरुं थयुं ॥ ९ ॥

१. F. (फ.) ठवइ, G (जी.) ठावेत्ता and, instead of the remainder, reads (बाकीनो नीचे मुजब पाठ छे.) पोसहसालाए समणस्स भगवओ धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ नवरं निरुवसग्गं एक्कारस वि उवासगपडिमाओ आणियव्वा एवं कामदेवगमेणं नेयव्वा जाव सोहम्मे कप्पे अरुणगवे विमाणे देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे सिज्झिहिइ apparently taken over from the following chapter. २. E. (इ.) परियायं. ३. skr. (संस्कृत) नानात्वं. D. E. (डी. इ. मां) read पाउणित्ता. * ८९ पाठ जुओ.

दसमं अज्झयणं.

दसमुं अध्ययन.

अर्थः--॥ द० दसमो । उ० उखेवो शरुआत ॥

मूळपाठः--॥ दसमस्स उक्खेवो[1] ॥

भावार्थः--॥ दसमा अध्ययननो शरुआत ॥

अर्थः--॥ २७२ ॥ ए० एम । ख० निश्चे । ज० जम्बू । ते० ते । का० काले । ते० ते । स० समयने विषे । सा० सावत्थी । न० नगरी । को० कोठग नामा । चे० वन । जि० जितशत्रु । रा० राजा ॥ २७२ ॥

मूळपाठः--॥ २७२ ॥ एवं खलु, जम्बू, तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी[2] । कोट्ठए[3] चेइए । जियसत्तू राया ॥ २७२ ॥

भावार्थः--॥ २७२ ॥ एम निश्चे हे जंबू । ते काळ ते समयने विषे सावथी नामे नगरी, कोष्टक नामे वन, जीतशत्रु नामे राजा हतो ॥ २७२ ॥

१. G. (जी.) उक्खेवओ २. B H (बी. एच.) नगरी. ३. F. (एफ.) कोट्ठचेइए.

अर्थः—॥ २७३ ॥ त० त्यां । णं० वळी । सा० सावत्थी । न० नगरीए । सा० सालणीपिता । ना० नामे । गा० गाथापति । प० वसे छे । अ० ऋद्धिवंत । दि० दानवंत । च० चार । हि० सोनानी । को० कोडो । नि० भूमिमां । प० भंडारो छे । च० चार । हि० सोनानी । को० कोडी । व० व्याजे । प० वधे । च० चार । हि० सोनानी । को० कोडी । प० व्यापारने घरवखरामां । प० नाखेल । च० चार । व० वर्ग । द० दस । गो० गाय । सा० सहस्र । व० गोकुल (दस हजार गायनो एक गोकुल एवा चार गोकुळ)।फ० फलगुणी। भा० भार्या ॥ २७३ ॥

मूळपाठः—॥ २७३ ॥ तत्थ णं सावत्थीए नयरीए[1] सालिहीपिया[2] नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे[3] दित्ते । चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ चत्तारि[4] हिरण्णकोडीओ [5]वड्ढिपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ चत्तारि वया[6] दसगोसाहस्सिएणं वएणं । [7]फग्गुणीभारिया ॥ २७३ ॥

---

१. B. H. (बी. पच) नगरी. २ B. (बी) सालतिपिया; F, (एफ.) सालहिपिया, G. H. (जी. पच.) लेतियापिया. ३ B. F (बी. एफ. मां "अड्ढे दित्ते" ने बदले २) have Only 2 for अड्ढे दित्ते; D. E. (डी. इ. मा नथी) Omit. दित्ते G. H. (जी. पच. मां नथी.) Omit both अड्ढे and दित्ते ४. G. (जी मां फक्त) वडिढ पउत्ताओ पवित्थर पउत्ताओ, D. E. H (डी इ पच. मां मात्र) वड्ढि पवित्थर. ५. E. (इ.) वुड्ढि. ६. D. E. (डी. इ.) व्वया. ७ G. (जी.) फगुणी.

भावार्थः—॥ २७३ ॥ त्यां सालहीपीता नामे गाथापति, ऋद्धिवंत वसतो हतो तेने चार क्रोडी सोनैया धरतीमां दाटेला हता, चार क्रोडी सोनैया व्यापारमां वृद्धिए हता, चार क्रोडी सोनैयानो घरवाखरो हतो, दश हजार गाए एक गोकुल थाय तेवा चार गोकुळ हतां. तेने फालगुणी नामे भार्या हती ॥ २७३ ॥

अर्थः—॥ २७४ ॥ सा० स्वामी । स० पधार्या । ज० जेम । आ० आणन्द । त० तेमज । गि० गृहस्थ । ध० धर्म । प० अंगिकार करे । ज० जेम । का० कामदेव । त० तेम । जे० वडा । पु० पुत्रने । ठ० स्थापे । पो० पोंपधसालाए । स० श्रमण । भ० भगवंत । म० महावीरे । ध० धर्म । प० परूपेल । उ० अंगिकार करीने । वि० विचरे । न० एटलो विशेष । नि० देवताए उपसर्ग के परीक्षा न करी । ए० अगियार । वि० वळी । उ० श्रावक । प० पडिमा । त० तेमज । भा० जाणवी । ए० एम । का० कामदेवनी । ग० पेरे । ने० जाणवुं । जा० यावत । सो० सौधर्म । क० देवलोके । अ० अरूण । की० कील । वि० विमाने । दे० देवतापणे । उ० उपनो । च० चार । प० पल्योपमनी । ठि० स्थिति । म० महाविदेहे । वा० वासे । सि० सिजशे ॥ २७४ ॥

मूळपाठः—॥ २७४ ॥ सामी[1] समोसढे[2] । जहा[*] आणन्दो तहेव[3] गिहिधम्मं पडिवज्जइ[4] । जहा[+] कामदेवो तहा जेट्ठं[5] पुत्तं ठवेत्ता[6] पोसहसालाए[7] समणस्स भगवओ[7] महा-

१. G. (जी. मां नथी.) Omit. २. D. E. G. (डी. इ. जी.) समोसढो. * १०-५८ पाठ जुओ. ३. F G. H. (एफ. जी एच.) तहा. ४ G. (जी, मा नथी) Omit + ६६, ७३, ९२ पाठ जुओ. ५. B. D E. F. H. (बी. डी. इ. एफ. एच.) जेट्ठपुत्तं. ६. F. (एफ.) ठावेत्ता; D. E. (डी. इ.) ठवेइ.

वीरस्स[१] धम्मपसत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ। नवरं निरुवसग्गाउ[२] एक्कारसवि[३] उवासग पडिमाउ तहेव×[४] भाणियव्वाउ[५]। एवं कामदेवगमेणं[६] नेयव्वं जाव× सोहम्मे कप्पे अरुणकीले[७] विमाणे देवत्ताए उववन्ने। चत्तारि पलिउवमाइं[८] ठिई[९]। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ २७४ ॥

भावार्थः—॥ २७४ ॥ त्यां श्रमण भगवंत श्री महावीर देव पधार्या जेम आणंदे गृहस्थ धर्म अंगिकार कर्यो तेमज सालहीपिताए पण गृहस्थ धर्म अंगिकार कर्यो, जेम कामदेवे कर्युं तेमज मोटा पुत्रने कुटुंबने विषे स्थापीने पौषधशाळाए श्रमण भगवंत श्री महावीरनो परुपेलो धर्म अंगिकार करी विचरतो हवो. इग्यार श्रावकनी प्रतिज्ञा वही. बाकी सर्व कामदेवनी पेरे जाणवुं तेमां एटलुं विशेष छे के, उपसर्ग नहिं यावत मरणने अंते अणसण करी काळने अवसरे काळ करी पहेला सौधर्म देवलोके अरुणकाळ नामे विमानने विषे चार पल्योपमनी स्थितिए

१ B F. G. H. (बी. एफ. जी. एच. मा नथी.) Omit. २. B. F. G. H. (बी. एफ. जी एच.) निरुवसग्गं, D. E. (डी इ) णिरुवसग्गा. ३. G. (जी. मां नथी.) Omit. ४. G (जी. मां नथी.) Omit. ×७०, ७१, ११४, १२३ पाठ जुओ. ५. B. F. (बी. एफ.) भाणियव्वा. D E. (डी. इ.) भाणियव्वं G. (जी. मां नथी.) Omit. ६. D. E (डी. इ) कामदेवेणं ×, ८९, १२४ पाठ जुओ. ७ G. (जी.)° कीलए. ८. B. D. E. F. (बी. डी. इ. एफ.) ° ओवमा. ९ B. D. E. F. (बी. डी. इ. एफ मां 'चत्तारि " पहेला " ठिई " छे. place ठिई before चत्तारि.

देवतापणे उपन्यो त्यांथी मरी महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य थइ दिक्षा लइ सीझशे यावत सर्व दुःखनो अंत करी मोक्ष जशे ॥ २७४ ॥

अर्थः—॥ २७५ ॥ द० दसे श्रावक । वि० वळी । प० पनरमें । सं० वरसे । व० जाता थका । चिं० चिन्ता उपनी । द० दसे श्रावकने । वि० वळी । वी० वीस । वा० वर्षनी । स० श्रावकनी । प० पर्याय पाळे ॥ २७५ ॥

मूळपाठः—॥ २७५ ॥ दसण्ह वि पण्णरसमे संवच्छरे वट्टमाणाणं चिन्ता[1] । दसण्ह वि वीसं वासाइं[2] समणोवासयपरियाउं ॥ २७५ ॥

भावार्थः—॥ २७५ ॥ ए दशे श्रावके पंदरमां वर्षने मध्य भागे वर्तता घरनो भार मुक्यो, दशे जणाए वीस वर्ष श्रावकनी पर्याय पाळी ॥ २७५ ॥

अर्थः—॥ २७६ ॥ ए० एम । ख० निश्चे । ज० हे जम्बू ! । स० श्रमण । जा० यावत । स० मोक्ष गया तेमणे । स० सातमां । अं० अंग । उ० उपासक । द० दसाङ्गना । द० दसमां । अ० अध्ययननो । अ० ए । अ० अर्थ । प० कह्यो ॥ २७६ ॥

मूळपाठः—॥ २७६ ॥ एवं खलु, जम्बू, समणेणं जाव× सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दसमस्स[3] अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ २७६ ॥

---

१. D. E. (डी. इ. मां वधारे) add उववण्णा २ P. D. E. (पी डी. इ.) वासा. F. (एफ.) वासं. * ६६ ने ८९ पाठ जुओ. × जुओ उववाइ पाठ १६, ज्ञाता पाठ ८. ३. F. (एफ.) दसम, G. (जी.) दस.

भावार्थः—॥ २७६ ॥ सुधर्मा स्वामि पोताना जंबू नामना शिष्यने कहेता हवा, एम निश्चे हे जंबू! श्रमण भगवंत श्री महावीर देव मोक्ष पहोंच्या तेमणे सातमा उपासक दशांग सूत्रना दसमां अध्ययननो ए अर्थ कह्यो ॥ २७६ ॥

अर्थः—॥ २७७ ॥ (१) । वा० वाणीज । गा० गाम नगरे १ । च० चम्पाए २ । दु० बे । य० वळी । वा० वाणारसी ३–४ । न० नगरीए । आ० आलम्भीय नगरीए ५ । य० वळी । पु० नगरीए । क० कम्पिलपुरे ६ । च० वळी । बो० जाणवो ॥ २७७ ॥ १ ॥

मूळपाठः—॥ २७७ ॥ १ ॥ वाणियगामे[1] चम्पा दुवे य वाणारसीए नयरीए । आलम्भिया[2] य पुरवरी कम्पिल्लपुरं च बोद्धव्वं ॥ २७७ ॥ १ ॥

भावार्थः—॥ २७७ ॥ १ ॥ हवे दशे श्रावकनी नगरीना नाम कहे छे. पहेलानुं वाणिज्य गाम १, बीजा-

१. D. E G. (डी इ. जी मां आ नीचेनी गाथाओ नथी) the following gatha verses do not occur in Ms. D E G, and M. S. B. has only the first five (बी. मां फक्त पहेली पांच गाथा छे.) while MS. F. gives all, (पण 'एफ'मां बधी गाथा छे) Ms A. is defective at the end, (एमां छेवटनी गाथाओ नथी.) the first five verses are also given in the commentary (टीकामां पहेली पांच गाथा छे.) २. F a. (एफ. ए.) आलंभिया.

नी चंपा नगरी, त्रीजा अने चोथानी वाणारसी नगरी, पांचमानी आलंभीका नगरी, छठानुं कंपीलपुर नगर ॥ २७७ ॥ १ ॥

अर्थः—॥ २७७ ॥ २ ॥ पो० पोलासपुरे ७ । रा० राजग्रहीए ८ । सा० सावत्थीए । पु० पुरीए । दो० बे । ९–१० । भ० थया । ए० ए । उ० (दसे) श्रावकना । न० नगर । ख० निश्चे । हो० होय । बो० जाणवा ॥ २७७ ॥ २ ॥

मूळपाठः—॥ २७७ ॥ २ ॥ पोलासं रायगिहं सावत्थीए[1] पुरीए दोन्नि[2] भवे । एए[3] उवासगाणं [4]नयरा खलु होन्ति बोद्धव्वा ॥ २७७ ॥ २ ॥

भावार्थः—॥ २७७ ॥ २ ॥ सातमानुं पोलासपुर नगर, आठमानुं राजग्रह नगर, नवमा दसमानी सावथि नगरी, ए प्रमाणे दसे श्रावकोना दस नगर जाणवा ॥ २७७ ॥ २ ॥

अर्थः—॥ २७७ ॥ ३ ॥ सि० सिवानंदा १ । भ० भद्रा २ । सा० सामा ३ । ध० धन्ना ४ । ब० बहुला ५ । पू० पुष्पा ६ । अ० अग्निमित्रा ७ । य० वळी । रे० रेवती ८ । अ० अश्वनी ९ । त० तेमज । फ० फालगुणी १० । य० वळी । भ० भार्याना । ना० नाम जाणवा ॥ २७७ ॥ ३ ॥

---

१ B. E. (बी. इ.) सावत्थी Omit ए ("ए" नथी) F. (एफ) inserts या after पुरीए (एफमां "पुरीए" पछी "या" नीचे मुजब छे.) reading "सावत्थीपुरीए या" २. B. (बी.) दोन्नि. ३ F. (एफ.) एयं ४. B. (बी.) नयरी.

मूळपाठः—॥ २७७ ॥ ३ ॥ सिवनन्द[1]—भद्द—सामा धन्न[2]—बहुल—पूस—अग्गिमित्ता य। रेवइ—अस्सिणि[3] तह फग्गुणी[4]य[5] भज्जाण नामाइं ॥ २७७ ॥ ३ ॥

भावार्थः—॥ २७७ ॥ ३ ॥ हवे दसे श्रावकोनी दस स्त्रीओनां नाम कहे छे. पहेलानी शीवानंदा, बीजानी भद्रा, त्रीजानी सामा, चोथानी धना, पांचमानी बहुला, छट्ठानी पुसा, सातमानी अग्निमित्रा, आठमाना रेवती, नवमानी अश्वनी, दशमानी फाल्गुणी ए प्रमाणे दशे श्रावकनी भार्याना नाम जाणवा ॥ २७७ ॥ ३ ॥

अर्थः—॥ २७७ ॥ ४ ॥ ओ० (पहेलाने) अवधिज्ञान उपनुं ए परिसह १ । पि० (बीजाने) पिशाचनो परिसह २ । मा० माया (त्रीजाने) मातानो परिस्सह ३ । वा० (चोथाने) रोगनो परिस्सह ४ । ध० (पांचमाने) धन काढयानो ५ । उ० (छट्ठाने) देवताने उतरासंगनो परिस्सह ६ । य० वळी । भ० (सातमाने) स्त्री मारवानो परिस्सह । य० वळी । सु० सुव्रत एटले पवित्र तेने ७ । दु० (आठमाने) दुष्ट रेवतीनो परिस्सह ८ । नि० (नवमा दसमा) उपसर्ग विनाना । दो० बन्ने ९–१० ॥ २७७ ॥ ४ ॥

१. F reads this verse thus (एफ मा नीचे मुजब छे) सिवनन्दा भद्दा सामा धण-बहुला फुस्सि-अग्गिमित्ता य । रेवइ-अस्सिणि तह फगुणि इमाणि भज्जाणि नामाणि २. F. a c. (एफ. ए. इ.) धण, B. धण्ण, B. F a. c (बी एफ. ए ई) बहुला, B. (बी.) पुस्सा, a. c. (ए इ पुस्स) F. (एफ.) फुस्सि. ३. B. (बी) असिणि; F. (एफ) अमणि ४ F (एफ) फगुणि; c (इ.) फग्गुणा. ५. B. reads (बी. मां छे) य भजायण नामाइं, F. (एफ.) इमाणि भज्जाणि नामाणि.

मूळपाठः—॥ २७७ ॥४॥ ओहिन्नाण[1]—पिसाए माया वाहि—धण—उत्तरिज्जे य । भज्जा[2] य सुव्वया[3] डुव्वया[4] निरुवसग्गया दोन्नि[5] ॥ २७७ ॥ ४ ॥

भावार्थः—॥ २७७ ॥ ४ ॥ हवे उपसर्गना नाम कहे छेः—पहेलाने अवधिज्ञाननो १, बीजाने पिशाचनो २, त्रीजाने मातानो ३, चोथाने रोगनो ४, पांचमाने धननो ५, छट्ठाने वस्त्र अने वींटीनो ६, सातमाने भली भार्यानो ७, आठमाने भूंडी भार्यानो ८, नवमाने तथा दसमाने उपसर्ग नथी. ए प्रमाणे उपसर्गना नाम जाणवा ॥ २७७ ॥ ४ ॥

अर्थः—॥ २७७ ॥ ५ ॥ अ० अरुण विमाने उपनो १ । अ० अरुणाभ विमाने २ । ख० निश्चे । अ० अरुण पभ विमाने ३ । अ० अरुण कंत विमाने ४ । सि० अरुण सिद्ध विमाने ५ । य० वळी । अ० अरुण ध्वज विमाने । य० वळी । छ० छट्ठो ६ । भू० अरुणभूत विमाने ७ । व० अरुण वतंसक विमाने ८ । ग० अरुणग विमाने ९ । की० अरुणकील विमाने १० ॥ २७७ ॥ ५ ॥

मूळपाठः—॥ २७७ ॥ ५ ॥ अरुणे अरुणाभे खलु अरुणप्पह—अरुणकन्त—सिट्ठे य ।

---

१. B. a. (बी. प) °न्नाण, F. (एफ.) °नाण. २. B. (बी.) भजाया; F. (एफ.) भज्जाइ for भज्जा य. ३. F. (एफ.) सुवया. ४ B a. (बी प.) दुव्वया य; F. (एफ.) तह दुव्वया, e. (इ.) दुव्वयाइं ५. F. (एफ.) दुन्नि. a. (ए.) दोण्णि.

अरुणज्झए[1] य ठट्ठे जूय[2]–वडिंसे[3] गवे कीले ॥ २७७ ॥ ५ ॥

भावार्थः—॥ २७७ ॥ ५ ॥ हवे दशे जणा जे विमानमां उत्पन्न थया तेनां नाम कहे छेः–पहेलो अरुण विमाने, बीजो अरुणभ विमाने, त्रीजो अरुण प्रभ विमाने, चोथो अरुण कंत विमाने, पांचमो अरुण सिद्ध विमाने, छट्ठो अरुणध्वज विमाने, सातमो अरुणभूत विमाने, आठमो अरुण वतंसग विमाने, नवमो अरुणग विमाने, दसमो अरुणकाळ विमाने, ए प्रमाणे दशे जणानी उत्पत्ति विमान जाणवा ॥ २७७ ॥ ५ ॥

नीचेनी ७ गाथा फक्त एकज सूत्रमां छे ने तेमांनी केटलीक गायानी भाषा घणी अशुद्ध छे.

अर्थः—॥ २७७ ॥ ६ ॥ चा० चाळीश १ । स० साठ २ । अ० एंसी ३ । स० साठ ४ । स० साठ ५ । य० वळी । स० साठ ६ । द० दस । स० हजार ७ । गायो । अ० एंसी ८ । च० चाळीश ९ । च० चाळीश १० । च० संख्या । ए० तेमनी । य० वळी । स० हजारनी ॥ २७७ ॥ ६ ॥

मूळपाठः—॥ २७७ ॥ ६ ॥ चाली[4] सट्ठि असीई[5] सट्ठी सट्ठी य सठि दस सहस्सा । असिई[6] चत्ता चत्ता चए एयाण य[8] सहस्साणं ॥ २७७ ॥ ६ ॥

१. F (एफ) अरुणज्झे. २. F. (एफ.) जूय. ३. F (एफ.) वडंसे. ४. The following seven verses are only found in Ms. F. & Some are in a very faulty Condition (आ नीचेनी सात गाथाओ फक्त "एफ" नामना पुस्तकमा छे ते सात गाथामानी केटलीक घणीज अशुद्ध छे.) ५. Ms. असइ. ८ Ms "चउ पयाणं च" read "चए" with short e or "चए इयाण" (See Bhagvati Page 406 ("चउ पयाणं च" ने बदले "चए" अथवा "चए इयाण" पाठ छे. जुओ भगवती पानुं ४०६.)

भावार्थः—॥ २७७ ॥ ६ ॥ आ दसे श्रावकने गायोना गोकुळ हता ते गायोनी संख्या कहे छे. १ पहेलाने चाळीस हजार, २. बीजाने साठ हजार, ३. त्रीजाने एंसी हजार, ४. चोथाने साठ हजार, ५. पांचमाने साठ हजार, ६. छट्ठाने साठ हजार, ७. सातमाने दस हजार, ८. आठमाने एंसी हजार, ९. नवमाने चाळीस हजार, १०. दसमाने चाळीस हजार. उपर मुजब गायोनी संख्या हती ॥ २७७ ॥ ६ ॥

अर्थः—॥ २७७ ॥ ७ ॥ वा० वार १ । अ० अढार २ । च० चोवीस ३ । ति० त्रण वखत । अ० अढार ४–५–६ । इ० ए रीते । ने० जाणवुं । ध० दसे श्रावकनुं धन । ति० त्रण ७ । चो० चोवीस ८ । वा० वार । वा० वार । य० वळी । को० क्रोड ॥ २७७ ॥ ७ ॥

मूळपाठः—॥ २७७ ॥ ७ ॥ वारस[1] अट्ठारस चउवीसं तिविहं अट्ठरस इ नेयं । धन्नेण ति चोव्वीसं वारस वारस य कोडीओ ॥ २७७ ॥ ७ ॥

भावार्थः—॥ २७७ ॥ ७ ॥ आ दसे श्रावकने नीचे मुजब धन हतुं. पहेलाने बार क्रोड सोनैया, २. बीजाने

१. This verse reads in the Ms. thus-(आ गाथा सूत्रोमां नीचे मुजब छे.) बारट्ठारस चउवीसं तिविहमट्ठार तह इति नेयं । धणेण तिचो आशीसं वारस २ कोडीओ ॥ The second half runs in the paragraph thus (बीजो पेरा नीचे मुजब छे) धन कोटेय । सहाल नै ३ कोडि महसतक नै ४४ (sic.) नंदणीपिता नै १२ कोडि सालहीपिता नै १० कोडि १२ (sic.)

अढार क्रोड सोनैया, ३. त्रीजाने चोवीस क्रोड सोनैया ४–५–६ ए दरेकने अढार क्रोड सोनैया, ७. सातमाने त्रण क्रोड सोनैया, ८. आठमाने चोवीस क्रोड सोनैया, ९–१० नवमा–दसमाने वळी बार बार क्रोड सोनैया धन हतुं ॥ २७७ ॥ ७ ॥

अर्थः—॥ २७७ ॥ ८ ॥ उ० अंग लुवाना वस्त्रनी विधि । द० दातणनी मर्यादा । फ० फळनी मर्यादा । अ० तेल आदि शरीरे चोळवानी विधि । उ० पीठी वगेरे शरीरे मर्दन करवानी विधि । स० नहावाना पाणीनी मर्यादा । य० वळी । व० वस्त्रनी मर्यादा । वि० सुखड (अत्तर) आदि विलेपननी विधि । पु० फुलनी मर्यादा । आ० घरेणानी विधि । धू० धूपनी मर्यादा । पे० पीवानी वस्तुनी मर्यादा ॥ २७७ ॥ ८ ॥

मूळपाठः—॥ २७७ ॥ ८ ॥ उल्लण–दन्तवण–फले अब्भिङ्गणु[1] वट्टणे[1] सणाणे य । वत्थ-विलेवण[2]–पुप्फे आभरणं धूव–पेज्जाइ[3] ॥ २७७ ॥ ८ ॥

भावार्थः—॥ २७७ ॥ ८ ॥ दसे श्रावके नीचे मुजब सातमा व्रतनी २१ प्रकारे नीचेनी वस्तुनो मर्यादा करी हतीः–१. अंग लुवाना वस्त्रनी, २. दातणनी, ३. फळनी, ४. शरीरे तेल चोळवानी, ५. शरीरे पीठी चोळवानी, ६. न्हावाना पाणीनी, ७. वस्त्रनी, ८. सुखड अत्तर आदि शरीरे चोपडवानी, ९. फूलनी, १०. घरेणानी, ११. धूपनी, १२. पीवानी वस्तुनो ॥ २७७ ॥ ८ ॥

१. MB (सूत्रो) ° णुवट्टणे c m. २. Mᵃ. (सूत्रो) ° वलेवण ° . ३. MB. (सूत्रो) ° पेसाइ.

अर्थः—॥ २७७ ॥ ९ ॥ भ० सुखडी आदि खावानी वस्तुनी मर्यादा । उ० लासु अथवा काचुं–पाकुं धान खावानी । सू० कठोळ खावानी । घ० घी वगेरेनी । सा० लीलोतरी शाकनी । मा० मेवानी । जे० जमण एटले अमुक वखते खावानी । पा० पीवाना पाणीनी । य० वळी । त० पान–मुखवास । इ० ए २१ वानानी । आ० आणंद वगेरे श्रावकोए । अ० अभिग्रह करेल ॥ २७७ ॥ ९ ॥

मूळपाठः—॥ २७७ ॥ ९ ॥ भक्खो[1]यण–सूय–घए सागे माहुर–जेमण[2]–पाणे य । तम्बोले इगवीसं आणन्दाईण[3] अभिग्गहा ॥ २७७ ॥ ९ ॥

भावार्थः—॥ २७७ ॥ ९ ॥ १३. सुखडी आदि खावानी मर्यादा, १४. काचुं–पाकुं धान्य खावानी, १५. कठोळ खावानी, १६. घी वगेरेनी, १७. लीलोतरी शाकनी, १८. मेवानी, १९. जमण एटले अमुक वखते खावानी, २०. पीवाना पाणीनी, २१. पान मुखवासनी एवी रीते एकवीस वस्तुनी मर्यादा करी हतो ॥२७७॥९॥

अर्थः—॥ २७७ ॥ १० ॥ उ० उंचु । सो० सौधर्म । पु० देवलोक सुधी । लो० लोलुच नरकावासो । अ० नीचे । उ० उत्तरे । हि० हिमवंत । प० पांच । स० सो योजन । त० ते । वाकीनी । ति० त्रण । दि० दीसे । ओ० अवधिज्ञान । द० दसे श्रावकने ॥ २७७ ॥ १० ॥

---

१. Ms. (सूत्रो) भखायण° २. Ms. (सूत्रो) °जमण° ३. Ms. (सूत्रो) आणन्दाइण.

मूळपाठः—॥ २७७ ॥ १० ॥ उड्ढं[1] सोहम्मपुरे लोलूए अहे उत्तरे हिमवन्ते । पञ्चसए तह तिदिसिं ओहिणाणं दसगणस्स ॥ २७७ ॥ १० ॥

भावार्थः—॥ २७७ ॥ १० ॥ उंचे सौधर्म कल्पसुधी, नीचे लोलुच नरकावास सुधी, उत्तरे हिमवंत सुधीने बाकीनी दक्षिण, पूर्व, पश्चिम दिशे पांचसे योजन सुधी दसे श्रावकने अवधिज्ञान प्राप्त थयुं हतुं ॥ २७७ ॥ १० ॥

अर्थः—॥ २७७ ॥ ११ ॥ दं० दंसण एटले सदहणा आस्ता १ । व० व्रत २ । सा० सामायक ३ । पो० पोसो ४ । प० पडिमा ५ । अ० अब्रह्म (ब्रह्मचारी) ६ । स० सचित त्याग ७ । आ० आरंभनो त्याग ८ । पे० चाकर न राखवा ९ । उ० पोताने माटे आहार करावबानो । व० त्याग १० । स० साधु जेवुं थवुं ११ । य० वळी ॥ २७७ ॥ ११ ॥

मूळपाठः—॥ २७७ ॥ ११ ॥ दंसण—वय—सामाइय[2]—पोसह—पडिमा—अबम्भ—सच्चित्ते । आरम्भ—पेस—उद्दिट्ठ[3]—वज्जए समणभूए[4] य ॥ २७७ ॥ ११ ॥

---

१. This verse in the Ms. asfollows (सूत्रोमां नीचे मुजबनी गाथा छे.) उढं सोहमसुरे लोलूए नरए तह उत्तरे हिमवंत । पंचसए तिदसा उही आणदसयगणस्स. The Second half is thus explained in the paraph. (बीजो भाग नीचे मुजब छे) पाच सइ योजन देखई अवधिज्ञानइं दशे श्रावक नइं i. e. the super-natural knowledge of the ten Shravaks overlooks five hundred yojanas.
२. Ms. (सूत्रो) सामाइ. ३. Ms. (सूत्रो) उदिट्ठ. ४. Ms. (सूत्रो) ० भूइए for ० भूए य

भावार्थः—॥ २७७ ॥ ११ ॥ १. सद्दहणा, एटले जैन धर्मनी आस्ता, २. व्रत अंगिकार करवा, ३. सामायक करवी, ४. पोसा, ५. पडिमा, ११ श्रावकनी अंगिकार करवी, ६. ब्रह्मचर्य पाळवुं, ७. सचेत वस्तुनो त्याग, ८. आरंभनो त्याग, ९. चाकर–नोकरथी काम करावावानो त्याग, १०. पोताने उद्देशीने (माटे) आहार रंधाववानो त्याग, ११. साधु जेवुं आचरण करवुं. ए दसे श्रावकना आचरण हतां ॥ २७७ ॥ ११ ॥

अर्थः—॥ २७७ ॥ १२ ॥ इ० ११ । प० पडिमा १ । वी० वीस वरस । प० श्रावकनी पर्याय पाळवी २ । अ० अणसण । मा० एक मास सुधी ३ । सो० सौधर्म देवलोके । च० चार । प० पल्योपमने आउखे उपजवुं । म० महा । वि० विदेहे । सि० मोक्ष जवुं ॥ २७७ ॥ १२ ॥

मूळपाठः—॥ २७७ ॥ १२ ॥ इक्कारस पडिमाउ[1] वीसं परियाउ[2] अणसणं मासे । सोहम्मे चउपलिया[3] महाविदेहम्मि सिज्झिहिइ[4] ॥ २७७ ॥ १२ ॥

भावार्थः—॥ २७७ ॥ १२ ॥ ए दसे श्रावके अगियार श्रावकनी पडिमा पाळी, वीस वरस सुधी श्रावकपणुं पाळ्युं, एक मासना उपवास कर्या, सौधर्म देवलोके चार पल्योपमने आउखे उत्पन्न थया महा विदेहे मोक्ष जशे ॥ २७७ ॥ १२ ॥

---

१. Ms. (सूत्रो) पडिमाउ २ Ms (सूत्रो) परिआउ. ३. Ms. (सूत्रो) चउपलीया. ४. Ms. (सूत्रो) सिज्झइ.

अर्थः—॥ उ० उपासक । द० दसानुं । द० दसमुं । अ० अध्ययन । स० पुरुं थयुं ॥ १० ॥

मूळपाठः—॥ उवासगदसाणं[1] दसमं अज्झयणं समत्तं ॥ १० ॥

भावार्थः—॥ उपासक दशा सूत्रनुं दसमुं अध्ययन पूरुं थयुं ॥ १० ॥

अर्थः—॥ ७ ॥ उ० उपासक । द० दशा सूत्र । स० पूरुं थयुं ॥ ७ ॥

मूळपाठः—॥ ७ ॥ उवासगदसाओ[2] समत्ताओ[3] ॥ ७ ॥

भावार्थः—॥ ७ ॥ उपासक दसासूत्र पूरुं थयुं ॥ ७ ॥



अर्थः—॥ उ० उपासक । द० दशा । स० सातमा । अं० अंगनो । ए० एक । सु० सूत्र । ख० स्कंध तेना । द० दस । अ० अध्ययननो । ए० एकएक । स० सर्व एम । द० दस । ते० वळी । दि० दिवसमां । उ० वांची जवो । तेम करता । त० ते । सु० सूत्र । ख० स्कंध । स० पुरो थयाइ रहे छे । अ० एहवी पण आज्ञा छे के । दो० बे । दि० दिवसमां । अ० अंग । त० तेमज वांची जवो ॥

१ D. E. F. (डी. इ. एफ. मां नथी.) Omit उवास ° दस ° अज्झ ° सम °. २. B. F. (बी. एफ. मां नथी.) Omit उवास ° सम °. ३. D. E. (डी. इ.) समत्ता.

मूळपाठः—॥ उवासगदसाणं सत्तमस्स अङ्गस्स[१] एगो सुय खन्धो[२] । दस अज्झयणा[३] एक्कसरगा[४] दससु[५] चेव दिवसेसु उद्दिस्सन्ति[६] । तओ[७] सुयखन्धो समुद्दिस्सइ[८] । अणुण्णविज्जइ[९] दोसु दिवसेसु अङ्गं तहेव[१०] ॥

भावार्थः—॥ उपासक दशांग सातमा अंगनो एक सूत्र स्कंध, तेना दस अध्ययननो एकेक सर्ग दस दिवसमां वांची काढवा तेम करता ते सूत्र स्कंध वंचाइ रहे छे, पण एवी पण आज्ञा छे के, आखो अंग बे दिवसमां वांची जवो ॥

---

१. B. (बी मां नथी) Omit. G. (जी.) अंग तउ. २ G (जी.) सुअखधो ३ G (जी. मां फक्त) has only अज्झयणं संपूर्ण्ण समाप्तं ४ B. (बी.) एकारसगा F. (एफ.) एक्कारसगा. D E. (डी. इ. मां नथी) Omit. ५ B F. (बी. एफ. मां फक्त) Only दस. ६ B. D E F (बी. डी. इ. एफ.) उद्दिसंति. ७. D. E (डी. इ मां बाकीनुं नथी) Omit remainder ८. B (बी) समुद्दिसइ, F. (एफ.) समुद्दिसइ ९ B. (बी) अणुणविजइ, F. (एफ) अणुविज्जइ १०. F. adds (एफ मां वधारे) छइ ति. (apparently gujarati) इत्युपाशक सूत्रं संपूर्णम् ।

शुद्धिपत्रक.

पानुं.	लीटी.	अशुद्धं.	शुद्धं.
३	८	गाहावइ	गाहावई
६	१	कोलास	कोलाग
१०	२०	समीप	समोपे
११	७	फर ता	फरता
१२	४	मूसावायं	मुसावायं
१३	२५	विशेप	विशेप
१५	१८	एठले	एटले
१५	२२	पच्चहिं	पञ्चहिं
१७	१४	परिमाण	परिमाण
१८	८	विधि	विधि
१९	१३	कर	करे
२२	८	गोवय	गोघयं

पानुं.	लीटी.	अशुद्धं.	शुद्धं.
२३	१३	पाणीनुं	पाणीनी
२५	१५	संथवे	संथवो
२७	३	नहो	नहीं
२९	१६	घरवखरानुं छे	घरवखरानुं
२०.	२६	दिसिवयस्स	दिसिवयस्स
३०	१३	आहर	आहार
३०	२१	विप	विप
३१	१९	वीजो	वीजो
३१	२२	कर	करे
३३	२३	गुजव	मुजब
३६	१८	मृहस्थीए	गृहस्थीए
३७	२४	कहे	करे

॥२१३॥

पानुं	लीटी.	अशुद्धं.	शुद्धं.
३७	२४	वोलयो	वोलयो
३९	५	पायपुच्छणेणं	पायपुञ्छणेणं
३९	६	अभिगिहणइ	अभिगिण्हइ
३९	७	वन्दइरत्ता	वन्दइ २ त्ता
१ थी १३७ श्लोक		रत्ता	२ त्ता
४०	३०	वळवत	वळवंत
५०	१४	वारंवार	वारंवार
५१	२२	नोकळी	नीकळी
५५	१०	प्रतिज्ञाए	प्रतिज्ञाए
५६	१९	अवधिज्ञान	अवधिज्ञान
६०	१३	ब्राह्मण	वाह्मण
६३	१७	न संचाएमि	नो संचाएमि
६३	१९	इआ	इओ
६५	१०	उपने	उपजे

पानुं	लीटी.	अशुद्धं.	शुद्धं.
६५	१७	अवाधज्ञान	अवधिज्ञान
७१	१६	भमवंत	भगवंत
७३	१७	भयंयर	भयंकर
७४	१४	° विणिग्गयाइ	° विणिग्गयाइं
७७	१३	पुन्य	पुण्य
७९	२१	छोडाववुं	छोडाववुं
७९	२१	समकितीथ	समकितथी
७९	२२	धारणा कही छे	धारणा करी छे
८१	१२	सहह्र	साहह्र
८१	१५	क्रीधे	क्रोधे
८१	१८	सदहे	सहे
८२	२	प्रकाहे	प्रकारे
८३	११	धाळा	धोळा
८३	१४	वायर	वायरा

पानुं	लीटी.	अशुद्धं.	शुद्धं.
८४	१०	ग्रहश	ग्रहिश
८५	१२	उलाळे उलाळीने	उछाळे उछाळीने
८९	१०	प्रभास	प्रकाश
९७	४	निग्गन्थहिं	निग्गन्थेहिं
९९	४	वरसनो	वरसनी
१००	१७	ममास	समास
१०२	१०	अणन्दो	आणन्दो
१०२	१४	धम्मं	धम्म
१०५	१५	चुलणी पिया	चुलणीपिया
११०	१९	श्रावक्र	श्रावक
१११	१४	मुकाराेश	चुकारोस
११३	१५	ते वारे	ते वारे
११३	१५	विचरतो	विचरतो
११४	४	गाटे	माटे

पानुं	लीटी.	अशुद्धं.	शुद्धं.
११५	१४	वंतसक	वतंसक
११७	१३	श्रा	श्री
१२२	१५	उपासंग	उपासग
१२३	१४	परिनज्जइ	पडिवज्जइ
१२५	१९	अणवीह्नतो	अणवीहतो
१२५	१९	निर्भयपले	निर्भयपणे
१२७	१४	अरुण सिद्धे	अरुण सिट्ठे
१२७	१७	पोतानी	पीतानी
१२८	१७	ममएण	ममएणं
१२९	८	जाणवा	जाणवो
१३०	७	उपरया	उपरथी
१३०	१३	स्वामानी	स्वामीनी
१३१	१	घुघराना	घुघरीना
१३१	१५	माठा	माठी

२१४||

पानुं	लीटी.	अशुद्धं	शुद्धं
१३२	१९	देवताना	देवतानी
१३३	१४	देवा ?	देवा ? ।
१३४	२१	पधार्या ॥	पधार्या ॥१७१॥
१३५	३	पधार्याना	पधार्यानी
१३५	१०	साचा	साचो
१४०	१	अपमाउसो	अयमाउसो
१४१	४	नगरना	नगरनी
१४१	५	खोराकना	खोराकनी
१४१	७	वळा	वळी
१४३	११	° पडुपन्न	° पडप्पन्न
१४६	२३	निश्च	निश्चे
१५१	१७	ण	णं
१५४	१२	श्रा	श्री
१५८	१७	पोलासपरं	पोलासपुरं

पानुं	लीटी.	अशुद्धं	शुद्धं
१५९	२	पञ्जुवासइ	पज्जुवासइ
१५९	४	थाडो	थोडो
१६३	१६	समणोवासय	समणोवासयं
१६७	४	गोशाळा	गोशाळो
१७२	३	क्वोयं	कवोयं
१७३	११	तवा	तवो
१७५	६	मरा	मरी
१७५	१२	साल	सील
१७६	७	करइ	करेइ
१८१	१३	इन्द्रिआए	इन्द्रिओए
१८५	१२	तासि	तासि
१८६	८	हता	हती
		तो	ती

आवी रीतनी भुलो अर्थ भावार्थमां सुधारो वांचवी.

पानुं	लीटी.	अशुद्धं	शुद्धं
१८८	८	प्रणीत	प्रणीत
१८९	१२	समय	समये
१९३	१२	मारतो	मारनी
१९६	७	पछी	पछी
१९९	१४	प्रायाश्चन	प्रायश्चित
२००	१७	महावीरं	महावीरे
२०६	१३	श्रावकने	श्रावक
२०८	४	आत्माना	आत्मानी
२१०	१३	वस्तुना	वस्तुनी

॥२१५॥

इति श्री उपासकदशासूत्र समाप्त.

अमदावाद–टंकशाळ धी युनियन प्रिन्टींग प्रेस कंपनी लीमीटेडमां
शाह मोहनलाल चीमनलाले छाप्युं.